अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन

सहज

मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)

पर आधारित

मानवीय आचार संहिता

रूपी

संविधान व्यवस्था सूत्र व्याख्या

प्रणेता एवं लेखक

ए. नागराज

प्रकाशक :

जीवन विद्या प्रकाशन

श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदांचल, अमरकंटक

जिला - अनूपपुर (शहडोल), मध्यप्रदेश

प्रणेता एवं लेखक :

ए. नागराज

© सर्वाधिकार
प्रणेता एवं लेखक के
पास सुरक्षित

संस्करण : प्रथम

मुद्रण तिथि : 14 जनवरी 2007

सहयोग राशि :
100/- रुपये

मुद्रक :
युगबोध प्रकाशन रायपुर (छ.ग.)

ग्राफिक्स-डिजायनिंग :
आकाश कम्प्यूटर, रायपुर दूरभाष-94252-04130

विकल्प

1. अस्थिरता, अनिश्चयता मूलक भौतिक रासायनिक वस्तु केन्द्रित विचार बनाम विज्ञान विधि से मानव का अध्ययन नहीं हो पाया। रहस्य मूलक आदर्शवादी चिंतन विधि से भी मानव का अध्ययन नहीं हो पाया। दोनों प्रकार के वादों में मानव को जीव कहा गया है।

   विकल्प के रूप में प्राप्त अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन विधि से मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद में मानव को ज्ञानावस्था में होने का पहचान किया एवं कराया है।

   मध्यस्थ दर्शन के अनुसार मानव ही ज्ञाता (जानने वाला), सहअस्तित्वरूपी अस्तित्व जानने-मानने योग्य वस्तु अर्थात् जानने के लिए वस्तु है यही दर्शन ज्ञान है इसी के साथ जीवन ज्ञान एवं मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान सहित सह-अस्तित्व में प्रमाणित होने की विधि अध्ययन गम्य हो चुकी है।

   अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ज्ञान, मध्यस्थ दर्शन, सह-अस्तित्ववाद-शास्त्र रूप में अध्ययन के लिए मानव सम्मुख मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

2. अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन के पूर्व मेरी (ए.नागराज, अग्रहार नागराज, जिला हासन, कर्नाटक प्रदेश, भारत) दीक्षा अध्यात्मवादी ज्ञान वैदिक विचार सहज उपासना कर्म से हुई।

3. वेदान्त के अनुसार ज्ञान ''ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या'' जबकि ब्रह्म से जीव जगत की उत्पत्ति बताई गई।

   उपासना :- देवी देवताओं के संदर्भ में।

   कर्म :- स्वर्ग मिलने वाले सभी कर्म (भाषा के रूप में)।

   मनु धर्म शास्त्र में :- चार वर्ण चार आश्रमों का नित्य कर्म प्रस्तावित है।

   कर्म काण्डों में :- गर्भ संस्कार से मृत्यु संस्कार तक सोलह प्रकार के कर्म काण्ड मान्य है एवं उनके कार्यक्रम है।

   इन सबके अध्ययन से मेरे मन में प्रश्न उभरा कि -

4. सत्यम् ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म से उत्पन्न जीव जगत मिथ्या कैसे है ? तत्कालीन वेदज्ञों एवं विद्वानों के साथ जिज्ञासा करने के क्रम में मुझे :-

   समाधि में अज्ञात ज्ञात होने का आश्वासन मिला। शास्त्रों के समर्थन के आधार पर साधना, समाधि, संयम कार्य सम्पन्न करने की स्वीकृति हुई। मैंने साधना, समाधि, संयम की स्थिति में सहअस्तित्व होने, रहने के रूप में अध्ययन, अनुभव पूर्ण समझ को प्राप्त किया जिसके फलस्वरूप मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद के रूप में विकल्प प्रकट हुआ।

5. आदर्शवादी शास्त्रों एवं रहस्य मूलक ईश्वर केंद्रित चिंतन ज्ञान तथा परम्परा के अनुसार- ज्ञान अव्यक्त अनिर्वचनीय।

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार - ज्ञान व्यक्त वचनीय अध्ययन विधि से बोध गम्य, व्यवहार विधि से प्रमाण सर्व सुलभ होने के रुप में स्पष्ट हुआ।

6. अस्थिरता, अनिश्चियता मूलक भौतिकवाद के अनुसार वस्तु केंद्रित विचार में विज्ञान को ज्ञान माना जिसमें नियमों को मानव निर्मित करने की बात कही गयी है। इसके विकल्प में सहअस्तित्व रुपी अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान के अनुसार अस्तित्व स्थिर, विकास और जागृति निश्चित सम्पूर्ण नियम प्राकृतिक होना, रहना प्रतिपादित है।

7. अस्तित्व केवल भौतिक रासायनिक न होकर भौतिक रासायनिक एवं जीवन वस्तुयें व्यापक वस्तु में अविभाज्य वर्तमान है यही ''मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद'' शास्त्र सूत्र है।

सत्यापन

8. मैंने जहाँ से शरीर यात्रा शुरू किया वहाँ मेरे पूर्वज वेदमूर्ति कहलाते रहे। घर-गाँव में वेद व वेद विचार संबंधित वेदान्त, उपनिषद तथा दर्शन ही भाषा ध्वनि-धुन के रुप में सुनने में आते रहे। परिवार परंपरा में वेदसम्मत उपासना-आराधना-अर्चना-स्तवन कार्य सम्पन्न होता रहा।

9. हमारे परिवार परंपरा में शीर्ष कोटि के विद्वान सेवा भावी तथा श्रम शील व्यवहाराभ्यास एवं कर्माभ्यास सहज रहा जिसमें से श्रमशीलता एवं सेवा प्रवृत्तियाँ मुझको स्वीकार हुआ। विद्वता पक्ष में प्रश्नचिन्ह रहे।

10. प्रथम प्रश्न उभरा कि -

ब्रह्म सत्य से जगत व जीव का उत्पत्ति मिथ्या कैसे ?

दूसरा प्रश्न -

ब्रह्म ही बंधन एवं मोक्ष का कारण कैसे ?

तीसरा प्रश्न -

शब्द प्रमाण या शब्द का धारक वाहक प्रमाण ?

आप्त वाक्य प्रमाण या आप्त वाक्य का उद्‌गाता प्रमाण ?

शास्त्र प्रमाण या प्रणेता प्रमाण ?

समीचीन परिस्थिति में एक और प्रश्न उभरा

चौथा प्रश्न -

भारत में स्वतंत्रता के बाद संविधान सभा गठित हुआ जिसमें राष्ट्र, राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय-चरित्र का सूत्र व्याख्या ना होते हुए जनप्रतिनिधि पात्र होने की स्वीकृति संविधान में होना।

वोट-नोट (धन) गठबंधन से जनादेश व जनप्रतिनिधि कैसा ?

संविधान में धर्म निरपेक्षता - एक वाक्य एवं उसी के साथ अनेक जाति, संप्रदाय, समुदाय का उल्लेख होना।

संविधान में समानता - एक वाक्य, उसी के साथ आरक्षण का उल्लेख और प्रक्रिया होना।

जनतंत्र - शासन में जनप्रतिनिधियों की निर्वाचन प्रक्रिया में वोट नोट का गठबंधन होना।

ये कैसा जनतंत्र समानता व धर्म निरपेक्षता है ?

11. इन प्रश्नों के जंजाल से मुक्ति पाने को तत्कालीन विद्वान, वेदमूर्तियों, सम्मानीय ऋषि महर्षियों के सुझाव से -

(1) अज्ञात को ज्ञात करने के लिए समाधि एक मात्र रास्ता बताये जिसे मैंने स्वीकार किया।

(2) साधना के लिए अनुकूल स्थान के रूप में अमरकण्टक को स्वीकारा।

(3) सन् 1950 से साधना कर्म आरम्भ किया।
सन् 1960 के दशक में साधना में प्रौढ़ता आया।

(4) सन् 1970 में समाधि सम्पन्न होने की स्थिति स्वीकारने में आया। समाधि स्थिति में मेरे आशा विचार इच्छायें चुप रहीं। ऐसी स्थिति में अज्ञात को ज्ञात होने की घटना शून्य रही यह भी समझ में आया। यह स्थिति सहज साधना हर दिन बारह से अट्ठारह घंटे तक होता रहा।

समाधि, ध्यान, धारणा क्रम में संयम स्वयम् स्फूर्त प्रणाली मैंने स्वीकारा। दो वर्ष बाद संयम होने से समाधि होने का प्रमाण स्वीकारा। समाधि से संयम सम्पन्न होने की क्रिया में भी 12 घण्टे से 18 घण्टे लगते रहे। फलस्वरुप संपूर्ण अस्तित्व सह-अस्तित्व के रूप में मुझे अनुभव हुआ। जिसका वांङ्मय ''मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद'' शास्त्र के रुप में प्रस्तुत हुआ।

12. सहअस्तित्व :- व्यापक वस्तु में संपूर्ण जड़ चैतन्य संपृक्त एवं नित्य वर्तमान होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- परमाणु में विकासक्रम के रुप में भूखे एवं अजीर्ण परमाणु एवं परमाणु में ही विकास पूर्वक तृप्त गठनपूर्ण परमाणुओं के रूप में होना, रहना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य इकाई-जीवन रुप में होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- भूखे व अजीर्ण परमाणु अणु व प्राणकोषाओं से ही सम्पूर्ण रचनायें तथा परमाणु अणुओं से रचित धरती तथा अनेक धरतियों का रचना स्पष्ट होना समझ में आया।

13. अस्तित्व में भौतिक रचना रुपी धरती पर ही यौगिक विधि से रसायन तंत्र प्रक्रिया सहित प्राणकोषाओं से रचित रचनायें संपूर्ण वन-वनस्पतियों के रूप में समृद्ध होने के उपरांत प्राणकोषाओं से ही जीव शरीरों का रचना रचित होना और मानव शरीर का भी रचना सम्पन्न होना व परंपरा होना समझ में आया।

14. सहअस्तित्व में ही :- शरीर व जीवन के संयुक्त रुप में मानव परंपरा होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में, से, के लिए :- सहअस्तित्व नित्य प्रभावी होना समझ में आया। यही नियतिक्रम होना समझ में आया।

15. नियति विधि :- सहअस्तित्व सहज विधि से ही :-

(i) अस्तित्व में चार अवस्थाएँ

- पदार्थ अवस्था
- प्राण अवस्था
- जीव अवस्था
- ज्ञान अवस्था

और

(ii) अस्तित्व में चार पद

- प्राणपद
- भ्रांति पद
- देव पद
- दिव्य पद

(iii) और

- विकास क्रम, विकास
- जागृति क्रम, जागृति है।

जागृति सहज मानव परंपरा ही मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी नित्य वैभव होना समझ में आया। इसे मैंने सर्वशुभ सूत्र माना और सर्वमानव में शुभापेक्षा होना स्वीकारा फलस्वरूप चेतना विकास मूल्य शिक्षा, संविधान, आचरण व्यवस्था सहज सूत्र व्याख्या, मानव सम्मुख प्रस्तुत किया हूँ।

भूमि स्वर्ग हो, मानव देवता हो
धर्म सफल हो, नित्य शुभ हो।

- ए. नागराज

विकल्प में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा

<u>अ -(अ) (आ)</u>

1. अस्तित्व :- होना, निरंतर होना, सहज रूप में रहना।
2. अविभाज्य :- व्यापक वस्तु में एक-एक वस्तुओं का निरंतर क्रियाशीलता, निरंतर वर्तमान रहना।
3. आश्रम :- श्रमपूर्वक मानव चेतना अनुसार प्रमाण प्रस्तुत करना। प्रयत्नपूर्वक मानव चेतना अनुसार प्रमाण प्रस्तुत करना।
4. अनन्त :- जो गणितीय विधि से गणना समझ में नहीं आया - होने की संभावना रहे। कल्पना में हो समझ में नहीं आया हो - ज्ञात होने की संभावना हो।
5. अध्ययन :- अनुभव सहज प्रकाश में स्मरण पूर्वक किया गया क्रिया कलाप एवं समझने का प्रयास।
6. अखण्ड समाज :- मानव जाति, धर्म, राज्य व्यवस्था में एक रुपता संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था में एकरुपता सहज वर्तमान परंपरा।

7. अध्ययनगम्य :- अध्ययनपूर्वक अस्तित्व सहज वस्तु समझ में आना।

8. अजीर्ण परमाणु :- परमाणु के तृप्त होने में जितने अंशों की आवश्यकता सुनिश्चित रहती है उससे अधिक अंशो का गठन होना विकिरणीयता प्रभाव को प्रसारित करते रहने और अपने से कुछ अंशों को विसर्जित करने के लिए प्रयत्नशील रहना ।

9. अणु :- जड़ परमाणुओं का संगठित रुप, एक से अधिक परमाणुओं का संयुक्त क्रियाकलाप ।

10. अपराध :- पर-धन, पर-नारी, पर-पुरुष, पर-पीड़ाकारी कार्य व्यवहार एवं संग्रह सुविधा को आजीविका मान लिया हुआ पशु मानव, राक्षस मानव।

11. आवर्तनशीलता :- जागृत मानव परंपरा में ही हर उत्पादन के लिए स्त्रोत बनाये रखते हुए उत्पादनपूर्वक समृद्ध होना।

12. अभय :- वर्तमान में विश्वास सम्पन्न मानव ही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या सहज प्रमाण।

13. अर्पण:- कुछ देकर लेने की विधि से अर्पण। लेने की अपेक्षा सहित श्रम सेवा नियोजन क्रिया।

14. अमरत्व :- परिणाम का अमरत्व अमर है। गठनपूर्णता = जीवन।

15. अभ्युदय :- सर्वतोमुखी समाधान प्रमाण वर्तमान।

16. आशा :- सुख पूर्वक जीने की आशा।

इ-ई

17. इच्छा :- दर्शन एवं उसके प्रगटन की संयुक्त चिंतन क्रिया का चित्रण।

18. ईमानदारी :- सर्वशुभ सम्पन्न समझदारी को प्रमाणित करने के लिए निश्चित योजना तैयार करना।

उ ऊ ए

19. उभय तृप्ति :- कम से कम दो या दो से अधिक संबंधों में मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभयतृप्ति।

20. उपकार :- समझदार समृद्धि सम्पन्न होना, समझदार समृद्धिपूर्वक जीने देना और जीना

21. उपासना :- उपायपूर्वक वांछित वस्तु का अध्ययन स्वीकृति प्राप्ति प्रमाण

22. ऐषणा :- ऐषणाओं (पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा) का प्रगटन.

क

23. कर्म :- उत्पादन कर्म (आहार-आवास-अलंकार)=सामान्याकांक्षा (दूरदर्शन - दूरश्रवण - दूरगमन) = महत्वाकांक्षा सम्बन्धी यन्त्र, उपकरणों का निर्माण।

24. कार्ययोजना :- योजना को क्रियान्वयन करना।

कार्य व्यवहार :- मानव के साथ व्यवहार जड़ प्रकृति के साथ उत्पादन के लिए कार्य।

25. कर्माभ्यास :- प्राकृतिक ऐश्वर्य पर उपयोगिता मूल्य - कलामूल्य को स्थापित करने का क्रिया कलाप में पारंगत होना।

26. कामोन्माद :- यौन विचार में लिप्त विवश मानव।

ख

27. खनिज :- ठोस धरती में से वांछित वस्तु को खोदकर निकलने वाली वस्तु।

ग

28. गति :- स्थानांतरण परिवर्तन, त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

च

29. चेतना विकास :- जीव चेतना से मानव चेतना श्रेष्ठ, मानव चेतना से देव चेतना श्रेष्ठतर, देव चेतना से दिव्य चेतना श्रेष्ठतम।

30. चैतन्य :- गठनपूर्ण परमाणु, चैतन्य इकाई, जीवन।

31. चिंतन :- इच्छाशक्ति में, से, के लिए परिमार्जन अनुभव प्रमाण मूलक सहज प्रगटन क्रिया।

32. जीवन ज्ञान :- गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता को समझना समझाना।

33. जीवन वस्तु :- जीने की आशा विचार इच्छा ऋतंभरा अनुभव सहज प्रमाण प्रस्तुत होना।

34. जड़ :- पदार्थ और प्राणावस्था सहज क्रिया कलाप जो जितना लंबा-चौड़ा-ऊँचा रहता है वह उतने ही विस्तार में क्रियाशील रहना।

35. जगत :- भौतिक रासायनिक संसार।

36. जीवावस्था :- जीने की आशा सहित अनेक वंश के रुप में वर्तमान।

37. जागृति सहज मानव परंपरा :- समझदारी सहज सर्वतोमुखी समाधान के रुप में प्रमाणित करने का परंपरा। शिक्षा-संस्कार, न्याय सुरक्षा, संयम, उत्पादन-कार्य, विनिमय-कोष, स्वास्थ्य विधि से प्रमाण।

38. जीवन मूल्य :- सुख, शांति, संतोष, आनंद।

39. जिम्मेदारी :- कार्य-व्यवहार योजना में अनुभव सहज वैभव को परिणित करना.

द

40. देव पद चक्र :- मानव चेतना सहज प्रवृत्ति में गुणात्मक विकास रुप में देव चेतना में ओर, और देव चेतना ह्रास होकर मानव चेतना में परिवर्तित होना।

41. दिव्य पद :- दिव्य चेतना उपकार प्रधान विधि नित्य वर्तमान आचरणपूर्णता उपकार प्रवृत्ति सहज प्रमाण

42. दर्शन :- स्थिति गति (रुप गुण स्वभाव धर्म समेत स्वीकृति) मूल्यांकन वर्तमान प्रमाण

43. दृश्य :- व्यापक वस्तु में से के लिए अविभाज्य रुप में होना।

44. दृष्टा :- दृश्य स्थिति, वस्तु स्थिति, वस्तुगत सत्य को समझना समझाना।

45. दर्शन ज्ञान :- स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य सहज समझ स्वीकृति प्रमाण।

46. दीक्षा :- समझने समझाने के लिए निश्चित विधि स्वीकृति और निष्ठा।

ध

47. धरती :- पदार्थावस्था के अणुओं से रचित वृहद् रचना जिस पर प्राण, जीव व ज्ञानावस्था प्रकट हो सके।

न

48. नश्वरत्व :- परिणाम परिवर्तनशीलता सहज परंपरा।

49. नित्य वैभव :- हर अवस्था और पद अपने यथास्थिति सहज परंपरा में वैभव एवं नित्य वर्तमान।

50. नियति क्रम :- पदार्थावस्था से प्राणावस्था, प्राणावस्था से जीवावस्था, जीवावस्था से ज्ञानावस्था सहज प्रगटन परंपरा विधि से त्व सहित व्यवस्था है।

51. नियति विधि :- पदार्थ, प्राण, जीव, ज्ञानावस्था का निश्चित आचरण।

52. नित्य :- निरन्तर सदा-सदा।

53. नियन्त्रण :- त्व सहित व्यवस्था - समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

54. नियम :- आचरण।

55. न्याय :- संबंध-मूल्य-मूल्यांकन-उभयतृप्ति व निरन्तरता

प

56. परिणाम :- परमाणु में परिणाम परमाणु में अंश संख्या घटना-बढ़ना

57. प्रमाण :- परंपरा रूप में प्रकट होते रहना। प्रकटन की निरन्तरता।

58. प्रकृत्ति :- पहले से ही होने में प्रमाण और होने का सूत्र व्याख्या सम्पन्नता।

59. परमाणु :- ज्यादा कम से मुक्त त्व सहित व्यवस्था। समग्र व्यवस्था में भागीदारी - उपयोगिता-पूरकता सहज मूल इकाई-जड़ प्रकृति के रुप में।

60. प्राणकोश :- प्राण सूत्र - रचनातत्व - पुष्टितत्व का संयुक्त रुप में रचित रचना और श्वसन-प्रश्वसन सहित रचना विधि सहज रचना प्रवृत्ति सम्पन्न इकाई।

61. पदार्थावस्था :- पद भेद से अर्थ भेद प्रगट करने वाला।

62. प्राणपद चक्र :- पदार्थावस्था से प्राणावस्था। प्राणावस्था से पदार्थावस्था में परिणितीयाँ।

63. प्रलोभन :- शब्द-स्पर्श-रुप-रस-गंध इंद्रियों के अनुकूल के प्रति विवश होना।

फ

64. फल :- योजना के क्रियान्वयन से जो उपलब्धियाँ स्पष्ट हुई।

65. प्रणेता :- प्रेरणा पाने का स्त्रोत देने वाला। परिपूर्ण रुप में स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य के रुप में स्पष्ट करना।

ब

66. ब्रह्म :- व्यापक वस्तु का नाम।

67. बंधन :- भ्रम, अतिव्याप्ति, अनाव्याप्ति, अव्याप्ति दोष ।

भ

68. भागीदारी :- फल-परिणाम को स्वीकारने के लिए किया गया क्रियाकलाप।

69. भय :- जीव चेतना वश संबंधों में विश्वास नहीं हो पाना और प्रमाणित नहीं हो पाना। अपेक्षा बना रहना।

70. भोगोन्माद :- शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गंध इंद्रियों में अनुकूलता करने में प्रवृत्ति और विवशता

71. भ्रांतिपद :- जीवों के समान जीते हुए मानव भ्रमित मानव पद में होना एवं भ्रमित मानव पद से पुनः जीव चेतना पद में होने का चक्र जीवावस्था से भ्रांत मानव रुप में होना और भ्रांत मानव जीव रुप में होने की आवर्तन क्रिया

72. भूखा परमाणु :- तृप्त परमाणु में जितने संख्यात्मक अंशों का रहना है उससे कम रहना।

73. भौतिक वस्तु :- परमाणु अणु रचित स्वरुप में वर्तमान।

म

74. मानव :- मनाकार को साकार करने वाला मनः स्वस्थता को प्रमाणित करने वाला।

75. मानवीयतापूर्ण आचरण :- मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहज प्रमाण परंपरा।

76. मध्यस्थ दर्शन :- होने में, से, के लिए निरंतरता सहज सूत्र व्याख्या ।

77. मोक्ष :- भ्रम मुक्ति, जागृति।

78. मानव मूल्य :- धीरता दया
वीरता कृपा
उदारता करुणा।

79. मूल्य शिक्षा :- जीवन मूल्य - मानवमूल्य - स्थापित मूल्य-शिष्ट मूल्य उपयोगिता मूल्य-कला मूल्यों का कर्माभ्यास व्यवहाराभ्यास कराने वाला शिक्षा कार्यक्रम।

य, र

80. योजना :- योग संयोग से वांछित उपलब्धि के लिए निर्णय करना

81. रहस्य :- होने का एहसास होते हुए समझ ना हो पाना, स्पष्ट ना हो पाना

82. रासायनिक वस्तु :- यौगिक क्रियापूर्वक भौतिक आचरण से भिन्न आचरण में वर्तमान होना

(जैसा पानी :- एक जलाने वाला एक जलने वाला योग होने से प्यास बुझाने वाली वस्तु)

83. राष्ट्र :- धरती सहज अखण्ड सूत्र व्याख्या।

84. राष्ट्रीयता :- अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या।

85. राष्ट्रीय चरित्र :- जागृत मानव परंपरा सहज रूप में धरती पर अखण्ड समाज रुप में समाधान समृद्धि अभय सह अस्तित्व प्रमाण परंपरा रुप में वैभवित होना

86. रचना :- धरती जैसा बड़े रचना में ही संपूर्ण प्रकार से हरियाली जंगल झाड़ी पौधे वनस्पतियाँ, औषधियाँ बीजवृक्ष विधि से परंपरा रुप में सम्पन्न क्रियाकलाप और जीव व मानव शरीर रचनाएँ।

87. रसायन तंत्र :- धरती पर पानी संयोग होने से पानी में क्षार और अम्ल का संयोग से पुष्टि तत्व रचना तत्व प्रगट। इसी से उपजा हुआ अनेक रसायन तत्व का संयुक्त कार्यकलाप।

88. राक्षस मानव :- जीव चेतना क्रम में क्रूरता पूर्वक जीने वाला

ल

89. लाभोन्माद :- कम देकर ज्यादा लेने का दुष्ट प्रवृत्ति और कार्य

व

90. विचार :- क्रियान्वयन में तर्क संगत निश्चयनों की स्वीकृति

91. वाद :- विश्लेषण कारण गुण सम्मत युक्त गणितात्मक विधि से प्रमाण और वर्तमान।

92. वर्ण :- जो जिस अवस्था की चेतना विधि से सम्पन्न है वही उसका वर्ण (जीव चेतना - मानव चेतना-देव चेतना-दिव्य चेतना)।

93. विकल्प :- परंपरा सहज गति में प्राप्त समस्याओं का समाधान।

94. व्यापक :- सर्वत्र विद्यमान - जड़ चैतन्य प्रकृत्ति में से के लिए प्राप्त सत्ता। जड़ प्रकृति में साम्य ऊर्जा सम्पन्नता और चैतन्य प्रकृति में संवेदनशीलता और संज्ञानीयता।

95. वर्तमान :- वर्तते रहना। स्थिति गति रुप में होते रहना।

96. व्यवहाराभ्यास :- संबंधों के साथ समाधान, समृद्धि पूर्वक मूल्य चरित्र नैतिकता सहित जीने का अभ्यास।

97. विद्वता :- स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य सहज अनुभव प्रमाण। ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता वर्तमान प्रमाण।

98. वस्तु :- वास्तविकता प्रगट रहना।

(होना रहना-होने रहने की महिमा उपयोगिता-पूरकता सहज प्रमाण)

99. व्यवहारवाद :- संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभयतृप्ति, स्वधन स्वनारी, स्वपुरुष दयापूर्ण कार्य व्यवहार तन-मन-धन रुपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा संबंधी तर्क प्रयोजन सहित क्रियान्वयन के लिए

आवश्यक अध्ययन और वार्तालाप।

100. वस्तु स्थिति सत्य :- देश काल दिशा।

वस्तुगत सत्य :- रुप गुण स्वभाव धर्म

स

101. संबंध :- (i) शरीर संबंध (v) उत्पादन संबंध
(ii) मानव संबंध (vi) विनिमय संबंध
(iii) शिक्षा संबंध (vii) नैसर्गिक संबंध
(iv) व्यवस्था संबंध।

102. स्थिति सत्य :- सत्ता में संपृक्त प्रकृति।

103. समझदारी :- ज्ञान विवेक विज्ञान।

104. समर्पण :- लेने की इच्छा से मुक्त प्रदान क्रिया।

105. सभ्यता :- विधि व्यवस्था में भागीदारी, व्यवस्था के अर्थ में सूत्र व्याख्या।

106. संस्कृति :- पूर्णता के अर्थ में किया गया क्रिया कलाप, कार्य व्यवहार अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन।

107. समृद्धि :- परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन।

108. समाधान :- समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी-भागीदारी समझदारी के अनुरूप फल परिणाम समझदारी सम्पन्न होना।

109. स्थापित मूल्य :- 1. विश्वास 6. श्रद्धा
2. सम्मान 7. ममता
3. स्नेह 8. वात्सल्य
4. कृतज्ञता 9. प्रेम
5. गौरव।

110. संपृक्त :- व्यापक पारगामी पारदर्शी सत्ता में जड़-चैतन्य प्रकृति डूबा - भीगा - घिरा। पूर्णता के अर्थ में, संपूर्णता के अर्थ में होना।

पूर्णता - गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता आचरण पूर्णता, सम्पूर्णता = इकाई + वातावरण है।

111. सार्वभौम व्याख्या :- दस सोपानीय परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था जिसमें बिना धन व्यय के जनप्रतिनिधि सुलभ होना। सभी प्रतिनिधि समझदारी समृद्धि से सम्पन्न होना। समझदारी सम्पन्न समृद्धि सहित परिवार का प्रतिनिधि होना एवं मानवीय शिक्षा संस्कार, न्याय सुरक्षा संस्कार, उत्पादन कार्य संस्कार, विनिमय कार्य संस्कार, स्वास्थ्य संयम संस्कार, कार्य में भागीदारी सहज परिवार प्रतिनिधि निर्वाचित परंपरा रुप में वर्तमान होना।

112. सहअस्तित्ववाद :- सत्ता में सम्पृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति सहज नित्य प्रभाव गतिविधि वर्तमान।

113. सत्यापन :- स्वयं में से के लिए यथास्थिति सहज वर्णन।

114. संयम :- समझदारी ईमानदारी जिम्मेदारी भागीदारी का प्रमाण परंपरा।

115. समाधि :- ''स्व'' होने की स्वीकृत व आशा विचार इच्छा चुप होने का दृष्टा होने रूप में स्वीकृति।

116. साधना :- साध्य के लिए किये गये प्रयास सहज क्रियाकलाप।

117. सत्य :- सत्ता में संपृक्त प्रकृति = व्यापक रूपी सत्ता वस्तु में संपृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति स्थिति सत्य - वस्तुस्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य।

118. संतुलन :- पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था में परस्पर पूरकता - उपयोगिता।

119. सह-अस्तित्व :- सत्ता में संपृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति।

120. सह-अस्तित्व में विकास क्रम :- परमाणु में अनेक अंशों का प्रस्थापन विस्थापन होना।

121. सह अस्तित्व में विकास :- परमाणु में गठनपूर्णता।

122. सहअस्तित्व में जागृतिक्रम :- शरीर एवं जीवन सहित जीता हुआ मानव।

123. सहअस्तित्व में जागृति :- सत्ता में संपृक्त प्रकृति सहज ज्ञानावस्था में गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता सहज प्रमाण परंपरा है।

124. सहअस्तित्व में जागृति सहज निरंतरता :-

- मानव परंपरा में क्रियापूर्णता - आचरणपूर्णता सहज निरंतरता।
- समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण एवं उसकी निरंतरता।
- अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या उसकी निरंतरता

125. शास्त्र :- कायिक-मानसिक-वाचिक, कृत-कारित-अनुमोदित भेदों में एक सूत्रात्मकता (एक से अधिक कड़ियाँ)।

126. शिक्षा-संस्कार :- ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता।

127. शिक्षण :- तकनीकी , उत्पादन के लिए आवश्यक कारीगरी का अभ्यास।

128. श्रम :- शरीर और जीवन के संयुक्त रुप में जीता हुआ मानव कुशलता निपुणता पाण्डित्य पूर्वक उपयोगिता मूल्य, कला मूल्य को प्राकृतिक ऐश्वर्य पर स्थापित करना।

ज्ञ

129. ज्ञान :- सहअस्तित्व रूपी ज्ञान, जीवन ज्ञान व आचरण ज्ञान।

130. ज्ञाता :- जीवन समझ में आना, प्रमाणित होना।

131. ज्ञानावस्था :- जीव चेतना से श्रेष्ठ मानव चेतना। मानव चेतना से श्रेष्ठतर देव चेतना। देव चेतना से श्रेष्ठतम दिव्य चेतना सहज प्रमाण परंपरा है।

त

132. तृप्त परमाणु :- (गठनपूर्ण परमाणु) :- परिणाम का अमरत्व सम्पन्न क्रियापूर्णता-आचरणपूर्णता के लिए तत्पर होने वाला जीवन रूपी परमाणु।

।। नित्यम यातु शुभोदयम् ।।

अनुक्रमणिका

	प्रस्तावना	पृष्ठ
भाग-1	पूर्ववर्ती विचार परंपरा, संविधानों की मान्यता प्रक्रिया एवं समीक्षा	1-6
भाग-2	मानवीय संविधान परिचय एवं परिभाषा खंड	7-22
भाग-3	सहअस्तित्व सूत्र व्याख्या	23-30
भाग-4	संविधान, विधान, विधि, न्याय, आचरण सूत्र व्यवस्था, स्वराज्य	31-49
भाग-5	जागृत मानव	50-64
भाग-6	मौलिक अधिकार	65-97
भाग-7	व्यवस्था	98-162
भाग-8	ग्राम/मोहल्ला व्यवस्था	163-192
भाग-9	कार्यक्रम सत्यापन घोषणा	193-215
भाग-10	स्वराज्य व्यवस्था	216-225
भाग-11	हर व्यक्ति में परीक्षण सूत्र	226-237
भाग-12	मानव चेतना सहज आचरण सूत्र	238-304

मानव सुखी होना रहना चाहता है। सुखी होने का विधान :- रूप के साथ सच्चरित्र, नैतिकता मूल्य का प्रकाशन, बल के साथ दया सहज प्रणाली प्रकाशन, धन के साथ उदारता का प्रकाशन, पद के साथ न्याय सहज विधान व प्रमाण, बुद्धि के साथ ज्ञान सम्मत विवेक समाधान, सत्य सहज सहअस्तित्व में अनुभव सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन।

प्रस्तावना

हर नर-नारी मानवीयतापूर्ण आचरण में मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहज निर्वाह सहित मूल्याँकन पूर्वक सम्पूर्ण आयाम, कोण, परिपेक्ष्य और दिशा सम्पूर्ण देशकाल में समाधान समृद्धि पूर्वक सुरक्षित होने रहने, अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में प्रमाणित होने, करने-कराने-करने हेतु सहमत होने के लिए यह न्याय सम्मत, समाधान सहज, सहअस्तित्व सहज परम सत्य पूर्ण आचार संहिता मानव में-से-के लिये अर्पित है।

ए. नागराज
श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदांचल
अमरकंटक, जिला-अनूपपुर (म.प्र.)

समुदाय परंपरा में अपराधी को न्यायिक बनाने की कोई व्यवस्था नहीं है। गलती करने वालो को सही करने की दिशा देने की कोई व्यवस्था नहीं है। इसके इसके विपरीत मानव में सभी मानव समझदार होते है तब गलती और अपराध करेगें ही नहीं, गलती अपराध मुक्त होना ही समाधान सम्पन्नता है। समाधान सम्पन्न मानसिकता से हर नर-नारी परस्परता मे न्याय ही करता है।

प्रस्तावना में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा

1. मानव :-

1. मानव चेतना पूर्वक मनाकार को साकार करने वाला, मन: स्वस्थता प्रमाणित करने वाला है।
2. हर मानव जड़-चैतन्य का संयुक्त साकार रूप है।
3. सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन-जागृति क्रम, रासायनिक और भौतिक रचना-विरचना का दृष्टा है। हर समझदार मानव धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा पूर्वक है।

2. मानवत्व :-

1. मानवीय स्वभाव सर्वतोमुखी समाधान सहज अभिव्यक्ति-संप्रेषणा और प्रकाशन।
2. मानवीय मूल्यों चरित्र, नैतिकता को जानने-मानने-पहचानने-निर्वाह करने की क्रिया।
3. सहअस्तित्व में जागृत मानव अनुभव मूलक पद्धति से विचार शैली और जीने की कला सहज प्रमाण।
4. हर नर-नारी व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलंबी, विचार में समाधानित, अनुभव में प्रमाणिकता को अभिव्यक्त, संप्रेषित, प्रमाणित करने की क्रिया।

3. मानवीयता पूर्ण :-

1. जागृत मानव अपने गुण-स्वभाव-धर्म सहज समझदारी सहित सहअस्तित्व में, से, के लिए प्रमाण।
2. ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता सहित कार्य-व्यवहार-व्यवस्था में भागीदारी।

4. मूल्य :-

1. मौलिकता; मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी मानव में ही प्रगट होना।
2. प्रत्येक इकाई में निहित मौलिकता।
3. जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य, वस्तु मूल्य (30 कुल मूल्य) उपयोगिता एवं कला की सिद्ध मात्रा, उत्पादित वस्तु मूल्य, स्थापित संबंधों में निहित स्थापित मूल्य, जिसका अनुभव में, से, के लिए अभिव्यक्ति संप्रेषणा से प्रकाशित होने वाले शिष्ट मूल्य।

5. चरित्र :-

स्वधन, स्वनारी-स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार विन्यास।

6. नैतिकता :-

तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षा एवं संसाधनों का उत्पादन ।

7. सहज :-

1. स्वभाव गति के रूप में।
2. यथास्थिति के रूप में।

8. सहित :-

स्वभाव गति सहित, गुण सहित, स्वभाव-धर्म सहित, अवस्था भेदों सहित।

9. निर्वाह :-

जागृत मानव परस्परता में स्थापित मूल्यों का अनुभवपूर्ण व्यवहार करना ।

10. मूल्यांकन :-

दृष्टापद एवं समझदारी सहज विधि से मानव स्वयं का और अन्य का गुण-स्वभाव-धर्म सहअस्तित्व सहज उपयोगिता पूरकता के आधार पर मूल्यांकन तथा मानवेत्तर प्रकृति सहज वस्तुओं का मात्रा और गति के आधार पर मात्रा और गुणों का आंकलन।

11. सम्पूर्ण अस्तित्व :-

1. सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति सम्पूर्ण अस्तित्व।
2. रूप-गुण-स्वभाव-धर्म सम्पन्न अविभाज्य वर्तमान रूप में इकाई सम्पूर्ण, हर वस्तु अपना आकार-आयतन-घन के रूप में वातावरण सहित सम्पूर्ण और गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता।

12. आयाम :-

रूप, गुण, स्वभाव, धर्म।

13. कोण :-

मानव परंपरा में ही जीव चेतना, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना सहज दृष्टिकोण-प्रमाण वर्तमान। प्रत्येक एक अनंत कोण सम्पन्न।

14. परिप्रेक्ष्य :-

1. व्यक्ति, परिवार, राष्ट्र, अखण्ड समाज एवं दस सोपानीय सार्वभौम व्यवस्था।
2. व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, अन्तर्राष्ट्र।

15. दिशा :-

1. ह्रास-विकास। हर कोण अपने में दिशा।
2. परस्पर इकाईयों अथवा ध्रुवों के आधार पर दृष्ट होने वाली कोणों को दिया गया नामकरण स्थिति-गति सहित दिशा।
3. विकास की ओर गति।
4. गन्तव्य की ओर गति।

16. देश :-

1. रचना विस्तार रचना सहज अवधि व विस्तार।
2. धरती स्वयं में सीमित रचना विस्तार क्षेत्र।

17. काल :-

क्रिया की अवधि।

18. सुरक्षित :-

रूप-गुण-स्वभाव-धर्म सहज वर्तमान पूरकता सदुपयोग निरन्तरता।

19. अखण्ड :-

प्रत्येक पद स्थिति-गति में एकात्मकता, एकरूपता, सामरस्यता ।

20. अखण्ड समाज :-

1. सह-अस्तित्व में समाधान, समृद्धि, अभय सम्पन्न क्रिया व आचरण पूर्णता सहित सह अस्तित्व सहज परंपरा।
2. धार्मिक (सामाजिक), आर्थिक, राजनीतिक क्रिया का अविभाज्य रूप में मानव परंपरा।
3. मानव जाति में एक समान होने का ज्ञान, स्वीकृति व प्रमाण परम्परा ।

21. सार्वभौम :-

अस्तित्व सहज, विकास सहज, जीवन सहज, जीवन जागृति सहज, रासायनिक और भौतिक रचना सहज प्रक्रिया एवं निरन्तरता ।

22. व्यवस्था :-

1. विश्वास पूर्वक अस्तित्व में वर्तमान होने में दृढ़ता व निश्चयता का अभिव्यक्ति-संप्रेषणा-प्रकाशन।
2. सर्वतोमुखी समाधान पूर्वक मानवत्व सहज अभिव्यक्ति-सम्प्रेषणा को प्रमाणित करना।
3. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी पूर्वक विधिवत् समाधान,समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में, से, के लिए प्रमाणित होना।

23. प्रमाण :-

1. जागृत मानव अपने कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित विधियों से अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन में समाधान रूप में व्यक्त होना।

24. प्रमाणित होना :-

प्रमाणित होने के रूप में, करने के रूप में, कराने के रूप में और करने के लिए सहमत होने के रूप में।

25. न्याय :-

1. मानवीयता के पोषण, संवर्धन एवं मूल्यांकन के लिए सम्पादित क्रिया कलाप।
2. सम्बन्धों व मूल्यों की पहचान व निर्वाह क्रिया।

26. समाधान :-

1. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी सहज फल-परिणाम समझदारी के अनुरूप होना ।
2. समझदारी पूर्ण होना।
3. जानना, मानना, पहचानना व निर्वाह करने की क्रिया।
4. क्यों और कैसे का उत्तर।
5. समस्याओं का निराकरण, विवेक सम्मत विज्ञान, विज्ञान सम्मत विवेकपूर्ण प्रणाली से संपन्न करने की क्रिया।

27. सत्य :-

1. सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति रूप में सहअस्तित्व नित्य वर्तमान।
2. जो तीनों कालों में एक सा भासमान, विद्यमान एवं अनुभव गम्य है। यही सत्ता पारगामी, पारदर्शी है, यही परस्परता में अच्छी दूरी है।
3. मानव परंपरा में स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य रूप में सहअस्तित्व नित्य वर्तमान होना अनुभवमूलक विधि से समझ में आता है।
4. अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन-जागृति, रासायनिक-भौतिक रचना-विरचना के प्रति प्रामाणिकता का नित्य वर्तमान।
5. व्यापक वस्तु तीनों कालों में एक सा विद्यमान, भासमान और सुखप्रद रूप में स्थिति पूर्ण है। इसी में सम्पूर्ण रासायनिक, भौतिक क्रिया श्रम, गति, परिणाम, परंपरा रूप में निर्भ्रमता अथवा क्रिया व आचरणपूर्णता में जागृति पूर्ण वैभव परंपरा रूप में वर्तमान होना है। मौलिकता है।

28. आचरण :-

1. स्वधन, स्वनारी-स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार विन्यास
2. संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति, संतुलन
3. तन, मन, धन रूपी अर्थ की सुरक्षा और सदुपयोग
4. मूल्य, चरित्र, नैतिकता का अविभाज्य वर्तमान रूप में किया गया संपूर्ण कार्य, व्यवहार, विचार विन्यास

29. आचरण संहिता :-

मानव में, से, के लिए अखण्ड समाज -सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सहज आचरण सूत्र व्याख्या (व्यवहारिक)।

30. तात्विक परिभाषा :-

सहअस्तित्व में विकासक्रम, विकास, जागृतिक्रम, जागृति विधि से निरन्तरता स्पष्ट होने में, से, के लिए किया गया क्रियाकलाप।

31. बौद्धिक परिभाषा :-

तर्कसंगत विधि से प्रयोजन स्पष्ट होने में, से, के लिए किये गये कार्यकलाप।

32. व्यवहारिक परिभाषा :-

कायिक-वाचिक-मानसिक और कृत-कारित-अनुमोदित भेदों से मानवत्व स्पष्ट होने में, से, के लिए किया गया व्यवहार-कार्य।

भाग-एक

पूर्ववर्ती विचार परम्परा, संविधानों की मान्यता प्रक्रिया एवं समीक्षा

सुदूर विगत से इक्कीसवीं शताब्दी तक हम मानव अपने में देख रहे है हर समुदाय में अन्तर्विरोध और परस्पर समुदायो में विरोध है। विरोध समाज का सूत्र नहीं है व्याख्या नहीं है। इसी लिए समुदाय संविधान सार्वभौम होना संभव नहीं हुआ इसलिए मानवीय संविधान को पहचानने की आवश्यकता आ चुकी है क्योंकि धरती बीमार हो गयी।

पूर्ववर्ती विचार परम्परा,संविधानों की मान्यता प्रक्रिया एवं समीक्षा

1.1 पूर्ववर्ती मान्यतायें

(क) रहस्यमय ईश्वर कल्याण तथा मोक्ष-कारक, जीव जगत का कर्ता-धर्ता, परम और सर्वव्यापी है।

(ख) ईश्वर को मानते हुए ईश्वर को जानना संभव नहीं हुआ। फलत: अध्ययन गम्य न होने के कारण प्रश्न चिन्ह बने रहे।

(ग) रहस्यमय ईश्वर वाणी, महापुरुषों का वाणी अथवा आकाशवाणी के नाम पर प्रस्तुत पावन वचनों वाले वाङ्गमय, सर्वोपरि ग्रंथ मान लिए गए। फलस्वरूप, वे संविधान के आधार बने अथवा उन्हें संविधान मान लिया गया। ऐसी रहस्यमय ईश्वरवाणी, आकाशवाणी आदि को विभिन्न देश काल में विभिन्न समुदायों ने उल्लेख किया। फलत: परस्पर (विरोधी, विरोधाभासी) ईश्वरवाणी में प्रश्न चिन्ह बना रहा और मानवकुल सोचते ही रहा।

(घ) ईश्वर प्रतिनिधि, राजगुरू, राजा, देवदूत अथवा ईश्वर का अवतार संदेश वाहक गलती नहीं करते हैं, ये सब विशेष हैं, ऐसा मान लिया गया। इनको शत्रुनाशक, दु:खहारक, सर्व सौभाग्यदायी मान लिया गया। मानने का तरीका भी विभिन्न समुदायों में विभिन्न प्रकार से रहा। विभिन्न समुदायों में विभिन्न प्रकार से पनपी हुई मान्यता एवं आचरण (रूढ़ी) एक दूसरे के बीच दीवार बनता गया। इनके नाम से पाई गई वाणियों, कहे गए वचनों को वाङ्गमय के रूप में पुनीत माना, इससे वह संविधान का आधार हुआ। ऐसी मान्यताएं समुदायगत सीमा में स्वीकार हुईं। अन्य समुदायों में अस्वीकार हुईं। इस प्रकार अंतर्विरोध और प्रश्न चिन्ह बना।

(ङ) ईश्वर अवतारों को समुदायों ने विशेष मान लिया। तत्कालीन जन मानस उन्हें इस प्रकार से स्वीकारे हुए है कि सामान्य लोगों से जो परेशानी दूर नहीं हो पाई उसे(उन सभी असाध्य संकटों को) दूर कर दिया अथवा उन मानवों ने दूर कर दिया। ऐसे मानव को विभिन्न समुदायों ने विभिन्न संकटों के दूर होने के आधार पर उन्हें अवतार मान लिया। इस विधि से भी विभिन्न समुदायों में विभिन्न अवतारों को मानना और उनके प्रति दृढ़ता अथवा हठवादिता को स्थापित कर लेना और अन्य के प्रति शंका, विरोध, द्रोह, विद्रोह, घृणा, उपेक्षा, शोषण और युद्ध करने के क्रम में चले आए।

अवतारों, ईश्वर प्रतिनिधि अथवा महापुरुषों के नाम से जो कुछ भी वचन वाङ्गमय उपदेश प्राप्त हुआ है उसे उन-उन समुदायों ने संविधान मान लिया अथवा संविधान का आधार मान लिया। उल्लेखनीय बात यह है कि मूलत: सभी समुदाय अपने-अपने

संविधान को परम मानते हैं, साथ ही इसे ईश्वर-वचन मानते हैं। इसे हम स्पष्ट रूप में आज भी देख सकते हैं।

1.2 पूर्ववर्ती आधार

(क) आदिकाल से मानव, विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में जूझता हुआ, एक दूसरे को अथवा एक परिवार दूसरे परिवार को पहचानने के लिए नस्ल को आधार मान लिया। यह अधिकतर मुख मुद्रा पर मान लिया गया। जिससे अनेक समुदायों का अंतर्विरोध सहित पहचान हुआ।

(ख) पुन: विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर ही मानव शरीर का रंग गोरा, काला, भूरा आदि नामों से स्वीकारा गया। यह प्रधानत: चमड़े की रस क्रिया और भौगोलिक परिस्थितियों के संयोग से और वंशानुषंगीय विधि से होना पाया जाता है। इसी के आधार पर परस्पर पहचान निर्भर हुआ। इससे तीव्रतम अंतर्विरोध सहित अनेक समस्या और प्रश्न चिन्ह बनता ही गया। अपने परायों की दीवाल और दृढ़ हुई।

(ग) पूजा-पाठ, प्रार्थना, अभ्यास, आराधना व साधनाओं के आधार पर समुदायों को पहचानने का प्रयास किया गया। जिसमें अनेक मत, संप्रदाय, पंथ परंपराएं देखने को मिलीं। जाति, रंग, नस्ल, परंपराएं पहले से ही रही। इस प्रकार और भी समुदायों का उदय हुआ जिसमें अंतर्विरोध और सुदृढ़ हुआ। प्रश्न चिन्हों की संख्या बढ़ी। ये सब अपने-अपने आचरण परंपरा को दृढ़ता का रूप देने गए। इन सभी रूढ़ियों को अपने-अपने समुदाय सीमा में स्वीकार किया गया। इनके आदतों की विशेषताएं, हरेक मोड़ मुद्दे में टकराव एवं प्रश्न चिंह को बनाता गया। यह सब धार्मिक,

14_manviya_samvidhaan_sootravyakhya_2007

राजनैतिक स्थिति की सामान्य समीक्षा रही।

(घ) धन के आधार पर गरीबी-अमीरी के असमानता अथवा अधिक विपन्नता को दूर करने के आधार पर आर्थिक राजनीति को प्रयोग किया गया और इसे प्रभावशील बनाने की विभिन्न देशकाल में कोशिशें की गईं, अर्थात् आर्थिक असमानता और सांस्कृतिक विषमताओं को दूर करने के लिए अथक प्रयत्न किया गया। उल्लेखनीय बात यह है कि ऐसे भरपूर प्रयत्नों के उपरांत भी धार्मिक राजनीति पर्यन्त झेले गए सभी विभिन्न समुदाय चेतना यथावत् बना हुआ देखा जाता है, और इसी के साथ आर्थिक विषमता के अनगिनत प्रश्न उलझते ही गए। इस प्रकार आर्थिक राजनीति धन के आधार पर ही मानव को दास बनाने के कार्य में व्यस्त हो गयी।

1.3 पूर्ववर्ती विधि

(क) समर और दण्डनीति केंद्रित शासन सर्वोपरि विधि माना गया और लोक रुचि का प्रोत्साहन कल्पना के आधार पर अनेक कार्यक्रम, विभिन्न राज राष्ट्रों में प्रस्तुत किए गये जिनकी कार्य शैलियों को साम, दाम, भेद, दण्ड के रूप में देखा गया। इन्हीं के सहारे पद, भोग लिप्सा एवं संग्रह-सुविधा सहित द्रोह-विद्रोह-शोषण-युद्ध के रूप में एक दूसरे के समक्ष परस्पर समुदायों ने अपने को प्रस्तुत किया। यह भी परिलक्षित हुआ कि प्रत्येक समुदाय अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए किसी भी अनीति को नीति की पोषाक पहना कर उपयोग करते आया। प्रत्येक शासन उन-उन समुदाय की जनता को सुख-शांति और यथास्थिति को संरक्षण करने का आश्वासन देते हुए, विश्वास दिलाते हुए असफल हो चुके या

होने वाले हैं। अर्थात् संपूर्ण राज्य-राष्ट्र अपनी सीमाओं में अथवा भू-खण्ड में निवास करने वाले मानव समुदाय में अंतर्विरोध को तथा पड़ोसी देशों के साथ अंतर्विरोध को दूर करने में समर्थ नहीं रहे, आश्वासन अवश्य ही देते रहे।

(ख) शक्ति केन्द्रित शासन प्रणाली में दण्ड प्रक्रिया यंत्रणा, अर्थदण्ड और प्राण दण्ड के रूपों में होना देखा गया। सभी शासन प्रणालियों को सदा से ही भय और प्रलोभन के चक्र में घूमते हुए, पलते हुए देखा गया। विभिन्न समुदायों ने अपने-अपने आचरणों को श्रेष्ठ माना; साथ ही वे अन्य लोगों के साथ अंतर्विरोध के साथ द्रोह, विद्रोह, शोषण और युद्ध से प्रभाावित रहे आए। फलस्वरूप मानव समुदाय की परस्परता में अंतर्विरोध रहा और प्रत्येक समुदाय में भी अंतर्विरोध प्रश्न चिन्ह बनकर खड़े रहा।

1.4 पूर्ववर्ती दर्शन

(क) रहस्यमूलक ईश्वर केन्द्रित चिंतन ज्ञान बनाम आदर्शवाद। इसी के साथ आगम और निगम प्रबंध मानव परंपरा में स्थापित हुआ है।

(ख) अस्थिरता-अनिश्चयता मूलक तर्क सम्मत वस्तु केन्द्रित चिंतन ज्ञान बनाम विज्ञान। इसके समर्थन में तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी प्रयोग विधियाँ स्पष्ट हो चुकी है।

1.5 पूर्ववर्ती विचारों के रूप में

(क) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद।

(ख) संघर्षात्मक जनवाद।

(ग) रहस्यात्मक अध्यात्मवाद। अधिदैवीवाद व अधिभौतिक वाद

14 manviya samvidhaan sootravyakhya 2007 c

1.6 पूर्ववर्ती शास्त्रों के रूप में

(क) लाभोन्मादी अर्थशास्त्र।

(ख) भोगोन्मादी समाजशास्त्र।

(ग) कामोन्मादी मनोविज्ञान।

1.7 पूर्ववर्ती योजनाएँ

(क) धर्मगद्दियों में पापियों को तारना।

(ख) स्वार्थियों को परमार्थी बनाना।

(ग) अज्ञानियों को ज्ञानी बनाना।

(घ) राजगद्दियों में सामुदायिक विकास योजना, कार्य योजना।

(ङ) ग्राम विकास, खंड क्षेत्र विकास, सर्वजन सुविधा के लिए रोजगार योजना, कार्य योजनाएँ हैं।

(च) रोजगार योजनाएँ स्वावलंबन के उद्देश्य से स्थापित हुई हैं। जिससे आर्थिक विषमता दूर होगी, ऐसी अभीप्सा समाई हुई है। आदर्शों को ध्यान में रखते हुए सभी समुदायों का उत्थान, सुविधा भोग, अति भोग, बहुभोग में रुचि निर्मित करने का प्रचार तंत्र सहित कार्यक्रमों को देखा गया है। फलस्वरूप गलती और अपराध बढ़े जबकि कामना है परस्पर भाईचारा में सुखपूर्वक रहे। इसके लिए मानव जीव चेतना से मानव चेतना में संक्रमित होना ही एकमात्र उपाय है। मानव कुल में सार्वभौम व्यवस्था, अखंड समाज में भागीदारी पूर्वक समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व के प्रति जागृति और प्रवृति सहज होना उपाय है।

भाग-दो

मानवीय संविधान परिचय एवं परिभाषा खंड

मानवीयता पूर्ण आचरण को हर विधा में पहचानने की विधि सहित सहज विधान मानवीय संविधान है। मानव परम्परा के लिए आचार संहिता की आवश्यकता बनी ही रहती है। मानवीय आचार संहिता को क्रम से स्पष्ट कर लेना ही अपने आप में जन मानस के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

मानवीय संविधान परिचय

2.1 विकल्पात्मक अवधारणा

(क) सत्ता में संपृक्त प्रकृति, अस्तित्व सर्वस्व, नित्य वर्तमान है।

(ख) अस्तित्व ही सह-अस्तित्व के रूप में नित्य वर्तमान है। इसका मूल रूप सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति ही है। यह न तो घटता है और न बढ़ता है। हम मानव जीव जगत का उत्पत्ति-उद्भव विभव प्रलय के चक्कर में फंसे है जबकि नियति क्रम से पदार्थ संसार में जितने प्रकार के परमाणुओं आवश्यक रहता है उतने से समृद्ध होने के उपरान्त - यौगिक विधि पूर्वक वन-वनस्पतियों का रचना जीव शरीर, मानव शरीर रचना व परंपरा के आधार पर चारों अवस्थाएं - एक-दूसरे के साथ पूरकता उपयोगिता विधि से प्रगटन सहित परंपरा स्पष्ट है।

(ग) सह-अस्तित्व में प्रत्येक एक अपने 'त्व' सहित व्यवस्था है और समग्र व्यवस्था में भागीदारी निर्वाह करते हुए पूरकता-उपयोगिता

विधि से होना देखने को मिलता है। देखने का मतलब समझने से है। यह भ्रमित मानव के अतिरिक्त संपूर्ण प्रकृति यथा जीव, वनस्पति तथा पदार्थ रूपों में स्पष्ट है। प्रत्येक मानव भी व्यवस्था में होना-रहना चाहता है एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित करने के लिए उत्सुक है। यह जागृत परंपरा में ही सफल होता है ना कि जीव चेतना में।

(घ) प्रत्येक मानव जीवन और शरीर के संयुक्त साकार रूप में वैभव व परंपरा में है ही।

(ङ) जानना-मानना ही समझदारी, पहचानना-निर्वाह करना ही ईमानदारी है। ईमानदारी पूर्वक जिम्मेदारी भागीदारी सम्पन्न होता है। यह जीवन सहज वैभव है। जीने की कला के रूप में अखंड समाज और सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी निर्वाह करना ही मानव चेतना मूलक विधि है, आचरण है।

(च) मानव जाति एक-कर्म (उत्पादन रूप में) अनेक।

(छ) मानव धर्म (सर्वतोमुखी समाधान सार्वभौम व्यवस्था व सुख रूप में) एक, व्यक्तिवाद समुदायवाद के रूप में अनेक।

(ज) ईश्वर सत्ता सहज रूप में (व्यापक, पारगामी, पारदर्शी रूप में) एक, देवी-देवता अनेक।

(झ) अखण्ड राष्ट्र रूप में धरती एक, राज्य अनेक।

2.2 मानवीय संविधान

परिचय

विधि विधान का संयुक्त रूप में संविधान विकसित चेतना सहज पारंगताधिकार ही विधि है।

समझदारी = विधि

आचरण = विधान

मानवीयता सहज साक्ष्य रूप में पूर्णता, स्वराज्य, स्वतंत्रता और उसकी निरंतरता को जानने, मानने, पहचानने व निर्वाह करने, कराने और करने योग्य मूल्य, चरित्र, नैतिकता रूपी विधान।

1. मानवीयता सहज जागृति व जागृति पूर्णता ही अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था पूर्वक परंपरा के रूप में अर्थात् पीढ़ी से पीढ़ी के रूप में निरंतरता को प्रमाणित करता है। यह करना, कराना, करने के लिए सहमत होना मानव में, से, के लिए मौलिक विधान है।

2. मानव परिभाषा के रूप में ''मनाकार को सामान्य आकाँक्षा व महत्वाकाँक्षा संबंधी वस्तुओं और उपकरणों के रूप में, तन-मन-धन सहित, श्रम नियोजन पूर्वक साकार करने वाला, मन: स्वस्थता अर्थात् सुख, शांति, संतोष, आनंद सहज प्रमाण सहित परंपरा है।'' इसे प्रमाणित करना, कराना, करने के लिए सहमत होना मानव परंपरा में, से, के लिए मौलिक विधान है।

3. मानव अपनी परिभाषा के अनुरूप बौद्धिक समाधान, भौतिक समृद्धि सहित अभय, सहअस्तित्व में अनुभव सहज स्रोत व प्रमाण

है। यह मौलिक विधान है।

4. मानवीयतापूर्ण आचरण जो स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार, संबंधों सहज पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्याँकन स्वीकृति, उभयतृप्ति व संतुलन तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा के रूप में ही मानवीयता सहज व्याख्या है। यह मानव परंपरा में मौलिक विधान है।

5. ''मानवीयता पूर्ण आचरण सहजता, मानव में स्वभाव गति है।'' मानवीयतापूर्ण आचरण मूल्य, चरित्र, नैतिकता का अविभाज्य अभिव्यक्ति, संप्रेषणा व प्रकाशन है। यह मौलिक विधान है।

6. ''जागृति मानव सहज स्वीकृति है।'' मानव सहज कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता का तृप्ति बिंदु स्वानुशासन है। यह परम जागृति के रूप में प्रमाणित होता है। यह मानव परंपरा में मौलिक विधान है।

7. ''सार्वभौम व्यवस्था व अखंड समाज, मानव सहज वैभव है।'' मानव सहज कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता का तृप्ति बिंदु दश सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित होता है । यह मौलिक विधान है।

8. ''मानवीय-लक्ष्य परम जागृति के रूप में सार्वभौम है। मानवीयतापूर्ण अभिव्यक्ति, प्रकाशन सहज संप्रेषणाएँ, संपूर्ण आयाम, कोण, दिशा, परिप्रेक्ष्यों में समाधान, समृद्धि, अभय व सह अस्तित्व में अनुभव रूपी वैभव को प्रमाणित करता है। यह

मौलिक विधान है।

9. ''जागृत मानव बहु-आयामी अभिव्यक्ति है।'' मानव सहज परंपरा में अनुसंधान, अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन मानवीयता पूर्ण अध्ययन, शिक्षा व संस्कार, आचरण व व्यवहार, व्यवस्था, संस्कृति-सभ्यता और संविधान ही सहज प्रमाण है। यही मौलिक विधान है।

नित्यम् यातु शुभोदयम् !

2.3 परिभाषा खंड

(1) अखण्ड समाज = जागृत मानव परंपरा

1. सह-अस्तित्व में समाधान, समृद्धि, अभय सम्पन्न क्रिया व आचरण पूर्णता सहज परंपरा।
2. धार्मिक (सामाजिक), आर्थिक, राज्यनीतिक क्रिया का अविभाज्य रूप में जागृत मानव परंपरा।

(2) आयाम = प्रत्येक एक में चार आयाम-रूप, गुण, स्वभाव, धर्म। मानव में चार आयाम - उत्पादन, व्यवहार, विचार, अनुभव।

(3) काल = क्रिया की अवधि।

(4) कोण (दृष्टिकोण) = जीव चेतना, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के आधार पर दृष्टिकोण। निश्चित बिन्दु से अनंत कोण।

(5) चरित्र

1. स्वधन, स्वनारी-स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार।
2. स्वयं में विश्वास चरितार्थतापूर्वक, श्रेष्ठता का सम्मान करने चरितार्थतापूर्वक, प्रतिभा में विश्वास चरितार्थतापूर्वक, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन चरितार्थतापूर्वक, व्यवहार में सामाजिक रहते हुए व्यवसाय में स्वावलंबी रहने में चरितार्थतापूर्वक प्रमाण।

   प्रतिभा = ज्ञान, विवेक, विज्ञान

   व्यक्तित्व = मानवीयता, देव मानवीयता, दिव्य मानवीयता सहज रूप में।

(6) जागृत मानव

1. मानव चेतना सहज मूल्य, चरित्र, नैतिकता।
2. त्व सहित मानवीयता पूर्ण आचरण समेत व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी।
3. अतिव्यवाप्ति, अनाव्याप्ति, अव्याप्ति दोषों से मुक्ति।
4. क्रियापूर्णता अर्थात् सर्वतोमुखी समाधान परम्परा के रूप में वैभव और आचरण पूर्णता अर्थात् अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सहज परम्परा में भागीदारी सगित वैभव।

(7) जागृति

1. क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता (सजगता)।
2. भ्रम से मुक्ति।
3. भ्रममुक्त जीवन, जागृति परम सहज प्रकाशन।

(8) दिशा

1. ह्रास-विकास।
2. परस्पर इकाईयों अथवा ध्रुवों के आधार पर दृष्ट होने वाले कोणों को दिया गया नामकरण स्थिति, गति।
3. जागृति की ओर गति (क्रिया पूर्णता)।
4. गन्तव्य में गति (आचरण पूर्णता)।

(9) देश

1. रचना सहज अवधि = विस्तार।
2. धरती स्वयं में सीमित रचना।

(10) पूर्णता

1. परमाणु में गठनपूर्णता, जीवन में क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता = जीवन जागृति।
2. अमरत्व, विश्राम, गंतव्य = समाधान = विश्राम।

(11) प्रभुसत्ता

1. प्रबुद्धतापूर्ण सत्ता।
2. समझदारी सहित व्यवस्था।
3. प्रबुद्धतापूर्ण शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, आचरण-व्यवहार, उत्पादन, विनिमय, स्वास्थ्य-संयम व्यवस्था रूपी सत्ता (परंपरा)।
4. प्रामाणिकता व समाधान पूर्ण विचार, समाधान व न्यायपूर्ण व्यवहार, न्याय व नियम पूर्ण आचरण, नियम व नियंत्रणपूर्ण उत्पादन और उपयोगिता सहित पूरक विनिमय क्रियाओं

को करने, कराने और करने के लिए सहमत होने की प्रक्रिया।

(12) प्रबुद्धता (मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना में पारंगत)

1. ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता।
2. सतर्कता एवं सजगता, निपुणता, कुशलता एवं पाण्डित्य-पूर्ण व्यक्तित्व सहज प्रमाण।
3. मानव में निपुणता, कुशलता, पाण्डित्यपूर्ण कार्य-व्यवहार विन्यास ही नियम पूर्ण व्यवसाय, न्यायपूर्ण व्यवहार, समाधान पूर्ण विचार, प्रामाणिकता पूर्ण अनुभूतियों की अभिव्यक्ति, संप्रेषणा व प्रकाशन क्रिया।

(13) विधान प्रबुद्धता में

1. प्रबुद्धता ही विधि सूत्र है। मानव में प्रबुद्धता, परिवार में सम्प्रभुता (न्याय व समाधान सहज प्रमाण) एवं अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में प्रभुसत्ता अर्थात् प्रबुद्धता पूर्ण सत्ता प्रमाण है।
2. विधि सहज धारणा अर्थात् समझदारी पूर्वक किया गया व्यवहार, व्यवसाय आचरण और सुगम बनाने की प्रक्रिया।

(14) विधि

1. मानवीय संस्कृति-सभ्यता सहज नियम सहज आचरण सूत्र व्याख्या
2. नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन ही मानवीय संस्कृति

सहज आचरण-संहिता।

3. मानवीयता पूर्ण व्यवहार, आचरण, उत्पादन, विनिमय, मानवीय शिक्षा-संस्कार, तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षात्मक सूत्र और व्याख्या। विकास और जागृति, सतर्कता, सजगता, गुणात्मक विकास सहज प्रमाण में जीवन जागृति व जागृतिपूर्णता ही आचरणपूर्णता सहज सूत्र और व्याख्या है।

4. पूर्णता और उसकी निरंतरता के अर्थ में नियम, न्याय, धर्म और सत्य में अनुभव सहज जागृत मानव परंपरा में ही सूत्र और व्याख्या सम्मत प्रामाणिकता पूर्ण प्रक्रिया का प्रावधान।

(15) व्यवस्था

1. अनुभव-व्यवहार-प्रयोग प्रमाण सहित परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी।

2. वर्तमान में मानवत्व अर्थात् मानवीय आचरण, संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था सम्मत व्यवहार कार्य परंपरा।

3. विधि के अर्थ में नीति सहज निर्वाह परम्परा ही व्यवहार गति में स्थायित्व व निरंतरता और वर्तमान में विश्वास परम्परा।

(16) व्यवहार

1. मानव और मानवेत्तर प्रकृति सहज परस्परता में निहित संबंध व मूल्यों का नियम, नियंत्रण एवं संतुलन पूर्वक निर्वाह।

2. मानव की परस्परता में निहित मूल्यों का निर्वाह।

3. एक से अधिक मानव के एकत्रित होने पर या होने के लिए किया गया आदान-प्रदान।

4. सम्बन्धों में निहित स्थापित मूल्यों में अनुभव सहित शिष्टतापूर्ण पद्धति से सम्प्रेषणा व्यवसाय मूल्य पूरकता के अर्थ में उत्पादन, उपयोग, सदुपयोग एवं वितरण।

(17) व्यक्ति

1. व्यक्तित्व अर्थात् मानवीयतापूर्ण आचरण सहज अर्थ से किया गया आहार-विहार-व्यवहार सम्पन्न मानव।

2. मानव चेतना सम्पन्न आहार, विहार, व्यवहार, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन सहज प्रमाण सम्पन्न समझदार व्यक्ति होने का प्रमाण, जागृति सम्पन्न मानव।

(18) न्याय

1. मानवीयता में, से, के लिए पोषण, संवर्धन व्यवहार में प्रमाण एवं मूल्यांकन क्रियाकलाप।

2. सम्बन्धों में निहित मूल्यों सहज पहचान व निर्वाह सहज क्रिया।

(19) नैतिकता

1. नीति-त्रय का अनुसरण।

2. तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा।

(20) नियम

1. क्रियापूर्णता सहज आचरण सहित नियंत्रण संतुलित

क्रियाकलाप।

2. इकाइयों में, से, के लिए नियंत्रण क्रिया।

(21) नियंत्रण = मानव की परस्परता में न्यायपूर्ण व्यवहार।

(22) मानव

1. मनाकार को साकार करने वाला, मन:स्वस्थता के लिए आशावादी व प्रमाणित करने वाला।
2. जड़-चैतन्य का संयुक्त साकार रूप।
3. अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन-जागृति, रासायनिक और भौतिक रचना-विचरना का दृष्टा एवं जागृति सहज प्रमाण।

(23) मूल्य

1. मौलिकता (मानव में ही प्रगट होना आवश्यक)।
2. प्रत्येक इकाई में निहित मौलिकता। (मानव ही पहचानता है)।
3. जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य, वस्तु मूल्य (30 कुल मूल्य)। उपयोगिता एवं कला की सिद्ध मात्रा = उत्पादित वस्तु मूल्य, स्थापित संबंधों में निहित स्थापित मूल्य, जिसका अनुभव में, से, के लिए अभिव्यक्ति संप्रेषणा से प्रकाशित होने वाला शिष्ट मूल्य।

(24) मानवीय आचरण

1. स्वधन, स्वनारी-स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार

विन्यास।

2. संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन एवं उभयतृप्ति।
3. तन, मन, धन रूपी अर्थ की सुरक्षा और सदुपयोग।
4. मूल्य, चरित्र, नैतिकता का अविभाज्य वर्तमान रूप में किया गया संपूर्ण कार्य, व्यवहार, विचार विन्यास।

(25) मानवीय मूल्य = जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य।

(26) राज्य - परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी

1. सह-अस्तित्व सहज मानवत्व सहित व्यवस्था में वैभव
2. मानव परंपरा में परिवार मूलक स्वराज्य, स्वानुशासन रूपी स्वतंत्रता सहज वैभव परंपरा।

(27) राष्ट्र

1. दृष्टापद सहज जागृति पूर्ण मानव परंपरा ही अखण्ड राष्ट्र चेतना, व्यवस्था सहज प्रमाण।
2. मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान का प्रभाव सहज आचरण परम्परा। धरती अखण्ड होना-रहना स्पष्ट है।
3. मानव, मानव संस्कृति एवं सभ्यता में निरंतरता सहित, उसके संरक्षण, संवर्धनकारी विधि-व्यवस्था सहज अक्षुण्णता सहित परम्परा।

(28) राष्ट्रीय चरित्र- मानव चेतना सहज समझदारी (संज्ञानीयता) में नियंत्रित संवेदना सहज प्रमाण परंपरा।

1. दश सोपानीय व्यवस्था क्रम में हर नर-नारी में, से, के लिए सत्यबोध सहज ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता सहज आचरण सहित परिवार व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना।
2. मानवीय शिक्षा-संस्कार सहित परिवार मूलक स्वराज्य-व्यवस्था में भागीदारी सहज स्वतंत्रता वैभव सहित नित्य वर्तमान में, से, के लिए आचरण।

(29) राष्ट्रीयता

1. न्याय प्रदायी क्षमता योग्यता, पात्रता सहित कार्य-व्यवहार सहित सहअस्तित्व सहज प्रमाण परम्परा।
2. मानवीयतापूर्ण आचरण, व्यवहार, विचार का वर्तमान और उसकी परंपरा ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहित किया गया दायित्व व कर्त्तव्य निर्वाह।

(30) स्वतंत्रता

1. जागृत मानव स्वयं स्फूर्त विधि से संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था में भागीदारी।
2. पूर्णता सहज निरंतरता, मानवीय संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था सहज अक्षुण्णता एवं परम्परा।
3. प्रामाणिकता व समाधान पूर्ण अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा व प्रकाशन क्रिया सहज परम्परा।
4. स्वानुशासन पूर्ण पद्धति, प्रणाली, नीति पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार-विचार विन्यास परम्परा।

(31) स्वराज्य

1. जागृत मानव परिवार मूलक समाधान-समृद्धि अभय सह-अस्तित्व सहज वैभव।
2. मानवीय शिक्षा-संस्कार, न्याय सुरक्षा, विनिमय-कोष, उत्पादन-कार्य, स्वास्थ्य संयम सुलभता का अविभाज्य वर्तमान और उसकी परम्परा।
3. मानव चेतना सम्पन्न मानव परंपरा में मानवीय शिक्षा-संस्कार, स्वास्थ्य-संयम, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन में सुनिश्चित दिशा और निपुणता, कुशलता, पांडित्य सहित उत्पादित वस्तु व विनिमय कोष, व्यवस्थाओं का अविभाज्य वर्तमान और उसकी परंपरा वैभव है।

(32) समृद्धि

1. परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन।
2. अभाव का अभाव।
3. समाधान समृद्धि सम्पन्नता-समझदारी से समाधान-श्रम से समृद्धि।

(33) संप्रभुता

1. न्याय प्रदायी क्षमता व योग्यता, पात्रता व सत्यबोध सहित नियम, नियंत्रण, संतुलनपूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार।
2. प्रबुद्धता सहित स्वयं स्फूर्त विधि पूर्वक परिवार व्यवस्था सहज रूप में अभिव्यक्ति त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदार होने की संप्रेषणा, प्रकाशन।

(34) समाधान

1. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी एवं फल-परिणाम समझदारी के अनुरूप होना।
2. समझदारी पूर्ण होना-प्रमाणित होना।
3. जानना, मानना, पहचानना व निर्वाह करने की क्रिया; क्यों और कैसे का उत्तर ही समस्याओं का निराकरण, विवेक सम्मत विज्ञान, विज्ञान सम्मत विवेकपूर्ण प्रणाली से संपन्न करने की क्रिया।

(35) सह-अस्तित्व

1. व्यापक वस्तु में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति।
2. परस्परता में निर्विरोध सामरस्यता समाधान।
3. अनंत इकाई रूपी प्रकृति में परस्परता और विकास-क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति पूर्ण परम्परा में ही अस्तित्व में परस्पर इकाईयों में उपयोगिता-पूरकता व उदात्तीकरण क्रिया और उसकी संतुलित, परंपरा त्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी स्पष्ट है। यही सह-अस्तित्व सहज अनन्त इकाईयों में गुणात्मक विकास, यथा स्थिति पूरकता, उपयोगिता, उदात्तीकरण सूत्र व्याख्या है।

5. सहअस्तित्व में ही अनंत इकाईयाँ परस्परता में विकास क्रम, विकास, पूरकता, उदात्तीकरण सूत्र और व्याख्या।

(36) सत्य

1. सहअस्तित्व नित्य वर्तमान-सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति सदा (नित्य) प्रमाण व प्रभाव वर्तमान।
2. सत्ता तीनों कालों में एक सा भासमान, विद्यमान एवं अनुभव गम्य है। यही साम्य ऊर्जा है।
3. मानव परंपरा में स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य परंपरा रूप में नित्य वर्तमान होना अनुभवमूलक विधि से समझ में आता है।

   अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन-जागृति, रासायनिक-भौतिक रचना-विरचना के प्रति अनुभव प्रामाणिकता, नियति में, से, के लिए नित्य वर्तमान।

   तीनों कालों में एक सा विद्यमान, भासमान, सुखप्रद, ऊर्जा सम्पन्न और जड़ चैतन्य प्रकृति में क्रिया श्रम, गति, परिणाम और अमरत्व, विश्राम, गन्तव्य, परंपरा में निर्भ्रमता अथवा जागृति पूर्ण परंपरा सहज वर्तमान।

(37) संतुलन

1. स्वभाव गति प्रतिष्ठा।
2. स्वतृप्ति पूर्वक स्वभाव गति का प्रकाशन।
3. मानव परंपरा में स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार का सदुपयोग, सुरक्षात्मक क्रिया।

(38) संस्कृति

1. पूर्णता के अर्थ में किया गया कृतियाँ।
2. क्रिया पूर्णता-आचरण पूर्णता सहज परंपरा।
3. मानवीयता पूर्ण आचरण परंपरा।

(39) सभ्यता

1. समझदारी सहित व्यवस्था में अभ्यस्तता का प्रतिबद्ध होने का प्रस्तुति।
2. सह अस्तित्व जो सामाजिकता (समाधान) एवं समृद्धि का योगफल है।
3. मानवीयता पूर्ण आहार, विहार, व्यवहार।
4. अखण्ड समाज और सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी।

भाग-तीन

सह-अस्तित्व सूत्र व्याख्या

जिसे हम लक्ष्य (सुविधा-संग्रह) बनाये थे उसे पाने के बावजूद समस्या शेष रह गयी इसका मतलब है हमारा लक्ष्य सही नहीं था। अत: लक्ष्य पर पुनर्विचार की आवश्यकता बनती है। इसके अभाव में मानव संकट ग्रस्त होता ही है। संकट से छूटना हर व्यक्ति चाहता है। इसलिए हम ज्ञानावस्था के मानव समाधान, समृद्धि, अभय (वर्तमान में विश्वास) सहअस्तित्व (जीने देकर जीना) रूपी लक्ष्य को पहचान ले जिससे सदा के लिए सर्वतोमुखी समाधान अर्जित होता रहे।

सह-अस्तित्व सूत्र व्याख्या

1. व्यापक सत्ता में सम्पृक्त अनन्त ईकाइयाँ जड़-चैतन्य रूप में नित्य वर्तमान।
2. सत्ता व्यापक, पारगामी, पारदर्शी है। प्रकृति रूपी ईकाइयाँ अनन्त हैं, प्रत्येक एक रूप-गुण-स्वभाव-धर्म सम्पन्न त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज वर्तमान है।
3. व्यापक सत्ता में सम्पूर्ण प्रकृति डूबी, भीगी, घिरी हुई नित्य वर्तमान है, अविभाज्य है।
4. प्रकृति चार अवस्था में इसी पृथ्वी पर स्पष्टतया विद्यमान है।
5. सहअस्तित्व नित्य प्रभावी है।
6. (1) पदार्थावस्था में सभी प्रकार के खनिज

   (2) प्राणावस्था में सभी प्रकार के अन्न व वनस्पतियाँ

   (3) जीवावस्था में अनेक अण्डज-पिण्डज, जीव संसार

   (4) ज्ञानावस्था में मानव।

7. जागृत मानव परम्परा में मानव मानवत्व सहित व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी सम्पन्न होता है। यही मानव में, से, के लिए उपयोगिता पूरकता सहज सूत्र है।

8. तीनों अवस्था में प्रत्येक एक अपने 'त्व' सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करते हुए स्पष्ट है। इसको समझने के लिए 'अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन' बनाम 'मध्यस्थ दर्शन (सह अस्तित्व वाद)' प्रकाशित है। इन सूचनाओं के आधार पर अध्ययन करने अनुभव करने की स्थिति में मानव समझदार होता है।

9. नित्य वैभव ही सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति चार अवस्था में है। व्यापक वस्तु ही सत्ता, जागृत मानव परम्परा में व्यवस्था सहज प्रमाण ही प्रबुद्धता, संप्रभुता, प्रभुसत्ता है क्योंकि संज्ञानीयता पूर्वक संवेदनायें नियंत्रित होते हैं।

10. हर नर नारी में-से-के लिये प्रबुद्धता, संप्रभुता, प्रभुसत्ता में-से-के लिये स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार समान है। हर नर-नारी प्रबुद्धता संपन्न होने का मौलिक अधिकार है। यही वर्तमान में विधि है। विधि-विधान पूर्वक दस सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था है।

प्रबुद्धता-संप्रभुता-प्रभुसत्ता सहज आचरण सूत्र व्याख्या

परिभाषा-प्रत्येक सूत्र शब्द के साथ शाश्वत, नित्य, अखण्ड, सार्वभौम दृष्टि सहित स्थिर, निश्चय, सहज वैभव वर्तमान स्पष्ट होने में, से, के लिए है।

3.1 प्रबुद्धता

1. ज्ञान, विवेक, विज्ञान संपन्नता सहज प्रमाण कार्य-व्यवहार

व्यवस्था में भागीदारी।

2. समझदारी, ईमानदारी सम्पन्नता सहित जिम्मेदारी व भागीदारी।

3.2 संप्रभुता

1. प्रबुद्धता सहित अखण्ड राष्ट्र समाज सूत्र व्याख्या में पारंगत प्रमाण। यही समझदारी है।

2. ईमानदारी सम्पन्नता जिम्मेदारी-भागीदारी के रूप में स्पष्ट होना।

3.3 प्रभुसत्ता

1. अखण्ड समाज एवं राष्ट्र-राष्ट्रीयता सहित दश सोपानीय स्वराज्य व्यवस्था मानवत्व रूप में प्रबुद्धता सम्प्रभुता सहित सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी।

2. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी के रूप में प्रमाण परम्परा। यही प्रबुद्धता पूर्ण सत्ता है।

3.4 राष्ट्र

धरती अखण्ड होने के अर्थ में धरती पर ही चारों अवस्थाओं का वैभव, धरती पर मानव अखण्ड समाज राष्ट्र के अर्थ में होना रहना नित्य वैभव।

स्पष्टीकरण-जागृत मानव अखण्डता सहज सूत्र व्याख्या सहित प्रमाण है। बहु प्रकार की विभिन्न वंश के रूप में जीव-परम्परायें, प्राणावस्था में अन्न-वन वनस्पतियों की परम्पराएँ बीज-वृक्ष विधि सहज रूप में, भौतिक रूप में खनिज वस्तुओं की परम्परा परिणाम

के आधार पर एवं संतोषजनक संतुलन में शीतोष्ण-वर्षामान परम्परा सहज वैभव है।

3.5 राष्ट्रीयता

1. जागृत मानव परंपरा ही मानवीयतापूर्ण आचरण परंपरा।
2. 'त्व' (मानवीयता सहज निश्चित आचरण) सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

स्पष्टीकरण - रासायनिक-भौतिक क्रिया-कलाप और मानवेत्तर जीव संसार नियम-नियंत्रण-संतुलन पूर्वक 'त्व' सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में पूरकता-उपयोगिता विधि से भागीदारी करता हुआ स्पष्ट है, जिसकी गवाही तीनों अवस्था में है। तीनों अवस्थायें सह-अस्तित्व में वैभवित होने के उपरान्त ही मानव शरीर रचना सहित जीवन के संयुक्त रूप में मानव का प्रकटन इस धरती पर हुआ है। आज उक्त तीनों अवस्थायें पूरक विधि से सन्तुलित रहते हुए प्रवर्तनशील है। यही मानव व मानवत्व सहित अखण्ड समाज व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज वर्तमान होना, राष्ट्रीयता अर्थात् धरती वैभवित रहने का सूत्र व्याख्या व स्वरूप में वर्तमान होना आवश्यक है। भौतिक-रासायनिक ईकाइयाँ और सभी प्रकार के जीव अपने-अपने 'त्व' सहित व्यवस्था के रूप में वर्तमान है। 'स्व' होने के रूप में 'त्व' रहने (प्रमाणित) के रूप में वर्तमान आचरण रूप में प्रमाण और नियम सहित वर्तमान है।

3.6 अनुभव

1. अनुक्रम सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन सहअस्तित्व में, से, के लिए प्रमाण वर्तमान।

2. सह-अस्तित्व में प्रमाण अनुक्रम सहज विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति सहज प्रमाण परंपरा एवं निरंतरता की स्वीकृति।
3. अनुक्रम विधि में तद्रूप क्रिया, तदाकार प्रमाण ही अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन।

तदाकार = सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण स्वरूप में मानव स्वयं प्रमाणित होना जागृति है।

तद्रूप = ज्ञान अनुभव सम्पन्नता ही दृष्टा पद है और अन्य को बोध कराने के रूप में प्रमाण।

3.7 अनुक्रम

1. सहअस्तित्व में, से, के लिए क्रम, प्रमाण क्रिया।
2. विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति और सहअस्तित्व सम्पूर्ण स्थिति, गति और क्रिया है। यही अनुक्रम व अनुभव है।

स्पष्टीकरण -हर मानव (हर नर-नारी) सहअस्तित्व में, से, के लिए अनुभव पूर्वक प्रमाण है। इसलिए हर मानव में सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण सहज एकरूपता का होना अनुक्रम है। यही प्रमाणिकता, प्रमाण है। सहअस्तित्व में एकाकारता ही अनुभव सहज बोध प्रमाण व संकल्प वर्तमान है।

सहअस्तित्व सहज अनुक्रम से परस्परता पूर्वक पूरक होने की स्वीकृति ही चित्त-वृत्ति में न्याय साक्षात्कार है। यही चित्रण, तुलन, विश्लेषण सहज सूत्र है। यही आस्वादन-चयन पूर्वक कार्य-व्यवहार व व्यवस्था में प्रमाण है। जिसका दृष्टा अथवा जानने, मानने,

पहचान सहित निर्वाह करने वाला मानव ही है। मानव अपने में शरीर एवं जीवन सहित संयुक्त रूप में है। चारों अवस्था सहज परस्परता में मानव जागृत होने का प्रमाण ही मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी ही राष्ट्रीयता है अर्थात् चारों अवस्था में परस्पर पूरकता उपयोगिता सहज प्रमाण वर्तमान ही राष्ट्रीयता है।

3.8 राष्ट्रीय चरित्र

धरती अपने में अखण्ड व धरती पर मानव जाति अखण्ड समाज रूप में मानव का उद्देश्य सुख रूप में मानव संस्कृति-सभ्यता, अखण्ड समाज में सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी जागृति सहज प्रमाण हो यह हर मानव में प्रमाणित होना ही अखण्ड मानव समाज होने के अर्थ में परम्परा प्रमाण है।

स्पष्टीकरण - मूल्य, चरित्र, नैतिकता के संयुक्त रूप में मानव जागृत होने का प्रमाण मानवीयता पूर्ण आचरण है, जिसमें स्वधन, स्व-नारी, स्व-पुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार, विचार व्यवस्था है। राष्ट्रीयता अखण्ड समाज के अर्थ में, राज्य परिवार मूलक स्वराज्य वैभव के रूप में सार्वभौम है। मानव में, से, के लिए मूल्य चरित्र व नैतिकता पूर्वक संपूर्ण मूल्य स्पष्ट होता है। जब मौलिक रूप में मानव आचरण में स्पष्ट होता है तब मानवीय मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहज रूप में पहचान होता है और तब नैतिकता, चरित्र व मूल्य प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होना पाया जाता है।

3.9 अखण्ड राष्ट्र व्यवस्था

परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदारी करना, कराना, करने के लिए सहमत होना।

3.10 संविधान

1. क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता के अर्थ में पारंगत प्रमाण परम्परा होना रहना।
2. प्रबुद्धता, सम्प्रभुता, प्रभुसत्ता सहज आचरण सूत्र व्याख्या परम्परा सहज रूप में होना रहना।
3. नियम-नियंत्रण-संतुलन, न्याय-धर्म-सत्य पूर्ण व्यवस्था सहज मानव परंपरा का होना रहना।

3.11 विधान

1. स्थिति क्रम में संविधान, गति क्रम में विधान, पूर्णता के अर्थ में आचरण।
2. 'त्व' सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी।
3. जागृति सहज प्रमाण सम्पन्न परंपरा।

3.12 पूर्णता

1. परमाणु में गठन-पूर्णता ही चैतन्य इकाई (जीवन-पद) जीवन में क्रिया पूर्णता व आचरण पूर्णता (केवल जागृत मानव परम्परा में प्रमाण)।
2. जीवन घटना व शरीर रचनाक्रम नियति सहज प्रकटन।
3. जागृत मानव सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा।

स्पष्टीकरण - जीव-परम्परा में जीवन जीव चेतना को (चार विषयों के साथ में) विभिन्न वंश परम्परा के रूप में प्रकाशित किया है।

जागृत मानव परम्परा में ही संज्ञानीयता में नियंत्रित संवेदना, मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज प्रमाण परम्परा है।

जागृत मानव में ही संज्ञानीयता पूर्वक संवेदनायें नियंत्रित रहती है । यही स्व नियंत्रित आचरण सहज कार्य-व्यवहार ही संविधान पूर्णता के अर्थ में विधान है।

3.13 सह अस्तित्व

संग्रह, शोषण के स्थान पर उपयोगिता-पूरकता, अव्यवस्था के स्थान पर व्यवस्था, संग्रह के स्थान पर समृद्धि के लिये प्रेरणा है। अब तक प्रत्येक शक्ति केन्द्रित शासन संविधान व्यवस्थाओं में संग्रह, शोषण विधि से मानवीयता फलीभूत नहीं हो पायी । उपयोगिता-पूरकता, समृद्धि व समाधान सहित व्यवस्था सह अस्तित्व में ही फलीभूत होता है। अब तक नस्ल, रंग, जाति, संप्रदाय, वर्ग, धर्म कहलाने वाले मत-मतान्तर अथवा मतभेदों से भरे हुये धर्म, पंथ, भाषा या देश के आधार पर 'त्व' सहित मानव को पहचाना नहीं जा सका है। जिसकी आवश्यकता है।

मानवत्व सहित मानव स्वयं व्यवस्था है यही सर्वतोमुखी समाधान, सुख, परम सौन्दर्य शुभ और मानव धर्म है। अस्तित्व स्वयं किसी के लिये बाधा नहीं होता है। अस्तित्व में मानवीयता पूर्ण विधि से किसी की बाधा अथवा हस्तक्षेप कभी नहीं होता है। अस्तित्व निरन्तर सामरस्यता है, इसलिए अस्तित्व ही परम सत्य है। अस्तित्व में कोई ऐसी चीज नहीं है जो पैदा होती हो अथवा जो है वह मिट जाती हो । यह दोनों क्रियायें अस्तित्व में नहीं है । अस्तित्व में मात्रात्मक परिणाम गुणात्मक परिवर्तन की परंपरा है, यह विकास क्रम में दृष्टव्य है। विकास व जागृति मानव में प्रमाणित होना स्पष्ट है। ''अस्तित्व न घटता है न बढ़ता है''

भाग-चार

संविधान, विधान, विधि, न्याय, आचरण सूत्र व्यवस्था व स्वराज्य स्वतंत्रता

आदर्श का सम्मान सुदूर विगत से होते आया है, आज भी होता है। इसमें विचारणीय मुद्दा है आदर्शों का लोकव्यापीकरण न होना, उपकार कैसे होगा, उपकार विधि का लोकव्यापीकरण होना है कि नहीं इस पर जनचर्चा की आवश्यकता बनी हुई है।

संविधान, विधान, विधि, न्याय, आचरण सूत्र व्यवस्था व स्वराज्य स्वतंत्रता

4.1 संविधान

क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता के अर्थ में अनुभव-प्रमाण व्यवहार-कार्य रूप में संविधान है।

समझदारी के रूप में अनुभव प्रमाण मूलक शिक्षा संस्कार परंपरा सहज प्रावधान ही संविधान का प्रमुख भाग है।

हर नर-नारी में, से, के लिए समझदारी सम्पन्न होने का अधिकार सहज मानवीय शिक्षा सहज प्रावधान फलस्वरूप मानव चेतना सहज प्रतिष्ठा सहित देव चेतना, दिव्य चेतना सहज प्रमाण ही संस्कार और यही संविधान।

स्पष्टीकरण

संविधान क्रियापूर्णता, सर्वतोमुखी समाधान, अभ्युदय, आचरणपूर्णता अर्थात् अनुभवमूलक विधि सहज अभ्युदय,

निःश्रेयस, भ्रममुक्ति के अर्थ में सुनिश्चित सूत्र व्याख्या है। संविधान पूर्णता के अर्थ में सुनिश्चित आचरण व्यवस्था सहज सूत्र-व्याख्या है।

सहअस्तित्व में ही भौतिक-रासायनिक व जीवन क्रियायें चार अवस्था में वर्तमान है। सहअस्तित्व नित्य प्रभावी है। व्यापक वस्तु में ही सभी एक-एक वस्तुएं अविभाज्य, संपृक्त रूप में नित्य वर्तमान है। यही पदार्थ, प्राण, जीव तथा ज्ञानावस्था रूप में इसी धरती पर विद्यमान है।

प्रत्येक एक अपने 'त्व' सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी करता हुआ वर्तमान है। विकास-क्रम, विकास, जागृति-क्रम, जागृति सहज अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा व प्रकाशन है।

अभ्युदय = सर्वतोमुखी समाधान, क्रियापूर्णता सहज प्रमाण परम्परा।

निःश्रेयस = सर्वतोमुखी समाधान सहित लोकेषणा से भी मुक्ति, जागृति पूर्वक आचरण पूर्णता प्रमाण प्रवृत्ति अर्थात् उपकार प्रवृत्ति ही है।

पूर्णता = गठन पूर्णता अर्थात् चैतन्य इकाई (जीवन क्रिया)। जीवन और शरीर का संयुक्त रूप में मानव, जीवन्त मानव में, से, के लिये संज्ञानीयता ही क्रिया पूर्णता और आचरण पूर्णता सहज प्रमाण ही जागृतिपूर्ण मानव परम्परा है।

4.2 विधान

1. मानव-लक्ष्य समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व परम्परा के अर्थ में आचरण (मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहित)

सूत्र व्याख्या सहज परंपरा।

2. अखण्ड समाज ही दस सोपानीय सार्वभौम व्यवस्था सहज व्याख्या।

3. मानव लक्ष्य सफल होना ही जीवन मूल्य प्रमाणित होना।

विधि = जीवन-मूल्य सुख-शांति-संतोष-आनन्द के अर्थ में, मानव-लक्ष्य समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व प्रमाण के रूप में मानव परम्परा में, से, के लिए स्थिति-गति सूत्र व्याख्या, अखण्ड-समाज सार्वभौम-व्यवस्था सहज प्रमाण परंपरा।

व्यवस्था = विश्वास (संबंधों में मूल्य निर्वाह), सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता सहित अखण्ड समाज सार्वभौम सूत्र व्याख्या सहज परम्परा।

स्पष्टीकरण - व्यवस्था ही जागृत परम्परा है। वर्तमान में सभी सम्बन्धों कार्य- व्यवहार में विश्वस्त, भविष्य क्रम में स्वीकार किया गया कार्य-व्यवहार स्थिति-गति सहज संस्कृति-सभ्यता में, से, के लिए आश्वस्त रहना व्यवस्था है। विगत का स्मरण, वर्तमान में विश्वास, जागृति सहज प्रमाण, भविष्य की योजनाओं में आश्वस्त रहना व्यवस्था है।

विधान

तात्विक = मानव लक्ष्य सहज समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व प्रमाण परम्परा के अर्थ में आचरण सूत्र व्याख्या रूपी प्रमाण वर्तमान है।

बौद्धिक = जीवन लक्ष्य के अर्थ में मानव लक्ष्य को प्रमाणित

करने का कार्य व्यवहार व्याख्या।

व्यवहारिक = मानव-लक्ष्य को व्यवस्था क्रम में प्रमाणित करने का कार्यक्रम आचरण गति (दस सोपानीय स्वराज्य व्यवस्था)।

4.3 विधि

तात्विक = जीवन लक्ष्य अर्थात् सुख, शांति, संतोष, आनन्द अर्थ में, मानव-लक्ष्य यथा समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व में, से, के लिए अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सहज प्रमाण के रूप में है।

बौद्धिक = जीवन जागृति प्रमाण सहज परम्परा के रूप में सर्व सुलभ होना ही सर्व शुभ है।

व्यवहारिक = जागृत मानव परम्परा में से के लिए कायिक, वाचिक, मानसिक व कृत, कारित, अनुमोदित भेदों से परम्परा प्रमाणित होना ही है।

4.4 न्याय

न्याय = मानव सम्बंधों में मूल्यों का निर्वाह मूल्यांकन परस्पर उभय तृप्ति संतुलन।

तात्विक = समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व के अर्थ में अध्ययन, उत्पादन-कार्य-व्यवहार करना।

बौद्धिक = सम्बन्धों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह करने का संकल्प, मूल्यांकन स्वीकृति, उभय तृप्ति सहज स्वीकृति।

व्यवहारिक = परिवार सम्बन्धों का निर्वाह, परिवार व्यवस्था का निर्वाह, समाधान-समृद्धि प्रमाण सहित सार्वभौम व्यवस्था सहज

परंपरा।

4.5 व्यवस्था

तात्विक = सहअस्तित्व में अनुभव सहज विश्वास पूर्वक वर्तमान में दृढ़ता व निश्चयता पूर्वक अभिव्यक्ति-संप्रेषणा-प्रकाशन।

बौद्धिक = सर्वतोमुखी समाधान पूर्वक मानवत्व सहज अभिव्यक्ति-सम्प्रेषणा को प्रमाणित करना।

व्यवहारिक = समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी पूर्वक विधिवत् समाधान,समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में, से, के लिए प्रमाणित होना, रहना, करना-कराना-करने के लिए सहमत होना।

4.6 स्वराज्य

❖ मानवत्व सहित सुनिश्चित आचरण सार्वभौमता के अर्थ में वैभव,

❖ मानवत्व रूपी आचरण सहित व्यवस्था सहज वैभव,

❖ स्वयं में विश्वास सहज वैभव,

❖ श्रेष्ठता का सम्मान सहज वैभव,

❖ प्रतिभा सहज वैभव,

❖ सर्वतोमुखी समाधान संपन्न व्यक्तित्व सहज वैभव,

❖ मानवीयता पूर्ण आहार-विहार-व्यवहार में स्पष्टता सहज वैभव (व्यक्तित्व),

❖ परिवार में आवश्यकता से अधिक उत्पादन ही स्वावलम्बन

समृद्धि सहज वैभव,

❖ परिवार में समाधान समृद्धिपूर्वक अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन सहज वैभव,

❖ ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता सहित अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में, से, के लिए स्वयं स्फूर्त अर्थात् समझदारी का ही वैभव फलस्वरूप दस सोपानीय स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी करना ही वैभव है

समझदारी	**ईमानदारी**	**जिम्मेदारी, भागीदारी**
अस्तित्व मूलक	विवेक सम्मत	संबंध सहज
मानव केन्द्रित चिंतन	विज्ञान,	पहचान,
ही अस्तित्व दर्शन ज्ञान,	विज्ञान सम्मत	मूल्यों का
जीवन लक्ष्य सहित जीवन	विवेक,	निश्चयन
ज्ञान, मानवीयतापूर्ण	लक्ष्यगामी दिशा	सहित निर्वाह
आचरण ज्ञान	और मानव	और मूल्यांकन
सम्पन्नता में विश्वास	लक्ष्य में	करने में तृप्ति,
	विश्वास	संतुलन विश्वास

स्वयं में विश्वास (समझदारी) स्वयं स्फूर्त है
स्वयं स्फूर्त विधि से भागीदारी करना ही वैभव है।

4.6 (1) राष्ट्र

राष्ट्र अपनी सम्पूर्णता में चारों अवस्था व पदों में यथा स्थिति उपयोगिता-पूरकता विधि सहज वैभव है।

तात्विक = अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था का संयुक्त स्थिति गति ही राष्ट्र है।

बौद्धिक = जागृत मानव परम्परा, मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान सर्वसुलभ होना वर्तमान रहना है।

व्यवहारिक = अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्व-वाद-शास्त्र एवं विगत से प्राप्त मानवोपयोगी उत्पादन कार्यों में प्रयुक्त होने का सम्पूर्ण तकनीकी समेत शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन-कार्य, विनिमय-कोष और स्वास्थ्य-संयम सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था रूप में परम्परा का होना-रहना।

4.6 (2) प्रबुद्धता

तात्विक = जागृति पूर्वक वर्तमान में प्रमाण सहित रहना, करना-कराना-करने के लिए सहमत रहना, आगत में, से, के लिए सार्थक योजना सम्पन्न रहना और विगत स्मरण में सार्थकता के सूत्रों को वर्तमान में संयोजित प्रमाणित किए रहना।

बौद्धिक = जागृति पूर्वक अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में, से, के लिए परम्परा में कार्य-व्यवहार करना प्रेरणा स्रोत होना ।

व्यवहारिक = जागृति सहज विधि से नियम, नियंत्रण, संतुलन, सहित सर्वतोमुखी समाधान रूपी मानव धर्म, सह-अस्तित्व रूपी परम सत्य बोध व अनुभव मूलक प्रणाली से प्रमाणित रहना।

4.6 (3) संप्रभुता

तात्विक = मानवीयता, देव मानवीयता व दिव्य मानवीयता सहज प्रमाण परंपरा।

बौद्धिक = पूर्णता के अर्थ में पारंगत होना प्रबुद्धता सहज प्रमाण, 'चेतना-त्रय' प्रमाण परम्परा वर्तमान।

व्यवहारिक = अखण्डता सार्वभौमता का सूत्र व्याख्या रूपी प्रमाण परम्परा।

4.6 (4) प्रभुसत्ता

तात्विक = प्रबुद्धता नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य पूर्ण सत्ता ज्ञान विवेक विज्ञान सहज परम्परा सूत्र व्यख्या।

बौद्धिक = प्रबुद्धता पूर्वक निरंतर प्रमाण सहज सत्ता में जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने का क्रिया।

व्यवहारिक = प्रबुद्धता पूर्ण मानव परम्परा ही पीढ़ी से पीढ़ी में शिक्षा-दीक्षा संस्कार रुप में सत्ता= अखण्डता सार्वभौमता रुपी वैभव परंपरा।

प्रभुसत्ता सहज निरन्तरता ही जागृत मानव चेतना सहज परम्परा है। शिक्षा-संस्कार, उत्पादन-कार्य, न्याय- सुरक्षा, स्वास्थ्य-संयम, विनिमय -कोष कार्य ही जागृत मानव परम्परा है।

4.6 (5) राष्ट्रीयता

तात्विक = अखण्ड समाज के अर्थ में सार्वभौम व्यवस्था सहज परम्परा।

बौद्धिक = मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार न्याय सुरक्षा सुलभता ।

व्यवहारिक = सर्व मानव में, से, के लिए मानवीयता पूर्ण आचरण व्यवस्था सहज प्रमाण परम्परा।

मानव परम्परा में सर्व शुभ कार्य व्यवहार और व्यवस्था क्रम ही

सर्व शुभ रूपी समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण सुलभता है।

राष्ट्र का प्रमाण वर्तमान में सर्वतोमुखी समाधान और निरन्तरता ही राष्ट्रीयता है । मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

4.6 (6) राष्ट्रीय-चरित्र

- मानवीय शिक्षा-संस्कार सुलभता प्रमाण परम्परा,
- न्याय-सुरक्षा सुलभता प्रमाण परम्परा,
- उत्पादन-कार्य सुलभता प्रमाण परम्परा,
- विनिमय-कोष सुलभता प्रमाण परम्परा,
- स्वास्थ्य संयम सुलभता प्रमाण परम्परा,
- मानवीयता पूर्व आचरण सुलभता प्रमाण परम्परा,
- परस्पर निश्चित संबंधों, निश्चित मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन सुलभता प्रमाण परंपरा,
- परस्पर तृप्ति समाधान-समृद्धि, वर्तमान में विश्वास (अभय), सहअस्तित्व में प्रमाण सहज परम्परा,
- नैसर्गिक और ऋतु संतुलन सुलभता में भागीदारी परम्परा राष्ट्रीय चरित्र है। जागृत मानव परम्परा में सार्वभौम व्यवस्था सहज विधि से मानव प्राकृतिक संतुलन सहित सूत्र व्याख्या का जिम्मेदार है।

4.6 (7) मूल्य

1. जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य, भौतिक रासायनिक रूपी वस्तु मूल्य सहज यथार्थता-वास्तविकता-सत्यता पूर्वक उपयोगिता पूरकता रूप में वैभव।

2. मौलिकता सहज कार्य-व्यवहार व निरंतरता

   - पदार्थावस्था में परिणामानुषंगीय यथास्थिति पूरकता व उपयोगिता है।
   - प्राणावस्था में बीजानुषंगीय यथास्थिति पूरकता व उपयोगितायें हैं।
   - जीवावस्था में वंशानुषंगीय विधि से यथा स्थिति पूरकता व उपयोगितायें अध्ययन गम्य है।
   - ज्ञानावस्था में मानव संस्कारानुषंगीय एवं संज्ञानीयता में नियंत्रित संवेदनायें तथा संस्कार समझदारी विधि से यथास्थिति पूरकता, उपयोगिता प्रमाणित होने की व्यवस्था एवं आवश्यकता समझ में होना-रहना है।

मानव परम्परा में हर नर-नारी समझ के आधार पर प्रवर्तनशील है।

सहअस्तित्व में अनुभव मूलक विधि से मूल्यों की अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा और प्रकाशन है। जागृत मानव परम्परा में मूल्यों का वर्तमान प्रमाण स्वाभाविक है। यह शिक्षा संस्कार विधि से सर्व सुलभ होगा।

जीवन मूल्य = सुख, शांति, संतोष, आनन्द सहज अभिव्यक्ति

मानव मूल्य = धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा

सहज प्रमाण

स्थापित मूल्य = कृतज्ञता, गौरव, श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, वात्सल्य, ममता, सम्मान, स्नेह

शिष्ट मूल्य = सौम्यता, सरलता, पूज्यता, अनन्यता, सौजन्यता, उदारता, सहजता, अरहस्यता निष्ठा (स्पष्टता) सहज निर्वाह

वस्तु मूल्य = उपयोगिता, कला

4.6 (8) जीवन मूल्य मौलिकता

मानव लक्ष्य	-	जीवन मूल्य संयुक्त रूप से मानव परंपरा सहज वैभव
समाधान पूर्वक	-	सुख
समाधान-समृद्धि पूर्वक	-	सुख-शान्ति
समाधान-समृद्धि-अभय (वर्तमान में विश्वास) पूर्वक	-	सुख-शान्ति-संतोष
समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व प्रमाण पूर्वक	-	सुख-शान्ति-संतोष-आनन्द

4.6 (9) स्वयं में विश्वास

1. सह अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन-ज्ञान विवेक विज्ञान में विश्वास, सहअस्तित्व में विकास-क्रम विधि सहज ज्ञान में विश्वास, गठनपूर्ण परमाणु के रूप में जीवन व जागृत जीवन क्रिया में विश्वास, जीवों में जीवनीक्रम में वंशानुषंगीय होने में विश्वास, भ्रमित मानव जीवन जागृतिक्रम में होने में स्पष्ट, जीवन में, से, के लिए जागृति स्वत्व-स्वतंत्रता-

अधिकार सहज वैभव होने में विश्वास,

शरीर व जीवन संयुक्त रूप में मानव शाकाहारी होने में विश्वास,

2. स्वयं में विश्वास,

फलस्वरूप श्रेष्ठता का सम्मान में विश्वास,

प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन में विश्वास,

व्यवहार में सामाजिक होने में विश्वास,

उत्पादन कार्य रूपी व्यवसाय में स्वावलम्बन सहज विश्वास होना ही स्थिति, मौलिकता को प्रमाणित करना ही जागृति है, हर नर-नारी जागृति को स्वीकारता है।

4.6 (10) मूल्यों सहज प्रमाण परम्परा

सम्बन्धों में मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज प्रयोजन के आधार पर पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति व संतुलन रूप में ही न्याय सुलभ होना ही सुनिश्चित बिन्दु है।

चरित्र = स्वधन, स्वनारी-स्वपुरूष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार करना-कराना-करने के लिए सहमत होना।

नैतिकता = तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा करना।

मानवीयता पूर्ण आचरण में मूल्य, चरित्र, नैतिकता अविभाज्य रूप से वर्तमान रहता है। यह जागृत मानव में ही प्रमाणित होता है।

हर नर-नारी में-से-के लिये मानवीयता पूर्ण आचरण स्वीकार होना स्वाभाविक है आवश्यक है।

4.6 (11) मानव

मानवत्व सहज सूत्र व्याख्या रूप में वर्तमान परम्परा

तात्विक = मानवीयता पूर्ण आचरण सहित वर्तमान होने वाला, समाधान-समृद्धि समेत सुख-शान्ति पूर्वक प्रमाणित होने वाला।

बौद्धिक = मनाकार को साकार करने वाला मन: स्वस्थता को प्रमाणित करने वाला है।

व्यवहारिक = मनाकार को साकार करने के क्रम में सामान्य व महत्वाकाँक्षावादी वस्तुओं का उत्पादन करने वाला।

मन:स्वस्थता सहज सर्वतोमुखी समाधान रूप में प्रमाणित करने वाला जागृत मानव है, अन्यथा भ्रमित, जागृति क्रम में गण्य मानव है।

मानवीयता सहज सूत्र व्याख्या के रूप में -

1. समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी, भागीदारी सहित , ज्ञान-विवेक-विज्ञान-सम्पन्नता सहित, अखण्ड-समाज व सार्वभौम-व्यवस्था के अर्थ में परम्परा के रूप में प्रमाणित रहना।
2. प्राकृतिक संतुलन को वन , खनिज संतुलन रूप ऋतु संतुलन में नियंत्रित करना, हर मानव में-से-के लिये समाधान समृद्धि को प्रमाणित करना।

   अखण्ड समाज सहज सार्वभौम व्यवस्थापूर्वक दस सोपानीय व्यवस्था विधि से प्रमाणित करना। सार्वभौम शुभ ही समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व प्रमाण है।

समझदारी = ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता सूत्र व्याख्या है।

4.6 (12) मानवीयतापूर्ण प्रवृत्ति

मानवीयतापूर्ण प्रवृत्ति = पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा

पुत्रेषणा = जन-बल कामना प्रवृत्ति

वित्तेषणा = धन-बल (समृद्धि) कामना प्रवृत्ति

लोकेषणा = यश-बल कामना सहित सार्थकता, स्व-वैभव उपकार सहज पहचान प्रस्तुत करने के रूप में अखण्डता, सार्वभौमता सूत्र व्याख्या को सहजता से स्पष्ट करना-कराना-करने के लिए सहमत होना।

अखण्ड समाज सूत्र में जीने, सम्बन्धों को पहचानने, संबोधित करने, मूल्यों का निर्वाह करने में-से-के लिये प्रमाण परम्परा है ।

उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनों के अर्थ में व उत्पादित वस्तुओं का नियोजन सामाजिकता के अर्थ में है।

स्व वैभव सहज पहचान प्रस्तुत करने रूप में सहजता, स्पष्टता है । जागृत मानव स्वभाव ही सहज है।

(अ) मानवीय स्वभाव

धीरता = न्याय पूर्वक, न्याय प्रदायी प्रमाण सहित जीने में दृढ़ता सहज परम्परा ।

वीरता = न्याय पूर्वक जीना, अन्य को न्याय सुलभ करना, कराना ।

उदारता = तन-मन-धन को परिवार सम्बन्धी व्यवस्था में उपयोग, अखण्ड समाज में सदुपयोग, सार्वभौम व्यवस्था में प्रयोजित करना ।

दया = पात्रता के अनुरूप वस्तु सुलभ कराना, समाधान समृद्धि के अर्थ में विश्वास स्थापित कराना।

कृपा = वस्तु है पर उसके अनुरूप पात्रता नहीं है, उनमें पात्रता स्थापित कराना।

करूणा = क्षमता अर्हता हो, योग्यता-पात्रता न हो ऐसी स्थिति में योग्यता-पात्रता को स्थापित करना।

(ब) मानवीय दृष्टि

मानवीय दृष्टि न्याय, धर्म, सत्य सहज विधि से परिभाषित व्यवहार व्यवस्था में सार्थक है, व्यवहृत है।

न्याय = परिवार सम्बन्ध, अखण्ड समाज सम्बन्ध, सार्वभौम व्यवस्था सम्बन्धो में मूल्य निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति संतुलन में भागीदारी।

धर्म (समाधान) = जागृत मानव परिवार में समाधान-समृद्धि सहज अखण्ड समाज सूत्र, सार्वभौम व्यवस्था में प्राकृतिक सन्तुलन में-से-के लिये सम्बन्धों की पहचान व निर्वाह परम्परा के रूप में मौलिकता की निरन्तरता, मूल्यांकन, परस्परता में तृप्ति सन्तुलन अर्थात् समाधान प्रमाण वर्तमान = सुख।

सत्य = न्याय व समाधान प्रमाणित होना ही सहअस्तित्व रूपी परम सत्य में अनुभव प्रमाण। यही मानव संचेतना है।

4.6 (13) मानव संचेतना-चेतना

संचेतना =

1. पूर्णता के अर्थ में अपेक्षा समझ प्रमाण ही संचेतना, समझ पूर्णता सहज प्रमाण परम्परा ही चेतना, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता के अर्थ में वर्तमान, जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना ही

मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना है।

2. संज्ञानीयता में संवेदनाये नियंत्रित रहना ही प्रमाण-संज्ञानीयता अर्थात् जानने मानने की सम्पूर्ण वस्तुयें सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व ही है।

   सहअस्तित्व में ही जीवन क्रिया-कलाप, शारीरिक रचना-विरचना, रासायनिक क्रिया कलाप, भौतिक क्रिया कलाप, शरीर व जीवन का संयुक्त क्रिया-कलाप के रूप में मानव क्रिया कलाप है। यही जागृति है। इसको समझना ही जागृति है। सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में मानव ही संज्ञान सम्पन्न अथवा मानव चेतना ही संज्ञानीयता है।

4.6 (14) जीवन बल व शक्ति

जागृत जीवन में-

नाम	**बल क्रिया**	**शक्ति क्रिया**	**नाम**
आत्मा में सहज अनुभव	सहअस्तित्व →	प्रामाणिकता	ही प्रमाण
बुद्धि में बोध	अनुभव प्रमाण (संकल्प) प्रमाण →	प्रमाणित करना	ही ऋतंभरा
चित्त में	चिन्तन न्याय धर्म सत्य →	चित्रण	ही शुभेच्छा ही सर्वशुभ
वृत्ति में	तुलन न्याय, धर्म, सत्य ↔	विश्लेषण सर्वशुभ सम्पन्न	विचार ही नित्य शुभ
मन में	मूल्यों का →	चयन (प्रमाणित	आशा

	आस्वादन	करने का)	
↓	↓	↓	↓
यही जीवन	प्रत्यावर्तन में	परावर्तन	शरीर समृद्धि
व यही जागृत	सुख शांति संतोष	मानव	पूर्ण मेधस तंत्र
परम्परा का	आनन्द सहअस्तित्व	परम्परा में ही	ज्ञान क्रिया
प्रमाण है।	में परावर्तन में समाधान	अभिव्यक्ति	वाही प्रमाण
विधि से प्रमाण	समृद्धि अभय अनुभव	संप्रेषणा प्रकाशन	है। अभिव्यक्ति

परावर्तन-प्रत्यावर्तन क्रम से परम्परा में प्रमाण, कार्य व्यवहार, फल-परिणाम, मूल्यांकन और नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म (समाधान), सत्य रूपी महिमाओं के अनुरूप अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन निरंतरता सर्वमानव में समान स्वत्व है। यही परस्पर अर्पण-समर्पण विधि से स्वतंत्रता अधिकार है। मानव लक्ष्य प्रमाण सहित जीवन मूल्य जागृति सहज प्रमाण परम्परा है। अखण्डता व सार्वभौमता सहज परंपरा वैभव है।

4.7 स्वतंत्रता

ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता पूर्वक अखण्डता सार्वभौमता सूत्र व्याख्या स्वयं स्फूर्त होना ही सार्थक स्वतंत्रता है। यह जागृति सहज वैभव है।

4.7 (1) अखण्ड समाज

अखण्ड समाज = मानव जाति में एक धर्म एक होने का ज्ञान, स्वीकृति व प्रमाण परम्परा ही मानवीय संस्कृति सभ्यता है।

अखण्ड समाज के अर्थ में सार्वभौम व्यवस्था का प्रमाण परम्परा ही राष्ट्रीयता है।

14_manviya_samvidhaan_sootravyakhya_2007_c

4.7 (2) सहअस्तित्व

सहअस्तित्व ही नित्य प्रमाण वर्तमान है।

सहअस्तित्व = सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति चार अवस्था व पदों में विद्यमान वर्तमान है।

नित्य प्रमाण = सामाजिक अखण्डता, व्यवस्था सहज सार्वभौमता।

वर्तमान = चारों अवस्थाओं व पदों में संतुलन पूरकता-उपयोगिता सहज वर्तमान है।

सहअस्तित्व सदा वैभव सहज प्रमाण सदा वर्तमान रूप में होना, मानव परंपरा में सदा प्रमाण होना, समझ सम्पन्नता सहित परम्परा ही वर्तमान होना वैभव है।

सहअस्तित्व में भौतिक-रासायनिक व जीवन-क्रिया दृष्टव्य है, वर्तमान है। दृष्टा मानव है।

सहअस्तित्व में विकास क्रम, विकास, जागृतिक्रम, जागृति नित्य वर्तमान सहज होना दृष्टव्य है।

सहअस्तित्व ही नित्य वैभव है, क्योंकि व्यापक में एक-एक वस्तुओं का सम्पृक्त वर्तमान अविभाज्य रूप में होना रहता ही है। व्यापक वस्तु सर्व देशकाल में यथावत है।

व्यापक में ही सभी एक-एक वस्तुओं की परस्परता और निश्चित अच्छी दूरियाँ स्पष्ट है। व्यापक में प्रकृति न हो ऐसा कोई काल नहीं। व्यापक ह रो ऐसा कोई देश या काल नहीं है।

सहअस्तित्व नित्य प्रभावी है। व्यापक वस्तु में सम्पूर्ण एक-एक वस्तुएं परस्परता में ही पहचान है। एक दूसरे की पहचान ही सम्बन्ध और व्यवस्था का आधार है।

4.7 (3) राज्य

राज्य वैभव सहज रूप में हर अवस्था, हर पद, स्थिति-गति के रूप में सहअस्तित्व में ही विद्यमान है। मानव जागृति पूर्वक अखण्डता सार्वभौमता सहज परम्परा के रूप में होना राज्य है।

पदार्थावस्था, प्राणावस्था में प्रत्येक विकास क्रम यथास्थिति सहज विधि से पूरकता-उपयोगिता पूर्वक वैभव है।

उपर्युक्त दोनों अवस्थायें समृद्ध रहने के उपरान्त ही जीवावस्था का उदय होता है। जीवावस्था में वंश परम्परा के रूप में प्रत्येक एक अपनी यथास्थिति उपयोगिता को प्रमाणित किये रहते हैं और वैभवित रहते हैं।

उक्त तीनों अवस्थायें समृद्धि सम्पन्न रहने के अनन्तर ही ज्ञानावस्था का उदय होना स्वाभाविक रहा। मानव मानवत्व सहित व्यवस्था होता है। यही मानव सहज वैभव है, मानव समझदारी पूर्वक ही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना सहज है।

4.7 (4) स्वराज्य

स्वराज्य ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में-से-के लिये स्वयं स्फूर्त अर्थात् समझदारी के ही फलस्वरूप भागीदारी करना ही है।

स्वराज्य =

समझदारी	**ईमानदारी**	**जिम्मेदारी (भागीदारी)**
अस्तित्व मूलक	विवेक सम्मत	सम्बन्ध सहज
मानव केन्द्रित चिन्तन	विज्ञान, विज्ञान	पहचान,
ही अस्तित्व-दर्शन-ज्ञान ,	सम्मत विवेक,	मूल्यों सहज निश्चयन
जीवन-लक्ष्य सहित जीवन	लक्ष्यगामी दिशा	सहित निर्वाह

ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान संपन्नता में विश्वास

और मानव लक्ष्य में विश्वास

और मूल्यांकन करने में विश्वास

स्वयं में विश्वास (समझदारी) स्वयं स्फूर्त है
स्वयं स्फूर्त विधि से भागीदारी करना ही वैभव है।
वैभव परम्परा ही स्वराज्य है।

जिस परिवार-गांव-मोहल्ले में जितनी भी उत्पादन की आवश्यकता रहती है उसकी आवश्यकीय सभी तकनीकी प्रशिक्षण ग्राम सभा में, ग्राम समूह सभा अथवा क्षेत्र सभा के अधीनस्थ रहना स्वाभाविक रहता है। इस ढंग से हर मानव लक्ष्य के लिए दिशा निर्धारण, उसकी प्रमाणीकरण पद्धति में भागीदार होना सुगम हो जाता है।

भाग-पाँच

जागृत मानव

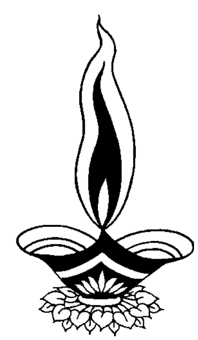

जनचर्चा में इस बात की एक अच्छी विचारणा आवश्यक है। कामोन्माद भोगोन्माद के लिए चर्चा को अर्पित किया जाये या समाधान समृद्धि के लिए अर्पित किया जाये । इस तर्क विधि से समाधान समृद्धि के लिए तर्क विधि सार्थक होना स्पष्ट हो जाता है।

जागृत मानव

5.1 जागृत मानव

नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, सर्वतोमुखी समाधान, सहअस्तित्व रूपी परम सत्य में, से, के लिए अर्थात् जागृति पूर्वक मानव मनः स्वस्थता का प्रमाण और मनाकार को अर्थात् आवास, आहार, अलंकार, दूर श्रवण, दूर दर्शन, दूर गमन सम्बन्धी वस्तुओं, यंत्रों-उपकरणों के रूप में साकार करता है। मनः स्वस्थता ही मानव त्व है।

जागृत मानव ही मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करता है।

जागृत मानव ही निश्चित फल परिणाम के लिए निश्चित कर्म, कार्यक्रम, व्यवहार करता है एवं निश्चित फलों का उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनों के अर्थ में अर्पित करने प्रस्तुत रहता है।

5.2 जागृत मानव परिवार प्रवृत्ति

प्रत्येक जागृत मानव परिवार में एक दूसरे को सम्बन्धों के अर्थ में

संबोधन कार्य, कर्त्तव्य, दायित्व, मूल्यों का निर्वाह, परिवार सहज प्रमाण सहित समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में अपना पहचान प्रस्तुत किए रहते हैं। ऐसे एक दूसरे के सभी प्रकार के पहचानों को प्रमाण सहित सत्यापित करते हैं।

परिवार जनों के रूप में संबोधन व्यवहार होना अपनत्व का पहला चरण है। इनमें सामंजस्य, संगीत रूप में एक दूसरे को समझते हुए जीना ही परिवार वैभव ही स्वराज्य सहज स्वरूप लोकव्यापीकरण विधि से दस सोपानीय वैभव है।

धन उत्पादित वस्तुओं के रूप में, मन जानने-मानने-पहचानने निर्वाह करने के रूप में है। तन स्वस्थ शरीर के रूप में है।

संस्कार, क्रिया पूर्णता अर्थात् सर्वतोमुखी समाधान और परम्परा सहज निरन्तरता से तथा आचरणपूर्णता अर्थात् सह अस्तित्व में, से, के लिए प्रमाण परम्परा से है, यही जागृति है।

जागृत मानव प्रवृत्तियाँ (स्वभाव)

जन-धन-यश-बल का सार्थक रूप परिवार रूप में ही दश सोपान में स्पष्ट होता है। हर जागृत मानव सहज पहचान दस सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में होती है यथा समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व अर्थात् चारों अवस्थाओं के साथ जागृत मानव नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज विधि से निर्वाह करता है।

- परिवार सम्बन्ध मूल्यों के आधार पर
- उत्पादन-सम्बन्ध उपयोगिता व कला श्रम मूल्यों के आधार पर
- व्यवस्था-सम्बन्ध समाधान समृद्धि व न्याय के आधार पर

- शिक्षा-सम्बन्ध सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, ज्ञान-विवेक- विज्ञान सम्पन्नता के आधार पर
- स्वास्थ्य-सम्बन्ध आहार-विहार, औषधी, संयत व्यवहार के आधार पर
- प्रकृति-संबंध नियम, नियंत्रण, संतुलन, उपयोगिता, पूरकता के आधार पर
- समझदारी का सम्बन्ध सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व के आधार पर
- न्याय, सम्बन्धों मूल्य निर्वाह के आधार पर
- विनिमय-सम्बन्ध उपयोगिता पूरकतावादी दृष्टि व श्रम मूल्य के आधार पर
- मानव-सम्बन्ध अखण्डता सार्वभौमता के आधार पर
- मानव लक्ष्य सहज प्रमाण में, से, के लिए सभी संबंध है
- ज्ञान, विवेक एवं विज्ञान सहित मानव लक्ष्य के लिए कार्य व्यवहार सहज निश्चयन शिक्षा-दीक्षा संस्कार में, से, के लिए है। विधि से सर्वशुभ प्रवृत्तियां है।

5.3 जागृत मानव में, से, के लिए स्वभाव (स्वयम् स्फूर्त मूल्य)

धीरता = न्याय में दृढ़ता-न्याय प्रदायी योग्यता है।

वीरता = न्याय निर्वाह सहित लोकव्यापीकरण में निष्ठा

उदारता = स्वयं जैसे और अधिक श्रेष्ठता में, से, के लिए किये गये तन-मन-धन का अर्पण-सेवा-समर्पण

अर्पण का तात्पर्य तन व धन से की गई सेवा, तन-मन-धन से

किया गया उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता समर्पण है।

दया = पात्रता के अनुरूप वस्तु को उपलब्ध करना

कृपा = वस्तु के अनुरूप पात्रता को स्थापित करना

करुणा = पात्रता-योग्यता को स्थापित करना

5.4 जागृत मानव दृष्टि

सम्बन्ध निर्वाह = न्याय, सत्य सहज वैभव समाधान निरन्तरता

न्याय = सम्बन्धों में जागृति सहज प्रमाण सहित पहचानना, मूल्यों का निर्वाह करना, मूल्यांकन करना, उभयतृप्ति एवं संतुलन प्रमाणित होना

धर्म = सर्वतोमुखी समाधान पूर्वक दस सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी

क्यों और कैसे के उत्तर को हर दृष्टिकोण, परिप्रेक्ष्य, आयाम से जानना, मानना फलतः हर स्थिति में समाधान प्रस्तुत करना, यही अभ्युदय है। यही सर्वतोमुखी समाधान है।

सत्य = सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में ज्ञान, विवेक, विज्ञान पूर्वक पहचानना निर्वाह करना

- जागृत मानव में धर्म सार्थक होता है।
- मानव सुख धर्मी है।
- जागृत मानव सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न होता है।

  समाधान = सुख, समस्या = दुःख

5.5 जागृत-मानव

जागृत मानव सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति रूपी सहअस्तित्व में ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहित पूर्णता अभ्युदय के

अर्थ में नियंत्रित संचेतना सम्पन्न रहता है। जागृत मानव विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति और उसकी निरन्तरता का ज्ञाता, दृष्टा, कर्त्ता होता है। संचेतना का स्वरूप संज्ञानीयता पूर्वक नियंत्रित संवेदनाओं सहित वैभव है।

जागृत मानव ही व्यापक सत्ता में सम्पृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति को सहअस्तित्व के रूप में जानता, मानता, पहचानता और निर्वाह करता है ।

न्याय-धर्म (सर्वतोमुखी समाधान) और सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य रूपी सह अस्तित्व परम सत्य जागृत मानव में, से, के लिए प्रमाण है।

जागृत मानव सहअस्तित्व में ही विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति परम का ज्ञाता, दृष्टा, कर्त्ता, भोक्ता होता है, यह समाधान है।

5.6 मानव

''जीवन बल व शक्तियाँ अक्षय है'' जिस से जागृत मानव जानता, मानता, पहचानता और निर्वाह करता है ।

हर मानव जीवन व शरीर का संयुक्त रूप में परम्परा (पीढ़ी से पीढ़ी के रूप में) में विद्यमान है।

शरीर गर्भाशय में भौतिक-रासायनिक द्रव्यों से रचित रहता है। जीवन गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य पद में जागृति पूर्वक वैभव है।

जीवन इकाई, विकसित परमाणु, जीवन पद में गठनपूर्ण घटना के आधार पर अणु बन्धन, भार-बन्धन से मुक्त, आशा-विचार-इच्छा बन्धन युक्त है। जीवन जब जागृत हो जाता है तब जीवन अमर वस्तु के रूप में स्वीकृत होता है और जीवन शक्ति व बल

अक्षय होना समझ में आता है।

5.7 जागृत जीवन क्रियायें :-

अक्षय बल	**अक्षय शक्तियाँ**
सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में अनुभव होता है।	आत्म-शक्ति प्रमाणिकता में प्रमाण, प्रमाणित करने के लिए संकल्प शक्ति बुद्धि शक्ति में,
आत्मा में अनुभव बल, अनुभव बोध बुद्धि में बोध न्याय-धर्म-सत्य सहज स्वीकार बुद्धि बल में होता है। चित्त में चिन्तन रूप में स्पष्ट होता है। वृत्ति में तुलन क्रिया में न्याय -धर्म-सत्य का स्पष्ट होना विश्लेषण सम्पन्न होता है।	चित्रण क्रिया चित्त शक्ति में, प्रमाणित चित्रण करने में भाषा भाव (अर्थ) समेत चित्रण है। चित्रण जिसमें भाव भंगिमा मुद्रा अंगहार समाया रहता है। प्रमाणीकरण विधि-विधानों का विश्लेषण करना ही विचार है।
न्याय-धर्म-सत्य सम्मत मूल्यों का आस्वादन मन में सम्पन्न होता है। यह सदा-सदा होता है। इसलिए यही जागृति सहज मनोबल अक्षय है।	प्रमाणित होने के लिए निश्चित विचारों के अनुसार संबंधों का चयन क्रिया कर पाने की आशा में, से, के लिए किया जाना स्पष्ट है।

जागृत मानव परम्परा में अनुभव प्रमाणों को प्रमाणित करने में जीवन जागृत रहता है। कल्पनाशीलता जागृति के अनुरूप कार्य करता है अर्थात् प्रमाणों के बोध सहित बुद्धि में संकल्प, संकल्प के अनुरूप चिन्तन-चित्रण कार्य चित्त में सम्पन्न होता है। फलतः चित्रण के अनुसार

तुलन-विश्लेषण होता है। पुनश्च प्रमाणों के आधार पर आस्वादन पूर्वक चयन क्रिया मन में सम्पन्न होती है। यही जागृति के अनुसार होने वाले परावर्तन प्रकाशन है।

आस्वादनायें प्रमाणों के प्रकाश में प्रकाशित होने के फलस्वरूप तृप्त, संतुष्ट समाधान के रूप में परावर्तन सहज है यही जागृत जीवन का फलन है।

जागृत मानव परम्परा में -

मानव लक्ष्य जीवन मूल्य → सुख + शांति + संतोष + आनन्द

↓

समाधन (हर नर नारी में) → सुख

\+

समृद्धि (हर समझदार परिवार में) → शांति

\+

अभय (अखण्ड समाज में) → संतोष

\+

सहअस्तित्व (सार्वभौम व्यवस्था में) → आनन्द

अनुभव प्रमाण, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी है।

5.8 जागृत मानव परम्परा

जागृत मानव परम्परा में ही सार्वभौम लक्ष्य सहज दिशा प्रमाणित है। यह जीवन मूल्य रुपी सुख-शांति-संतोष- आनन्द और मानव लक्ष्य रूपी समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण विधि से प्रमाणित होता है। जीवन व शरीर के संयुक्त रूप में हर मानव जागृति सहज प्रमाण है अथवा जागृत होना चाहता है। इसी प्रकार हर मानव समझदार है अथवा समझदार होना चाहता है। यह

मौलिक अधिकार है क्योंकि मानव ही समझने वाला और होने के रूप में सहअस्तित्व ही है ।

5.8 (1) सार्वभौम = ज्ञान, विवेक, विज्ञान रूप में मूल अवधारणा अनुभवमूलक विधि से प्रमाण सम्पन्न होना।

5.8 (2) सार्वभौमतापूर्ण = सर्वमानव स्वीकृत या स्वीकारने योग्य या सर्वमानव सुखी होना।

5.8 (3) जीवन = गठन पूर्ण परमाणु अथवा चैतन्य इकाई।

5.8 (4) जागृत जीवन = मानव परम्परा में जागृति सहज प्रमाणों को व्यक्त करने अनुभव मूलक विधि सहित प्रमाण पूर्वक, बोध साक्षात्कार सहित तुलन-विश्लेषण, आस्वादन-चयन समेत व्यवहार में, प्रयोगों में और व्यवस्था में प्रमाणित होना ही जागृत परम्परा है। जागृत परम्परा में ही दस सोपानीय व्यवस्था प्रमाणित होती है।

5.8 (5) सार्वभौम लक्ष्य = जीवन लक्ष्य, सर्वमानव-लक्ष्य, विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति लक्ष्य यही समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व में अनुभव प्रमाण।

5.8 (6) जीवन लक्ष्य (मूल्य) = सुख (मनः स्वस्थता)

मानव में सुखी होने की अपेक्षा स्वीकृत है। मानव सुख धर्मी है । हर मानव जीवन व शरीर का संयुक्त रूप है। मानव लक्ष्य समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व है।

समाधान प्रमाण	=	सुख (मनः स्वस्थता)
समृद्धि प्रमाण	=	शांति

अभय प्रमाण	=	संतोष
सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण	=	आनन्द

मानव धर्म अखण्ड समाज नीति = तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा मौलिक अधिकार स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार सहज वैभव है।

5.8 (8) जागृत मानव सहज मौलिकता

1. समझदारी
2. ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता प्रमाण वर्तमान

ज्ञान = सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान व मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान सहज स्वत्व समुच्चय मानवीयतापूर्ण मौलिकता ज्ञान ही है। यही जागृति है।

विवेक = मानव-लक्ष्य, जीवन-मूल्य सुनिश्चित करना।

विज्ञान = मानव लक्ष्य के लिये दिशा निर्धारण करना व कार्य व्यवहार में प्रमाणित करना।

मौलिकता समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण को कार्य-व्यवहार-व्यवस्था में प्रमाणित करना मौलिक अधिकार है।

मौलिक अधिकार को प्रमाणित करने के लिए स्वयं स्फूर्त विधि से प्रवृत्त रहना स्वतंत्रता है।

अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना मौलिक अधिकार है। यह स्वयं स्फूर्त विधि से प्रमाणित होता है। यह

स्वतंत्रता, जागृति सहज प्रमाण है।

दस सोपानीय सार्वभौम व्यवस्था पाँच स्थितियों में स्पष्ट है। ये पाँच स्थितियाँ हैं -

(1) व्यक्ति (2) परिवार (3) समाज (4) राष्ट्र (5) विश्व (अन्तर्राष्ट्र)

5.8 (9) मानवीय शिक्षा-संस्कार प्रकाशन परम्परा

मानवीय शिक्षा = शिष्टता अर्थात् अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित विश्व दृष्टिकोण सम्पन्न अभिव्यक्ति संप्रेषणा।

संस्कार = समझदारी सहित ईमानदारी, जिम्मेदारी व भागीदारी में स्वतंत्रता।

हर जागृत मानव ही ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता पूर्वक मानव लक्ष्य को सुनिश्चित करता है और जिम्मेदारी, भागीदारी सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या के रूप में कार्य-व्यवहार में प्रमाणित होता है यही स्वत्व, स्वतन्त्रता, अधिकार है।

स्वत्व = समझदारी सम्पन्नता और अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा।

स्वतंत्रता = स्वयं स्फूर्त विधि से समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी में-से-के लिये प्रमाण परंपरा।

हर जागृत मानव समझदारी सहित मानवत्व रूपी अधिकार को प्रमाणित करने में स्वतंत्र है।

अधिकार = समझदारी सहज समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व को वर्तमान में प्रमाणित करना, कराना, करने के

लिए सहमत होना।

स्वराज्य = मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी परंपरा।

स्वराज्य अर्थात् मानवत्व सहित दस सोपान में सार्वभौम व्यवस्था के रूप में समाधान, समृद्धि , अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण परम्परा है।

स्वतंत्रता = स्वयं स्फूर्त विधि से सर्वतोमुखी समाधान में-से-के लिये प्रमाण वर्तमान।

5.8 (10) जीवन जागृति

1. समझदारी, ईमानदारी सहज प्रमाण ही भागीदारी रूप में।
2. सर्वतोमुखी समाधान सहित मानव लक्ष्य, जीवन-लक्ष्य को वर्तमान में प्रमाणित करना, कराना, करने के लिए सहमत होना।

5.9 जागृत मानव सहज आचार संहिता रूपी सूत्र व्याख्या

प्रारूप -

मानवीय आचरण-संपन्नता सहित सम्बन्धो का निर्वाह समेत अखण्ड राष्ट्र समाज व्यवस्था में भागीदारी करना।

सूत्र-फलन में -

1. हर समझदार परिवार में समाधान-समृद्धि प्रमाणित होना।
2. अखण्ड राष्ट्र समाज व्यवस्था में समाधान, समृद्धि, अभय (वर्तमान में विश्वास) सहअस्तित्व प्रमाणित होना।

दस सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था विधि क्रम में समाधान, समृद्धि , अभय, सहअस्तित्व सहज वर्तमान परम्परा ही व्याख्या है। संबंधों का पहचान, मूल्यों का निर्वाह ही विधि-व्यवस्था है। यह प्रत्येक नर-नारी का मौलिक अधिकार है।

अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ही मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद सूत्र व्याख्या है। इसमें पारंगत होना प्रत्येक नर-नारी का मौलिक अधिकार है।

मानवीय शिक्षा-दीक्षा संस्कार, मानवीय आचरण सूत्र व्याख्या रूपी संविधान, अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था मानवत्व सहित मानवीय व्यवस्था में भागीदारी प्रत्येक नर-नारी का मौलिक अधिकार है।

सार्वभौम = सर्व मानव द्वारा स्वीकृत अथवा स्वीकार करने योग्य सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में मूल अवधारणा सम्पन्न होना यह प्रत्येक नर-नारी का मौलिक अधिकार है।

अवधारणा =अवगत (पारंगत) होने, रहने में स्वीकृति और निष्ठान्वित, निष्ठा कारक होनायह प्रत्येक नर-नारी का मौलिक अधिकार है।

हर नर-नारी जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने योग्य क्षमता सम्पन्न है क्योंकि हर मानव में, से, के लिए कल्पनाशीलता कर्म स्वतंत्रता विद्यमान है। इसे सार्थक रूप देना प्रत्येक नर-नारी का मौलिक अधिकार है।

5.10 जागृत मानव परम्परा में चरितार्थ प्रमाणित-सम्बन्ध व मूल्य

जीवन मूल्य = मानव धर्म = मानव लक्ष्य = समझदारी

जागृत मानव लक्ष्य = सुख-सर्वतोमुखी समाधान, शांति-समृद्धि, संतोष-अभय, आनन्द-सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण सम्पन्नता यह प्रत्येक नर-नारी का मौलिक अधिकार है।

जागृत मानव परम्परा वैभव क्रम में मूल्याँकन सहज वर्तमान है।

सह अस्तित्व पूर्ण मानसिकता पूर्वक मूल्याँकन सार्थक होता है। जागृत मानव मूल्याँकन करता है, सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न मानव ही मूल्याँकन करेगा।

मानवीयता पूर्ण आचरण अर्थात् मूल्य, चरित्र, नैतिकता पूर्वक समाधान, समृद्धि अभय, सहअस्तित्व मानव में, से, के लिए आचरण पूर्वक प्रमाणित होता है।

जागृत मानव ही अपने आचरण ''कार्य-व्यवहार'' फल-परिणाम से ही समाधान-समृद्धि, सुख-शांति परंपरा वर्तमान होना, रहना सहज है।

जागृत मानव परम्परा में चरितार्थ संबंध, मूल्य, मूल्यों का निर्वाह और मूल्याँकन प्रमाण सम्बन्धो में होता है। हर जागृत मानव प्रमाणित करता है। समस्त मूल्य जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य, उत्पादित वस्तु मूल्य (प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन पूर्वक उपयोगिता व कला मूल्य स्थापना अर्थात् उत्पादन) अर्थात् श्रम-नियोजन पूर्वक वस्तु मूल्य उपयोगिता-कला के रूप में है।

प्राकृतिक वैभव = सहअस्तित्व में पूरकता, उपयोगिता।

सहअस्तित्व नित्य प्रभावी है इसलिए प्राकृतिक ऐश्वर्य का मूल्य शून्य है।

प्रकृति ही धरती, हवा, पानी, पहाड़, समुद्र, नदी, नाला, जंगल, जीव, जानवर वस्तुएं हर मानव के सम्मुख दृश्य रूप में है।

5.11 सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व

जागृत मानव में, से, के लिए सत्ता में सम्पृक्त जड़ चैतन्यात्मक प्रकृति रूप में और परमाणु में विकास क्रम में रासायनिक-भौतिक, ठोस, तरल, विरल व रासायनिक वैभव का प्राण कोषा, उनमें निहित रचना विधि सहित विविध रचनायें।

जीव शरीर एवं मानव शरीर भी प्राण कोषाओं से रचित होना, शरीर एवं जीवन सम्बन्ध सहअस्तित्व सहज वर्तमान सम्बन्ध में सह अस्तित्व नित्य प्रभावी होना स्पष्ट है।

5.12 जागृत मानव

हर जागृत मानव मनाकार को परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन के रूप में साकार करने वाला, सर्वतोमुखी समाधान रूप में मनःस्वस्थता (अभ्युदय) सहज प्रमाण प्रस्तुत करता है।

अभ्युदय

1. सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न मानव परम्परा
2. मानवीयता पूर्ण आचरण वैभव मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहित

परिवार व्यवस्था, दस सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सहज परंपरा ही जागृत मानव परंपरा है।

राष्ट्रीय व्यवस्था = परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था दस सोपान में जागृत मानव में, से, के लिए परंपरा है। यही मानव-देव मानव-दिव्यमानव चेतना सहज वैभव है।

राष्ट्र = चारों अवस्था सहित सहअस्तित्व में, से, के लिए परंपरा है।

राष्ट्रीयता = नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, समाधान, सहअस्तित्व रूपी परम सत्य में, से, के लिए प्रमाण सहज वैभव जागृति।

जागृति = सहअस्तित्व में, से, के लिए जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना।

राष्ट्रीय चरित्र = मानवीयता पूर्ण आचरण सहित अखण्ड राष्ट्र समाज व्यवस्था सहज प्रमाण ही सार्वभौमता है।

असमंजसता का मतलब यही है स्वयं चाहता न हो दूसरे के लिए तैयार कर प्रस्तुत कर देता है । जैसे सामरिक तंत्र और द्रव्य । कोई देश अपने देश के सुरक्षा कर्मियो पर इसका प्रयोग नहीं चाहता पर इसे तैयार करके दूसरे को बेच देते है यही असमंजसता है । इसी प्रकार से कोई सज्जन मिलावट का चीज खाना नहीं चाहते किन्तु मिलावट कर बेच देते हैं ।

भाग-छः

मौलिक अधिकार

सम्पूर्ण आवश्यकताएँ शरीर पोषण, संरक्षण और समाज गति में ही उपयोगी, सदुपयोगी, प्रयोजनशील है । इसी स्पष्ट नजरिये से जीवन ज्ञान सम्पन्न हर जागृत मानव के लिए आवश्यकताएँ सीमित दिखाई पड़ती हैं और आवश्यकता के अनुरूप उत्पादन श्रम शक्ति मूलतः जीवन शक्ति की ही अक्षय महिमा होने के आधार पर आवश्यकता से अधिक उत्पादन में विश्वास स्वाभाविक है।

मौलिक अधिकार

परिचय संकेत

मानव चेतना सहज वैभव में-से-केलिए मानवीयतापूर्ण शिक्षा-दीक्षा शिक्षण पूर्वक परम्परा सहज मौलिक अधिकार फलन के रुप में जागृत मानव परंपरा है। यह शिक्षा-संस्कार परंपरा में पूर्णता सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन है।

मौलिक अधिकार

1. हर नर-नारी अध्ययन, शोध, अनुभव पूर्वक ज्ञान-विवेक-विज्ञान में पारंगत होना रहना मौलिक अधिकार है । निपुणता कुशलता पाण्डित्य पूर्वक में स्वेच्छा से कर्माभ्यास सहित प्रमाणित होना मौलिक अधिकार है ।
2. ज्ञान-विवेक-विज्ञान विधि से जिम्मेदारियों का निर्वाह मौलिक अधिकार है।
3. न्याय पूर्वक कार्य-व्यवहार सम्पन्न करना मौलिक अधिकार है ।
4. परिवार में समाधान-समृद्धि को प्रमाणित करना मौलिक अधिकार है।

5. सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना मौलिक अधिकार है।
6. समाधान पूर्वक निर्णय लेना मौलिक अधिकार है।
7. तन, मन, धन रूपी अर्थ को संरक्षित रखना, उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनशीलता सहज प्रवृत्ति प्रक्रिया मौलिक अधिकार है।
8. जागृत मानव लक्ष्य (समाधान, समृद्धि ,अभय, सहअस्तित्व) को प्रमाणित करना, कराना, करने के लिए सहमत होना मौलिक अधिकार है।
9. जागृत होने का मौलिक अधिकार मानवीयतापूर्ण शिक्षा-दीक्षा संस्कार एवं शिक्षण विधि पूर्वक सर्वसुलभ होने में भागीदारी करना मौलिक अधिकार है।
10. जागृत होने रहने करने का मौलिक अधिकार शिक्षा-संस्कार शिक्षण परंपरा सहज कार्यक्रम, इसमें हर नर-नारी प्रबुद्धता सहज प्रमाण रूप में भागीदारी करना भी मौलिक अधिकार है।
11. जागृत मानव ही सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान पूर्वक मानव-लक्ष्य अखण्ड-समाज, सार्वभौम व्यवस्था सहित नियति सहज लक्ष्य , 'त्व' सहित व्यवस्था, सहअस्तित्व लक्ष्य रूपी जागृति सहज प्रमाणों सहित प्रमाणित होना करना मौलिक अधिकार है।

    जागृत मानव में, से, के लिए मौलिक अधिकार गवाहित होता है और आवश्यक, उपयोगी, पूरक रूप में उपकारी होना-रहना मौलिक अधिकार है।

कर्त्तव्य सहज अधिकार

हर नर-नारी जागृति सहज प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन को

प्रमाणित करना सर्वमानव सहज मौलिक अधिकार सहित कर्त्तव्य है।

जागृत मानव प्रतिभा- (ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता)

1. स्वयं में विश्वास
2. श्रेष्ठता सहज सम्मान में विश्वास
3. ज्ञान-विवेक-विज्ञान रूपी प्रतिभा में विश्वास
4. मानवीयता पूर्ण आहार-विहार-व्यवहार रूपी व्यक्तित्व में विश्वास
5. व्यवहार में अखण्ड सामाजिक होने में विश्वास
6. उत्पादन कार्य रूपी व्यवस्था में परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने में विश्वास

    उपरोक्त सभी का अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन हर नर-नारी में, से, के लिए मौलिक कर्त्तव्य व अधिकार है।

6.1 स्वतंत्रता का अधिकार

स्वतंत्रता

1. जीवन-मूल्य सुख-शांति-संतोष-आनन्द सहज वैभव को सर्वतोमुखी समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व रूपी परम सत्य में प्रमाणित होने, करने, कराने एवं सहमत कराने में हर नर-नारी स्वतंत्र हैं। यह मौलिक अधिकार है।
2. मानव सहज बहुआयामी समझदारी को प्रमाणित करने में हर जागृत नर-नारी स्वतंत्र है। यह मौलिक अधिकार है।

3. मानवीयता पूर्ण परम्परा पाँच आयामी व्यवस्था में भागीदारी करने में हर जागृत नर-नारी स्वतंत्र है। यह मौलिक अधिकार है।

4 हर जागृत नर-नारी को तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा करने की स्वतंत्रता है। यह मौलिक अधिकार है।

5. हर जागृत नर-नारी मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने की स्वतंत्रता है। यह मौलिक अधिकार है।

6.2 स्वत्व का अधिकार

स्वत्व

1. ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता सहित परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन जागृत मानव में, से, के लिए स्वत्वता है। यह मौलिक अधिकार है।

2. हर जागृत नर-नारी में-से-के लिये नियम-नियंत्रण-संतुलन न्याय-धर्म-सत्य सहज रूप में स्वत्व है। यह मौलिक अधिकार है।

3. हर जागृत नर-नारी में-से-के लिये सहअस्तित्व रूपी सत्य, सर्वतोमुखी समाधान रूपी मानव-धर्म सूत्र-व्याख्या, सम्बन्ध व मूल्य चरि‍ नैतिकता सहज निर्वाह रूपी न्याय स्वत्व है। यह मौलिक अधिकार है।

स्वत्व में विश्वास

- ❖ सहअस्तित्व सहज अस्तित्व में विश्वास
- ❖ सहअस्तित्व नित्य वर्तमान होने में विश्वास
- ❖ जानने-मानने में विश्वास
- ❖ विकास-क्रम में विश्वास

- ❖ विकास सहज जीवन में विश्वास
- ❖ जीवन-जागृति में विश्वास

यही स्वयं में विश्वास, यही अनुभव मूलक अभिव्यक्ति है। ये सब मौलिक अधिकार है।

सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान में विश्वास जीवन सहज स्वरूप ज्ञान में विश्वास, जीवन क्रिया, लक्ष्य ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान में विश्वास आधारभूत क्रिया है।

जानना-मानना अनुभव मूलक सोच विचार सहित पहचानना-निर्वाह करना प्रमाण है। यह मौलिक अधिकार है।

मानव-लक्ष्य सुलभता के लिये दिशा की सुनिश्चितता ही समाधान, समाधान ही सुख, सुख ही मानव-धर्म, मानव-धर्म ही मानव कुल वैभव, मानव कुल वैभव ही अखण्ड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज व सार्वभौम व्यवस्था परम्परा ही जागृत मानव परम्परा है। यह मौलिक अधिकार है।

जागृत परम्परा ही मानवीयता पूर्ण परम्परा है। यही सार्वभौम परम्परा है। यही सर्व शुभ परंपरा मौलिक अधिकार है।

स्वत्व स्वतंत्रता

जागृत मानव में, से, के लिए स्वत्व स्वतंत्रता सहज वैभव है। वैभव अपने स्वरूप एवं स्थिति में स्वत्व और गति में स्वतंत्रता है। स्वत्व के रूप में स्वतंत्र जिम्मेदारी, भागीदारी है और स्वतंत्रता रूप में प्रमाण परम्परा है।

जागृत मानव में समझदारी और ईमानदारी स्वत्व के रूप में और जिम्मेदारी-भागीदारी स्वतंत्रता सहज रूप में प्रमाण और परंपरा

है।

जागृति मानव में जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य एवं वस्तु मूल्य में, से, के लिए स्वतंत्र है।

मानव चेतना मूलक शिक्षा मूल्य सहित उपयोगिता-कला मूल्य नियोजन में श्रम मूल्य स्वतंत्रता है।

6.3 न्याय सुरक्षा का अधिकार

न्याय-सुरक्षा

तात्विक = नियति क्रम अर्थात् नियम-नियंत्रण-संतुलन में जागृति पूर्वक आचरण न्याय सुरक्षा है।

नियति क्रम-नियम में	नियंत्रण में	संतुलन में
जागृति प्राकृतिक, बौद्धिक, सामाजिक रुप में सदा समाया समाधान	जागृति, प्राकृतिक संतुलन, रोगोपचार, भ्रम का उन्मूलन व समाधान	जागृति वन, खनिज, ऋतु संतुलन धरती में पदार्थ, प्राण, जीव, ज्ञान, अवस्थाओं में संतुलन समाधान

बौद्धिक = जागृति सहज प्रमाण परंपरा ही न्याय सुरक्षा है।

व्यवहारिक = ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार, परिवार व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज रूप में न्याय सुरक्षा है।

6.4 स्वास्थ्य संयम का अधिकार

स्वास्थ्य-संयम

तात्विक = स्वस्थ शरीर अर्थात् मानव परंपरा में मनःस्वस्थता, समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी समेत जीवन ही ज्ञान-विवेक-विज्ञान पूर्वक अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा को मानव परम्परा में प्रमाणित करने योग्य शरीर एवं क्रियाकलाप।

बौद्धिक = स्वास्थ्य-संयम अर्थात् संज्ञानीयता पूर्वक संवेदनायें नियंत्रित रहती है।

व्यवहारिक = स्वास्थ्य-संयम अर्थात् अखण्ड-समाज सार्वभौम-व्यवस्था में भागीदारी करने योग्य शरीर एवं क्रियाकलाप।

6.5 मानवीय शिक्षा-संस्कार का अधिकार

तात्विक अर्थ में मानवीय शिक्षा = अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन सहज, 'मध्यस्थ दर्शन' सह- अस्तित्ववादी विधि पूर्वक चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन।

बौद्धिक अर्थ में मानवीय शिक्षा = ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज शिक्षा संस्कार परंपरा।

व्यवहारिक अर्थ में मानवीय शिक्षा = अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करने में प्रतिबद्धता पूर्ण शिक्षा।

तात्विक अर्थ में संस्कार = जीवन-मूल्य, मानव-मूल्य, स्थापित-मूल्य एवं शिष्ट मूल्य का धारक-वाहकता।

बौद्धिक अर्थ में संस्कार = शिक्षा संस्कारों में पारंगत रहना,

करना और कराने के लिए सहमत रहना।

व्यवहारिक अर्थ में संस्कार = हर उत्सवों में मानव-लक्ष्य, जीवन-मूल्य संगत विधि से व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी की दृढ़ता व स्वीकृति को संप्रेषित, प्रकाशित करना, कराना, करने के लिए सहमति होना, जिसमें गीत, संगीत, वाद्य, नृत्य, साहित्य, कला वैभव समाहित रहना।

सार्वभौम-व्यवस्था विधि से ही मानवीय शिक्षा-संस्कार का लोकव्यापीकरण होता है। यही मौलिक अधिकार का स्त्रोत है।

मानवीयतापूर्ण परंपरा, दश सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी यह सब मौलिक अधिकार है।

6.5 (1) पर्यावरण सुरक्षा

धरती के वातावरण अर्थात् वायु मंडल को पवित्र रखने, धरती को पवित्र, ॠतु संतुलन सुरक्षित रखने, वन खनिज को सन्तुलित बनाये रखने में प्रमाणित होना यह मौलिक अधिकार है।

सर्व मानव मानवीयता पूर्ण आचरण सम्पन्न रहना ही समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व परंपरा के रूप में वर्तमान प्रमाण मौलिक अधिकार है।

6.5 (2) मानवीय व्यवसाय

हर नर-नारी स्वयं में व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी क्रम में परिवार मूलक स्वराज्य, राज्य वैभव, आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना यही समृद्धि का सहज सूत्र है। यह मौलिक अधिकार है।

उत्पादन मूल्य श्रम नियोजन होने के आधार पर उपयोगिता सुन्दरता

मूल्य को श्रम मूल्य के रूप में निश्चयन करना मौलिक अधिकार है।

मानवीयतापूर्ण व्यवहार मौलिक अधिकार है।

6.5 (3) मानवीय व्यवहार

हर जागृत मानव मनाकार को साकार करने मनः स्वस्थता को प्रमाणित करने के क्रम में दस सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी करना यह मौलिक अधिकार है।

मानव सम्बन्ध व मूल्यों का निर्वाह व मूल्यांकन पूर्वक परस्पर तृप्त रहना मौलिक अधिकार है।

मानवेत्तर प्रकृति यथा पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था का सम्बन्ध का निर्वाह करना, सन्तुलन सहित नियम-नियंत्रण को प्रमाणित करना, जिसके लिए उत्पादन यथा -

सामान्य आकाँक्षा सम्बन्धी वस्तुऐं	**महत्वाकाँक्षी सम्बन्धी वस्तुऐं**
आहार, आवास, अलंकार सम्बन्धी वस्तुऐं व उपकरण	दूरगमन, दूर श्रवण, दूरदर्शन संबन्धी उपकरण व वस्तुऐं

उक्त दोनों प्रकार के वस्तुओं के उत्पादन में भागीदारी यह मौलिक अधिकार है।

पूर्णता के अर्थ में अनुबंध प्रमाण, संकल्प, प्रतिज्ञा, स्वीकृतियों, सहित आचरण, सम्बन्ध निर्वाह में मौलिक अधिकार है।

6.5 (4) पूर्णता

क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता रूपी जागृति सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन यह मौलिक अधिकार है।

6.5 (5) संबंध प्रयोजन

संबंध	प्रयोजन
1. माता-पिता	पोषण एवं संरक्षण सहज प्रयोजनों को जानना-मानना-पहचानना-निर्वाह करना मौलिक अधिकार है।
2. भाई-बहन	अभ्युदय के अर्थ में मूल्य निर्वाह करना मौलिक अधिकार है ।
3. पुत्र-पुत्री	अभ्युदय निःश्रेयश के अर्थ में संबंध निर्वाह करना मौलिक अधिकार है।
4. पति-पत्नी	परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी करने के अर्थ में संबंध निर्वाह करना मौलिक अधिकार है।
5. गुरु-शिष्य	जीवन जागृति के अर्थ में, ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज पारंगत प्रमाणिकता के अर्थ में संबंध निर्वाह निरंतरता मौलिक अधिकार है।
6. साथी-सहयोगी	कर्त्तव्य दायित्वों को निष्ठापूर्वक निर्वाह करने के अर्थ में संबंधों का निर्वाह करना मौलिक अधिकार है।
7. मित्र-मित्र	अभ्युदय, सर्वतोमुखी समाधान सहज प्रामाणिकता सहित अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करने के अर्थ में संबंध निर्वाह करना मौलिक अधिकार है।

सभी सम्बन्धों को पूरकता-उपयोगिता सहज प्रयोजनों के अर्थ में

जानना-मानना-पहचानना-निर्वाह करना मौलिक अधिकार है।

सम्बन्ध सहज पहचान -

- ❖ पोषण प्रधान संरक्षण के रूप में माता का दायित्व-कर्तव्य के रूप में प्रमाण।
- ❖ संरक्षण प्रधान पोषण रूप में पिता का दायित्व कर्त्तव्य प्रमाण मौलिक अधिकार है।

पोषण-संरक्षण = शरीर पोषण, स्वास्थ्य-संरक्षण, संस्कारों का पोषण-संरक्षण, भाषा का पोषण-संरक्षण, स्वच्छता का पोषण-संरक्षण, परिवार व्यवस्था का पोषण-संरक्षण। व्यवहार-व्यवस्था का पोषण संरक्षण ज्ञान विवेक विज्ञान सहज सूत्र व्याख्या रुप में अखण्डता सार्वभौमता वैभव का पोषण संरक्षण परंपरा के रुप में होना।

उत्सव = जन्म दिन उत्सव, नामकरण उत्सव, विद्यारम्भ उत्सव, स्नातक उत्सव, विवाह उत्सव, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त शिशिर कालोत्सव यह मौलिक अधिकार है।

स्नातक- सनातन कालीन सत्य सहज वैभव में समझ को प्रमाणित करने हेतु सत्यापन।

6.5 (6) मानवीय संस्कार (मौलिकता) मानव चेतना सहज अनुभव-प्रमाण

1. माना हुआ को जानना एवं जाना हुआ को मानना।
2. जानना-मानना, समझदारी-ईमानदारी, ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता सहज प्रमाण वर्तमान।

मानव होने का, प्रयोजनों को, सहअस्तित्व होने का, चार अवस्था

होने का, चार पद होने का, सामाजिक अखण्डता सहज, व्यवस्था सहज, सार्वभौमता सहज, उपयोगिता सहज, पूरकता सहज, प्रयोजनों को जानना-मानना सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन जागृति है। जागृति के आधार पर परस्परता में पहचानना, निर्वाह करना सहज है।

1. नाम = पहचानने सम्बोधन करने के अर्थ में।
2. जाति = मानव जाति के अर्थ में अखण्ड समाज।
3. धर्म = सुख-शांति के अर्थ में समाधान समृद्धि एवं सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में वर्तमान सहज प्रमाण।
4. कर्म = परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन के रूप में (समृद्धि)।
5. शिक्षा = ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत कार्य व्यवहार पूर्वक जिम्मेदारी भागीदारी के रूप में मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी स्पष्ट होना
6. विवाह = समाधान-समृद्धि पूर्वक मानवीयता पूर्ण आचरण सहित अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी, एक पत्नी, एक पति के रूप में निर्वाह करने की प्रतिज्ञा संकल्प व निष्ठा के अर्थ में मौलिक अधिकार है।

6.5 (7) भाषा-विधि

भाषा :- भास = परम सत्य रूपी सहअस्तित्व कल्पना में होना, वाचन व श्रवण भाषा के अर्थ रूप में सत्य स्वीकार होना।

आभास :- भाषा सहित अर्थ कल्पना अस्तित्व में वस्तु रूप में स्वीकार होना, अर्थ संगति होने के लिए तर्क का प्रयोग होना, अर्थ वस्तु के रूप में अस्तित्व में स्पष्ट तथा स्वीकार होना फलस्वरूप तर्क संगत होना।

प्रतीति :- तर्क संगत विधि से सहअस्तित्व में वस्तु बोध होना। अर्थ अस्तित्व में वस्तु के रूप में समझ में आना ही प्रतीति है। फलतः बोध व अनुभव पूर्वक प्रमाण बोध चिंतन प्रणाली से अभिव्यक्ति होना सहज है।

तर्क :- अपेक्षा एवं संभावना के बीच सेतु।

तात्विकता प्रमाण समाधान, आवश्यकता, उपयोगिता, प्रयोजन शीलता के आधार पर सार्थक होता है। सम्पूर्ण संभावनाएं यथार्थता, सत्यता, वास्तविकता सहज प्रमाण है। अध्ययन पूर्वक स्पष्ट है।

6.5 (8) भाषा-विधि = कारण, गुण, गणित

कारण = सहअस्तित्व विधि सहित स्थितिपूर्ण सत्ता में संपृक्त प्रकृति सहज डूबा, भीगा, घिरा स्पष्ट होना।

गुण = उपयोगिता-पूरकता विधि से वस्तु-प्रभाव व फल-परिणाम स्पष्ट होना।

गणित = वस्तु मूलक गणना विधि जोड़ने-घटाने के रूप में स्पष्टता।

स्पष्ट होने का तात्पर्य तर्क समाधान संगत विधि सम्पन्नता पूर्वक समझ पाना और समझा पाने से है और जीने देने एवं जीने के रुप में प्रमाण वर्तमान। जीना अनुभव मूलक मानसिकता सहित कायिक-वाचिक-मानसिक, कृत-कारित-अनुमोदित रुप में।

व्यापक वस्तु में संपूर्ण एक-एक चार अवस्था व चार पदों में स्पष्ट होना भाषा सहज अर्थ है, यह मौलिक अधिकार है।

6.5 (9) साहित्य

साहित्य = यथार्थता-वास्तविकता-सत्यता को प्रयोजनों के अर्थ में कलात्मक विधि से स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त भाषा।

प्रयोजन = हर नर-नारी मानवत्व व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में पूरकता, नियम-नियंत्रण-संतुलन, न्याय-धर्म-सत्य सहज प्रमाण परंपरा है।

निबंध = निश्चित अर्थ में किया गया एक से अधिक अनुच्छेद रचना।

प्रबंध = निश्चित समाधानवादी प्रयोजनों का सूत्र व्याख्या सहज वाङ्मय।

वास्तविकता-सत्यता को, यथार्थता को इंगित कराने के लिए प्रयुक्त भाव-भंगिमा, मुद्रा, अंगहार सहित भाषा सहज संप्रेषण सार्थक होता है। यथार्थता-वास्तविकता-सत्यता को स्पष्ट करने के लिए निर्मित वातावरण व परिस्थितियाँ भाषाकरण का स्रोत उत्प्रेरणा है।

चित्र कला = किसी पृष्ठ भूमि पर किया गया चित्रण।

मूर्ति-कला, शिल्प = सभी ओर से निश्चित आकृति के रूप में मिट्टी, पत्थर और धातुओं से की गई रचना।

कविता-संगीत-साहित्य = सर्वतोमुखी समाधान के लिए सुरीली शैली से प्रस्तुत सुरीली शब्द-रचना व वाक्य अनुच्छेदों की रचना।

गद्य साहित्य = शब्द व वाक्य रचनायें सच्चाई, यथार्थता-वास्तविकता, सत्यता सहज न्याय सम्बन्ध, समाधान श्रवण करने वालों को इंगित कराना।

6.5 (10) शास्त्र

1. जागृत मानव परंपरा में स्वानुशासित होने-रहने में, से, के लिए हर परिवार समाधान-समृद्धि-अभय पूर्वक वर्तमान में विश्वास, सहअस्तित्व प्रमाण सहज न्याय-समाधान रूप में जीने का अध्ययन सहज प्रमाण।
2. सहअस्तित्व सहज सामाजिक अखण्डता सहित सार्वभौम व्यवस्था का अध्ययन व भागीदारी सहज रूप में आचरण।
3. जागृत मानव परंपरा में जागृत मानसिकता प्रवृत्ति, अखण्ड सामाजिक सम्बन्ध मूल्य, मूल्यांकन, परस्परता में (उभयता में) तृप्ति, समाधान सहज निरन्तरता का अध्ययन आचरण प्रमाण।
4. सार्वभौम व्यवस्था क्रम में तन-मन-धन रूपी अर्थ इनमें अविभाज्यता, वस्तु रूपी धनोपार्जन, विनिमय, उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजन सहज सुनिश्चितता का अध्ययन सहज क्रियान्वयन।

6.5 (11) वाद-विचार

वाद-विचार = वाद-संवाद, आख्यान, व्याख्यान, उपदेश, भाषण, चर्चायें, भाव अर्थात् मूल्य सहज प्रयोजन तर्क संगत विधि से समाधान मानसिकता का अध्ययन, अभिव्यक्ति है।

चर्चा = चिन्तन पूर्वक प्रयोजनों का स्पष्ट होना।

भाषण = मौलिकता, मूल्य, प्रयोजन सहज रूप में संप्रेषित होना।

व्याख्या = व्यवहार व व्यवस्था में प्रमाणित होने के अर्थ में स्पष्ट

होना।

आख्यान = आवश्यकता-अनिवार्यता स्पष्ट होना।

संवाद = पूर्णता अर्थात् गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरण पूर्णता के अर्थ में है एवं तर्क विधि से समाधान सुलभ होना है।

वाद = वास्तविकता पूर्वक समाधान सहज निष्कर्ष पूर्ण अध्ययन सुलभ रूप में प्रस्तुत करना।

विचार = विधिवत् प्रयोजन के अर्थ में विवेचना, विश्लेषण करना, स्पष्ट करना, स्पष्ट होना।

मानव लक्ष्य को प्रमाणित करना ही जागृत मानव परंपरा में विचार प्रयोजन है।

विवेचना = विधिवत् प्रयोजन व लक्ष्य आवश्यकता उपयोगिता-पूरकता सहज स्पष्टीकरण।

भाषा विधि प्रयोजन = भाषा सहज अर्थ में अस्तित्व में सह-अस्तित्व-पद, अवस्था-बोध होना।

पद	**अवस्था**	**बोध**
प्राणपद	पदार्थावस्था	वस्तु-बोध
भ्रांतिपद	प्राणावस्था	क्रिया-बोध
देवपद	जीवावस्था	स्थिति-बोध
दिव्यपद	ज्ञानावस्था	गति-बोध
		परिणाम-बोध
		फल प्रयोजन-बोध
		मानव में, से, के लिए जागृति-बोध

बोध = अध्ययन-पूर्वक अनुभवगामी क्रम में बोध, अनुभव

मूलक विधि से प्रमाण बोध, अनुभव प्रमाण बोध सहअस्तित्व सहज अनुभव प्रमाणों को व्यवहार व प्रयोगों में प्रमाणित करना ही ज्ञान-विवेक-विज्ञान है।

अनुभव = जानने-मानने-पहचानने-निर्वाह करने की संयुक्त क्रिया और जानने-मानने-पहचानने-निर्वाह पूर्वक कार्य-व्यवहार-व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित होने की क्रिया हैं।

6.5 (12) इतिहास

1. विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति सहज परंपरा।
2. सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति सहज भौतिक, रासायनिक जीवन क्रिया-कलाप।
3. मानव परंपरा में, से, के लिए जागृति सहज वैभव सर्वशुभ रूप में समाधान-समृद्धि-अभय सहअस्तित्व प्रमाण परंपरा।
4. सर्व शुभ, नित्य शुभ सहज वैभव सार्वभौम व्यवस्था परंपरा में, से, के लिए है।
5. सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व सहज वैभव रूप में प्रमाण परंपरा है। यही इतिहास का आधार है।

इस धरती पर मानव पीढ़ी से पीढ़ी परंपरा में घटित प्रवृत्ति नियति क्रम का आंकलन सहित जागृति सहज परंपरा आवश्यक है।

जंगल युग से - शिला युग

शिला युग से - धातु युग

धातु युग से ग्राम-कबीला युग

ग्राम-कबीला युग से - राज शासन एवं धर्म शासन युग

राज शासन एवं धर्म शासन युग से - लोकतंत्र युग प्रधान रूप में।

यह शक्ति केन्द्रित शासन युग रहा।

रहस्य मूलक आदर्शवाद में	**अस्थिरता-अनिश्चयता मूलक भौतिकवाद में**
भक्ति विरक्ति का प्रेरणा, रहस्यमय स्वर्ग मोक्ष के रूप में आश्वासन इसका प्रमाण रिक्त रहा, रहस्यमय देव कृपा से स्वर्ग, रहस्यमय ईश कृपा, वेद कृपा, गुरु कृपा से मुक्ति का आश्वासन रहा। प्रेरणा विधि रहस्यमय रहा।	संग्रह सुविधा का प्रेरणा इसका तृप्ति बिन्दु नहीं मिलना प्रयोग क्रम में धरती बीमार होना रहा।

राज युग से गणतंत्र विधि से जनप्रतिनिधियों का सहमति से शासन, सभी देश, राज, राष्ट्र के संविधान, व्यक्ति समुदाय चेतना से ग्रसित एवं शक्ति केन्द्रित शासन के रूप में है, जिसका विकल्प अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन, ज्ञान, विवेक, विज्ञान रूप में मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद), शास्त्र अखण्डता, सार्वभौमता के अर्थ में प्रस्तुत है। यह प्रस्तुति रहस्य, भ्रम, अपराध मुक्ति के अर्थ में है।

6.5 (13) जागृत मानव परंपरा का सहज वैभव

(1) मानव चेतना विधि से मानवत्व सहज परिवार व्यवस्था से व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी से है।

(2) मनाकार को साकार करने एवं मनःस्वस्थता का प्रमाण से है।

(3) खनिज, वन, वन्य जीव को संतुलित बनाये रखते हुए और घरेलू जीवों को पालते हुए कृषि के आधार पर आहार, वन खनिज के आधार पर आवास, इन्हीं आधार पर अलंकार, वस्तुओं का

उत्पादन या निर्माण और उपयोग से है। प्रौद्योगिकी विधि से दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन संबंधी सुविधा प्राप्त करना।

(4) कृषि व पशु पालन के आधार पर आहार संबंधी वस्तुओं से संपन्न होने से है। ग्राम-शिल्प-वन- खनिज के आधार पर आवास, अलंकार संबंधी वस्तुओं से सम्पन्न होने से है।

(5) जागृत मानव के नृत्य : अंग हार, भंगिमा, मुद्रा भेद से भाव-भाषा प्रकाशन।

नृत्य = मानव चेतना सहज प्रयोजन के अर्थ में नाट्य, गीत-संगीत, भाषा, भाव = मूल्य = मौलिकता = समाधान = सुख = मानवापेक्षा भाव-भंगिमा, मुद्रा-अंगहार सहज संयुक्त अभिव्यक्ति, संप्रेषणा प्रकाशन व्यवहारिक है।

सुख-शान्ति-सन्तोष व आनन्द सहज सम्प्रेषणायें आप्लावन सहज स्वीकृति में सार्थक होता है। सर्वतोमुखी समाधान ही सुख, समाधान-समृद्धि ही शान्ति, समाधान-समृद्धि-अभय ही संतोष, समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व प्रमाण ही आनन्द है। यही सर्वशुभ सूत्र है। यही सार्थक नृत्य भावों का आधार है।
सर्व-शुभ में स्व-शुभ समाया है।

भाव = मौलिकता, मूल्य, मूल्य सम्प्रेषणा।

भंगिमा = मूल्य में तदाकार-तद्रूपता भाषा विहिन मुखमुद्रा।

मुद्रा = शरीर में मूल्य प्रभावी झलक, इसके अनुकूल मुद्रा अंगहार जिससे मूल्य व मूल्य संप्रेषणा दर्शकों में स्वीकृत व प्रभावी होना ही प्रयोजन है।

श्रवण = श्रेष्ठता, सहजता को सुनने की क्रिया यह मौलिक अधिकार है।

मौलिकता = जीव चेतना से मानव चेतना श्रेष्ठ, मानव चेतना

से देव चेतना श्रेष्ठतर, देव चेतना से दिव्य चेतना श्रेष्ठतम होना स्पष्ट होना।

6.5 (14) शिक्षा-संस्कार व्यवस्था

शिक्षा = शिष्टता पूर्ण दृष्टि का उदय होना, मूल्य-चरित्र-नैतिकता स्पष्ट एवं प्रमाणित होना।

शिष्टता

1. समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी-भागीदारी सहज प्रमाण होना।
2. दृष्टा-पद प्रतिष्ठा का जागृति सहज प्रमाण होना।
3. मानवीयता पूर्ण आचरण सहज प्रमाण होना।

संस्कार

1. जीवन जागृति एवं विधि स्वीकृति होना।
2. सहअस्तित्व नियति सहज विधि स्वीकार होना।
3. अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था रूप में सम्पूर्ण विधि स्वीकार होना, प्रमाणित होना।

व्यवस्था = उपयोगिता-पूरकता सहज मानवीयता पूर्ण आचरण वैभव को दस सोपानीय व्यवस्था में-से-के लिये प्रमाणित करने का कार्यक्रम में भागीदारी करना।

उद्देश्य = मानव-लक्ष्य, जीवन-मूल्य मानव परंपरा में प्रमाणित रहना, करना-कराना-करने के लिए सहमत होना।

6.5 (15) शिक्षा-संस्कार व्याख्या स्वरूप

शिक्षा में वस्तु = सह अस्तित्व सहज ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहित कायिक-वाचिक-मानसिक व कृत-कारित-अनुमोदित प्रमाण।

शिक्षक और अभिभावक = सह-अस्तित्व दर्शन बोध ज्ञान प्रमाण, जीवन ज्ञान-बोध-प्रमाण सम्पन्न होना, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान प्रमाण होना रहना।

विवेक = मानव लक्ष्य, जीवन मूल्य बोध अनुभव प्रमाण।

विज्ञान = मानव लक्ष्य में, से, के लिए सुनिश्चित दिशा, व्यवहार व कर्माभ्यास नियम बोध अनुभव प्रमाण परम्परा में, से, के लिए सहज सुलभ होना।

शिक्षा वस्तु सहज ज्ञान-विवेक-विज्ञान-सहज विधि से सिद्धांतों का धारक-वाहक शिक्षक-अभिभावक होना-रहना है।

शिक्षा = अभिभावक-शिक्षकों के साथ विद्यार्थियों को अभ्युदय के अर्थ में सहमत सहित रूप में प्रमाणित रहना।

शिक्षक = पूर्णतया समझदार, ईमानदार, जिम्मेदार, भागीदार रहना शिक्षा प्रणाली सहज वैभव है। जागृति स्रोत व वर्तमान में प्रमाण रूप में होना वैभव है।

अभिभावक = अभ्युदय को भावी पीढ़ी में आवश्यकता अपेक्षा सहित स्वयं की उपयोगिता-पूरकता को प्रमाणित करने वाला अभिभावक है।

विद्यार्थी = भ्रम मुक्ति व समझदारी के लिए साक्षरता, भाषा व अध्ययन मानवीयता पूर्ण आचरण में पारंगत होने के लिए, करने के लिए, अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सहित मानव लक्ष्य को साकार करने के लिए आशा, अपेक्षा, आवश्यकता व जिज्ञासु होना है।

6.6 मानवीय संस्कृति सभ्यता का अधिकार

अनुभव मूलक अभिव्यक्ति संप्रेषणा

सम्बन्ध-मूल्य	निर्वाह परम्परा	
मूल्यांकन-उभयतृप्ति	निर्वाह परम्परा	
व्यवस्था सहज -	निर्वाह परम्परा	
दायित्व -	निर्वाह परम्परा	इन्हें कलात्मक विधि
कर्त्तव्य सहज-	निर्वाह परम्परा	से प्रस्तुत करना

पूर्णता के अर्थ में किया गया निर्वाह परम्परा

जागृति पूर्वक जीने की कला व कृतियों के रूप में निर्वाह परम्परा

क्रिया पूर्णता, मानव मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहित सर्वतोमुखी समाधान प्रमाण के रूप में वर्तमान होना-रहना ही है।

जागृत मानव जीने का प्रमाण परम्परा ही मानव संस्कृति सभ्यता सहज मौलिक अधिकार है।

6.6 (1) कला

कला = श्रेष्ठता सहज उपयोगिता पूरकता वादी भाषा, भाव (मूल्य संप्रेषण) भंगिमा, मुद्रा, अंगहार प्रकाशन

भाषा = सत्य भास होना प्रकाशन एवं संप्रेषणा सहज अर्थ में।

मौलिकता (चारों अवस्था व पदों का) सहज, रूप-गुण-स्वभाव-धर्मात्मक मौलिकता, चारों अवस्था व पदों की मौलिकता, अखण्डता, सार्वभौमता सहज प्रकाशन मौलिक अधिकार है।

भास = सहअस्तित्व समझ में होने का संभावना सहज सूचना।

आभास = समझ स्वीकार होने का सम्भावना।

प्रतीति = चिन्तन, साक्षात्कार समझ की अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा

अनुभूति = प्रमाण बोध अनुक्रम एवं क्रम ही चारों अवस्था व पदों में निहित धर्म स्वभाव सहज अभिव्यक्ति।

6.6 (2) जागृत मानव-परम्परा में प्रमाण सहज वैभव परंपरा है

ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता सहित ईमानदारी-जिम्मेदारी-भागीदारी समेत परम्परा ही जागृत मानव परंपरा है।

ज्ञान = सहअस्तित्व सहज दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान में सम्पन्नता (पारंगत प्रमाण)

विवेक = जीवन मूल्य, मानव लक्ष्य में पारंगत प्रमाण

विज्ञान = काल, क्रिया, निर्णय में पारंगत प्रमाण

मानवीयता पूर्ण आचरण जागृत मानव-परंपरा है। मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान, मानवीय व्यवस्था, दस सोपानीय सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज राष्ट्र के अर्थ में मानवीय व्यवस्था, मानवीय शिक्षा संस्कार परम्परा सहज परंपरा ही जागृत मानव परंपरा है। यह मौलिक अधिकार है।

मानव और नैसर्गिक सम्बन्ध = सम्बन्ध पूर्णता के अर्थ में अनुबन्ध।

पूर्णता = क्रिया पूर्णता, अखण्ड समाज के अर्थ में आचरण पूर्णता सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सहज स्वीकृति आचरण, कार्य-व्यवहार-विचार, ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज प्रमाण परंपरा

6.6 (2) जागृत मानव परंपरा में ही नैसर्गिक-सम्बन्धों का निर्वाह होता है।

1. मानवेत्तर प्रकृति यथा जीवावस्था, प्राणावस्था, पदार्थावस्था सहज वैभव के साथ उपयोगिता-पूरकता सहित संतुलन को प्रमाणित

करना।

2. मानवेत्तर प्रकृति में सन्तुलन बनाये रखना।

3. ऋतु सन्तुलन के आधार पर वन खनिज का संरक्षण करना।

4. सम्पूर्ण वन वनस्पतियाँ बीज-वृक्ष विधि से आवर्तनशील है, इसे सुरक्षित रखना।

5. खनिज व वनस्पतियों के संतुलन को बनाये रखना व सुरक्षा करना।

6. धरती के वातावरण व पर्यावरण को सन्तुलित पवित्र बनाये रखना।

6.6 (4) मानवेत्तर प्रकृति का सम्बन्ध निर्वाह मौलिक अधिकार है।

1. धरती पर अन्न, वन, वनस्पतियों, वन्य प्राणियों और जीवों का सम्बन्ध एवं वन ही इनके आवास स्थली के रूप में धरती पर वर्तमान है। मानव सहज वैभव होने का आधार भी धरती है, इसलिए इसका सन्तुलन आवश्यक है। धरती अपने शून्याकर्षण स्थिति-गति स्वरूप में संतुलित होने के आधार पर ही प्राणावस्था के सम्पूर्ण प्रकार की वनस्पतियाँ, जीव-संसार और ज्ञानावस्था में मानव का होना पाया जाता है। इनमें सन्तुलन बनाये रखना जागृति है। यह विज्ञान विधा का महत्वपूर्ण दायित्व है।

2. हवा के साथ मानव का सम्बन्ध बना ही है। प्राण वायु अर्थात् मानव तथा जीव-संसार जिस प्रकार के हवा के कारण सांस ले पाते हैं, इसकी प्रचुरता-पवित्रता को बनाये रखना मानव कुल का कर्त्तव्य है।

3. पानी के साथ मानव सम्बन्ध सदा से बना ही रहता है। इस धरती पर पानी समृद्ध होने के उपरान्त ही प्राणावस्था, जीव अवस्था और ज्ञानावस्था में मानव सहज प्रकट होना पाया जाता है। अतएव

पानी की प्रचुरता एवं पवित्रता को सुरक्षित बनाये रखना आवश्यक है।

4 जीव संसार की सुरक्षा व नियंत्रण-संतुलन मानव परंपरा के लिए अनिवार्य कर्त्तव्य है।

नियम-त्रय पालन मौलिक अधिकार है।

प्राकृतिक नियम

बौद्धिक नियम

सामाजिक नियम

6.6 (5) प्राकृतिक नियम

खनिज वनस्पति, जीव-संसार इसी धरती में संतुलित रहने के उपरान्त ही मानव का उदय व परम्परा प्रस्तुत है। मानव ज्ञानावस्था में होने के कारण इनमें सन्तुलन वैभव को बनाये रखना ही समाधान (सुख) है।

6.6 (6) बौद्धिक नियम

समृद्धि-स्नेह-समझदारी (समाधान) सरलता, वर्तमान में विश्वास एवं विश्वास-कारी ज्ञान-विज्ञान-विवेक सम्मत मानसिकता विचार का प्रमाण।

6.6 (7) सामाजिक नियम

स्वधन, स्व-नारी, स्व-पुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार का प्रमाण परंपरा।

जागृत मानव सहज अभिव्यक्ति-संप्रेषणा

अभ्युदय के अर्थ में व्यक्त रहना।

सर्वतोमुखी समाधान सहज प्रमाण परंपरा के रूप में वर्तमान रहना ।

ज्ञान-विज्ञान-विवेक सम्पन्नता का प्रमाण और प्रमाण सहज परंपरा, परंपरा ही पीढ़ी से पीढ़ी अखण्ड समाज परंपरा, सार्वभौम व्यवस्था परंपरा, स्वतंत्रता स्वराज्य सहज परंपरा, मानवीयता पूर्ण आचरण परंपरा, मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान परंपरा, दस सोपानीय सार्वभौम व्यवस्था परंपरा ही जागृत मानव सहज अभिव्यक्ति-संप्रेषणा प्रकाशन है।

6.7 आहार विहार का अधिकार

मानवीय आहार मानव शरीर-रचना के आधार पर निश्चित होता है।

1. अस्तित्व में जीव शरीर, मानव शरीर रचनायें गर्भाशय में होना पाया जाता है। यह पिण्डज संसार का वैभव है। शाकाहारी शरीर का अध्ययन करने से पता चलता है कि शाकाहारी जीव और मानव ओंठ के सहारे पानी पीते हैं जबकि मांसाहारी जीव जीभ से पानी पीते हैं।
2. मांसाहारी जीवों के पैरों के नाखून व दाँत पैने होते हैं। जबकि शाकाहारी जीवों और मानव के पैरों और हाथों के नख और दाँत उतने पैने नहीं होते ।
3. मांसाहारी शरीर में आंते लम्बाई में छोटी होती है। शाकाहारी की आंते लम्बी होती है।
4. मांसाहारी और शाकाहारी जीवों का निश्चित आचरण देखने को मिलता है जैसा बाघ और गाय। इनका आचरण निश्चित रहता है। मानव का अध्ययन से पता चलता है कि दोनों प्रकार का आहार करते हुए भी मानव का आचरण सुनिश्चित नहीं होता।

अतएव मानवत्व सहित मानवीयता पूर्ण आचरण ही आधारभूत सूत्र व सहअस्तित्व सहज प्रमाण रूप में व्याख्या है। मानव नियति-विधि से शाकाहारी है। यह मौलिक अधिकार है ।

मानवीय-विहार

विहार = मानवीयता पूर्ण आचरण में विश्वास सहज उत्सव को हर्षोल्लास के रूप में प्रकाशित करना।

हर्ष = हृदय स्पर्शी प्रसन्नता।

प्रसन्नता = प्रयोजन सहित समाधान सम्पन्न मानसिकता का प्रकाशन।

प्रमोद = प्रयोजनों के अर्थ में खुशी का प्रकाशन।

आमोद = आवश्यकता उपयोगिता पूरकता में सफलता सहज उत्सव प्रकाशन।

उल्लास = समाधान-समृद्धि सहज उत्सव उन्नति का प्रकाशन।

विनोद = परस्पर ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज समानता का परीक्षण-निरीक्षण प्रसन्नता सहज प्रकाशन स्वीकृति रूप में।

व्यवहार = मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना।

विन्यास = विविध परिस्थितियों में न्याय-निर्वाह वैभव।

यह मौलिक अधिकार है।

6.8 अधिकार (परिवार समूह सभा का अधिकार)

(1)

(1.1) सभा गठन सहज अधिकार।

(1.2) गठन में कार्यरत सदस्यों सहज सम्बन्धों को पहचानने का अधिकार।

(1.3) आयु के अनुसार संबोधनाधिकार।

(1.4) बहन-भाई, चाचा-चाची नाम से संबोधन अधिकार।

(1.5) गांव मोहल्ले में रहने वाले सभी परिवार मानव लक्ष्य को प्रमाणित करने में प्रोत्साहित करने का अधिकार।

(1.6) मानवत्व में, से, के लिए मार्गदर्शन देने व पाने का अधिकार, परिवार न्याय को बनाये रखने में मार्ग-दर्शन करने, पाने का अधिकार।

(1.7) परिवार-समूह-सभा में कार्यरत हर सदस्य दस परिवार जनों के लिए सर्व शुभ मार्गदर्शन का अधिकार।

(1.8) सर्व शुभ रूपी समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व में जागृति सहज प्रमाण के अर्थ में मार्ग दर्शन का अधिकार हर समझदार परिवार एवं परिवार समूह सभा में रहेगा।

(1.9) दस परिवार समूह सभाओं की गतिविधियों को परस्पर परीक्षण-निरीक्षण करने का अधिकार रहेगा।

(2)

ग्राम मोहल्ला सभा का अधिकार

(2.1) ग्राम मोहल्ले में जल आपूर्ति करने का अधिकार।

(2.2) बहती पानी को रोकने का अधिकार।

(2.3) ग्राम में वृक्षारोपण का अधिकार।

(2.4) वन समृद्धि करण का अधिकार।

(2.5) वनौषधियों को संरक्षित समृद्ध करने का अधिकार।

(2.6) वनौषधियों का उपयोग करने का अधिकार।

(2.7) वनोपज वनौषधियों को संग्रहित करने का अधिकार।

(2.8) पर्यावरण में प्रदूषण मुक्ति के लिए भागीदारी करने का अधिकार।

(3)

(3.1) ग्राम में समीचीन रोगों का निवारणाधिकार।

(3.2) ग्राम में सभी के स्वस्थ रहने के आवश्यकीय सभी उपायों को अपनाने का अधिकार।

(3.3) वन एवं वनौषधियों के संवर्धन करने का अधिकार।

(3.4) हर परिवार को शिक्षा संस्कार विधि से स्वस्थ रहने की विधियों से सम्पन्न करने का अधिकार।

(4)

(4.1) अपने-अपने गाँव में हस्त कला में सब को परांगत बनाने का अधिकार।

(4.2) ग्राम शिल्प कार्यों में ग्राम वासियों को पारंगत बनाने का अधिकार।

(4.3) ग्राम की आवश्यकतानुसार ग्राम वासियों को कुटीर उद्योग में पारंगत बनाने का अधिकार।

(4.4) ग्राम वासियों को कुटीर एवं ग्रामोद्योग में पारंगत बनाने का अधिकार।

(4.5) ग्राम में ग्रामोद्योगों को स्थापित करने का अधिकार।

(5)

(5.1) ग्रामों में प्रत्येक नर-नारी को साक्षरता सहित समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी सहित व्यवस्था में भागीदारी का समानाधिकार को जागृत बनाये रखने का अधिकार।

(5.2) मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार एवं उत्पादन के लिए कारीगरी प्रशिक्षण का ग्राम व्यापीकरण करने का अधिकार।

(5.3) जागृति का मूल्यांकन करने का अधिकार।

(5.4) समाधान समृद्धि में समानाधिकार का मूल्यांकन करने का अधिकार।

(5.5) सम्बन्ध व मूल्य निर्वाह में समान अधिकार।

(5.6) समझदारी सहित शिष्टतापूर्वक व्यवहार करने में समान अधिकार।

(5.7) मानव चेतना सहज संस्कारपूर्वक समझदार होने का अधिकार।

(5.8) न्याय प्रदायी क्षमता सम्पन्न होने का अधिकार।

(5.9) समृद्धि सम्पन्न होने का अधिकार।

(5.10) मानवीय संस्कृति सभ्यता पूर्वक प्रमाणित होने का समान अधिकार।

(6)

(6.1) कृषि कार्य में बीज स्वायत्तता का अधिकार।

(6.2) कृषि कार्य में उर्वरक स्वायत्तता का अधिकार।

(6.3) कृषि कार्य में कीट नाशक कार्य प्रणाली में स्वायत्तता का अधिकार।

(6.4) कृषि कार्य में जल स्वायत्तता का अधिकार।

(6.5) कृषि कार्य में बीज गुणन कार्य का अधिकार।

(6.6) बीज गुणन कार्य में ज्ञानार्जन प्रयोग का अधिकार। ग्राम मोहल्ला में ऊर्जा संतुलन के अधिकार।

(7)

(7.1) मानवीयता पूर्ण आचरण करने का अधिकार।

(7.2) ज्ञान-विवेक-विज्ञान पूर्ण विधि से सामाजिक अखण्डता व्यवस्था सहज सार्वभौमता के अर्थ में सोच-विचार-निर्णय सहित कर्त्तव्य-दायित्व पालन पूर्वक व्यवहार करने का अधिकार।

(7.3) अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन में अनुभव प्रमाण सहज आधार पर शोध कार्य का अधिकार।

(7.4) आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने का अधिकार।

(7.5) न्याय पूर्वक जीने का अधिकार।

(7.6) समाधान पूर्वक जीने का अधिकार।

(7.7) सहअस्तित्व में जीने-रहने का अधिकार।

(7.8) मानव-लक्ष्य, जीवन-मूल्य को प्रमाणित करने का अधिकार रहेगा।

(7.9) ग्राम-परिवार-सभा अपने वैभव को प्रमाणित करने के लिए समितियों का मनोनयन पूर्वक गठित करने का अधिकार।

(8)

(8.1) परिवार ग्राम मोहल्ला परिवार सभा से मनोनीत समितियों व सभाओं में कार्य व भागीदारी करता हुआ हर नर-नारी में, से, के लिए मानवत्व सहज समान अधिकार है।

ग्राम मोहल्ला में हर मानव में मौलिक अधिकारों का वैभव

परिवार मूलक स्वराज्य कार्य व्यवस्था स्वरूप

स्वरूप

मानवीय शिक्षा संस्कार सुलभता, न्याय सुरक्षा सुलभता , उत्पादन कार्य सुलभता, विनिमय कोष सुलभता, स्वास्थ्य संयम सुलभता, यही सार्वभौम व्यवस्था स्वरूप अखण्ड समाज के अर्थ में ही सार्थक होता है ।

व्यवस्था

उपयोगिता-पूरकता सहज मानवीयता पूर्ण आचरण वैभव को दस सोपानीय व्यवस्था में, से, के लिए प्रमाणित करने का कार्यक्रम -

1. जागृति पूर्वक वर्तमान में विश्वास, भविष्य में आवश्यकता को प्रमाणित करना व्यवस्था है।
2. हर नर-नारी में-से-के लिये मानवीयता पूर्ण आचरण ही समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी-भागीदारी है । यह दस सोपानीय स्वराज्य व्यवस्था में, से, के लिए अभिव्यक्ति है।

स्वराज्य = अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था परम्परा के रूप में वैभव यही सर्वशुभ कार्यक्रम है। जागृत मानव परंपरा सहज वैभव ।

परिवार मूलक = परिवार मूलक सूत्र व्याख्या के आधार पर व्यवस्था

वैभव यह मौलिक अधिकार है।

6.9 उद्देश्य-दायित्व-कर्त्तव्य

मानव का कर्त्तव्य जागृति के पश्चात प्रारंभ होता है। हर नर-नारी जागृति सम्पन्न होने का स्त्रोत शिक्षा-संस्कार कार्य परंपरा है । जागृत मानव होने से ही कर्त्तव्य दायित्व सार्थक होता है। जो देश काल परिस्थिति के आधार पर तय होता है । मूलतः मौलिक अधिकार जागृत मानव का कर्त्तव्य है जो स्वयं के प्रति, परिवार के प्रति, समाज के प्रति, समग्र व्यवस्था के प्रति वरीयता सहित भागीदारी पूर्वक सार्थक होता है।

हर नर-नारी जागृति सहज प्रतिभा और व्यक्तित्व को प्रमाणित करना सर्वमानव सहज मौलिक अधिकार सहित दायित्व कर्त्तव्य है ।

1 सभा में भागीदारी हर नर-नारी करने में समानता मानव-लक्ष्य सर्व सुलभ होना और होने में, से, के लिए सभी सदस्य समान रूप में दायी है।

2 हर परिवार में हर सदस्य समझदार-ईमानदार-जिम्मेदार-भागीदार होना, रहने का उद्देश्य व सफल बनाने का दायित्व समान है।

3 सहअस्तित्व दर्शन-ज्ञान, जीवन-ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान पूर्वक व्यवस्था गति को बनाये रखने का दायित्व समान है।

4 सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता से ही परिवार से विश्व-परिवार में प्रमाणित होना ईमानदारी व दायित्व है।

5 मानवीयता पूर्ण आचरण प्रवृत्ति जिम्मेदारी का दायित्व होना समान है।

6 अखण्ड समाज के अर्थ में दस सोपानीय सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी का दायित्व समान है।

7 मानव लक्ष्य परंपरा में प्रमाणित होने का दायित्व समान है।

8 मानवीय शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन कार्य सुलभता, विनिमय-कोष सुलभता, स्वास्थ्य-संयम सुलभता, यही प्रधानतः कार्य सहज उद्देश्य-दायित्व-कर्त्तव्य है। इनमें समानाधिकार है।

आवश्यकताओं की पूर्ति इसलिए संभव नहीं है कि वह अनिश्चित एवं असीमित है। कर्तव्य की पूर्ति इसलिए संभव है कि वह निश्चित व सीमित है। यही कारण है कि कर्तव्यवादी प्रगति शांति की ओर तथा आवश्यकतावादी प्रगति अशांति की ओर उन्मुख है।

भाग-सात

व्यवस्था

सापेक्षता में छोटे बड़े का स्वीकार होने लगता है। पूर्णता व संपूर्णता ओझिल हो जाता है। जबकि पूर्णता व संपूर्णता में ही प्रत्येक ईकाई का (वस्तु का) सम्मान मूल्यांकन हो पाता है, मूल्यांकन और सम्मान करने वाला मानव ही है, इसके विपरीत सापेक्ष विधि से छोटे बड़े की ओर ध्यान जाता है। स्वयं को बड़ा मानना एक आवश्यकता हो जाता है। इसे बरकरार रखने के लिए अन्य को छोटा बनाये रखना भी एक आवश्यकता बन जाती है। इस क्रम में द्रोह, शोषण सारे काम होते हैं। मानव जब संपूर्णता के साथ सह-अस्तित्व में प्रमाणित करता है, इनसे विमुख हो जाता है।

व्यवस्था

दस सोपानीय व्यवस्था :-

वर्तमान में हर नर-नारी में जागृति सहज प्रमाण, हर परिवार में समाधान, समृद्धि सहज प्रमाण, परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी सहज प्रमाण सहज अधिकार।

व्यवस्था स्वरूप :-

(चित्र अगले पृष्ठ पर)

व्यवस्था प्रक्रिया :-

दस समझदार सदस्यों का परिवार सभा प्रक्रिया क्रम, परिवार प्रतिनिधि निर्वाचन विधि सहज (जन प्रतिनिधि) प्रणाली हर परिवार में से एक सदस्य का निर्वाचन पद्धति दस सदस्यीय परिवार समूह सभा में, से, के लिए होगा।

व्यवस्था का क्रम :-

दस समझदार मानव

1. परिवार सभा
2. परिवार समूह सभा

व्यवस्था स्वरूप
संस्कृति सभ्यता में भागीदारी

व्यवहार	परिवार	सम्बन्ध मूल्य
व्यवहार	परिवार समूह	सम्बन्ध मूल्य
व्यवहार	ग्राम/मोहल्ला परिवार	सम्बन्ध मूल्य
व्यवहार	ग्राम/मोहल्ला समूह परिवार	सम्बन्ध मूल्य
व्यवहार	क्षेत्र परिवार	सम्बन्ध मूल्य
व्यवहार	मंडल परिवार	सम्बन्ध मूल्य
व्यवहार	मंडल परिवार समूह	सम्बन्ध मूल्य
व्यवहार	मुख्य राज्य परिवार	सम्बन्ध मूल्य
व्यवहार	प्रधान राज्य परिवार	सम्बन्ध मूल्य
व्यवहार	विश्व राज्य परिवार	अखण्ड समाज
सार्वभौम व्यवस्था	विश्व राज्य परिवार सभा	भागीदारी
व्यवस्था	प्रधान राज्य परिवार सभा	भागीदारी
व्यवस्था	मुख्य राज्य परिवार सभा	भागीदारी
व्यवस्था	मंडल समूह परिवार सभा	भागीदारी
व्यवस्था	मंडल परिवार सभा	भागीदारी
व्यवस्था	क्षेत्र परिवार सभा	भागीदारी
व्यवस्था	ग्राम/मोहल्ला समूह परिवार सभा	भागीदारी
व्यवस्था	ग्राम/मोहल्ला परिवार सभा	भागीदारी
व्यवस्था	परिवार समूह सभा	भागीदारी
व्यवस्था	परिवार सभा	भागीदारी

विधि व्यवस्था में भागीदारी

3. ग्राम/मोहल्ला परिवार सभा
4. ग्राम/मोहल्ला समूह परिवार सभा
5. क्षेत्र परिवार सभा
6. मण्डल परिवार सभा
7. मण्डल समूह परिवार सभा
8. मुख्य राज्य परिवार सभा
9. प्रधान राज्य परिवार सभा
10. विश्व राज्य परिवार सभा

परिवार वैभव का क्रम

1. परिवार वैभव समाधान समृद्धि
2. परिवार समूह वैभव समाधान समृद्धि
3. ग्राम परिवार वैभव समाधान समृद्धि
4. ग्राम समूह परिवार वैभव समाधान समृद्धि
5. क्षेत्र परिवार वैभव समाधान समृद्धि
6. मंडल परिवार वैभव समाधान समृद्धि अभय
7. मंडल समूह परिवार वैभव समाधान समृद्धि अभय
8. मुख्य राज्य परिवार वैभव समाधान समृद्धि अभय
9. प्रधान राज्य परिवार वैभव समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व सहज वैभव
10. विश्व राज्य परिवार वैभव समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व पूर्ण परंपरा सहज वैभव

परिवार सभा का स्वरूप :-

दस समझदार मानव जिसमें हर नर-नारी सह-अस्तित्व सहज

समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी-भागीदारी में समानता, जिसका अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन करने में समान अधिकार सम्पन्न परिवार हैं।

शिक्षा संस्कार कार्य व्यवस्था, न्याय सुरक्षा कार्य व्यवस्था, परस्परता में उत्पादन कार्य व्यवस्था, आवश्यकता से अधिक उत्पादन कार्य व्यवस्था, विनिमय कार्य व्यवस्था-श्रममूल्य के आधार पर लेन-देन रूप में विनिमय कार्य व्यवस्था, स्वास्थ्य संयम कार्य व्यवस्था सहज समान कर्त्तव्य दायित्व अधिकार रहेगा।

अस्तित्व में इकाइयों के होने का प्रमाण सर्वतोमुखी प्रतिबिम्ब है। परस्पर पहचान ही प्रक्रिया प्रमाण है।

परस्परता में पहचान कार्य-व्यवहार का आधार है एवं प्रेरणा सहित कर्त्तव्य व दायित्व सूत्र व्याख्या है। पूरकता उपयोगिता सहज प्रमाण है।

नेत्रों में सहअस्तित्व सहज प्रतिबिंब आंशिक रूप समायी है। जबकि हर नर-नारी में पूरा समझना अध्ययन विधि से सहज है। सह-अस्तित्व चार अवस्था व पदो में होना रहना समझ में आता है।

व्यवस्था के कार्यक्रम (समितियाँ)

1. शिक्षा-संस्कार कार्य-व्यवस्था समिति
2. सार्वभौम न्याय-सुरक्षा कार्य-व्यवस्था समिति
3. उत्पादन-कार्य-व्यवस्था समिति
4. विनिमय-कोष कार्य-व्यवस्था समिति
5. स्वास्थ्य-संयम कार्य-व्यवस्था समिति

7.1 शिक्षा-संस्कार कार्य व्यवस्था समिति

शिक्षा में वस्तु स्वरूप :- सहअस्तित्व सहज अर्थ में भौतिक रासायनिक एवं जीवन क्रिया-कलापों का अध्ययन सर्वसुलभ होना है - विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति में ही यथा स्थिति गति सहित परस्परता में उपयोगिता-पूरकता विधि सहित सिद्धांत, अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिन्तन (नजरिया) सहज अध्ययन बोध, अनुभव प्रमाण मूलक अभिव्यक्ति-संप्रेषणा-प्रकाशन प्रबुद्ध परंपरा।

संस्कार स्वरूप :- जागृति, जागृति सहज प्रमाण, जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह रूप में प्रमाण होना, रहना परंपरा है।

समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी-भागीदारी को अखण्ड समाज सहज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी प्रमाण। प्राकृतिक, बौद्धिक, सामाजिक नियमों का पालन करते हुए मानव लक्ष्य को साकार करने के रूप में प्रमाण।

7.1 (1) उद्देश्य -

व्यवहारिक उद्देश्य

मूल उद्देश्य :- सम्पूर्ण मानव मानवत्व सहित व्यवस्था में होना-रहना और समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज प्रमाण परम्परा के रूप में होना-रहना। मनः स्वस्थता पूर्वक मनाकार को साकार करना-रहना।

फलस्वरूप :- जीवन मूल्य और मानव लक्ष्य परंपरा प्रमाण के रूप में प्रमाणित होना, साथ ही साथ विकास विधि से ऊर्जा संतुलन एवं पर्यावरण संतुलन, पदार्थ, प्राण, जीव और ज्ञान अवस्था में सन्तुलन पूरकता-उपयोगिता सिद्धांत परंपरा के रूप में प्रमाणित होना-रहना है।

यही सर्वकालीन सार्थक उद्देश्य है।

मूल उद्देश्य को प्रमाणित करने के क्रम में न्याय, उत्पादन-विनिमय-सुलभता, सार्वभौम व्यवस्था विधि में समाहित रहता है। साथ में शिक्षा-संस्कार सुलभता, स्वास्थ्य संयम सुलभता समाहित रहेगा ही। इस विधि से जागृत मानव परंपरा की संभावना आवश्यकता सहज रुप में समीचीन है।

मानव लक्ष्य :- समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में प्रमाण परंपरा है। यही अनुभव सहज प्रमाण है।

अनुभव प्रणाली मानवीय शिक्षा सहज उद्देश्य में निहित है :-

भ्रम से निर्भ्रमता, जीव चेतना से मानव चेतना, अजागृति से जागृति, समस्या से समाधान, समुदाय से अखण्ड समाज, समुदाय राज्य से सार्वभौम राज्य, असत्य से सत्य, अन्याय से न्याय, अव्यवस्था से व्यवस्था, असंतुलन से संतुलन, आवेशित गति से स्वभाव गति, अभाव से भाव, अज्ञान से ज्ञान-विवेक-विज्ञान, विखण्डता से अखण्डता, विपन्नता से सम्पन्नता, संकीर्णता से विशालता, पराधीनता से स्वतंत्रता, भय से अभय, असत्य से सत्य चेतना में परिवर्तन, भोग मानसिकता से उपयोगी सदुपयोगी प्रयोजनशील मानसिकता, व्यापार लाभोन्मादी मानसिकता से लाभ-हानि मुक्त विनिमय प्रवृत्ति, मानव चेतना सहज समझदारी में पारंगत प्रमाण परंपरा ही मानव परंपरा है। यही जीव चेतना के स्थान पर मानव चेतना है। यह चेतना विकास मूल्य शिक्षा-संस्कार से सार्थक होता है।

प्रलोभन भय के स्थान पर यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता सहज मौलिक, मौलिकता, जागृत मानव में न्याय, धर्म, सत्य सहज पहचान

वर्तमान में विश्वास।

7.1 (2) मानसिकता :- अनुभव मूलक प्रामाणिकता सहज प्रवृत्ति ।

(1) वर्चस्व जागृति सहज मानसिकता पूर्वक मूल्यांकन = सम्बन्धों का निर्वाह करना समझदारी में, से, के लिए प्रमाण ।

(2) ज्ञान-विवेक-विज्ञान ही समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी व आचरण में श्रेष्ठता का सम्मान प्रतिष्ठा।

(3) प्रतिभा अनुभव मूलक प्रमाणों को प्रमाणित करने की गति।

(4) आहार-विहार-व्यवहार के आधार पर व्यक्तित्व।

(5) व्यवहार में सामाजिक, अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या के रूप में आचरण।

(6) व्यवसाय (उत्पादन कार्य) में स्वावलम्बन सम्पूर्ण वर्चस्व है।

इस तरह सदा हर नर-नारी मूल्यांकन करने में समर्थ रहेंगे ही। ऐसी अर्हता मानवीय शिक्षा परंपरा में, से, के लिए सम्पन्न व सार्थक होता है।

हर नर-नारियों में, से, के लिए मूल्यांकन का आधार उपरोक्त बिन्दु हैं।

मूल्यांकन का उद्देश्य :- व्यवहार में सामाजिक, परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन में स्वावलम्बन पूर्वक समृद्धि सहित सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी के अर्थ में है।

7.1 (3) मानवीय-शिक्षा संस्कार पाठ्यक्रम में गुणात्मक परिवर्तन सूत्र

सम्पूर्ण आयाम

(1) सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व स्थिर, विकास एवं जागृति निश्चित

है सिद्धान्त का अध्ययन विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति सहज बोध सुलभ होने का अध्ययन है।

(2) सहअस्तित्व में भौतिक-रासायनिक और जीवन पद, जीवनी क्रम, जीवन जागृति क्रम, जीवन जागृति व निरन्तरता सहज अध्ययन उपयोगिता-पूरकता सिद्धान्त जैसे तथ्यों के सभी आयामों के प्रधान मुद्दों को निम्नानुसार विकल्प रूप में सकारात्मक विधि से जागृति सहज सूत्रों को पहचाना गया है।

	प्रचलित (विषय) :-	**जागृति के लिए वस्तु**
(1)	विज्ञान के साथ	- चैतन्य पक्ष का अध्ययन
(2)	मनोविज्ञान शास्त्र के साथ	- संस्कार (अनुभव मूलक-प्रमाण) पक्ष का अध्ययन
(3)	दर्शन शास्त्र के साथ	- क्रिया पक्ष (अनुभव प्रमाण) का अध्ययन
(4)	अर्थशास्त्र के साथ	- प्राकृतिक एवं वैकृतिक ऐश्वर्य का (ग्राम स्वराज्य विधि से) सदुपयोग व सुरक्षात्मक पक्ष का अध्ययन
(5)	राजनीति शास्त्र के साथ	- मानवीयता का संरक्षण एवं संवर्धनात्मक विधि व्यवस्था नीति पक्ष का अध्ययन
(6)	समाजशास्त्र के साथ	- मानवीय संस्कृति अखण्ड समाज तथा सभ्यता पक्ष का अध्ययन
(7)	भूगोल, इतिहास के साथ	- मानव तथा मानवीयता पक्ष

का अध्ययन

(8) साहित्य के साथ - तात्विकता का अर्थात् सहअस्तित्व रूपी परम सत्य का अध्ययन

उक्त सभी आयामों के विस्तृत अध्ययन हेतु 'मध्यस्थ दर्शन-सहअस्तित्व वाद' शास्त्र के रूप में प्रस्तावित है। यही जागृत चेतन परंपरा के लिए स्रोत है क्योंकि सहअस्तित्व नित्य वर्तमान और प्रभावी है।

7.1 (4) मानवीय शिक्षा

(1) कितना समझना - सहअस्तित्व में, से, के लिए सम्पूर्ण समझ, सहअस्तित्व चार पद, चार अवस्था के रूप में समझना प्रमाणित कराना ही जागृत अथवा समझदार परंपरा है।

(2) क्या समझना (जीना) - जीवन एवं जीवन मूल्य, मानव लक्ष्य प्रमाण सहज अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा में, से, के लिए मानवीयतापूर्ण आचरण सहित व्यवस्था में जीना।

(3) कब तक समझना - जागृत मानव परंपरा सहज रूप में प्रतिष्ठित, परम्परा होते तक, इसके अनन्तर निरन्तरता है ही होना रहना। इस प्रकार मानव परंपरा के रूप में से के लिए निरन्तर समझदारी होते ही रहना यही निरंतरता है। पीढ़ी से पीढ़ी में।

मैं क्या हूँ -

मैं मानव हूँ।

कैसा हूँ -

मैं जीवन व शरीर का संयुक्त रूप हूँ। शरीर मानव परंपरा सहज प्रजनन विधि की देन है। जीवन सह-अस्तित्व में गठन पूर्ण परमाणु चैतन्य इकाई है।

क्या चाहता हूँ -

सुख, समाधान, समृद्धि सम्पन्न रहना चाहता हूँ।

क्या होना चाहता हूँ -

जागृत होना/ रहना चाहता हूँ।

7.2 सार्वभौम न्याय सुरक्षा व्यवस्था समिति

सर्वमानव स्वीकृति स्थिति व विधि जो अखण्ड समाज रूप में सार्वभौमता पूर्ण व्यवस्था सहज प्रमाण है।

- ❖ सार्वभौमता मानव सहज जागृति है। चारों अवस्थाओं के साथ समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी पूर्वक जीना सार्वभौमता है।
- ❖ जागृत चेतना ही मानव चेतना है यह सार्वभौम है।
- ❖ जागृत चेतना ही मानव परंपरा में ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज विधि से जिम्मेदारी, भागीदारी के रूप में स्पष्ट है।
- ❖ सार्वभौमतापूर्ण व्यवस्था परंपरा ही मानव सहज वैभव है।
- ❖ मानवीयता पूर्ण परंपरा ही जागृत परम्परा है, जिसमें - मानवीयतापूर्ण व्यवहार कार्य-शिक्षा संस्कार ज्ञान-विवेक-विज्ञान गति पूर्वक नित्य वैभव है।

मानवीयतापूर्ण-व्यवस्था दस सोपानीय गति में नित्य वैभव है।

मानवीयतापूर्ण-संविधान सहअस्तित्व सहज गति प्रतिष्ठा है।

मानवीयतापूर्ण-आचरण-मूल्यांकन परस्परता में - संविधान की धारक-वाहकता है।

मानवीयतापूर्ण-संस्कृति-समाज गति में स्पष्ट होता है।

मानवीयतापूर्ण-सभ्यता-व्यवस्था गति में स्पष्ट है।

7.2 (1) न्याय

सम्बन्धों सहज अनुबन्ध मूल्य निर्वाह करने में प्रतिज्ञा उपयोगिता-पूरकता विधि से पहचान, मूल्यों का निर्वाह फलस्वरूप मानव सम्बन्धों में परस्पर तृप्ति, मानवेत्तर-प्रकृति सहज संबंधों में संतुलन, अखण्ड समाज दस सोपानीय व्यवस्था, सार्वभौम - सर्व मानव स्वीकृत अथवा स्वीकृति योग्य है।

सहअस्तित्व सम्बन्ध

भौतिक-रासायनिक-जागृत-जीवन क्रिया का सम्बन्ध पूर्वक मानव सम्बन्ध सार्थक प्रयोजन सहज स्थिति-गति है।

7.2 (2) सुरक्षा

जागृत मानव सहज तन-मन-धन रुपी अर्थ का सदुपयोग विधि से ही सुरक्षा प्रमाणित होता है। हर नर-नारी जागृति पूर्वक अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या परंपरा में होना सार्वभौम न्याय सुरक्षा है।

7.2 (3) न्याय-सुरक्षा-सार्थकता मूल्यांकन-विधि

1. सहअस्तित्व में हर मानव जागृति सहज वर्तमान ही ज्ञान-सम्मत

इच्छा-क्रिया व व्यवहार प्रमाण न्याय सुरक्षा है।

2. सहअस्तित्व में जागृति सहज प्रमाण परंपरा ही सम्बन्ध, मूल्य, मूल्यांकन, परस्पर तृप्ति सन्तुलन न्याय सुरक्षा है।

3. सहअस्तित्व में, से, के लिए विकास क्रम, भौतिक-रासायनिक क्रिया, जीवन क्रिया-कलाप, जीवनी क्रम जागृति क्रम, जीव चेतनावश भ्रमित मानव क्रिया, जागृति मानव चेतना सहज मानव व्यवहार कार्य को समझने के उपरान्त ही दृष्टा-पद प्रमाणित होता है।

4. सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान — सम्पूर्ण
जीवन-ज्ञान — ज्ञान
मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान →

अनुभव मूलक विधि से अभ्युदय के अर्थ में प्रमाणित होना ही सत्य प्रमाण है। यही विवेक-विज्ञान सम्मत विधि से सर्वतोमुखी समाधान ही मानव धर्म का प्रमाण, अखण्ड समाज सूत्र के अर्थ में सार्वभौम व्यवस्था सहज परंपरा ही सम्बन्ध, मूल्य, मूल्यांकन विधि से न्याय सुरक्षा प्रमाणित होता है। यही जागृत परंपरा का वैभव है।

7.2 (4) न्याय-सुरक्षा

1. जागृत मानव परंपरा में ही सर्वतोमुखी न्याय सुरक्षा प्रमाणित होता है। सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में न्याय जागृति सहज नित्य वर्तमान है। यही जागृत होने, ज्ञान शक्ति संपन्न होने का प्रमाण और सार्वभौम व्यवस्था में प्रमाणित होने का सूत्र, दृष्टा-पद प्रतिष्ठा पीढ़ी से पीढ़ी में होना परंपरा है।

2. दृष्टा पद में जागृत मानव ही है। दृष्टा पद में समझदारी (ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता) जागृति दृष्टा पद सहज प्रमाण परंपरा है।

3. दृष्टा-पद में ही मानव में, से, के लिए सम्पूर्ण पदार्थावस्था मृदा-पाषाण-मणि-धातुएं परिणामानुगामी विधि से यथा स्थिति में पूरकता-उपयोगिता उदात्तीकरण क्रिया कलाप में दृष्टव्य है।

4. सम्पूर्ण प्राणावस्था में क्रिया-कलाप यौगिक विधि सहित रसायन द्रव्य, प्राण-सूत्र-रचना-विधि सम्पन्नता, प्राण-कोशा से उन प्रजातियों के रूप में बीज-वृक्ष विधि से परम्परा सम्पन्न रचनायें होना दृष्टव्य है।

5. सम्पूर्ण जीव-संसार अनेक प्रजातियों के रूप में सप्त धातु से सम्पन्न शरीर-रचना और समृद्ध मेधस सम्पन्नता युक्त शरीर रचना और जीने की आशा सहित जीवन का संयुक्त रूप में होना दृष्टव्य है। जिन जीवों में मानव संकेत ग्रहण होता है यह जीवन का पहचान है।

सम्पूर्ण मानव ज्ञान सम्पन्नता में होना हर जागृत मानव में-से-के लिये दृष्टव्य-ज्ञातव्य कर्त्तव्य बोध होना पाया जाता है। फलस्वरूप न्याय व सुरक्षा सर्व सुलभ होता है।

न्याय-सुरक्षा

1. पूर्ण जागृति सम्पन्न मानव सर्वदेश व काल में सम्पूर्ण आयाम-कोण-परिप्रेक्ष्यों में न्याय-सुरक्षा, कार्य-व्यवहार, सोच विचार करता, कराता है, करने के लिए सहमत रहता है।

2. जागृति के अनन्तर ही हर नर-नारी में, से, के लिए न्याय सुरक्षा सहज आवश्यकता सहअस्तित्व विधि से स्वीकृत रहता है, व्यवहार में प्रमाणित होता है।

3. जागृत मानव लक्ष्य के साथ संपूर्ण आवश्यकतायें आवश्यकता से अधिक संभावनाएं सूत्रित रहना पाया जाता है। यह शिक्षा विधि से हर मानव समझना सहज है।

4. अनुभव मूलक विधि से जागृति प्रमाणित होती है। समझ में-से-के लिये अनुभव होता है। समझ अध्ययन-विधि से बोध गम्य होता है। सह अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन बोध, जीवन बोध, दृष्टा रूप में मानवीयता पूर्ण आचरण बोध पूर्वक अनुभव सहित प्रमाणित होने की प्रवृतिवश अनुभव होना प्रमाणित होता है। फलस्वरूप मानव-लक्ष्य, जीवन-मूल्य सार्थक होता है। इससे मानव-लक्ष्य-परंपरा में प्रमाणित होना परम आवश्यकता, स्वयं स्फूर्त विधि से अखण्ड समाज सहज कार्यक्रम परंपरा प्रमाणित होता है। यही जागृत मानव परंपरा है। फलस्वरूप न्याय-सुरक्षा फलित होता है।

न्याय-सुरक्षा

1. हर मानव जागृति पूर्वक जीने के क्रम में न्याय प्रमाणित होता ही है। ऐसे नर-नारियों की परस्परता में न्याय-सुरक्षा सुरक्षित रहता है क्योंकि मानवीयतापूर्ण आचरण जागृति का प्रमाण है जिसके फलन में न्याय-सुरक्षा वर्तमान रूप में सफल होता है।

2. जागृत मानव में, से, के लिए सहअस्तित्व प्रमाणित होना और 'जीवन' ही दृष्टा-पद में होने का साक्ष्य सदा बना रहता है। यही जागृति है।

'जीवन' जागृति पूर्वक दृष्टा-पद प्रतिष्ठा होता है।

हर जागृत नर-नारी न्याय-सुरक्षा कार्य में भागीदारी करने का प्रमाण ही परंपरा सहज सूत्र है।

जागृत मानव सहज कार्य-व्यवहार व्याख्या ही सर्वतोमुखी समाधान प्रमाण और वर्तमान परंपरा है।

जागृत मानव परंपरा ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था, विधि-विधान नीति सहज स्थिति गति है।

''समुदाय समाज नहीं, समाज समुदाय नहीं''

(हर समुदाय दूसरे समुदाय से मतभेद-बैर-विरोध पूर्वक ही समुदाय अपने में पहचान है।)

अखण्ड समाज व्यवस्था में भागीदारी ही सार्वभौमता और न्याय सुरक्षा है।

न्याय-सुरक्षा

1. सर्व मानव, चारों अवस्थाओं की परस्परता में होना दृष्टव्य है। यही सहअस्तित्व सहज नित्य प्रभावी, प्रमाण व वर्तमान है ।

2. हर अवस्था में वैभव रत हर एक-एक अपने 'त्व' व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहित उपयोगिता, पूरकता, उदात्तीकरण सहज प्रमाण व वर्तमान है।

3. सहअस्तित्व में पदार्थावस्था परिणामानुषंगीय यथा स्थिति सहज क्रिया के रूप में, प्राणावस्था बीजानुषंगीय विधि से यथा स्थिति में होना, जीवावस्था सहज वैभव वंशानुषंगीय विधि रूप में होना और ज्ञानावस्था में मानव मानव चेतना मूल्य शिक्षा संस्कारानुषंगीय व्यवस्था अर्थात् ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता पूर्वक व्यवस्था सहज प्रमाण व वर्तमान है। अस्तु, जागृति पूर्वक अखण्ड समाज,

14_manviya_samvidhaan_sootravyakhya_2007_c

सार्वभौम व्यवस्था यही समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित होता है। मानव परंपरा में 'न्याय' सदा-सदा समीचीन है।

7.2 (5) न्याय का स्वरूप

मानव सम्बन्धों में निहित मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, परस्परता में समाधान, समृद्धि, अभय (वर्तमान में विश्वास), सहअस्तित्व सहज आचरण प्रमाण और निरन्तरता ही वैभव न्याय सहज स्वरूप है।

मानवेत्तर अर्थात् जीव, वनस्पति, पदार्थ संसार के साथ नियम-नियंत्रण पूर्वक संतुलन और निरन्तरता ही नित्य वैभव स्वरूप है।

अखण्ड समाज व सार्वभौम व्यवस्था सूत्रित व्याख्यायित रहना न्याय का स्वरूप है।

समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी व भागीदारी सहज परंपरा न्याय सहज स्वरूप है।

7.2 (6) आचरण में न्याय

मानवीयता पूर्ण आचरण

पुत्र-पुत्री का माता-पिता के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :- गौरव, कृतज्ञता, प्रेम, सरलता, सौम्यता, अनन्यता भावपूर्वक वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

माता-पिता का पुत्र-पुत्री के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :- ममता, वात्सल्य, प्रेम, उदारता, सहजता, अनन्यता भावपूर्वक वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

गुरु शिष्य के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :- प्रेम, वात्सल्य,

ममता, अनन्यता, सहजता, उदारता भावपूर्वक प्रबोधन प्रक्रिया सहित वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

शिष्य गुरु के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :- गौरव, कृतज्ञता, प्रेम, सरलता, सौजन्यता, अनन्यता भावपूर्वक जिज्ञासा सहित वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

बहन-भाई भाई-बहन के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :- सम्मान, गौरव, कृतज्ञता, प्रेम, सौहार्द्रता, सरलता, सौजन्यता, अनन्यता भावपूर्वक वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

मित्र मित्र के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :- स्नेह, प्रेम, सम्मान, निष्ठा, अनन्यता, सौहार्द्रता भावपूर्वक वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

साथी सहयोगी के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता:- स्नेह, सौजन्यता, निष्ठापूर्वक वस्तु व सेवा प्रदान रूप में

सहयोगी साथी के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :- गौरव, सम्मान, कृतज्ञता, सौहार्द्रता, सौम्यता, सरलता भावपूर्वक सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

पति पत्नी के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :- स्नेह, गौरव, सम्मान, प्रेम, निष्ठा, सौहार्द्रता, अनन्यता पूर्वक सद् चरित्रता सहित वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

पत्नी पति के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :- स्नेह, गौरव, सम्मान, प्रेम, निष्ठा, सौहार्द्रता, अनन्यता पूर्वक सद् चरित्रता सहित वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

ये सभी स्वयं स्फूर्त-विधि से व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में है।

उक्त सम्बन्धों के सदृश्य मामा-चाचा-भाई-मित्र और मामी-चाची-बहन-सहेली के रूप में पहचान सम्बोधन दूर-दूर तक अथवा इस धरती के सम्पूर्ण मानव पर्यन्त सम्बोधन सहज है। यह सामाजिक अखण्डता सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में सार्थक है।

सम्बन्धों की पहचान के साथ ही निर्वाह प्रवृत्ति उदय होती है।

7.2 (7) आचरण-व्यवहार-कार्य

मानवीयता पूर्ण आचरण ही सम्पूर्ण विधाओं में न्याय सहज स्रोत है।

जागृत मानव ही मानवीयता पूर्ण आचरण में, से, के लिए प्रमाण है।

परंपरा सहज परस्परता में हर नर-नारी प्रमाण होना पाया जाता है।

⇨	सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन	-	ज्ञान (अनुभव)
⇨	चैतन्य इकाई रूपी जीवन	-	ज्ञान (अनुभव)
⇨	मानवीयता पूर्ण आचरण सहज	-	ज्ञान (अनुभव)
⇨	मानव-लक्ष्य, जीवन-मूल्य सहज विवेचना रूपी	-	विवेक
	लक्ष्य को प्रमाणित करने तर्क संगत दिशा निश्चयन रूपी	-	विज्ञान सम्पन्नता सहित
	जीवन-मूल्य, मानव-मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य मानव परम्परा	-	सम्बन्धों सहित
	वस्तु मूल्य को नियम-नियंत्रण संतुलन विधि पूर्वक जीव-प्राण-पदार्थ वैभव को संतुलित बनाये	-	सम्बन्धों में प्रमाणित कायिक-वाचिक, मानसिक विधि से

रखते हुए स्थापित करना	करना, कराना, करने के लिए सहमत होना है।

सम्पूर्ण तर्क नियम, नियंत्रण, सन्तुलन, न्याय, धर्म, समाधान, सत्य सहज अध्ययन, अनुभव, प्रमाण वर्तमान में, से, के लिए कारण, गुण, गणित विधि से भाषा प्रयोग

7.2 (8) व्यवहार में न्याय

मानवीयता पूर्ण आचरण पूर्वक कार्य-व्यवहार में हर जागृत मानव प्रमाण है। हर जागृत मानव परस्पर सम्बन्धों की पहचान सहित व्यवहार करता है।

1 सम्बन्धों में पहचान व निर्वाह निरन्तरता - न्याय है।

2 सम्बन्धों में निहित मूल्य निर्वाह-निरन्तरता - न्याय है।

3 सम्बन्धों में मूल्य सहज पहचान, निर्वाह निरन्तरता सहित मूल्यांकन, - न्याय है।

परस्परता में मानवत्व सहज सिद्धांत स्वीकृति, अनुभूति, तृप्ति सहज निरन्तरता - न्याय है।

4 हर मानव सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान संपन्न होना रहना - न्याय है।

5 जागृत परंपरा पीढ़ी से पीढ़ी में सुलभ होना - न्याय है।

6 पीढ़ी से पीढ़ी में मानवीयता पूर्ण आचरण सुलभ होना - न्याय है।

7 सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व ज्ञान सर्वसुलभ होना - न्याय है।

8 परंपरा में जीवन ज्ञान सुलभ होना - न्याय है।

9 मानव परंपरा में अखण्ड समाज ज्ञान सुलभ होना, सार्वभौम व्यवस्था ज्ञान सुलभ होना - न्याय है।

10 मानव परंपरा में सार्वभौम व्यवस्था ज्ञान सर्वसुलभ होना - न्याय है।

11 चेतना विकास मूल्य शिक्षा रूप में परंपरा में मानवीय शिक्षा संस्कार सुलभ होना - न्याय है।

12 परंपरा में सुरक्षा सुलभ होना - न्याय है।

13 परंपरा में तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व मूल्यांकन सुलभ होना - न्याय है।

14 परंपरा में हर परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन सुलभ होना - न्याय है।

15 परंपरा में श्रम मूल्य के आधार पर विनिमय सुलभ होना - न्याय है।

व्यवहार परम्परा में न्याय

1 परंपरा में यथार्थता सुलभ रहना न्याय है।

2 परम्परा में वास्तविकता सुलभ रहना न्याय है।

3 परम्परा में सत्यता सुलभ रहना न्याय है।

4 परंपरा में स्थिति सत्य बोध सुलभ रहना न्याय है।

5 परंपरा में वस्तुगत सत्य बोध सुलभ रहना न्याय है।

6 परंपरा में सहअस्तित्व सहज प्रमाण सुलभ रहना न्याय है।

7 परंपरा में सहअस्तित्व में विकास-क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति बोध सुलभ रहना न्याय है।

8 परंपरा में जीवन सहज प्रयोजन, शरीर सहज आवश्यकता स्पष्ट रहना न्याय है।

9 परंपरा में जागृत मानव स्वभाव सुलभ रहना न्याय है।

10 परंपरा में सर्वतोमुखी समाधान सुलभ रहना न्याय है।

11 परंपरा में समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सुलभ व प्रमाणित रहना न्याय है।

12 परंपरा में जागृति सहज अखण्ड समाज सहज अर्थ में सार्वभौम व्यवस्था प्रमाणित रहना न्याय है।

13 परंपरा में स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार सहज स्वराज्य प्रमाणित रहना न्याय है।

14 परंपरा में परिवार मूलक स्वराज्य वैभव सुलभ रहना न्याय है।

15 परंपरा में जागृति सहज वैभव सुलभ रहना न्याय है।

16 परंपरा में मानवत्व प्रमाण रूप में वर्तमान रहना न्याय है।

17 परंपरा में परिवारों में स्वास्थ्य-संयम सुलभता रहना न्याय है।

18 परंपरा में मानवीयता पूर्ण आचरण, जागृति पूर्वक व्यवहार किया जाना ही न्याय है।

19 परंपरा में अनुभव मूलक, शिक्षा-दीक्षा, दीक्षान्त (परम्परागत)

विवाहोत्सव कार्यक्रम न्याय और स्वतंत्रता है।

20 परंपरा में विवाहोत्सव में परस्पर जागृत होने रहने का सत्यापन सहज प्रमाण, व्यवस्था में जीने का संकल्प सहित दाम्पत्य स्वीकृति न्याय है।

21 परंपरा में ऋतु-काल-संतुलन उत्सव न्याय है।

22 परंपरा में मानव संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था और व्यवस्था सहज आयोजनोत्सव न्याय है।

7.2 (9) उत्पादन कार्य में न्याय

हर परिवार में आवश्यकता से अधिक तादात में उत्पादन, उत्पादन का स्रोत मानव द्वारा मानवेत्तर प्रकृति में संतुलन जिसकी पूरकता, उपयोगिता, उदात्तीकरण प्रणाली वर्तमान रहे, इन तथ्यों पर जागृत रहते हुए उत्पादन कार्य में हर परिवार का स्वावलम्बी रहना आवश्यक है। आवश्यकता से अधिक उत्पादन सहज प्रमाण भी न्याय है।

हर परिवार में सामान्य व महत्वाकाँक्षा सम्बन्धी वस्तुओं की आवश्यकता निर्धारित होती है। इसी क्रम में दस सोपानीय आवश्यकतायें व्यवस्था में आवश्यकतायें उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनशीलता स्पष्ट हो जाती है। यह न्याय है।

1 शरीर पोषण-संरक्षण व समाज-गति के लिये आवश्यकीय वस्तुओं का उत्पादन करना न्याय है।

2 हर परिवार द्वारा आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना न्याय है।

3 कृषि-पशुपालन रत परिवार में पानी उपचार का संरक्षण एवं फसल का उपचार (फसल संरक्षण), बीज खाद स्वायत्तता का होना न्याय है।

4 कृषि-पशुपालन कार्यरत हर परिवार अपने से उत्पादित वस्तुओं

का श्रम नियोजन व उपयोगिता के आधार पर मूल्यांकन करना व विनिमय करना न्याय है।

5 जागृत मानव परिवार में ही स्वायत्तता, स्वतंत्रता, समाधान सहित आवश्यकता से अधिक उत्पादन रूप में स्वावलम्बन समृद्धि सहज रुप में प्रमाणित होना न्याय है।

6 कृषि-पशुपालन के साथ हस्त कला, ग्राम शिल्प, कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग ऊर्जा संतुलन मानवीयता पूर्ण कला साहित्य सर्जन-सम्प्रेषणा में अधिकार सम्पन्नता न्याय है।

7 समझदारी सहित कृषि-पशुपालन पूर्वक समाधान, समृद्धि का प्रमाण होना न्याय है।

8 कृषि-पशुपालन रत हर परिवार जन का निपुणता-कुशलता-पांडित्य सम्पन्न रहना न्याय है।

9 कृषि-पशुपालन रत हर परिवार परंपरा को मूल्यांकन में समानता को बनाये रखना न्याय है।

10 सामान्य व महत्वाकाँक्षी उत्पादन सेवा रत हर नर-नारी अपने श्रम मूल्य का मूल्यांकन करना न्याय है।

11 मूल्यांकन परिवार से परिवार समूह, परिवार समूह से ग्राम मोहल्ला, ग्राम मोहल्ला से विश्व परिवार तक समन्वय, संतुलन प्रमाण न्याय है।

उत्पादन कार्य में न्याय

1 सभी ग्राम-परिवार में, से, के लिए आवश्यकता में, से, के लिए सामान्य आकाँक्षा संबंधी वस्तुओं को आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना और औषधि सम्बन्धी जड़ी बूटियों को उपजाना

न्याय है।

2 उत्पादित वस्तुओं का मूल्यांकन ग्राम मोहल्ला-व्यापी समन्वित रूप में होना न्याय है।

3 परिवार में किया गया मूल्यांकन परिवार समूह में समन्वित होना न्याय है।

4 सभी समन्वित मूल्यांकन ग्राम-परिवार-सभा में समन्वित होना न्याय है।

5 समन्वित मूल्यांकन सम्पन्न हर ग्राम, ग्राम-समूह-सभा के साथ समन्वित होना न्याय है।

6 हर ग्राम-समूह-सभा मूल्यांकन विधा से समन्वित रहते हुए क्षेत्र-सभा में समन्वित रहना न्याय है।

7 हर क्षेत्र परिवार सभा में मूल्यांकन विधा से समन्वित रहते हुए मण्डल-परिवार-सभा में समन्वित रहना न्याय है।

8 समन्वित मूल्यांकन सम्पन्न हर मण्डल परिवार-सभा, मण्डल-समूह-सभा के साथ समन्वित रहना न्याय है।

9 मुख्य राज्य सभा मूल्यांकन सहित मंडल सभा परिवार सभा के साथ समन्वित रहना न्याय है।

10 समन्वित मूल्यांकन सम्पन्न मुख्य राज्य सभायें, प्रधान राज्य-परिवार-सभा के साथ समन्वित रहना न्याय है।

11 समन्वित मूल्यांकन सम्पन्न सभी प्रधान राज्य-सभायें विश्व राज्य -सभा के साथ समन्वित रहना न्याय है।

12 विश्व परिवार सभा सहज मूल्यांकन दसों सोपानों के साथ समन्वित रहना न्याय है।

उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजन न्याय (मूल्यांकन)

परिवार में उपयोग, सार्वभौम-दस सोपानीय अखण्ड समाज में सदुपयोग, व्यवस्था में प्रयोजन है।

1 वस्तुओं का सदुपयोग करना, कराना, करने के लिए सहमत होना न्याय है।

2 वस्तुओं का आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना, कराना, करने के लिए सहमत होना न्याय है।

3 उत्पादन सुगमता के लिए शोध पूर्वक प्रमाणित करना न्याय है।

4 उत्पादन में गति व गुणवत्ता में वृद्धि को प्रमाणित करना न्याय है।

5 जागृत मानव परिवार में आवश्यकतायें सीमित होना न्याय है।

6 वस्तुओं का उपयोग शरीर पोषण -संरक्षण के अर्थ में न्याय है।

7 वस्तुओं का सदुपयोग अखण्ड समाज के अर्थ में मानवीयता पूर्ण संस्कृति-सभ्यता-सहज गति के रूप में होना न्याय है।

8 वस्तुओं का प्रयोजन सार्वभौम दस सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी के अर्थ में नियोजन है। यह प्रमाणित होना न्याय है।

9 हर जागृत मानव परिवार में ही उपयोग-सदुपयोग-प्रयोजनीयता विधि पूर्वक समृद्धि का प्रमाण है। यह न्याय है।

7.2 (10) संस्कृति-संस्कार में न्याय

- अखण्ड समाज के अर्थ में मूल्यों को प्रमाणित करना न्याय है।
- सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी मूल्यों का प्रमाण न्याय है।
- मानवीयतापूर्ण आचरण मूल्यों का प्रमाण न्याय है।
- गठनपूर्णता सहज जीवन क्रियापूर्णता के अर्थ में कायिक-

वाचिक-मानसिक, कृत-कारित-अनुमोदित विधियों से की गई सम्पूर्ण कृतियाँ, मानव संस्कृति-सभ्यता सहज रुप में न्याय है।

1 सहअस्तित्व विधि से मानवत्व सहित जीना संस्कृति न्याय है।

2 अखण्ड समाज-सूत्र-व्याख्या रूप में जीना सभ्यता सहज न्याय है।

3 स्वयं में ज्ञान-विवेक-विज्ञान रूप में व्यवस्था सहज विधि से जीना न्याय है।

4 सह-अस्तित्व सहज यथार्थता-वास्तविकता-सत्यता को जानना-मानना-पहचानना-निर्वाह करना के रूप में जीना न्याय है।

5 सर्वतोमुखी समाधान सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

6 मानवीयता पूर्ण सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

7 दस सोपानीय व्यवस्था सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

8 समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

9 स्वयं में विश्वास सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

10 श्रेष्ठता का सम्मान-सूत्र-व्याख्या में जीना न्याय है।

11 प्रतिभा सहज सूत्र-व्याख्या में जीना न्याय है।

12 मानवीयता पूर्ण व्यक्तित्व सहज सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

13 मूल्य चरित्र नैतिकता सूत्र-व्याख्या में जीना न्याय है।

14 आवश्यकता से अधिक उत्पादन कार्य का नियम-

नियंत्रण-संतुलन सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

15 जागृति सहज प्रमाण में-से-के लिये समाधानात्मक सूत्र व्याख्या के रूप जीना न्याय है।

16 संस्कृति सभ्यता को, सभ्यता विधि को, विधि व्यवस्था को, व्यवस्था संस्कृति को अनुप्राणित करता हुआ सूत्र व्याख्या के रूप में जीना न्याय है।

17 मानवीय चेतना सहज शिक्षा से अनुप्राणित शिक्षा-दीक्षा, शिक्षा-दीक्षा से संविधान, संविधान से व्यवस्था, व्यवस्था से आचरण सूत्र व्याख्या रूप में जीना न्याय है।

18 हर नर-नारी समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी-भागीदारी सहज सूत्र व्याख्या के रूप में जीना न्याय है ।

7.2 (11) विनिमय में न्याय

तात्विक रूप में परिभाषा विनिमय :- नियम-नियंत्रण-संतुलन पूर्वक उत्पादित वस्तुओं का उपयोगिता-पूरकता विधि से आदान-प्रदान समाधान एवं न्याय है।

बौद्धिक रूप में परिभाषा विनिमय :- विकास व जागृति संगत उपयोगिता पूरकता सहज निरन्तरता में, से, के लिए नियम-नियन्त्रण-सन्तुलन विधि से उत्पादित वस्तुओं का श्रम मूल्य के आधार पर आदान-प्रदान समाधान एवं न्याय है।

व्यवहारिक रूप में परिभाषा विनिमय :- श्रम नियोजन, उपयोगिता प्रमाण, मूल्यांकन उपयोगिता के आधार पर श्रम मूल्य का आदान-प्रदान समाधान एवं न्याय है।

प्रणाली :- दश सोपानीय व्यवस्था में श्रम मूल्य का मूल्यांकन सामान्यीकरण परंपरा समाधान एवं न्याय है।

पद्धति :- विनिमय-कोष परंपरा एवं कोषों के परस्परता में समन्वयता समाधान एवं न्याय है।

नीति :- दश सोपानीय परिवार-सभा में समन्वयता पूर्ण निश्चय आचरण परंपरा समाधान एवं न्याय है।

प्रयोजन :- लाभ-हानि मुक्त विनिमय और प्रत्येक परिवार में समृद्धि सहज प्रमाण, ज्यादा-कम से मुक्ति समाधान एवं न्याय है। समृद्धि ज्यादा-कम से मुक्ति है।

विनिमय में न्याय

1 हर जागृत मानव-परिवार सहज आवश्यकता की पहचान न्याय है।

2 हर जागृत मानव परिवार में सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना न्याय है।

3 जागृत मानव परिवार में उत्पादित वस्तुओं का मूल्यांकन (श्रम+उपयोगिता = वस्तु मूल्य) करना न्याय है।

4 जागृत मानव-परिवार में उत्पादित वस्तुओं का श्रम, उपयोगिता के आधार पर विनिमय करना न्याय है।

5 श्रम-शीलता को निपुणता-कुशलता-पांडित्य के रूप में स्वीकार करना न्याय है।

6 निपुणता-कुशलता पूर्वक श्रम-नियोजन की स्वीकृति पाण्डित्य सहज विधि से मूल्यांकन करना न्याय है।

7 पांडित्य पूर्वक किया गया मूल्यांकन होने की स्वीकृति व प्रक्रिया

न्याय है।

8 मूल्यांकन पूर्वक समाधानित रहने का प्रमाण न्याय है।

9 सामान्य आकाँक्षा सम्बन्धी वस्तुओं को आवश्यकता से अधिक पाकर समृद्धि का, महत्वाकाँक्षा सम्बन्धी वस्तुओं को आवश्यकता के अनुरूप पाकर समाज गति में सदुपयोग सहज प्रमाण रूप में सत्यापन करना न्याय है।

7.2 (12) स्वावलंबन आत्मनिर्भरता (समाधान) में न्याय

1 हर मानव जागृत परंपरा में अनुभव व अनुभव सहज प्रमाण क्रिया के रूप में प्रतिष्ठा है।

2 अनुभव ही प्रमाण परम है। यही समाधान है।

3 अनुभव मूलक विधि से ही आत्म-निर्भरता सहज सूत्र व्यवस्था स्पष्ट है।

4 सहअस्तित्व में अनुभव होना जागृत मानव परंपरा में समाधान वैभव है।

5 अनुभव पूर्वक ही हर नर-नारी समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी-भागीदारी करना प्रमाण है। यही आत्म-निर्भरता है। यही न्याय है।

6 समझदारी के आधार पर विवेक सम्मत विज्ञान, विज्ञान सम्मत विवेक पूर्वक हर नर-नारी समाधान सम्पन्न होते हैं। तभी उत्पादन से स्वावलम्बन न्याय है।

7 समाधान पूर्वक ही हर आयाम, कोण, दिशा, परिप्रेक्ष्य में सफलता सहित निर्णय लिया जाता है। यह आत्मनिर्भरता न्याय है।

8 सहअस्तित्व, समृद्धि, अभयता पूर्वक जीने के लिये समाधान पूर्वक

निर्णय लिया जाता है। यह आत्म निर्भरता न्याय है।

9 परिवार-व्यवस्था में जीने के लिए हर नर-नारी समाधान पूर्वक निर्णय लेना सहज है। यह आत्म निर्भरता न्याय है।

10 हर परिवार अपने सन्तान को आत्मनिर्भर होने के लिए पोषण-संरक्षण पूर्वक अनुभवगामी प्रेरणा स्रोत है। यह आत्म निर्भरता न्याय है।

11 आत्मनिर्भरता पूर्वक ही हर नर-नारी मानवीयता पूर्ण आचरण करते हैं। यह आत्म निर्भरता समाधान व न्याय है।

12 शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन-कार्य, विनिमय-कोष, स्वास्थ्य- संयम कार्यों को प्रमाणित करना आत्म निर्भरता न्याय है।

13 अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना सर्वतोमुखी समाधान आत्म निर्भरता न्याय है ।

7.2 (13) शिक्षा-संस्कार में न्याय

शिक्षा :- शिष्टता पूर्ण दृष्टि का उदय होना।

शिष्टतापूर्ण दृष्टि :- अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन रूपी दृष्टि दृष्टा पद प्रतिष्ठा में पारंगत क्रियाशील रहना।

संस्कार :- ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज स्वीकृति, अनुभव प्रमाण परंपरा, जिसका प्रमाण ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या में पारंगत होना प्रमाण परंपरा है।

परंपरा :- परंपरा में मानव सहज मानवीयता पीढ़ी से पीढ़ी में अन्तरित होना न्याय है।

मानवीयता :- मूल्य-चरित्र-नैतिकता सहज संयुक्त अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन परंपरा होना न्याय है ।

1 शिक्षा में मानव का अध्ययन सम्पन्न होना न्याय है।

2 भौतिक-रासायनिक और जीवन वस्तु का अध्ययन होना न्याय है ।

3 सहअस्तित्व में अध्ययन न्याय है।

4 हर मानव में-से-के लिये आत्मनिर्भर होने योग्य शिक्षा सर्वसुलभ होना न्याय है।

5 शिक्षा-संस्कार में मानव-लक्ष्य, जीवन मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य व वस्तु मूल्य बोध होना न्याय है ।

6 मानव संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था बोध होना न्याय है।

7.2 (14) परिवार में न्याय

1 परिवार में सम्बन्धों की पहचान सहित मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, परस्परता में तृप्ति न्याय है।

2 परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन समृद्धि का प्रमाण न्याय है।

3 समाधान-समृद्धि सम्पन्न व्यवस्था सहज प्रमाण न्याय है।

4 जागृत मानव परिवार में समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी सहज एकरूपता सामाजिक अखण्डता सूत्र है। यह समाधान व न्याय है ।

5 जिम्मेदारी, भागीदारी में निष्ठा सहज प्रमाण न्याय है ।

6 परिवार सहज व्यवस्था परंपरा का प्रमाण न्याय है।

7 जागृत मानव परिवार में, से, के लिये हर एक सदस्य का समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने के लिये निर्वाचित होने योग्य होना न्याय है।

8 परिवार सहज व्यवहार व्यवस्था में भागीदारी करने के लिए हर नर-नारी आत्म निर्भर, स्वतंत्र, स्वयं स्फूर्त उत्साहित रहना न्याय है।

9 परिवार व ग्राम सहज वैभव की पहचान बनाये रखना, आगन्तुकों की पहचान करना न्याय है।

7.2 (15) परिवार-समूह-सभा में न्याय

1 दस जागृत मानव परिवार में से निर्वाचित दस सदस्य के परिवार समूह-सभा का गठन न्याय है।

2 हर परिवार-समूह-सभा कार्य कर्त्तव्य रत हर सदस्य आत्म निर्भर रहना न्याय है।

3 दस परिवार सहज संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था संबंधी पहचान किये रहना न्याय है।

4 हर सदस्य दस परिवार में सम्बन्धों की सन्तुष्टि, समाधान-समृद्धि सहज प्रमाणों के प्रति जागृत रहना न्याय है।

5 कोई आगन्तुक व्यक्ति गाँव-मोहल्ले में होने का परिवार-ग्राम-मोहल्ला समितियों को पहचान कराने का अधिकार न्याय है।

6 हर सदस्य दसों परिवार के लोगों का समस्त उत्पादन-विनिमय-कार्य में जागरूक-पूरक रहना न्याय है।

7 हर सदस्य सभी परिवार जन का जागृत रहने में ध्यान देना, आवश्यकता के अनुसार पूरक-उपयोगी होना न्याय है।

8 हर सदस्य का निपुणता-कुशलता-पाण्डित्य में पारंगत रहना न्याय है।

9 हर परिवार समूह सभा में से एक-एक सदस्य का निर्वाचन ग्राम-मोहल्ला-परिवार सभा गठन के लिये निर्वाचित करना न्याय है।

7.2 (16) ग्राम-मोहल्ला परिवार सभा में न्याय

1 दस परिवार समूह सभा से निर्वाचित दस सदस्यों की सभा गठित होगी जिसका नाम ग्राम-मोहल्ला-परिवार सभा होगा। हर ग्राम-मोहल्ला का नाम रहता ही है। यह समाधान व न्याय है।

2 ग्राम-मोहल्ला-परिवार सभा के लिये निर्वाचित सभी सदस्य समान स्वत्व, स्वतंत्रता अधिकार सम्पन्न रहेंगे और आत्म निर्भर रहेंगे। यह न्याय है।

3 आत्म निर्भरता प्रत्येक जन प्रतिनिधि में समाधान-समृद्धि सम्पन्नता सहित स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा व व्यक्तित्व में सन्तुलन, व्यवहार में सामाजिक, उत्पादन रूपी व्यवसाय में स्वावलम्बी परिवार प्रतिनिधि रहेंगे। यह समाधान व न्याय है।

4 गांव मोहल्ले में कोई व्यक्ति पहुँचे तो वे पहले से पहचान अथवा चिन्हित अथवा सूचित रहेंगे। इसके अतिरिक्ति जो अपरिचित होंगे उनका परिचय पाने का अधिकार ग्राम-मोहल्ला-परिवार सभा के सभी सदस्यों को होगा। ऐसे लोगों की पहचान प्रमाण प्राप्त करने का अधिकार रहेगा यह न्याय है।

5 ग्राम सभा अपने स्व विवेक से पाँच समितियों के लिए स्थानीय प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों को मनोनीत करेगी। वे सब आत्म निर्भर

परिवार के सदस्य होंगे। ये समितियां शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन-कार्य , विनिमय-कोष, स्वास्थ्य-संयम कार्य संपादित करेंगे, यह न्याय है।

6 सभायें समितियों की कार्य प्रणालियों व कर्त्तव्यों का निर्धारण-निर्देशन करेगी। उसे हर समितियाँ स्वीकार पूर्वक कार्य व मूल्यांकन करने तथा निरीक्षण करने के अधिकार से सम्पन्न रहेगी, यह न्याय है।

ग्राम-मोहल्ला परिवार सभा में न्याय

1 (सभा-गठन) सदस्य :- दस परिवार समूह सभा में-से एक-एक व्यक्ति निर्वाचित रहेंगे। ये सभी दस सदस्य आत्मनिर्भर परिवार में से होगें , यह न्याय है।

2 आत्मनिर्भरता का स्वरूप समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व में प्रमाण सहज सम्पन्न परिवार है। यह आचरणपूर्वक न्याय है।

3 ग्राम-मोहल्ला नाम पहले से रहता है अथवा नाम रख सकते हैं, यह न्याय है।

4 हर सदस्य मानवीयता पूर्ण आचरण सहज प्रमाण रूप में रहेंगे। यह न्याय है।

5 हर सदस्य स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा अर्थात् ज्ञान-विवेक-विज्ञान संपन्नता और व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में सामाजिक, उत्पादन कार्य रूपी व्यवसाय में स्वावलम्बन संपन्न परिवार प्रतिनिधि होना न्याय है।

(1) ज्ञान सम्पन्नता = सहअस्तित्व रूपी अस्तित्वदर्शन-ज्ञान, जीवन-ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान प्रमाणित होना

न्याय है।

(2) विवेक सम्पन्नता = मानव लक्ष्य सहज स्वीकृति संपन्नता न्याय है।

(3) विज्ञान = मानव लक्ष्य सर्वसुलभ होने में-से-के लिये निश्चित दिशा सहज पारंगत प्रमाण स्पष्ट रहना न्याय है।

6 सर्व मानव ज्ञानावस्था में गण्य है। अनुभवपूर्वक ज्ञान सम्पन्न रहना प्रमाण के रूप में सर्व शुभ के अर्थ में आवश्यक है यह न्याय है।

सभा सदस्यों में अधिकार समानता स्वरूप

सर्वतो मुखी समाधान समृद्धि प्रमाण सहित पाँचों समिति सहज कार्य गति में घटित समस्या का समाधान प्रस्तुत करने में निर्वाचित सभी दस सदस्यों का समानाधिकार स्वत्व स्वतंत्रता पूर्वक क्रियान्वयन न्याय है।

समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी में पारंगत प्रमाण होने का सत्यापन हर निर्वाचित सदस्य सत्यापित करेगा। परिवार के सभी सदस्य, निर्वाचित सदस्य मानवत्व सहित व्यवस्था सहज प्रमाण, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करने में सक्षम होने का सहजता सहित निर्वाचन किये रहेंगे।

पाँचों आयामों का निरन्तर गति प्रयोजन सहज वर्तमान ही स्वराज्य है। यही जागृति सम्पन्न मानव परंपरा है।

मानव प्रधानता = समाधान, समृद्धि सहित भागीदारी करना न्याय है।

7 सर्वमानव शुभ में व्यक्ति का स्व शुभ समाया है। यह न्याय है।

8 मानव-लक्ष्य सर्व सुलभ होना ही सर्व शुभ है। यही सहज और

न्याय है।

9 सभा के दसों सदस्य सर्व शुभ के अर्थ में प्रवर्तित, कार्यरत प्रमाणित रहेंगे। यह समाधान व न्याय है।

7.2 (17) ग्राम-मोहल्ला परिवार सभा संगठन

1 स्वराज्य सभा गठन प्रक्रिया के मूल में निर्वाचन विधि न्याय है।

2 निर्वाचन पूर्वक दस सदस्यों में अधिकार, स्वत्व, स्वतंत्रता समान है। यह गठन सूत्र है। यह स्वराज्य गति नित्य वर्तमान होना न्याय है।

3 निर्वाचन प्रक्रिया के मूल में सर्वशुभ ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्बद्धता न्याय है।

4 सदस्यों में स्वत्व - स्वतंत्रता, अधिकार, समानता ही गठन गुण सूत्र और वैभव है। यह न्याय है।

5 हर सदस्य में समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी-भागीदारी समान यह गठन-गुण-सूत्र है यह न्याय है।

6 हर सदस्य में मानवीयता पूर्ण आचरण प्रमाणित रहना गठन-गुण-सूत्र है। यह न्याय है।

7 समझदारी-ईमानदारी को ज्ञान-विवेक-विज्ञान स्वत्व सहज रूप में, जिम्मेदारी को स्वतंत्रता सहज रूप में और भागीदारी अधिकार सहज समान रूप में है। यह न्याय है।

8 व्यवहार-कार्य में ही भागीदारी, दायित्व-कर्त्तव्यों का निर्वाह का प्रमाण है। यह न्याय है।

9 मानवीय शिक्षा का प्रयोजन संस्कार मानवीयता में, से, के लिए

स्वीकृति को कार्य-व्यवहार में, कार्य-व्यवहार सामाजिक अखण्डता व सार्वभौम व्यवस्था के रूप में प्रमाणित होता है। यह दायित्व हर सदस्यों में समान रहेगा, यही सर्वशुभ है। यही न्याय है।

10 ज्ञान-विवेक-विज्ञान संपन्नता ही स्वत्व व्यवहार में प्रमाण है। यह न्याय है।

11 ज्ञान-विवेक-विज्ञान पूर्वक दायित्वों की स्वीकृति निश्चय निर्वाह करने में स्वतंत्रता (स्वयं स्फूर्त होना), दायित्व के साथ कर्त्तव्यों का निर्वाह करना न्याय है।

दायित्व

ग्राम-मोहल्ला-परिवार सभा प्रधानतः पाँच विधाओं में प्रमाणित होना प्रमाण वैभव है। यह न्याय है। अन्य सभी विधायें इनमें समायी रहती हैं। यह न्याय है।

1 मानवीय-शिक्षा-संस्कार ग्राम मोहल्ला वासियों को सुलभ हो सके, यह न्याय है।

2 मानवीय-शिक्षा-संस्कार पूर्वक हर मानव सन्तान का स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा और व्यक्तित्व में सन्तुलन, व्यवहार में सामाजिक, उत्पादन में स्वावलंबी होना न्याय है।

3 मानवीयतापूर्ण आचरण में पारंगत होना न्याय है।

4 सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान में पारंगत होना न्याय है।

5 जीवन सहज क्रियायें जागृति पूर्वक प्रमाणित होना न्याय है।

6 भौतिक क्रिया-कलाप में पारंगत होना न्याय है।

7 रासायनिक-क्रिया-कलाप में पारंगत होना न्याय है।

8 व्यापक वस्तु (सत्ता) में सम्पूर्ण ग्रह गोल, सौर-व्यूह, ग्रह-व्यूह, आकाश-गंगा, चारों अवस्था, चारों पद सम्पृक्त अविभाज्य है - में पारंगत होना न्याय है।

9 ज्ञानावस्था में मानवीय शिक्षा-संस्कार सम्पन्न मानव को, जीवावस्था में जीने की आशा सम्पन्न जीवों को, प्राणावस्था में रसायन-उर्मी, पुष्टि एवं रचना तत्व सहित प्राण कोषाओं से रचित रचना में पौधों के रूप में कार्य-विधियों को, यौगिक विधि से प्रकट रसायन द्रव्यों को, इनके ठोस-तरल-विरलता को, पदार्थावस्था में मृत-पाषाण-मणि धातु के ठोस व विरल रूप को जानना, मानना, पहचानना व निर्वाह करने में पारंगत होना न्याय है।

10 मानव, देव मानव देव पद में, दिव्य मानव दिव्य-पद में, भ्रान्त मानव और जीवों को जीवनी क्रम में, प्राणावस्था व पदार्थावस्था को प्राण-पद में जानना-मानना-पहचानना व निर्वाह करना न्याय है।

दायित्व

मानवीय शिक्षा स्वीकृति अर्थात् सहअस्तित्व तथ्य को सहज रूप में जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करने के रूप में दायित्व होना न्याय है।

स्वीकृतियाँ जानने व मानने के रूप में, सोच-विचार-निर्णय विवेक-विज्ञान के रूप में, आचरण (कार्य-व्यवहार) मानवीयता के रूप में पहचान-निर्वाह के रूप में, व्यवस्था स्वयं स्फूर्त कर्त्तव्य-दायित्व रूप में, संस्कृति उत्सव के रूप में, स्वीकृतियाँ जागृत समाज परस्पर अर्पण समर्पण के रूप में, सभ्यता व्यवस्था में भागीदारी के रूप में, संविधान आचरण के अर्थ में, व्यवस्था सार्वभौमता (सर्व शुभ व स्वीकृति) के

रूप में न्याय है।

7.3 उत्पादन कार्य व्यवस्था समिति

उत्पादन :- उपाय (तकनीकी) सम्पन्नता सहित प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन पूर्वक उपयोगिता व कला मूल्य सम्पन्न सामान्य व महत्वाकाँक्षा संबंधी वस्तुयें मनाकार को साकार करने के लिए निपुणता, कुशलता, पांडित्य सहित उत्पादन है।

श्रम नियोजन कार्य उपाय (तकनीकी) सहित पदार्थ-प्राण, जीवावस्था पर श्रम नियोजन पूर्वक सामान्य आकाँक्षा व महत्वाकाँक्षा संबंधी वस्तुओं को पाना उत्पादन संबंध, परिवार सहज विधि से है।

व्यवस्था :- जागृति सहज विधि से अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी है।

ऐश्वर्य :- पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था प्राकृतिक ऐश्वर्य वस्तु के रूप में वैभव है।

सामान्य आकाँक्षा :- आहार, आवास, अलंकार सम्बन्धी वस्तुएं है।

महत्वाकाँक्षा :- दूर श्रवण, दूर दर्शन, दूर गमन सम्बन्धी यंत्र-उपकरण के रुप में है।

उत्पादन का प्रयोजन :- शरीर पोषण-संरक्षण, समाज-गति में, से, के लिए वस्तुओं का उपयोग-सदुपयोग-प्रयोजन स्पष्ट है।

(प्रतीकमुद्रा - स्वयं में वस्तु का प्रतीक होता है। सिद्ध है कि प्रतीक प्राप्ति नहीं है)।

आवश्यकता का निश्चयन:- समझदार मानव परिवार में ही स्पष्ट होता है।

7.3 (1) उत्पादन-कार्य व्यवस्था

1. उत्पादन कार्य सहज क्रिया-कलाप, जागृत मानव-परंपरा में, से, के लिए निपुणता-कुशलता-पांडित्य पूर्वक प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन सहज सामान्य व महत्वाकाँक्षा सम्बन्धी वस्तुओं, उपकरणों उपयोगिता व कला मूल्य को प्रमाणित करने के रूप में पहचान होता है।

   सामान्य आकाँक्षा सम्बन्धी वस्तुओं की आहार-आवास-अलंकार सम्बन्धी वस्तुओं के रूप में पहचान है। कृषि व पशु पालन के लिये आवश्यकीय उपकरणों को अधिकतर कृषक अपने हाथों पड़ोसियों की सहायता से सम्पन्न कर लेते हैं। यह क्रिया-कलाप बैल से हल जोतने के समय तक सम्पन्न होता हुआ स्पष्ट है।

   जब से ट्रैक्टर से जोत शुरु हुआ है तब से कृषि औजार प्रौद्योगिकीय विधि से तैयार होने लगा, तब उपकरणों के लिए बाजार का आश्रय लेना शुरू किया। यह शनैः शनैः महंगा होता जा रहा है। जिस अनुपात में प्रौद्योगिकीय उपकरणों का दाम बढ़ता जा रहा है उस अनुपात में कृषि उपज का दाम नहीं बढ़ पाया है।

   सन् 2000 तक जो परिस्थितियाँ सुविधायें व गति के साथ अर्थात् जल्दी-ज्यादा के अर्थ में मानव-प्रवृत्ति उलझने लगा। इसी के साथ पशुपालन विधि से ही रसायन-खाद एवं कीटनाशक दवाइयों से मुक्ति पाना आवश्यक है।

2. निपुणता-कुशलता-पांडित्य सम्पन्नता सहित श्रम नियोजन के फलन में सामान्य व महत्वाकाँक्षा सम्बन्धी वस्तु व उपकरणों का उत्पादित होना स्पष्ट है। यह मानव की परिभाषा में, से, के लिये

मनाकार को साकार करने के सौभाग्य का फलन है, जो सुविधा-संग्रह जैसी प्रवृत्ति रहने के साथ भी सुलभ हुआ है। मनस्वस्थता: सर्वतोमुखी समाधान सर्व सुलभ होने के रूप में मानवीय शिक्षा-संस्कार चेतना विकास मूल्य शिक्षा रूप में सार्वभौम है।

मानवीय शिक्षा का फलन ही मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान-व्यवस्था व आचरण-मूल्यांकन परंपरा ही अखण्ड-समाज सूत्र सहित व्याख्या में पारंगत होना पाण्डित्य है। यही मनःस्वस्थता का प्रमाण है। यही दृष्टा-पद-प्रतिष्ठा का वैभव व जागृति सहज प्रमाण रूप में सौभाग्य है।

उत्पादन के साथ विनिमय अनिवार्य है। आवश्यकता से अधिक उत्पादन विनिमय व्यवस्था का आधार है।

हर समझदार मानव अपने द्वारा किये गये व्यवहार, उत्पादन व सेवा का मूल्यांकन करे जिसमें परिवार जनों की सहमति होना आवश्यक है। यह परिवार व्यवस्था जिसमें हर नर-नारी मानवत्व सहित व्यवस्था सहज प्रमाण है।

द्वितीय स्थिति में एक परिवार समूह सभा (दस परिवारों में) अपने में मूल्यांकन करेगा जिसमें दस परिवारों में परस्पर सहमति होना आवश्यक रहता है।

तीसरी स्थिति में सौ परिवार परस्परता में से किया गया उत्पादन व व्यवहार का मूल्यांकन होना स्वाभाविक रहेगा। इस स्थिति में सौ परिवार की परस्परता में सहमत होना आवश्यक है। हर परिवार के साथ सौ परिवार सहमति परिवार के समान परिवार समूह का, समूह के साथ ग्राम क्रम से विश्व परिवार सभा में से के लिए समायोजन होना स्पष्ट है।

3. चौथी स्थिति दस गांवों का व्यवहार कार्य व उत्पादन सेवा कार्यों का मूल्यांकन सहज सहमत होना आवश्यक रहेगा।

ग्राम-मोहल्ला परिवार सभा तक प्रत्येक परिवार का मूल्यांकन, स्वीकृति व सहमति आवश्यक है क्योंकि विश्व-परिवार सभा तक सभाओं में मूल्यों का मूल्यांकन में ताल-मेल एक आवश्यकता है, जिसमें मूल्यांकन में सहमति 'दश-सोपानीय व्यवस्था' स्वीकार और सार्थक हो सके।

प्रत्येक और सम्पूर्ण मानव में, से, के लिए मानवत्व सहित व्यवस्था में भागीदारी ही है।

मानवीयता पूर्ण आचरण मूल्य, चरित्र, नैतिकता का संयुक्त रूप है -

मूल्य = जाग्रत मानव परस्परता में जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्यों का वर्तमान व प्रमाण।

चरित्र = स्वधन, स्वनारी-स्वपुरूष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार।

नैतिकता = तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा का वर्तमान।

यह सभी व्यवस्था सहज सोपानों में मूल्यांकन का आधार है। साथ ही वस्तु मूल्य व कला मूल्य की उपयोगिता के आधार पर मूल्यांकन होना ही जागृत मानव परंपरा है। संबंधों का पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्याँकन, परस्परता में तृप्ति होता है।

4. परिवार में - हस्त कला, ग्राम-शिल्प कला

परिवार समूह में - कुटीर उद्योग

ग्राम परिवार में - ग्रामोद्योग

ग्राम समूह परिवार में	- लघु उद्योग, विकल्प
क्षेत्र परिवार में	- लघु उद्योग, मध्यम कोटि का उद्योग, विकल्प
मण्डल परिवार में	- मध्यम कोटि का उद्योग व बड़े उद्योग, विकल्प
मण्डल समूह परिवार में	- मध्यम व बड़े उद्योग, विकल्प
मुख्य राज्य परिवार में	- बड़े उद्योग, विकल्प
प्रधान राज्य परिवार में	- वृहत्तर उद्योग, विकल्प
विश्व राज्य परिवार में	- परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था विधि से श्रेष्ठता व उपयोगिता का मूल्यांकन विधि रहेगा। विश्व परिवार सभा न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य, उत्पादन विनिमय सुलभता में शोधपूर्वक मार्गदर्शन, उत्पादन में गुणवत्ता का शोध, साथ में चारों अवस्था में संतुलन सूत्र व्याख्या में पारंगत प्रमाण, मार्गदर्शन कार्य करेगा।

5. हर जागृत मानव परिवार में ग्राम-शिल्प, कृषि, पशुपालन, उत्पादों को उपयोगिता-मूल्य के आधार पर निर्धारित करने का अधिकार रहेगा। ऐसा मूल्यांकन परिवार समूह व ग्राम-मोहल्ला परिवार सभा में समाहित सभी परिवार सहज उत्पादों का मूल्यांकन के साथ समन्वित रूप में स्वीकृत और सन्तुष्ट रहेगा।

हर परिवार जन सन्तुष्ट रहने का आधार हर नर-नारी का समझदारी

व समाधानित रहना, हर नर-नारी का आवश्यकता से अधिक उत्पादन में भागीदारी करना, मूल्यांकन कार्य में सम्बद्ध रहना है।

हर परिवार जन न्यूनतम दस परिवार में (एक परिवार समूह में) किये गये मूल्यांकनों से विदित रहना, अधिकतम देश-धरती में वर्तमान परिवारों का उत्पाद मूल्यांकन से विदित रहने का अधिकार रहेगा।

हर परिवार समूह-सभा में भागीदारी करता हुआ कम से कम दसों सदस्यों को दस परिवार-समूह में किये गये उत्पादन व मूल्यांकन गति-विधियों से अवगत रहने का अधिकार रहेगा जिससे ग्राम-मोहल्ला में जितने भी परिवार रहते हैं उनमें देश-धरती के परिवारों को मूल्यांकन-तालमेल के अर्थ में सोचने के लिए प्रेरणा सुलभ रहेगा।

6. सार्वभौम व्यवस्था में जीने में हर जागृत मानव परिवार में, से, के लिए उत्पादित वस्तुओं की उपयोगिता के आधार पर मूल्यांकन करना स्वाभाविक रहेगा क्योंकि जागृत मानव श्रम व मूल्यों का सही मूल्यांकन करता ही है।

- जागृत मानव ही औसत सामान्य मानव है।
- जागृत मानव ही परिवार मानव है।
- जागृत मानव ही अखण्ड समाज मानव है।
- जागृत मानव ही सार्वभौम व्यवस्था सहज मानव है।

जागृत मानव ही परंपरा सहज रूप में वैभव है। दस सोपानीय व्यवस्था क्रम में पीढ़ी से पीढ़ी जागृत होना ही परंपरा है। यही अभ्युदय, सर्वतोमुखी समाधान परंपरा है। इसी विधि से सर्व मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण सहित सर्व शुभ

परंपरा है।

जागृत मानव परंपरा में ही उत्पादन कार्य व्यवस्था सफल होता है।

7. शरीर पोषण-संरक्षण के साथ जागृति-क्रम, जागृति ही शिक्षा-संस्कार कार्यक्रम है, में भागीदारी करना भी प्रयोजन है।

शिक्षा-संस्कार-प्रक्रिया का आरंभ परिवार में ही होना स्वाभाविक है। जागृत मानव परंपरा का यह साक्ष्य है।

जागृत मानव-परंपरा में हर परिवार में प्राप्त सन्तान के लिए जागृति सहज समीचीन रहती है। इसी विधि से जागृत मानव परंपरा प्रमाण वर्तमान होना सहज है।

जागृत परंपरा में ही उत्पादन-कार्य व्यवस्था सफल होता है। उत्पादन कार्य निपुणता, कुशलता, पाण्डित्य पूर्वक सर्व देश काल में आकाँक्षा-द्रव्य के अर्थ में सफल होता है।

व्यवस्था-कार्य मूल्यांकन पूर्वक विनिमय संपन्न होता है।

ज्ञान-विवेक-विज्ञान संपन्न मानसिकता ही मानव लक्ष्य के अर्थ में मूल्यांकन होना स्वाभाविक रहता है। यह दश सोपानीय व्यवस्था विधि से गठित होना ही सामाजिक अखण्डता व्यवस्था सहज सार्वभौमता सहज प्रमाण है।

उत्पादन गुणवत्ता की पहचान शरीर पोषण-संरक्षण के अर्थ में व अखण्ड सार्वभौमता सहज समाज-गति के अर्थ में है।

7.3 (2) गुणवत्ता की पहचान

आहार की गुणवत्ता	शरीर-पोषण के रूप में
आवास की गुणवत्ता	शरीर संरक्षण बनाये रखने में आवश्यक शीत-वात-उष्मा से कम-अधिक का बचाव रूप में पहचान।
अलंकार	शरीर शोभा को व्यवस्था में भागीदारी के अर्थ में पहचान बनाये रखने के रूप में शरीर सहज उष्मा को बनाये रखने में पहचान। संज्ञानीयता पूर्वक संवेदनाएं नियंत्रित रहने का प्रमाण।
औषधि	रोग पीड़ा के निवारण करने और बचाव, स्वास्थ्य को संतुलित बनाये रखने के रूप में पहचान।

दूरसंचार यथा दूरश्रवण, दूरदर्शन व दूर गमन और गतिशील यंत्रों का व्यवस्था व उत्पादन गति सन्तुलन के अर्थ में उपयोग, सदुपयोग है।

7.3 (3) उत्पादन - प्रयोजन

उत्पादन में सार्थक उद्देश्य :- शरीर पोषण-संरक्षण, अखण्ड समाज गति में, सार्वभौम व्यवस्था गति में भागीदारी के उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता के अर्थ में

आहार औषधियाँ :- शरीर पोषण-संरक्षण के अर्थ में स्वस्थता को बनाये रखने, निरोगिता के अर्थ में

आवास :- शरीर, आहार, औषधि और पशुओं के संरक्षण के अर्थ में

अलंकार :- आह्लाद (प्रसन्नता) पूर्वक मानव-संस्कृति-सभ्यता सहज पहचान के अर्थ में वस्त्र, मणि, धातु, पुष्प-पत्रों को सजाना जिसमें अधिक शीत, उष्ण को शरीरानुकूल बनाये रखने व लज्जा की रक्षा के उद्देश्य समाये रहते हैं।

उक्त तीनों सामान्य आकाँक्षायें हैं।

महत्वाकाँक्षा :- दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूर गमन के प्रति मानव ने अपने में अपेक्षा अथवा आवश्यकता के रूप में स्वीकारा है। यह धरती पर मानव को उपलब्ध है। ये तीनों महत्वाकाँक्षायें हैं ।

दूरसंचार का प्रयोग व्यवस्था गति को बनाये रखने के प्रयोजन से है।

7.3 (4) जागृति-समाधान-उत्पादन-विनिमय समृद्धि

मानव ने मनाकार को साकार किया है। मनः स्वस्थता को प्रमाणित करना ही मानव चेतना, समझदारी, जागृति है।

हर जागृत मानव मनाकार को साकार करने मनः स्वस्थताः को परंपरा में प्रमाणित करने समृद्धि का साक्ष्य व व्यवस्था में प्रवृत्त होना पाया जाता है।

सार्वभौम व्यवस्था में ही मानव अपनी जागृति (सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता) को समाधान-समृद्धि सम्पन्न परिवार सहज व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित होता है ।

समाधान ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज गति है। यही जागृत मानव गति है - हर सोच विचार गति, कार्य संवाद गति व फल परिणाम गति, अखण्डता सम्पन्न गति।

मानव-लक्ष्य संपन्नता से जीवन-मूल्य प्रमाणित होना, जीवन-मूल्य सहज प्रमाण रूप में सहज विधि से मानव-लक्ष्य साक्षित फलित होता है।

1. समाधान

मानव-संस्कृति, पूर्णता के अर्थ में किये जाने वाले कृतियों के रूप में समाधान है।

मानव-सभ्यता पूर्वक व्यवस्था में भागीदारी के रूप में समाधान है।

मानवीयता पूर्ण आचरण समाधान है।

मानवीय सभ्यता, स्वतंत्रता और परिवार मूलक व्यवस्था में भागीदारी सहज सभ्यता, स्वतंत्रता, स्वराज्य के रूप में सर्वतोमुखी समाधान है।

अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन समाधान है ।

जागृति पूर्वक किया गया, कराया गया, करने के लिए सहमत समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और भागीदारी समाधान है ।

जीवन जागृति पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार-विचार समाधान है।

मानव-लक्ष्य को प्रमाणित करना समाधान है।

जीवन-मूल्यों को मानव परंपरा में प्रमाणित करना समाधान है ।

2. समाधान = सहअस्तित्व सहज समझ ।

अस्तित्व स्थिर है, विकास व जागृति निश्चित है।

सहअस्तित्व में जीवन जीवनीक्रम, जीवन जागृतिक्रम, जीवन-जागृति, जागृति सहज निरन्तरता सहज समझ समाधान सम्पन्न परंपरा ही जागृत मानव परंपरा है।

(1) व्यापक सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति को अध्ययन पूर्वक समझना समाधान है।

(2) सत्ता में सम्पृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति को सहअस्तित्व में अविभाज्य

व नित्य वर्तमान सहज,वैभव में, से, के लिए अध्ययन पूर्वक समझना समाधान है।

(3) सहअस्तित्व परम सत्य है, यह समझना समाधान है।

(4) सहअस्तित्व सहज शाश्वतीयता को समझना समाधान है । सहअस्तित्व मुद्दों के रूप में स्थिरता, निश्चयता सहज निरन्तरता को समझना समाधान है।

(5) सहअस्तित्व सहज निरन्तर स्थिरता को समझना समाधान।

(6) सहअस्तित्व सहज नित्य रूप में विकास को समझना समाधान, विकास सहज चैतन्य इकाई गठनपूर्ण परमाणु में दृष्टा पद प्रतिष्ठा होने का समझ समाधान है।

(7) नित्य वैभव के रूप में जागृति को समझना समाधान है।

(8) जीवन व जागृति को परम प्रयोजन के रूप में समझना समाधान है।

(9) जीवन ही दृष्टा पद प्रतिष्ठा सम्पन्न होने को अध्ययन अनुभव पूर्वक समझना समाधान है।

(10) जीवन ही जागृति पूर्वक मानव परंपरा में प्रमाणित होने को अध्ययन अनुभव पूर्वक समझना समाधान है।

3. समाधान

(1) व्यापक सत्ता (साम्य ऊर्जा) में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति सहअस्तित्व सहज अस्तित्व अर्थात् सदा-सदा होना और मानव में, से, के लिए स्वीकार होना ही समाधान है।

(2) सहअस्तित्व सहज समझदारी समाधान है।

(3) सहअस्तित्व में ही जीवन सहज क्रिया-कलाप को समझना समाधान है।

(4) सहअस्तित्व में ही जीवनी-क्रम, जीवन-जागृति क्रम, जागृति और जागृति सहज निरन्तरता को मानव परम्परा में समझ होना, मानव परंपरा में ही जागृति प्रमाणित होने की समझ समाधान है।

(5) सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति को नित्य वर्तमान सहज सहअस्तित्व रूप में समझना समाधान है।

(6) सहअस्तित्व सहज नित्य वर्तमान ही परम सत्य है। यह मानव परंपरा में अर्थात् -

- मानवीय शिक्षा-संस्कार परंपरा,
- मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान परंपरा,
- मानवीयता पूर्ण दश सोपानीय सार्वभौम व्यवस्था परंपरा का समझ सर्वतोमुखी समाधान है।

(7) सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता ही हर नर-नारियों में, से, के लिए जागृति सहज प्रमाण, वर्तमान और परंपरा है। यह समझना समाधान है।

(8) जागृत मानव-परंपरा, निरन्तरता और प्रयोजनों को समझना समाधान है।

(9) सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व सहज स्थिरता मानव में ही जागृति सहज सुलभ होने का निश्चयता को समझना समाधान है।

4. समाधान

(1) मानव परंपरा को सार्वभौम व्यवस्था का धारक-वाहक रूप में

जागृत मानव को मानवत्व सहित व्यवस्था में पहचानना, समझना, यही समाधान है।

(2) विकास व जागृति को सुनिश्चित रूप में समझना समाधान है ।

(3) जागृति सहज परंपरा, प्रक्रिया व मूल्यांकन विधि को समझना समाधान है।

(4) जागृत मानव परम्परा में हर मानव दृष्टा पद में होने की समझ समाधान है।

(5) सर्व मानव दृष्टापद में प्रमाणित होने की समझ समाधान है।

(6) जीवन जागृति सहज प्रतिष्ठा में ही दृष्टा-पद को मानव प्रमाणित करता है यह समझ समाधान है।

(7) हर मानव दृष्टा पद में समझदारी-ईमानदारी जिम्मेदारी-भागीदारी को प्रमाणित करता है, यह समझ समाधान है ।

(8) दृष्टा-पद में हर मानव मानवत्व को प्रमाणित करता है। यह समझ सहित प्रमाण समाधान है।

(9) मानवत्व हर मानव के स्वत्व होने की समझ समाधान है।

5. समाधान

(1) गठनपूर्णता-क्रिया पूर्णता-आचरण पूर्णता सहज सर्वतोमुखी वैभव को समझना समाधान है।

(2) विकास क्रम में भौतिक-रासायनिक क्रिया-कलाप व विकास -गठन पूर्ण परमाणु चैतन्य पद में होने, जीवन ही जीवनी क्रम विधि से जीवों का वैभव और जागृतिक्रम, जागृति के रूप में मानव परम्परा में होने की समझ समाधान है ।

(3) जीवन, भौतिक-रासायनिक और जीवन क्रिया कलापों का

जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना वर्तमान में वैभव है। यह समझ समाधान है।

(4) जागृत मानव-परंपरा में जानने-मानने- पहचाने, निर्वाह करने में प्रमाण होता है। यह समझ में आना समाधान है ।

(5) हर नर-नारी में जागृति सहज अस्तित्व में अनुभव सहज वैभव है, यह मानव परम्परा में समझ होना समाधान है ।

(6) मानवीयता पूर्ण आचरण समाधान है।

(7) मानवीयता पूर्ण व्यवस्था समाधान है।

(8) जागृत मानव संस्कृति समाधान है।

(9) जागृत मानव सभ्यता समाधान है।

(10) जागृत मानव परंपरा में संविधान सर्वतोमुखी समाधान है।

(11) जागृत मानव परंपरा में मानवीय शिक्षा संस्कार सर्वतोमुखी समाधान है।

6. समाधान

(1) परमाणु अंश भी एक दूसरे को पहचानते हैं। इसका प्रमाण परमाणु के रूप में कार्यरत रहना ही है। यह समझ होना समाधान है ।

(2) एक परमाणु दूसरे को पहचानते हैं इसका प्रमाण अणुओं के रूप में कार्यरत रहना वर्तमान है। यह समझ होना समाधान है ।

(3) हर परमाणु या अणु दूसरे को पहचानता है, इसका प्रमाण अणु रचित रचना है, यह समझ में आना समाधान है।

(4) हर ग्रह-गोल अणु रचित रचना है। यह समझ में आना समाधान है ।

(5) हर ग्रह गोल एक दूसरे को पहचानते हैं। इसका प्रमाण एक दूसरे से निश्चित अच्छी दूरी शून्याकर्षण में व्यवस्था के रूप में होना है। यह समझ में आना समाधान है।

(6) हर ग्रह समूह जो कुछ ग्रह-गोल के साथ निश्चित कार्य करते हैं जैसे यह धरती किस प्रकार से कार्य करती है। यह समझ में आना समाधान है।

(7) प्रत्येक धरती पर विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति प्रकट होने योग्य या प्रकट रहती है यह समझ में आना समाधान है।

(8) हर समृद्ध धरती पर मानव ही जागृति पूर्वक मानव-लक्ष्य में सफल होता है। यह समझ में आना समाधान है।

(9) हर धरती पर जागृति प्रमाणित होना, चारों अवस्थायें वैभवित रहना नियति है। यह समझ में आना समाधान है।

8. समाधान

(1) जागृत परंपरा सम्पन्न हर धरती पर चारों अवस्थायें पूरकता-उपयोगिता विधि से नित्य वैभव रहता है। यह समझ समाधान है।

(2) हर धरती शून्याकर्षण में रहते हुए विकास क्रम ,विकास, जागृति क्रम, जागृति की निरन्तरता सहज संभावना समीचीन है। यह समझ होना समाधान है।

(3) हर धरती कालान्तर में अपने में पदार्थ अवस्था से-प्राण-जीव एवं ज्ञानावस्था संयुक्त वैभव निरन्तर रहने के लिए है। यह समझ में आना समाधान है।

(4) हर धरती पर ज्ञानावस्था में ही स्वतंत्रता, कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता स्वराज्य में संरक्षित रहती है। यह समझ समाधान है।

(5) मानव ज्ञानावस्था में होते हुए जब भ्रमवश जीवों सदृश्य जीने को प्रवर्तनशील होता है तब पीड़ित होता है समस्या से प्रताड़ित होता है। इसका निराकरण समझ जागृति पूर्वक सर्वतोमुखी समाधान है।

(6) हर मानव अस्तित्व में अनुभव मूलक विधि से सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न होना समीचीन है।

(7) सहअस्तित्व अनुभव मूलक विधि से हर मानव अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में प्रमाण है। यह समझ सर्वतोमुखी समाधान है।

(8) हर जागृत मानव जीवन-लक्ष्य, मानव लक्ष्य को प्रमाणित करता है, यह समाधान है।

(9) जागृत परंपरा में मानव मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी करता है। यह सर्वतोमुखी समाधान है।

(10) हर धरती पर जागृत परंपरा में मानव ही स्वयं सन्तुलित रहने का दृष्टा है। यह समझ समाधान है।

(11) जागृत परंपरा ही मानव को पीढ़ी से पीढ़ी दृष्टा पद में प्रतिष्ठित करता है। यह समझ समाधान है।

(1) पूरकता (2) उपयोगिता (3) शून्याकर्षण (4) सहअस्तित्व (5) विकास क्रम (6) विकास (7) जागृति क्रम (8) जागृति और निरंतरता सहज समझ समाधान है।

8. समाधान

(1) सहअस्तित्व में जीने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(2) ऋतु संतुलन को धरती में बनाये रखने का सोच-विचार-निर्णय व कार्यक्रम समाधान है।

(3) नियम-नियंत्रण सन्तुलन पूर्वक जीने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(4) न्यायपूर्वक जीने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(5) अखण्ड समाज में भागीदारी का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(6) अभयता पूर्वक समृद्धि सहित जीने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(7) पूरकता, उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनीयता सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(8) जीवन मूल्य को प्रमाणित करने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(9) मानव-मूल्यों को प्रमाणित करने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(10) स्थापित-शिष्ट-उपयोगिता-सुन्दरता मूल्यों को मानव-परंपरा में प्रमाणित करने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(11) आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने के लिए सहअस्तित्व सहज ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत सोच-विचार सुनिश्चयन समाधान है।

(12) सुख-शांति-संतोष-आनन्द सहज सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(13) सर्व-शुभ सर्व-सुलभ होने के लिए सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(14) सर्व-सुख शांति सर्व सुलभ होने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(15) स्व शुभ सर्व शुभ में समाहित विधि से किया गया सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

(16) अनुभव मूलक विधि से सर्वशुभ सोच विचार निश्चयन समाधान है।

(17) जागृति-विधि से जीने का सोच-विचार निश्चयन समाधान है।

(18) हर नर-नारी में-से-के लिये जीवन समान शरीर में भिन्नता का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(19) हर नर नारी में- से-के लिए जागृति समानता का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(20) हर मानव में-से-के लिये ज्ञान-विवेक -विज्ञान सम्पन्नता का अधिकार सहित समान होने के रूप में सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

9. समाधान

(1) भौतिक -रासायनिक प्रकृति को यथा स्थिति विधि से 'त्व' सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में होने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(2) भौतिकता को परिणामानुषंगीय, प्राणावस्था को बीजानुषंगीय

परंपरा होने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है ।

(3) जीवावस्था को वंशानुषंगीय परंपरा होने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(4) ज्ञानावस्था में मानव को ज्ञानानुषंगीय, यथा समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी पूर्वक परंपरा होने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है ।

(5) मानव परम्परा को सहअस्तित्व में मानवत्व में प्रमाणित होने वाले ईकाई के रूप में किया गया सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(6) मानव परंपरा को दृष्टा पद में होने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

(7) मानव-परंपरा अनुभव मूलक होने का सोच-विचार-निश्चयन-समाधान है।

(8) मानव सहअस्तित्व में अनुभव परंपरा होने का सोच, विचार निश्चयन समाधान है।

(9) मानव परंपरा सहअस्तित्व सहज जागृति में-से-के लिये विकास क्रम, विकास, जीवन, जीवन जागृति-क्रम, जागृति सहज दृष्टा, ज्ञाता, कर्त्ता भोक्ता होने का सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

(10) मानव संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था में संयुक्त वैभव परंपरा होने का सोच-विचार निश्चयन समाधान है।

(11) मानव अखण्ड समाज सूत्र के आधार पर अखण्ड राष्ट्र-व्यवस्था का सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

(12) अखण्ड समाज-राष्ट्र-व्यवस्था को दस सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था का सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

(13) जागृति पूर्वक ही मानव परंपरा होने का सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

10. समाधान

(1) सहअस्तित्व में अनुभव मूलक विधि से जीना-समाधान है।

(2) अनुभव प्रमाणों को प्रमाणित करना समाधान है।

(3) व्यवस्था में जीना समाधान है।

(4) व्यवस्था में भागीदारी करना समाधान है।

(5) जागृति को प्रमाणित करना समाधान है।

(6) सहअस्तित्व में प्रमाणित होना-रहना-करना समाधान है।

(7) मानवीय शिक्षा-संस्कार में भागीदारी करना समाधान है।

(8) न्याय सुरक्षा में भागीदारी करना समाधान है।

(9) परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना समाधान है ।

(10) तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग करना समाधान है।

(11) कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित क्रिया में जागृति (समझदारी) को प्रमाणित करना समाधान है।

(12) मानवीयता पूर्ण आचरण को प्रमाणित करना समाधान है।

(13) मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान का पालन करना समाधान है।

(14) स्वास्थ्य-संयम कार्य में भागीदारी करना समाधान है।

(15) उत्पादित वस्तु की उपयोगिता के आधार पर श्रम मूल्य का

विनिमय समाधान है।

(16) जन्म-दिन उत्सव, नाम-संस्कार उत्सव, शिक्षा-संस्कार उत्सव, विवाह उत्सव, ऋतु-काल व्यवस्था उत्सवों को सुख-समाधान, समृद्धि के अर्थ में सम्पन्न करना समाधान है।

(17) नृत्य, संगीत, साहित्य को मानवीयता व मानवीय व्यवस्था के अर्थ में प्रस्तुत करना समाधान है।

(18) परिवार मूलक स्वराज्य-व्यवस्था सहज उत्सवों को दस सोपानीय क्रम में सम्पन्न करना समाधान है।

11. समाधान

(1) ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता सहज कार्य-व्यवहार करना समाधान है।

(2) समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी-भागीदारी पूर्वक कार्य व्यवहार करना समाधान है।

(3) दस सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी करना, सम्बन्धों को पहचानना, जीवन-मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य व वस्तु मूल्य सहज निर्वाह करना समाधान है।

(4) स्थिति-सत्य, वस्तु-स्थिति-सत्य, वस्तुगत सत्य सहज विधि से किया गया कार्य-व्यवहार समाधान है।

(5) मनाकार को उत्पादन-कार्य से प्रमाणित करना समाधान है।

(6) मनः स्वस्थता को कार्य-व्यवहार में प्रमाणित करना समाधान है।

(7) जागृति पूर्वक परिवार -व्यवस्था में, से, के लिए किया गया कार्य-व्यवहार समाधान है।

(8) जीवन व मानव लक्ष्य के अर्थ में किया गया कार्य व्यवहार व्यवस्था

में भागीदारी समाधान है।

(9) समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार समाधान है।

(10) नियम पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार समाधान है।

(11) नियंत्रण पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार समाधान है।

(12) संतुलन पूर्वक किया गया कार्य व्यवहार समाधान है।

(13) न्याय पूर्वक किया गया कार्य व्यवहार समाधान है।

(14) स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य व वस्तुगत सत्य विधि से जीना समाधान है।

(15) सर्वतोमुखी समाधान को प्रमाणित करना सत्य पूर्ण है सर्वतोमुखी समाधान है।

(16) अस्तित्व में अनुभव मूलक विधि से किया गया कार्य-व्यवहार समाधान है।

(17) वीरता पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार व्यवस्था सहज प्रमाण एवं समाधान है।

(18) धीरता पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार व्यवस्था सहज प्रमाण एवं समाधान है।

(19) उदारता पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार व्यवस्था सहज प्रमाण एवं समाधान है।

12. समाधान

(1) दयापूर्वक

(2) कृपापूर्वक

(3) करुणापूर्वक

(4) नाम स्वीकृति को संबोधन अभ्युदय के अर्थ में सार्थक है।

(5) जाति स्वीकृति (संस्कार) को मानव परिभाषा के अर्थ में सार्थक है।

(6) धर्म स्वीकृति को सर्वतोमुखी समाधान अखण्ड समाज के अर्थ में सार्थक है।

(7) शिक्षा पूर्वक स्वीकृति को, समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व में पारंगत होने के अर्थ में सार्थक है।

(8) व्यवहार-कार्य स्वीकृति को सम्बन्धों की पहचान आवश्यकता सहित, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, परस्परता में तृप्ति समाधान संतुलन के अर्थ में सार्थक है।

9) सर्व-शुभ स्वीकृति को अभ्युदय सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण के अर्थ में सार्थक है।

(10) स्व-शुभ को सर्व-शुभ में भागीदारी रहने के रूप में सार्थक है ।

(11) सच्चरित्र रूप के साथ स्वीकृति को संज्ञानीयता में नियंत्रित संवेदना के रूप में सार्थक है।

(12) संज्ञानीयता सहज स्वीकृति को सहअस्तित्व सहज ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज रूप में सार्थक है।

(13) ज्ञान-विवेक-विज्ञान को सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित करने के रूप में सार्थक है।

(14) बल के साथ स्वीकृति दयापूर्वक जीने देते हुए जीने के रूप में सार्थक है।

(15) धन के साथ उदारता की स्वीकृति तन-मन पूर्वक सदुपयोग के रूप में सार्थक है।

(16) पद के साथ न्याय पूर्वक जीने की स्वीकृति समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व के अर्थ में सार्थक है।

(17) बुद्धि के साथ ज्ञान सम्मत विवेक सहज स्वीकृति को मानवीय व्यवस्था, जीवन लक्ष्य को ज्ञान-विज्ञान-सम्मत विधि से सार्थक होने के रूप में समाधान है।

(18) आज्ञा-पालन-स्वीकृति सहयोग, अनुकरण कार्य के अर्थ में सार्थक है।

(19) अनुशासन स्वीकृति सहयोग अनुसरण पूर्वक जागृति के अर्थ में सार्थक है।

(20) स्वानुशासन स्वीकृति जागृति प्रमाणिकता प्रमाण के अर्थ में समाधान है।

7.4 विनिमय कोष कार्य व्यवस्था

स्वरूप

गाँव में हर तरह का विनिमय ''विनिमय-कोष समिति'' द्वारा संचालित ''ग्राम स्वायत्त विनिमय-कोष'' द्वारा किया जायेगा। विनिमय कोष ग्राम स्वराज्य सभा में से अंगभूत कार्यकलाप होगा। इसका अपना कार्य नीति संविधान सम्मत होगा। यह संस्था लाभ-हानि मुक्त व्यवस्था पर कार्य करेगी। इसका मुख्य उद्देश्य गाँव के प्रत्येक परिवार व्यक्ति द्वारा उत्पादित वस्तुओं का विनिमय करना व उनकी आवश्यकता अनुसार वस्तुओं का विनिमय करना होगा। साथ ही यह कोष ''उत्पादन कार्य सलाह समिति'' व ''शिक्षा-संस्कार समिति'' के साथ मिलकर कार्य करेगी व श्रम मूल्य आधारित नियम के आधार पर विनिमय में ध्यान देगी। विनिमय कोष की कार्य पद्धति निम्न प्रकार से होगी :-

विनिमय कोष नौकरी की मानसिकता को हटाकर उत्पादन की

मानसिकता को लाने के लिए शिक्षा समिति के साथ सहयोग करेगा। वह गाँव में रह रहे सब व्यापारियों को ट्रेडिंग (संग्रह) के स्थान पर उत्पादनीकरण का कार्य के लिए प्रेरणा, प्रशिक्षण देगा। इस तरह लाभ-हानि मुक्त उत्पादन में विनिमय व्यवस्था जो कि श्रम के आदान-प्रदान व आवर्तनशीलता पर होगी, को स्थापित संचालित करने में विनिमय कोष कार्य करेगा।

7.4 (1) कार्य

विनिमय व्यवस्था उत्पादित वस्तु का सुरक्षा पूर्वक विनिमय पद्धति पर आधारित होगी। प्रत्येक व्यक्ति जो स्थानीय सीमावर्ती निवासी है व उत्पादित वस्तुओं का विनिमय करता है और आवश्यकीय वस्तुओं को प्राप्त करता है, वह इस कोष का खातेदार सदस्य होगा। प्रत्येक परिवार का खाता विनिमय कोष में होगा। प्रत्येक परिवार अपनी आवश्यकता से अधिक उत्पादित वस्तुओं को विनिमय कोष को विनिमय के लिए प्रस्तुत करेगा। वस्तु मूल्य श्रम मूल्य के आधार पर तय होगा (निकटस्थ बाजार में जाकर बेचने से जो दाम मिलेंगे उसमें परिवहन मूल्य घटा कर)। जब तक आस-पास स्वराज्य व्यवस्था स्थापित ना हो तब तक निकटस्थ बाजार भाव अघोषित रूप में रहेगा, इस आय-व्यय स्पष्टता का आलेख विनिमय कोष में रहेगा। इस मूल्य को सदस्य के खाते में उसी दिन जमा कर दिया जाएगा। इसी तरह कोष प्रत्येक सदस्य को वस्तुओं का विनिमय करेगा व उनके श्रम मूल्यानुसार, उनके खाते में उतना मूल्य घटा-बढ़ा दिया जायेगा।

कोष इसी तरह बाहर (शहर व अन्य बाजारों) से वस्तुओं को थोक भाव में खरीदेगा व अपने सदस्यों को उपरोक्त पद्धति से विनिमय करेगा। इसी तरह कोष में गाँव के सदस्यों द्वारा विनिमय के लिए प्रस्तुत वस्तुएँ, जो स्थानीय आवश्यकता से बच जायेगी, उन्हें शहर व अन्य बाजारों में

बेचेगा व उनका मूल्य प्राप्त करेगा, और उन-उन के खाते में जमा करेगा। यह कार्य ग्राम स्वराज्य सभा द्वारा संचालित किया जाएगा। कोष में प्रत्येक सदस्य की न्यूनतम वस्तु हमेशा जमा रहेगी ताकि कोष का कार्य सुचारू रूप से चलाया जा सके। जिसकी राशि नहीं होगी उसे कोष, ब्याज रहित ऋण देगा। जिसे वह सदस्य वस्तु का उत्पादन कर कालान्तर में कोष को लौटा देगा।

यह पद्धति हर ग्राम मोहल्ला परिवार सभा में समान रूप से वर्तमान रहेगा।

7.4 (2) दायित्व

जिन सदस्यों ने न्यूनतम से अधिक राशि खाते में रखी है, उनकी सहमति से, विनिमय कार्य के लिए आवश्यकता पड़ने पर, विनिमय कोष, उस राशि का उपयोग करेगा व अन्य राष्ट्रीय कृत बैंक से जो ब्याज मिलता है वह उनको देगा। यह विधि तब तक रहेगी, जब तक बैंक विनिमय-प्रणाली अलग-अलग रहेगी।

गाँव से सभी प्रकार की कर वसूली का दायित्व विनिमय कोष का होगा। कर निर्धारण का कार्य ग्राम सभा करेगी।

उपरोक्त बैंक का गारन्टीदार राष्ट्रीय कृत सहकारी बैंक होगा जो आरंभ से उसे कार्यशील पूंजी व अन्य ऋण देगा, हानि की भरपाई करेगा। विनिमय कोष ही आगे अपने सदस्यों को ऋण देगा वह उत्पादित वस्तुओं के रूप में विनिमय बैंक का ऋण लौटा देगा।

विनिमय कोष शनैः-शनैः सरकारी बैंक से ली गई पूंजी को लौटाता रहेगा। इस तरह सरकारी बैंक के रूपये का ज्यादातर उपयोग होगा।

7.4 (3) विनिमय कोष कार्य समिति

आरंभ में ही मानवीय शिक्षा संस्कार सम्पन्न व्यक्ति विनिमय कोष को चलावेंगे। बाद में स्थानीय व्यक्ति जब व्यवहार- शिक्षा व व्यवसाय- शिक्षा में पारंगत हो जावेंगे तब वह उस बैंक को चलावेंगे।

सौ परिवार समूह के गाँव के लिए कम से कम तीन व्यक्ति विनिमय कोष को चलावेंगे। इसमें से एक व्यक्ति गाँव में उत्पादित वस्तुओं को अन्य बाजार में बेचेगा व अन्य बाजारों से आवश्यकीय वस्तुओं का क्रय कर विनिमय कोष में लाएगा। दूसरा व्यक्ति लेखा-जोखा व खातों की देख-रेख करेगा। तीसरा व्यक्ति सामान का विनिमय करेगा व उनको भंडार में रखने की व्यवस्था करेगा। आवश्यकता पड़ने पर अन्य व्यक्तियों को भी विनिमय कोष कार्य के लिए सभी मनोनीत पूर्वक नियत करेगा।

विनिमय कोष के काम-काज को सुगम बनाने के लिए कम्प्यूटर को प्रयोग में लाया जायेगा। कालान्तर में विनिमय कोष व्यवस्था पूरे राज्य व देश में स्थापित हो जाने पर ग्राम विनिमय कोष क्रम से ग्राम समूह क्षेत्र, मंडल, मण्डल समूह मुख्य राज्य व प्रधान राज्य के विनिमय कोष समितियों के साथ आदान-प्रदान से जुड़ा रहेगा। ''विनिमय कोष'' संविधान के अनुसार कार्य करता रहेगा, जिसकी जिम्मेदारी विनिमय कोष समिति की होगी। जो समय-समय पर खातेदार सदस्यों की सामान्य बैठक बुलाकर, उनके सामने प्रतिवेदन प्रस्तुत करेगा। सामान्य बैठक में बहुमत के आधार पर मार्गदर्शन निर्णय प्राप्त करेगा। सभी समितियों का कार्यकलाप सभा पटल में प्रस्तुत रहेगा।

7.4 (4) मूल्यांकन व्यवस्था

विनिमय कोष समिति के कार्य का मूल्यांकन ग्राम सभा करेगी व समय-समय पर उन्हें मार्ग दर्शन देगी। कृषि उपज और प्रौद्योगिकी उपज में श्रम मूल्य के आधार पर मूल्यांकन संतुलन को स्थापित करने वाली व्यवस्था रहेगी।

7.5 स्वास्थ्य संयम कार्य व्यवस्था समिति

ग्राम स्वास्थ्य समिति : कार्य एवं दायित्व

ग्राम के सभी व्यक्तियों के स्वास्थ्य एवं संयम की जिम्मेदारी ग्राम स्वास्थ्य समिति की होगी। यह समिति शिक्षा संस्कार समिति के साथ मिलकर कार्य करेगी। आवश्यकतानुसार स्वास्थ्य संयम संबंधी पाठ्यक्रम और कार्यक्रम को तैयार कर शिक्षा में सम्मिलित कराएगी। ग्राम में चिकित्सा केन्द्र की व्यवस्था, योगासन, व्यायाम, अखाड़ा, खेल कूद व्यवस्था, स्कूल के अलावा खेल मैदान (स्टेडियम), सांस्कृतिक भवन क्लब आदि व्यवस्था का दायित्व ग्राम स्वास्थ्य समिति का होगा। समिति स्थानीय रूप से उपलब्ध जड़ी-बूटियों द्वारा औषधि बनाने के लिए आवश्यकीय व्यवस्था करेगी। इसके साथ ही पशु चिकित्सा केन्द्र की व्यवस्था का दायित्व भी स्वास्थ्य समिति का होगा। समिति ''समन्वित चिकित्सा'' (आयुर्वेद, एलोपैथी, होम्योपैथी, यूनानी, योग, प्राकृतिक, मानसिक) के उन्नयन की व्यवस्था करेगी।

सब ग्राम वासियों को स्वास्थ्य, व्यवहार, आचरण सम्बन्धी मूल्यों का मूल्यांकन, उपयोगिता व प्रयोजन मूलक पद्धति से समिति व्यवस्था प्रदान करेगी। अलंकार, प्रसाधन कार्य, शरीर स्वच्छता, महिलाओं व बच्चों को रोग-निरोधी उपाय, और सीमित व संतुलित परिवार के रूप में व्यवहृत होने के लिए व्यवस्था प्रदान करेगी। ऐसी जागृति के लिए व्यापक कार्यक्रम को समिति संचालित करेगी। सामान्य रूप में घटित अस्वस्थता को दूर करने के लिए, घरेलू चिकित्सा में प्रत्येक परिवार को अथवा प्रत्येक परिवार में एक व्यक्ति को प्रवीण बनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम

चलाए जाएँगे। घरेलू चिकित्सा से रोग शमन न होने की स्थिति में स्थानीय केन्द्र द्वारा चिकित्सा होगी। वहाँ राहत न मिलने की स्थिति में, निकटवर्ती चिकित्सा केन्द्र में पहुँचाने और चिकित्सा सुलभ कराने की व्यवस्था ग्राम स्वास्थ्य समिति करेगी। चिकित्सा केन्द्र, चिकित्सालय, मातृत्व केन्द्र, प्रसवोत्तर केन्द्र की स्थापना यथा सम्भव ग्राम समूह परिवार सभा द्वारा किये जावेंगे।

शिक्षा का प्रयोजन व्यक्ति में समाधान, परिवार में समृद्धि, समाज में परस्पर विश्वास (अभय) तथा सार्वभौम व्यवस्थो में तालमेल (सह अस्तित्व) स्थापित करने हेतु प्रत्येक मानव को सक्षम बनाना है।

भाग-आठ

ग्राम/मोहल्ला व्यवस्था

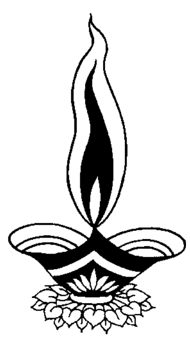

वार्तालाप को मानव लक्ष्य या प्रयोजन के सिल-सिले में नियंत्रित करने पर संवाद कहलाता है । लक्ष्य और प्रयजनों से जुड़ा ना हो, ऐसे वार्तालाप को गप-शप कहते हैं । अतः सार्थकता संवाद का आधार होना गम्यस्थली होना स्पष्ट हो जाता है ।

ग्राम/मोहल्ला व्यवस्था

8.1 स्वरूप व निर्वाचन

ग्राम का प्रत्येक परिवार दस (10) व्यक्तियों के स्वरूप में गण्य होगा । यदि किसी परिवार में उस से कम व्यक्ति हैं तो वह अपने परिवार के निकटस्थ, अन्य परिवारों से मिलकर, एक परिवार सभा का गठन करेंगे । परिवार का प्रत्येक सदस्य युवा व वयस्क सम्मिलित रुप में परिवार सभा का गठन करेंगे। परिवार सभा के सब सदस्य संयुक्त रुप से एक सम्मति से व्यक्ति को समाधान समृद्धि सहित उपयोगिता के आधार पर परिवार समूह सभा के लिए निर्वाचित करेंगे। जो ''सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व ददर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, विवेक-विज्ञान'' ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्न रहेगा और उत्पादन-कार्य में सहायक रहेगा। अखण्ड समाज व्यवस्था सूत्र-व्याख्या में पारंगत रहेगा वस्तु-विद्या में सर्वाधिक पारंगत होंगे ।

इस प्रकार 10 परिवारों से निर्वाचित दस समझदार सदस्य एक 'परिवार समूह सभा' का गठन किया जायेगा। ऐसे प्रत्येक 10 ''परिवार समूह सभा'' में से एक-एक व्यक्ति को, ग्राम-सभा के

लिए निर्वाचित करेगा। इसी प्रकार 10 परिवार समूहों से निर्वाचित 10 सदस्य एक ग्राम -सभा का गठन करेंगे, जिसमें सभी दस सदस्यों का समानाधिकार रहेगा। यह सभा में समझदार परिवार का संयुक्त वैभव रुप में रहेगा। सामान्यतः सौ परिवार मिलकर एक ''ग्राम स्वराज्य सभा'' गठन करेंगे। जिसमें 10 निर्वाचित सदस्य होंगे। यदि किसी ग्राम में 100 (एक सौ) परिवार से ज्यादा जनसंख्या है तो उसी 10 के गुणांक में उस ग्राम सभा के सदस्य होंगे।

उदाहरण के लिए यदि गाँव की जनसंख्या 2000 (दो हजार) है तो उस ''ग्राम सभा'' में 20 सदस्य होंगे।

8.2 ग्राम सभा से विश्व राज्य सभा का निर्वाचन :-

कालांतर में उपर्युक्त व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक ग्राम सभा के निर्वाचित सदस्य अपने दस सदस्यों में से एक सदस्य को, ''ग्राम समूह सभा'' में , ग्राम समूह सभा के दस सदस्य में से एक को ''क्षेत्र सभा के लिए'' क्षेत्र सभा के दस सदस्यों में से एक सदस्य ''मंडल सभा के लिए'' , मंडल सभा के 10 सदस्यों में से एक सदस्य को ''मण्डल समूह सभा के लिए'', मण्डल समूह सभा के दस सदस्यों में से एक सदस्य को ''मुख्य राज्यसभा के लिए'', मुख्य राज्य सभा के दस सदस्यों में से एक सदस्य को ''प्रधान राज्य सभा के लिए'' व प्रधान राज्य सभा के दस सदस्यों में से एक सदस्य को ''विश्व राज्य सभा'' के लिए निर्वाचित करेंगे। इस प्रकार प्रत्येक स्तर में प्रत्येक व्यक्ति सिर्फ 10 व्यक्तियों का मूल्यांकन कर अगली सभा के लिए सदस्य निर्वाचित करेंगे।

8.3 निर्वाचित सदस्यों की अर्हता :-

परिवार से लेकर ग्राम-सभा तक प्रत्येक निर्वाचित सदस्य की

अर्हता निम्न होगी :-

1. उसकी आयु कम से कम 18 वर्ष होगी।
2. वह ज्ञान-विवेक-विज्ञान में पारंगत व समाधान, समृद्धि पूर्वक जीता हुआ समझदार परिवार में, से, के लिए होगा। वह जीवन ज्ञान से परिपूर्ण होगा अर्थात् स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा एवं व्यक्तित्व में संतुलन सम्पन्न और व्यवसाय में स्वावलंबी व व्यवहार में सामाजिक होगा।
3. मानवीय आचरण संबंधों का पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति, स्वधन, स्वनारी/स्व पुरुष, दया पूर्ण कार्य-व्यवहार विन्यास तन मन धन रुपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा के रूप में वर्तमान में प्रकाशित प्रमाणित होगा।

8.4 कार्यक्षेत्र :-

1. ग्राम सभा का कार्य कम से कम 100 परिवारों के साथ होगा। उसका भू-क्षेत्र ग्राम सीमा तक होगा। ग्राम सीमावर्ती क्षेत्र की समस्त भूमि, वन, वन संपदा, खनिज, जल स्त्रोत व अन्य संपदाएँ ग्राम सभा के अधिकार क्षेत्र में होंगी।
2. ग्राम सभा सामान्यत: ग्राम के सभी परिवारों का प्रतिनिधित्व करेंगी। क्योंकि ग्राम प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन सहज फलन में ही हर परिवार अपने में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना आवश्यक रहेगा।

8.5 कार्यकाल :-

ग्राम सभा कम से कम चार वर्ष के लिए निर्वाचित होगी। हर चार वर्ष बाद परिवार व ''परिवार समूह सभा'' के लिए अपने-अपने

प्रतिनिधि को फिर से निर्वाचित करने का अधिकार होगा। हर ''परिवार समूह सभा'' के दस सदस्यों को ग्राम सभा में फिर से निर्वाचनपूर्वक चुनने का अधिकार होगा।

8.6 कार्यशैली :-

प्रत्येक ग्राम सभा, ''ग्राम स्वराज्य व्यवस्था'' को स्थापित करने के लिए निम्न 5 समितियों का गठन ग्राम सभा से मनोनीत सदस्य करेंगे :-

1. मानवीय शिक्षा संस्कार समिति
2. उत्पादन कार्य व सलाहकार समिति
3. वस्तु विनिमय कोष समिति
4. स्वास्थ्य संयम समिति
5. मानवीय न्याय सुरक्षा समिति

उपर्युक्त समितियां ग्राम सभा के मार्ग दर्शन के आधार पर कार्य करेंगी। उपरोक्त समितियां क्रम से ग्राम में शिक्षा संस्कार व्यवस्था, उत्पादन कार्य व्यवस्था, विनिमय कोष व्यवस्था, स्वास्थ्य संयम व्यवस्था व न्याय सुरक्षा व्यवस्था को सर्व सुलभ करेगी। उपरोक्त समिति के सदस्यों का मनोनयन ग्राम सभा करेगी। प्रत्येक मनोनीत सदस्य इन समितियों के लिए अंश-कालिक सदस्य होगा एवं वह अपनी समिति का कर्तव्य एवं दायित्वों का निर्वाह अपने निजी व्यवसाय के अलावा करेगा। वयोवृद्ध स्त्री व पुरुष, जो जीवन-विद्या व वस्तु-विद्या में पारंगत होंगे, उनको समितियों के अंश कालिक व पूर्ण कालिक सदस्य होने का अवसर रहेगा। प्रत्येक समिति का विस्तृत कार्यक्रम अगले खंडों में विस्तार से दिया गया है। ग्राम स्वराज्य व्यवस्था के लक्ष्य निम्न होंगे :-

1. गाँव के प्रत्येक नर-नारी को मानवीय शिक्षा-संस्कार से संपन्न करना।
2. प्रत्येक नर-नारी को तकनीकी में निपुणता-कुशलता को सजह सुलभ करना।
3. प्रत्येक नर-नारी को व्यवहार में सामाजिक होने के लिए ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज शिक्षा संस्कार सर्व सुलभ करना जिससे न्याय सुरक्षा प्रमाणित हो।
4. प्रत्येक नर-नारी को किसी न किसी उत्पादन कार्य में प्रवृत्त प्रोत्साहित करना।
5. उत्पादित वस्तुओं को विनिमय-कोष द्वारा लाभ-हानि मुक्त पद्धति से लेन-देन करने की व्यवस्था प्रदान करना और ग्राम वासियों के लिए आवश्यकीय वस्तुओं को उपलब्ध कराना विनिमय कोष कर्त्तव्य रहेगा।
6. प्रत्येक नर-नारी को न्याय व सुरक्षा सहज सुलभ कराना। साथ ही सुधारवादी-प्रक्रिया से गलती व अपराध प्रवृत्तियों का निराकरण करना।
7. प्रत्येक नर-नारी को अपने स्वास्थ्य के प्रति आश्वस्त रहने का अवधारणापूर्वक संकल्प बद्ध करना, व्यायाम व खेलों के लिए प्रोत्साहित करना, संक्रामक रोग-निरोधी उपायों की उपयोगिता से अवगत कराना। साथ ही हर परिवार में सहज व उपकारी चिकित्सा की व्यवस्था करना।
8. प्रत्येक नर-नारी में स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, ग्राम जीवन, परिवार-व्यवस्था के प्रति विश्वास व निष्ठा उत्पन्न करना। प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन रहने में निष्ठा स्थापित करना।

9. प्रत्येक नर-नारी/परिवार अपनी आवश्कता से अधिक उत्पादन करे, ऐसा सुनिश्चित उपाय करना।
10. ग्राम के लिए सामान्य सुविधाओं की व्यवस्था करना।
11. व्यक्तित्व व प्रतिभा का संतुलित उदय हो, ऐसा सुनिश्चित उपाय करना। इसके लिए समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी पूर्वक जीने में निष्ठा सम्पन्न करना।
12. प्रत्येक परिवार में भौतिक समृद्धि व बौद्धिक समाधान साक्षित होने का उपाय करना, समस्त ग्राम वासियों की परस्परता में अभयता व सह-अस्तित्व चरितार्थ होने का सभी उपाय करना।

8.7 ग्राम मोहल्ला परिवार सभा सदस्यों का कर्तव्य व दायित्व

1. समझदारी से समाधान एवं श्रम से समृद्धि सिद्धांत पर ग्राम सभा कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करेगा।
2. ग्राम सभा पूर्ण रूप से ग्रामवासियों के प्रति उत्तरदायी होगी। साथ ही वह ''ग्राम समूह सभा'' के प्रेरणा व उनके द्वारा दिए गए सुझावों पर निर्णय लेगी।
3. सर्वेक्षण, आंकलन व अध्ययन के आधार पर चिन्हित प्रयोजनार्थ प्रत्येक परिवार के लिए समयबद्ध स्वराज्य व्यवस्था सहज कार्य योजना बनाएगी व क्रियान्वयन के लिए विभिन्न समितियों को आवश्यक निर्देश देगी।
4. ग्राम की पाँचों समितियों के साथ उनके अपने-अपने लक्ष्य प्राप्त करने में पूर्ण सहयोग देगी व उनके लिए जो भी सुविधायें, तकनीकी ज्ञान, विज्ञान आदि की आवश्यकता होगी उसे उपलब्ध कराएगी।

5. ''विनिमय कोष'' आवश्यकता के आधार पर राष्ट्रीयकृत बैंक के बीच संयोजन (एजेंसी) का कार्य करेगी।

6. पाँचों समितियों के कार्यों का समय-समय पर मूल्यांकन करेगी व उन्हें आवश्यक निर्देश देगी।

7. सर्वेक्षण, आंकलन, अध्ययन व प्राथमिकताओं के आधार पर ग्राम में सामान्य सुविधाओं की व्यवस्था करेगी। इस दिशा में यदि किसी समिति व अन्य संस्थाओं के सहयोग की आवश्यकता हुई तो उसे प्राप्त करेगी।

8. निम्न सामान्य सुविधाओं की व्यवस्था ग्राम सभा द्वारा की जायेगी-

    1. प्रत्येक परिवार के लिए आवास का प्रावधान। इसके लिए स्थानीय व्यक्तियों व वस्तुओं का अधिक से अधिक उपयोग किया जावेगा।

    2. सस्ती शोधन विधि द्वारा शुद्ध व पवित्र पीने के पानी की व्यवस्था।

    3. जल-मल निकास की व्यवस्था करना एवं कृषि-बगीचा के लिए उपयोग करना।

    4. कृषि के साथ पशुपालन आवश्यक होने के कारण ''गोबर-गैस प्लांट'' द्वारा, गोबर-गैस गाँव में सामूहिक या व्यक्ति-परिवारगत रूप से उपलब्ध कराना। प्राकृतिक गैस उपलब्ध होने की स्थिति में उसका सर्वाधिक उपयोग करने की प्रणाली को विकसित करना।

    5. गोबर खाद का कंपोस्ट खाद के लिए व्यापक

व्यवस्था करना।

    6. सौर-ऊर्जा का सर्वाधिक प्रयोग करने की प्रणाली विकसित करना ताकि उसका उपयोग पानी पंप करने, खाना पकाने, वाष्पीकरण, अनाज सुखाने, ठंडा या गर्म करने में किया जा सके, जिससे लकड़ी, कोयला आदि परंपरागत ईंधनों को जलाने से रोका जा सके। इसी संदर्भ में पवन चक्की व जल प्रवाह शक्ति की उपयोगिता की संभावना का पता लगाना व क्रियान्वयन करना, बॉयोडीजल स्थानीय स्त्रोतों से सम्पन्न करना, विविध विधि से ऊर्जा संतुलन होना।

    7. प्रत्येक घर के साथ शौचालय व सामूहिक शौचालय की व्यवस्था करना। शौचालय से बहते पानी को कृषि उद्यान में उपयोग करना।

    8. सड़क मार्ग, रेल यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना व निकट की मंडियों व बाजारों को सड़कों से जोड़ना।

    9. दूरभाष व दूर संचार सेवा, डाक घर, बैंक, चिकित्सा आदि की व्यवस्था करना।

    10. ग्राम के लिए पाठशाला, चिकित्सा केन्द्र विनिमय-कोष के लिए भवन, गोदाम, बहुद्देशीय भवन की व्यवस्था करना जो न्याय सभा, संबोधन सभा, सांस्कृतिक सभा, विवाह व मिलन सभा, प्रार्थना सभा, स्वागत सभा व छाया के अंदर खेलने के लिए उपयोगी रहेगा।

8.8 समझदार परिवार समूह सभा व परिवार सदस्य के कर्त्तव्य व

दायित्व :-

1. परिवार सदस्य, सदस्यों के साथ व्यवहार, आचरण, स्वास्थ्य, उत्पादन व उत्पादन संबंधी साधनों के संदर्भ में स्वयं प्रामाणिक रहते हुए, उनके अनुरूप सभी सदस्यों को होने के लिए प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे।

2. परिवार प्रधान, परिवार के सभी सदस्यों का मूल्यांकन करेंगे। परिवार प्रधान का मूल्यांकन, परिवार समूह सभा करेगा। आचरण के लिए मूल्यांकन का आधार स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष व दया पूर्ण कार्य रहेगा।

   व्यवहार के मूल्यांकन का आधार मानव व नैसर्गिक संबंधों व उनमें निहित मूल्यों की पहचान व निर्वाह से है।

3. परिवार में किसी से गलती होने की स्थिति में सुधारने का कर्त्तव्य परिवार के सभी सदस्यों का होगा। इसमें परिवार प्रधान उभय पक्षीय प्रेरक का कार्य करेगा। उभय पक्ष का तात्पर्य परिवार सदस्य व परिवार समूह सदस्य।

4. परिवार संबंधी समस्त जानकारी, जिसके आधार पर परिवार के सदस्यों को शिक्षा-संस्कार, उत्पादन कार्य आदि में प्रवृत्त व सभी तथ्यों को एकत्रित कर परिवार समूह सभा व ग्राम सभा को उपलब्ध कराने का कर्त्तव्य परिवार प्रधान का होगा। परिवार में यदि कोई व्यक्ति, किसी विशेष योग्यता, हस्तकला, हस्त-शिल्प, कृषि व अन्य तकनीकी या साहित्य-कला में माहिर है, तो यह जानकारी भी ग्राम की संबंधित समिति को उपलब्ध कराएगा।

5. परस्पर परिवारों के विवादों व उत्पन्न कठिनाइयों के निवारण का दायित्व उन परिवार के प्रधानों व परिवार समूह सभा का होगा। परिवार समूह सभा द्वारा विवाद हल न होने की स्थिति में ही विवाद ''न्याय सुरक्षा समिति'' के पास प्रस्तुत होगा।

8.9 ग्राम परिवार सभा की समितियाँ:-

8.9 (1) ग्राम में शिक्षा संस्कार समिति

ग्राम शिक्षा संस्कार व्यवस्था का संचालन ''शिक्षा संस्कार समिति'' करेगी। शिक्षा संस्कार समिति में कम से कम एक व्यक्ति होगा या आवश्यकतानुसार अधिक हो सकते हैं जिसका निश्चयन ग्राम सभा करेगी।

शिक्षा संस्कार समिति के सदस्य की अर्हता :-

शिक्षा संस्कार समिति के सदस्यों की अर्हताएँ निम्न प्रकार होंगी :-

1. प्रत्येक सदस्य जीवन-विद्या एवं वस्तु-विद्या ज्ञान-विवेक-विज्ञान में पारंगत रहेगा।
2. वह व्यवहार में सामाजिक व व्यवसाय में स्वावलम्बी होगा।
3. उसमें स्वयं में विश्वास व श्रेष्ठता के प्रति सम्मान करने का प्रमाण रहेगा।
4. प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलित होने का प्रमाण रहेगा।

शिक्षा संस्कार व्यवस्था के मूल उद्देश्य:-

प्रत्येक मानव को -

1. व्यवहार में सामाजिक
2. व्यवसाय में स्वावलंबी
3. स्वयं के प्रति विश्वासी
4. श्रेष्ठता के प्रति सम्मान करने में पारंगत, जिससे व्यक्तित्व व

प्रतिभा का संतुलन प्रमाणित हो।

शिक्षा संस्कार व्यवस्था का स्वरूप :-

1. प्रत्येक मानव को व्यवहार शिक्षा में पारंगत बनाना।
2. प्रत्येक को व्यवसाय शिक्षा में पारंगत कर एक से अधिक व्यवसायों में स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर निपुण व कुशल बनाना।
3. प्रत्येक को साक्षर, समझदार बनाना।
4. ग्राम-सभा पाठशाला की व्यवस्था स्थानीय आवश्यकतानुसार करेगी।
5. आयु वर्ग के आधार पर शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था होगी।

शिक्षा की व्यवस्था ग्रामवासियों के लिए निम्नानुसार की जावेगी-

1. बाल शिक्षा।
2. बालक जो स्कूल छोड़ दिए हैं व दस वर्ष से अधिक आयु के हैं, ऐसे बच्चों को 30 वर्ष तक के अन्य अशिक्षित व्यक्तियों के साथ व्यवहार शिक्षा व व्यवसाय शिक्षा में पारंगत बनाने की व्यवस्था रहेगी।
3. 30 वर्ष की आयु से अधिक स्त्री पुरुषों को साक्षर-समझदार बनाकर व्यवहार शिक्षा में पारंगत बनाने की व्यवस्था होगी।
4. स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर आवश्यकता होने पर स्त्री पुरुषों के लिए अलग शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था होगी।
5. अनावश्यक, अव्यवहारिक, असामाजिक आदतों को छुड़ाने के लिए अलग से शिक्षा व्यवस्था होगी जो कि ''स्वास्थ्य संयम समिति'' के साथ मिलकर कार्य करेगी।
6. व्यवसाय शिक्षा के लिए ''शिक्षा संस्कार समिति'' ''उत्पादन सलाहकार समिति'' एवं ''वस्तु विनिमय कोष समिति'' के साथ मिलकर कार्य करेगी व सम्मिलित रूप से यह तय करेगी कि ग्राम की वर्तमान व भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर, किस-किस व्यक्ति को, किस-किस उत्पादन की शिक्षा दी जाए। ''विनिमय कोष समिति'' ऐसे उपायों की जानकारी देगी, जिनकी गाँव के बाहर अच्छी माँग है व जिसे वह अच्छी कीमत पर विनिमय कर सकती है।
7. कृषि, पशुपालन, ग्राम शिल्प, कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग व सेवा में जो पहले से पारंगत हैं , उनके द्वारा ही अन्य ग्रामवासियों को पारंगत करने की व्यवस्था की जायेगी।
8. यदि उपर्युक्त शिक्षा में कभी उन्नत तकनीकी विज्ञान व प्रौद्योगिकी को समावेश करने की आवश्यकता होगी तो उसको समाविष्ट करने की व्यवस्था रहेगी।
9. व्यवहार शिक्षा के लिए ''शिक्षा संस्कार समिति'' ''स्वास्थ्य संयम समिति'' के साथ मिलकर कार्य करेगी।
10. मानवीयता पूर्ण व्यवहार (आचरण) व जीने की कला सिखाना व अर्थ की सुरक्षा तथा सदुपयोगिता के प्रति जागृति उत्पन्न करना ही, व्यवहार शिक्षा का मुख्य कार्य है।

रुचि मूलक आवश्यकताओं पर आधारित, उत्पादन के स्थान पर मूल्य व लक्ष्य-मूलक अर्थात उपयोगिता व प्रयोजनीयता मूलक

उत्पादन करने की शिक्षा प्रदान करना। जिससे प्रत्येक नर-नारी में आवश्यकता से अधिक उत्पादन समृद्धि (असंग्रह), अभयता (वर्तमान में विश्वास), सरलता, दया, स्नेह, स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, बौद्धिक समाधान, प्राकृतिक संपत्ति का उसके उत्पादन के अनुपात में सदुपयोग व उसके उत्पादन में सहायक सिद्ध हो ऐसी मानसिकता का विकास करना, व्यवहार शिक्षा में समाविष्ट होगा। इसके लिए शिक्षा के निम्न अवयवों का अध्ययन आवश्यक होगा :-

1. अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन-जागृति व रासायनिक-भौतिक रचना-विरचना के प्रति निर्भ्रम होना (जानना एवं मानना) रहेगा।
2. मानव, मानव जीवन का स्वरूप, मानव अपने ''त्व'' सहित (मानवत्व सहित) व्यवस्था है, मानव संचेतना, अक्षय बल व अक्षय शक्ति की पहचान, अमानवीय चेतना से मानवीय चेतना में परिवर्तन व अतिमानवीय दृष्टियों स्वभाव व विषयों का स्पष्टता व ज्ञान सुलभ करना रहेगा।
3. मानवीय स्वभाव गति, आवेशित गति की पहचान।
4. मानव व नैसर्गिक संबंधों की पहचान, संबंधों के निर्वाह में निहित मूल्यों की पहचान व बोध कराने की शिक्षा। ''संबंधों के निर्वाह से ही विकास होता है'' इसकी शिक्षा सर्वसुलभ करना।
5. मूल्य, चरित्र व नैतिकता अविभाज्य वर्तमान है वह क्रम से अनुभव बल, विचार शैली व जीने की कला की अभिव्यक्ति है। इसकी पहचान होना सर्व सुलभ होना रहेगा।
6. रुचि मूलक प्रवृत्तियों के स्थान पर मूल्य मूलक, लक्ष्य मूलक

कार्य-व्यवहार, विश्लेषण का स्पष्टीकरण सुलभ रहेगा।

7. आवर्तनशील अर्थ चिंतन व व्यवस्था की शिक्षा रहेगा।
8. उपयोगिता पूरकता, उदात्तीकरण सिद्धांत सर्वविदित होने का व्यवस्था रहेगा।
9. न्याय पूर्ण व्यवहार (कर्त्तव्य व दायित्व) सर्व विदित रहेगा।
10. नियम पूर्ण व्यवसाय सहज कर्माभ्यास परंपरा रहेगा।
11. सामान्य आकाँक्षा व महत्वाकाँक्षा संबंधी उत्पादन कार्य में हर नर-नारी पारंगत होने का व्यवस्था रहेगा।
12. संतुलित आहार पद्धति में प्रत्येक को जागृत करने की शिक्षा।
13. योगासन व व्यायाम सिखाने की शिक्षा एवं व्यवस्था।
14. शरीर, घर, आसपास का वातावरण, मोहल्ला व ग्राम में स्वच्छता की आवश्यकता व उसको बनाए रखने का कार्यक्रम।
15. शैशव अवस्था में रोग-निरोधी विधियों से हर परिवार में आवश्यक जानकारी और इसमें निष्ठा बनाए रखने की व्यवस्था।
16. सीमित व संतुलित परिवार के प्रति प्रत्येक व्यक्ति में विश्वास और निष्ठा को व्यवहार रूप देने का कार्यक्रम।
17. स्थानीय रूप से उपजने वाली जड़ी-बूटियों की पहचान और औषधि के रूप में प्रयोग करने में पारंगत बनाने की शिक्षा।

कालांतर में ''ग्राम शिक्षा संस्कार समिति'' क्रम से ग्राम समूह सभा, क्षेत्र सभा, मंडल सभा, मंडल समूह सभा, मुख्य राज्य सभा,

प्रधान राज्य सभा व विश्व राज्य सभा की ''शिक्षा संस्कार समिति'' से जुड़ी रहेगी। अत: विश्व में कहीं भी स्थित कोई जानकारी ''ग्राम-शिक्षा संस्कार समिति'' को उपरोक्त सात स्रोतों से तुरंत उपलब्ध हो सकेगी। पूरी जानकारी का आदान-प्रदान कम्प्यूटर व्यवस्था द्वारा आपस में जुड़ा रहेगा। इसी प्रकार अन्य चारों समितियाँ भी ऊपर तक आपस में जुड़ी रहेगी।

8.9 (2) उत्पादन कार्य समिति

ग्राम में हर तरह का उत्पादन व सेवा कार्य ''ग्राम उत्पादन सेवा कार्य सलाह समिति'' द्वारा संचालित किया जायेगा। यह समिति अन्य समितियों के साथ मिलकर कार्य करेगी। वह समिति गांव के प्रत्येक स्वस्थ स्त्री पुरुष को, किसी न किसी उत्पादन कार्य में लगावेगी। स्थानीय सर्वेक्षण के आधार पर जिसका विस्तृत विवरण सर्वेक्षण प्रक्रिया के अंतर्गत दिया जा चुका है, उत्पादन समिति प्रत्येक व्यक्ति को उसकी वर्तमान अर्हता के आधार पर कोई उत्पादन कार्य करने की सलाह देगी व उनके लिए उस व्यक्ति को आवश्यक प्रशिक्षण व अन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराएगी। जो भी उत्पादन कार्य होगा वह मानव की सामान्य आकाँक्षा (आवास, आहार, अलंकार) व महत्वाकाँक्षा (दूरगमन, दूरदर्शन, दूरश्रवण) संबंधी आवश्यकताओं पर आधारित होगा।

''उत्पादन कार्य सलाह समिति'' ग्राम सभा के सहयोग से गाँव की सामान्य सुविधाओं को स्थापित करने में सहयोग देगी व आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराएगी। पर्यावरण सुरक्षा व पर्यावरण के साथ संतुलन एक सूत्रता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी। प्रदूषण से मुक्त उत्पादन कार्य प्रणाली को अपनाया जायेगा।

8.9 (3) न्याय सुरक्षा समिति

ग्राम न्याय सुरक्षा समिति :- ग्राम सभा के द्वारा मनोनीत की जायेगी। यह समिति गाँव की सम्पूर्ण व्यवहार कार्य सम्बन्धी विवादों को हल करने के लिए स्वतंत्र होगी व बाह्य हस्तक्षेप से मुक्त रहेगी। न्याय प्रक्रिया का स्वरूप सुधार-प्रणाली पर आधारित रहेगा ताकि ग्राम-न्यायालय में सम्पूर्ण प्रक्रिया मानवीय संचेतनावादी व्यवहार पद्धति पर आधारित होगी। चूंकि प्रत्येक मानव को, मानवीयता पूर्ण पद्धति व प्रणाली व नीति पूर्वक जीने का अधिकार समान है। इसके अनुसार गाँव में मानवीयता पूर्ण आचरण पद्धति, मानवीयता पूर्ण व्यवहार प्रणाली व अर्थ (तन, मन, धन) की सुरक्षात्मक व सदुपयोगात्मक नीति रहेगी। जो भी व्यक्ति इस व्यवस्था की निरंतरता बनाए रखने में असमर्थ रहेगा, वह सुधरने के लिए प्रवृत्त होगा। मानव अज्ञान, अत्याशा और अभाव वश ही गलती, अपराध तथा भय-प्रलोभनवश तन, मन, धन रूपी अर्थ का अपव्यय करता है। यह व्यवहार मानवीयता और सामाजिकता व व्यवस्था सहज गति के लिए सहायक नहीं है। न्याय सुरक्षा समिति, न्याय सुलभता और सुरक्षा कार्य में निष्ठान्वित तथा प्रतिज्ञाबद्ध रहेगी।

न्याय सुरक्षा समिति मानवीय आचार संहिता के अनुसार न्याय प्रदान करेगी। मानवीय आचार संहिता के अनुसार न्याय व्यवस्था के चार प्रधान आयाम है :- (1) आचरण में न्याय (2) व्यवहार में न्याय (3) उत्पादन में न्याय (4) विनिमय में न्याय।

1. आचरण में न्याय :-

स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष और दया पूर्ण कार्य का वर्तमान और उसका मूल्यांकन आचरण में न्याय का स्वरूप है। स्वधन का

तात्पर्य श्रम नियोजन का प्रति फल, कला तकनीकी, विद्वत्ता विशेष प्रदर्शन, प्रकाशन किए जाने के फलस्वरूप प्राप्त पुरस्कार और उत्सवों के आधार पर किया गया आदान-प्रदान के रूप में प्राप्त पारितोष रूप में प्राप्त धन या वस्तुएँ से हैं।

स्वनारी, स्वपुरूष :-

विवाह पूर्वक स्थापित दाम्पत्य संबंध जिसका पंजीयन ग्राम मोहल्ला सभा में होगा।

दया पूर्ण कार्य :-

1. मानव चेतना पूर्वक मूल्यों की पहचान और उसका निर्वाह।
2. सम्बन्धों की पहचान और निर्वाह क्रम में तन, मन, धन रूपी अर्थ का अर्पण समर्पण।
3. निःसहाय, कष्ट ग्रस्त, रोग ग्रस्त और प्राकृतिक प्रकोपों से प्रताड़ित व्यक्तियों को सहायता प्रदान करना।
4. प्राकृतिक, सामाजिक और बौद्धिक नियमों का पालन आचरण पूर्वक प्रमाणित करते हुए मानवीय परंपरा के लिए प्रेरक होना।
5. जो जैसा जी रहा है, कार्य कर रहा है उसका मूल्यांकन करना। जहाँ-जहाँ सहायता की आवश्यकता है वहाँ सहायता प्रदान करना।
6. पात्रता हो उसके अनुरूप वस्तु न हो, उसके लिए वस्तु को उपलब्ध कराना ही दया है।

2. व्यवहार में न्याय (मानवीय व्यवहार) :-

मानवीय व्यवहार मानव तथा नैसर्गिक सम्बन्धों व उनमें निहित मूल्यों की पहचान और उसका निर्वाह करना है। मानव परंपरा में

मानव सम्बन्ध प्रधानतः सात प्रकार से गण्य है :-

1. माता - पिता
2. पुत्र - पुत्री
3. गुरू - शिष्य
4. भाई - बहिन
5. मित्र - मित्र
6. पति - पत्नी
7. स्वामी - सेवक (साथी-सहयोगी)

उपरोक्त सम्बन्धों में निहित मूल्य निम्न है :-

	स्थापित मूल्य	शिष्ट मूल्य
1.	विश्वास	सौजन्यता
2.	स्नेह	निष्ठा
3.	कृतज्ञता	सौम्यता
4.	गौरव	सरलता
5.	ममता	उदारता
6.	वात्सल्य	सहजता
7.	सम्मान	सौहार्द्रता (स्पष्टता)
8.	श्रद्धा	पूज्यता
9.	प्रेम	अनन्यता

मानव सम्बन्धों में साम्य मूल्य विश्वास तथा पूर्ण मूल्य प्रेम है। बिना विश्वास के कोई भी सम्बन्ध का निर्वाह संभव नहीं है। सम्बन्धों में विश्वास का निर्वाह न कर पाना ही अन्याय है, जिसका

सुधार भावी है।

मानव के नैसर्गिक सम्बन्ध तीन प्रकार से गण्य है :-

1. पदार्थावस्था के साथ सम्बन्ध
2. प्राणावस्था (अन्न , वनस्पति) के साथ सम्बन्ध
3. जीवावस्था (पशु पक्षी आदि मानवेतर जीवों) के साथ सम्बन्ध

उपरोक्त संबंधों में उपयोगिता मूल्य दो प्रकार से गण्य है :-

1. परस्पर पूरकता, उदात्तीकरण के रूप में रचना-विरचना क्रम में उपयोगिता व कला मूल्य।
2. परमाणु में विकास क्रम में उपयोगिता पूरकता सहज प्रमाण ।

उपयोगिता का स्वरूप निम्न है :-

1. प्राकृतिक सम्पदा (खनिज, वनस्पति तथा पशु-पक्षी) का उनके संतुलन सहज अनुपात में उपयोग।
2. प्राकृतिक सम्पदा में अवरोध न डालना।
3. प्राकृतिक सम्पदा समृद्ध होने-रहने में सहायक बनना।

(नैसर्गिक पवित्रता संतुलन को समृद्ध बनाए रखे बिना मानव स्वयं समृद्ध नहीं हो सकता।)

3. उत्पादन में न्याय :-

1. प्रत्येक व्यक्ति परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना ।
2. प्रत्येक व्यक्ति में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने योग्य कुशलता व निपुणता पाण्डित्य को प्रमाणित करना, जिसका दायित्व शिक्षा संस्कार समिति को होगा।
3. उत्पादन के लिए व्यक्ति में निहित क्षमता योग्यता के अनुरूप उसे प्रवृत्त करना जिसका दायित्व ''उत्पादन कार्य सलाह समिति'' का होगा।
4. उत्पादन के लिए आवश्यकीय साधनों को सुलभ करना इसका दायित्व ''विनिमय कोष समिति'' का होगा।
5. उत्पादन कार्य सामान्य आकाँक्षा (आहार, आवास, अलंकार) महत्वाकाँक्षा (दूर दर्शन, दूर गमन, दूर श्रवण) सम्बन्धी वस्तुओं के रूप में प्रमाणित होना।
6. ''उत्पादन कार्य सलाह समिति'' व ''विनिमय कोष समिति'' संयुक्त रूप में सम्पूर्ण ग्राम की उत्पादन सम्बन्धी तादाद, गुणवत्ता व श्रम मूल्यों का निर्धारण करेगी।

विनिमय में न्याय :-

1. उत्पादित वस्तु के विनिमय कार्य सुलभ करना।
2. विनिमय प्रक्रिया प्रथम चरण में, श्रम मूल्य को वर्तमान में प्रचलित प्रतीक मुद्रा के आधार पर मूल्यांकित करने की व्यवस्था रहेगी। जैसे स्थानीय उत्पादन को, जहाँ उसको बेचना है, उस मंडी की दरों पर आधारित उसका क्रय मूल्य निर्धारित होगा। ग्राम की आवश्यकता के लिए अन्य बाजारों से, वस्तुओं का विक्रय मूल्य, उन बाजारों के क्रय मूल्य पर आधारित होगा।
3. द्वितीय चरण में श्रम के आधार पर प्रतीक मुद्रा को मूल्यांकन करने की व्यवस्था होगी व उसी के आधार पर क्रय विक्रय कार्य सम्पन्न होगा।

4. तृतीय चरण में श्रम मूल्य के आधार पर वस्तु मूल्य का मूल्यांकन होगा जिसका आधार उपयोगिता व कला मूल्य ही रहेगा व इसी के अनुसार लाभ-हानि-संग्रह मुक्त पद्धति से विनिमय प्रक्रिया संपन्न होगी। अर्थात् विनिमय प्रक्रिया श्रम मूल्य के आदान प्रदान के रूप में सम्पन्न होगी।

''न्याय सुरक्षा समिति'' सुरक्षा कार्य को ग्राम वासियों के तन, मन, धन रूपी अर्थ के सदुपयोग सुरक्षा के आधार पर क्रियान्वयन करेगा। जैसे :-

1. ग्राम में न्याय सुरक्षा
2. उत्पादन एवं विनिमय सुरक्षा
3. परिवार सुरक्षा
4. मानवीय शिक्षा - संस्कार सुरक्षा
5. स्वास्थ्य संयम सुरक्षा
6. नैसर्गिक सुरक्षा
7. संगीत, साहित्य, कला संस्कृति सभ्यता की सुरक्षा

''न्याय सुरक्षा समिति'' ग्राम की सभी प्रकार की सुरक्षाओं के प्रति जागरूक रहेगी।

ग्राम सुरक्षा :-

ग्राम सीमा में निहित भूमि का क्षेत्रफल और उस भू-भाग में निहित वन, खनिज, कृषि योग्य भूमि, बंजर भूमि, जल, जल- स्रोत, जल संरक्षण, भूमि संरक्षण, सामान्य सुविधा कार्य को सदुपयोग के आधार पर सुरक्षित करना ग्राम सुरक्षा का तात्पर्य है।

ग्राम से संबंधित वन क्षेत्र और उपयोगी भूमि और स्वामित्व की भूमि ग्राम सभा के अधिकार व कार्य क्षेत्र में रहेगी। यदि कोई वन

क्षेत्र व भू-खण्ड किसी गाँव से सम्बद्ध न हो ऐसी स्थिति में उसको किसी न किसी गाँव से सम्बद्ध करने की व्यवस्था रहेगी। ऐसे ग्राम क्षेत्र की सुरक्षा का दायित्व भी ''न्याय सुरक्षा समिति'' का होगा।

उत्पादन और विनिमय सुरक्षा :-

1. उत्पादन सुरक्षा :- गाँव में जितने भी प्रकार के उत्पादन सम्बन्धी मौलिकताएँ प्रमाणित होंगी उन सबके सुरक्षा का दायित्व न्याय सुरक्षा समिति, विनिमय कोष समिति का होगा। जैसे किसी उत्पादन कार्य में विशेष प्रकार की मौलिकता अथवा मौलिक प्रणाली अथवा मौलिक औजार, मौलिक विधि जो परंपरा में नहीं रही है, ऐसी स्थिति में उन सबको सुरक्षित किया जाएगा। इन सबसे सम्बन्धित मूल वांङ्मय, डिजाइन, चित्रण, नक्शा, प्रक्रिया, प्रणाली और विधियों को लिपि बद्ध, सूत्र बद्ध कर सुरक्षित करेगा। आवश्यकता पड़ने पर लोकव्यापीकरण कराएगा व पुरस्कार की व्यवस्था करेगा।

2. औषधियों का अनुसंधान, वनस्पतियों का पहचान, ज्योतिष सम्बन्धी अनुसंधान, हस्तरेखा व सामुद्रिक शास्त्र सम्बन्धी साहित्य का अनुसंधान जो परंपरा में नहीं रहा है, उसको उपयोगिता के अनुसार उसकी सुरक्षा का दायित्व ''सुरक्षा समिति'' का होगा।

3. साहित्य, कला, संगीत, शिल्प में परंपरा की श्रेष्ठता का अनुसंधान, जो परंपरा में नहीं थी, ऐसी प्रस्तुति होने की स्थिति में उसका यथावत् संरक्षण करेगा।

4. खेलकूद, व्यायाम, अभ्यास में परंपरा से अधिक श्रेष्ठता और अनुसंधानों को संरक्षित करेगा।

उपरोक्त कार्य के लिए विनिमय कोष समिति ''न्याय सुरक्षा

समिति'' क्रम से उत्पादन कार्य सलाह समिति, ''स्वास्थ्य संयम समिति'' ''शिक्षा संस्कार समिति'' के सहयोग से मूल्यांकन प्रक्रिया सम्पादित करेगा।

विनिमय में सुरक्षा :-

1. श्रम मूल्यों को उपयोगिता व कला मूल्य के आधार पर पहचानने की दिशा में ''सुरक्षा समिति'' निरंतर सजग रहेगी। एक श्रम मूल्य का आंकलन जो कुछ भी ग्राम स्वराज्य स्थापना दिवस में प्रमाणित रहेगा, उसकी गति के प्रति सतर्क रहेगा। निपुणता, कुशलता, कार्य गति, समय व साधन के कुल संयोग से श्रम का मूल्यांकन होगा। जैसे किसी एक वस्तु के निर्माण कार्य से, जिसका फलन स्थापना दिवस पर यदि एक रहा और बाद में यदि दो, तीन या चार हो गया, ऐसी अर्हता को ग्राम में सर्व सुलभ कराने का दायित्व ''सुरक्षा समिति'' का होगा। इसी प्रकार प्रत्येक वस्तु के सम्बन्ध में उत्पादन गति में वृद्धि करने और विनिमय में उसकी समृद्धि के अर्थ को सार्थक बनने का दिशा में कार्य सुरक्षा समिति करेगा।
2. लाभ-हानि मुक्ति के सम्बन्ध में सतर्क रहना। उसके लिए सभी व्यवस्था प्रदान करना।
3. वस्तु की उत्पादन के आधार पर मूल्यांकन करने में सतर्क रहना व कार्य रूप देना।
4. सभी विनिमय की संभावना को बनाए रखने में सतर्क रहना व प्रोत्साहित करना।

परिवार सुरक्षा :-

1. प्रत्येक परिवार की महिमा और गरिमा को चेतना विकास मूल्य

शिक्षा विरोधी वातावरण से दूषित होने से बचाना। प्रचार तंत्र द्वारा भ्रमित करने वाले सभी पक्षों से सम्पूर्ण परिवार को सतर्कता के लिए प्रोत्साहित करते हुए संरक्षित करना।

2. साहित्य और कला को परिवार राज्य और ग्राम स्वराज्य के अर्थ में प्रदर्शन कार्य के लिए प्रवृत्त करना।
3. परिवार गत अंतर्विरोध की संभावनाओं को दूर करने के रूप में परिवारों को सुरक्षा प्रदान करना।
4. जागृति सम्पन्न एक परिवार की श्रेष्ठता को सभी परिवारों में सुलभ करने के रूप में परिवार को सुरक्षा प्रदान करना।
5. किसी परिवार के साथ आकस्मिक दुर्घटना, प्राकृतिक प्रकोप से, असाध्य रोग से क्षतिग्रस्त होने की स्थिति में, उनमें सान्त्वना व सहायता प्रदान करने के रूप में परिवार को सुरक्षा प्रदान करना।

शिक्षा संस्कार सुरक्षा :-

1. न्याय सुरक्षा समिति यह सुनिश्चित करेगी कि प्रत्येक ग्रामवासी को मानवीय शिक्षा (व्यवहार शिक्षा व व्यवसाय शिक्षा) ठीक से मिल रही है या नहीं। जो स्कूल छोड़ दिए हैं, स्कूल में नहीं आते हैं, उनके लिए उनके परिवार वालों से मिल जुलकर शिक्षा संस्कार को सुलभ कराएगी।
2. मानवीय शिक्षा में कहीं से भी व्यतिरेक उत्पन्न होता है तो उसको दूर करने की व्यवस्था करेगी।
3. शिक्षकों का मूल्यांकन करेगी कि वे ठीक से शिक्षा प्रदान कर रहे हैं या नहीं? समय-समय पर आकर निरीक्षण-परीक्षण पूर्वक मार्ग दर्शन देगी।

स्वास्थ्य संयम सुरक्षा :-

1. ग्राम वासियों की बुरी आदतें, जैसे सिगरेट, बीड़ी, गाँजा, तम्बाकू, जर्दा, शराब, अफीम, चरस, जुआ आदि समाज विरोधी बुरे प्रभावों के निराकरण के प्रति उन्हें जागृत कर सुधारना और उन्हें सुरक्षा प्रदान करना। स्वस्थ, समाधान-समृद्धि पूर्वक जीने में विश्वास सम्पन्न करना।
2. पशु धन की सुरक्षा करना।
3. जान माल की हानि न हो ऐसी व्यवस्था करना।
4. वातावरण में यदि कोई प्रदूषण फैला रहा हो जो कि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, उसको रोकना।

नैसर्गिक सुरक्षा :- सुरक्षा समिति नैसर्गिक सुरक्षा के लिए निम्न नियमों को ध्यान में रखते हुए कार्य करेगी :-

1. गाँव की प्राकृतिक सम्पदा का (वन, खनिज, जीव) उसके अनुपात के रूप में उपयोग करेगी।
2. प्राकृतिक सम्पदा के उत्पादन में किसी के भी द्वारा विघ्न न डालने देना।
3. प्राकृतिक सम्पदा के उत्पादन में सहायक होना, यह सुनिश्चित करना है।

8.9 (4) विनिमय कोष समिति

आरंभ में ही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में पारंगत रूप में समझ सहित समाधान समृद्धि सम्पन्न व्यक्ति विनिमय कोष कार्य में भागीदारी करेंगे।

सौ परिवार के गांव के लिए अनुमानतः कम से कम तीन व्यक्ति

विनिमय कोष में भागीदारी करेंगे। इसमें से एक व्यक्ति गाँव में उत्पादित वस्तुओं के अन्य स्थानों में, बाजारों में विक्रय करेगा एवं अन्य स्थान व बाजारों से वस्तुओं को विनिमय पूर्वक अथवा क्रय विधि से विनिमय कोष में लायेगा। दूसरा व्यक्ति लेखा जोखा व खातों की देख-रेख करेगा। तीसरा व्यक्ति सामान का लेन-देन करेगा व उनको भंडार में रखने की व्यवस्था करेगा। आवश्यकता पड़ने पर अन्य व्यक्तियों को भी विनिमय कोष में भर्ती किया जा सकता है।

विनिमय कोष के काम काज को सुगम बनाने के लिए कम्प्यूटर को प्रयोग में लाया जायेगा। क्रम से विनिमय कोष व्यवस्था, पूरे राज्य व देश में, स्थापित हो जाने पर, ग्राम विनिमय कोष क्रम से, ग्राम समूह क्षेत्र , जिला मंडल, मुख्य राज्य व प्रधान राज्य के विनिमय कोष समितियों के साथ आदान-प्रदान से जुड़ा रहेगा। ''विनिमय कोष'' संविधान के अनुसार, कार्य करता रहेगा, जिसकी जिम्मेदारी विनिमय कोष समिति की होगा जो समय-समय पर खातेदार सदस्यों की सामान्य बैठक बुलाकर, उनके सामने प्रतिवेदन प्रस्तुत करेगा। सामान्य बैठक में बहुमत के आधार पर मार्गदर्शन प्राप्त करेगा।

8.9 (5) स्वास्थ्य संयम समिति

ग्राम के सभी व्यक्तियों के स्वास्थ्य एवं संयम की जिम्मेदारी ग्राम स्वास्थ्य समिति की होगी। यह समिति शिक्षा संस्कार समिति के साथ मिलकर कार्य करेगी। स्वास्थ्य संयम संबंधी पाठ्यक्रम और कार्यक्रम को तैयार कर शिक्षा में सम्मिलित कराएगी। ग्राम में चिकित्सा केन्द्र की व्यवस्था, योगासन, व्यायाम, अखाड़ा खेल कूद व्यवस्था, स्कूल के अलावा खेल मैदान (स्टेडियम),

सांस्कृतिक भवन क्लब आदि व्यवस्था का दायित्व, ग्राम स्वास्थ्य समिति का होगा। समिति स्थानीय रूप से उपलब्ध जड़ी-बूटियों द्वारा औषधि बनाने के लिए आवश्यकीय व्यवस्था करेगी। इसके साथ ही पशु चिकित्सा केन्द्र की व्यवस्था का दायित्व भी स्वास्थ्य समिति का होगा। समिति ''समन्वित चिकित्सा'' (आयुर्वेद, एलोपैथी, होम्योपैथी, यूनानी, योग प्राकृतिक, मानसिक) के उन्नयन की व्यवस्था करेगी।

सब ग्राम वासियों को स्वास्थ्य व्यवहार, आचरण सम्बन्धी मूल्यों का मूल्यांकन, उपयोगिता व प्रयोजन मूलक पद्धति से समिति व्यवस्था प्रदान करेगी। अलंकार, प्रसाधन कार्य, शरीर स्वच्छता महिलाओं व बच्चों को रोग-निरोधी उपायों से अवगत करायेगा और सीमित व संतुलित परिवार के रूप में व्यवहृत होने के लिए व्यवस्था प्रदान करेगी। ऐसी जागृति के लिए व्यापक कार्यक्रम को समिति चलाएगी। सामान्य रूप में घटित अस्वस्थता को दूर करने के लिए घरेलू चिकित्सा में प्रत्येक परिवार को अथवा प्रत्येक परिवार में एक व्यक्ति को प्रवीण बनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए जाएँगे। घरेलू चिकित्सा से रोग शमन न होने की स्थिति में स्थानीय केन्द्र द्वारा चिकित्सा होगी। वहाँ राहत न मिलने की स्थिति में निकटवर्ती चिकित्सा केन्द्र में पहुँचाने और चिकित्सा सुलभ कराने की व्यवस्था ग्राम स्वास्थ्य समिति करेगी। चिकित्सा केन्द्र, चिकित्सालय, मातृत्व केन्द्र, प्रसवोत्तर केन्द्र की स्थापना यथा सम्भव ग्राम समूह परिवार सभा द्वारा किये जावेंगे।

8.10 मूल्यांकन, प्रोत्साहन प्रक्रिया

ग्राम सभा द्वारा विभिन्न समितियों के कार्य का मूल्यांकन निम्न मार्ग दर्शक सिद्धांतों द्वारा किया जायेगा। सभी समितियों का

कार्य सभा सदस्य सम्पन्न करेंगे।

1. उत्पादन कार्य सलाह समिति का मूल्यांकन

''उत्पादन कार्य सलाह समिति'' का मूल्यांकन निम्न आधारों पर किया जायेगा :-

1. कृषि, पशुपालन, वनोपज, हस्त कला, ग्राम-शिल्प, कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग के कुल उत्पादन का मूल्यांकन।
2. उत्पादन में कार्य गति का मूल्यांकन।
3. उत्पादन में गुणवत्ता व उत्पादकता का मूल्यांकन।
4. उत्पादन कार्य में कुशलता व निपुणता का मूल्यांकन।
5. उत्पादन के लिए आवश्यकीय कच्चेमाल/वस्तुओं की सहज सुलभता का मूल्यांकन।
6. प्राकृतिक नियमों का पालन करते हुए प्रदूषण विहीन प्रणाली से उत्पादन और उत्पादन कार्य में तकनीकी परिवर्द्धन का मूल्यांकन।
7. मानव परंपरा में आवश्यकीय व उपयोगी सामान्य आकाँक्षा (आहार, आवास, अलंकार) व महत्वाकाँक्षा (दूर गमन, दूर दर्शन, दूर श्रवण) संबंधी वस्तुओं में उत्पादन व सेवा कार्यों के कार्य का मूल्यांकन।

2. विनिमय कोष सलाहकार समिति का मूल्यांकन

''विनिमय कोष सलाह समिति'' का मूल्यांकन निम्न आधार पर होगा :-

1. विनिमय सहजता व सुलभता का मूल्यांकन।
2. विनिमय में लाभ हानि मुक्त प्रणाली का मूल्यांकन।

3. विनिमय प्रणाली में स्वच्छता का मूल्यांकन।
4. विनिमय क्रिया कलाप में, गुणवत्ता, परिमाण, परिमापन, का मूल्यांकन।
5. विनिमय कोष द्वारा उत्पादन में प्रोत्साहन और सहायता का मूल्यांकन।
6. विनिमय श्रम में गति व गुणवत्ता का मूल्यांकन।
7. स्थानीय रूप से वस्तुओं का आदान प्रदान सुलभ रहेगा। बाह्य बाजारों से क्रय किया गया वस्तुओं का मूल्यांकन क्रय मूल्य के आधार पर आधारित रहेगा।
8. साधन प्रबंधों का मूल्यांकन।

3. शिक्षा संस्कार समिति के कार्यों का मूल्यांकन

''ग्राम सभा'' ग्राम के प्रत्येक व्यक्ति व परिवार में ''शिक्षा संस्कार समिति'' के कार्यों का मूल्यांकन निम्न आधारों पर करेगी :-

1. संबंधों का पहचान मूल्यों का निर्वाह, मानवीयतापूर्ण आचरण व व्यवहार का मूल्यांकन। परस्परता में समाधान।
2. स्वयं के प्रति विश्वास व श्रेष्ठता के प्रति सम्मान क्रिया, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में सामाजिक, उत्पादन कार्य में स्वावलंबन सहज विधि से मूल्यांकन।
3. मानवीय आचरण स्व धन, स्वनारी/स्वपुरूष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार का मूल्यांकन।
4. ग्राम जीवन व परिवार व्यवस्था में विश्वास व निष्ठापूर्ण आचरण का मूल्यांकन।
5. ग्राम व्यवस्था व ग्राम जीवन में भागीदारी का मूल्यांकन।
6. प्रत्येक व्यक्ति व परिवार से किया गया तन, मन व धन

रूपी अर्थ की सदुपयोगिता का मूल्यांकन।

7. मानव स्वयं व्यवस्था के रूप में संप्रेषित, अभिव्यक्त, प्रकाशित होने व समग्र व्यवस्था में भागीदारी होने व उसकी संभावना का मूल्यांकन।
8 किसी व्यक्ति में बुरी आदत हो तो उसके, उससे (बुरी आदत से) मुक्त होने के आधार पर सुधार का मूल्यांकन।

4. न्याय सुरक्षा समिति का मूल्यांकन

''न्याय सुरक्षा समिति'' का मूल्यांकन निम्न आधारों पर होगा

1. आचरण में न्याय सुलभता का मूल्यांकन।
2. व्यवहार में न्याय सुलभता का मूल्यांकन
3. उत्पादन में न्याय सुलभता का मूल्यांकन।
4. विनिमय में न्याय सुलभता का मूल्यांकन।
5. तन,मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षा का मूल्यांकन।
6. ग्राम में प्राकृतिक वातावरण सहज सुरक्षा का मूल्यांकन।
7. उत्पादन एवं विनिमय सुरक्षा का मूल्यांकन।
8. परिवार सुरक्षा का मूल्यांकन।
9. शिक्षा संस्कार सुरक्षा का मूल्यांकन।
10. स्वास्थ्य संयम सुरक्षा का मूल्यांकन।
11. नैसर्गिक सुरक्षा का मूल्यांकन।

5. स्वास्थ्य संयम समिति के कार्यों का मूल्यांकन में, से, के लिए आधार निम्न प्रकार से रहेगा

1. व्यक्तियों में स्वास्थ्य के प्रति जागृति का मूल्यांकन शारीरिक

व मानसिक संतुलन के आधार पर स्वस्थता का मूल्यांकन ।

2. व्यक्ति, घर, ग्राम, गली, मोहल्लों को स्वच्छ बनाए रखने में मूल्यांकन।
3. समाधान, समृद्धि, उपयोगिता, पूरकता विधि से परिवार वैभव सहज मूल्यांकन।
4. रोग निरोधी उपायों के प्रति जागरूकता के आधार पर मूल्यांकन।
5. योगासन, व्यायाम, खेल के प्रति जागरूकता के आधार पर मूल्यांकन।
6. रोगी को शीघ्र चिकित्सा उपलब्ध कराने का मूल्यांकन ।
7. घरेलू चिकित्सा के प्रति जागरूकता का मूल्यांकन।
8. स्थानीय जड़ी बूटियों के संरक्षण, संवर्धन व उनके प्रति जागरूकता उपयोगिता का मूल्यांकन।

भाग-नौ

कार्यक्रम सत्यापन घोषणा

उपयोगिता-पूरकता विधि से कार्यक्रम बनाने से समाधान मिलता है और लाभवादी विधि से सोचने से समस्यायें आती हैं ।

कार्यक्रम सत्यापन घोषणा

इस भाग में सभी समितियों द्वारा किये जाने वाले कार्यक्रमों को समिति आधार पर सत्यापन किया जायेगा।

कार्यक्रम -1

1. समितियों का गठन कार्यकर्ताओं की पहचान व घोषणा।
2. कार्यकर्ताओं में कार्य का बोध होने का सत्यापन।
3. कार्यकर्ताओं में दायित्व, कर्त्तव्य, उद्देश्य बोध प्रवृत्ति व निष्ठा का सत्यापन।

कार्यक्रम-2

शिक्षा-संस्कार-समिति से सत्यापन

1. मानवीय-शिक्षा-संस्कार सर्व सुलभ होने का कार्यक्रम, प्रमाणित होने में से के लिए सत्यापन।
2. मानवीय शिक्षा का प्रमाण हर परिवार में वर्तमान होने का सत्यापन । हर परिवार-समूह-सभा सदस्य, निरीक्षण-परीक्षण विधि से

सत्यापित करने का कार्यक्रम, ग्राम-सभा में सत्यापनों की प्रस्तुति सहज कार्यक्रम ।

3. शिक्षा-संस्कार किसी परिवार में अपूर्ण रहने पर पूर्णता के लिए कार्यक्रम परिवार समूह सभा में निहित रहेगा । इसके लिए शिक्षा-संस्कार समिति दायी होगा।

कार्यक्रम-3

न्याय सुरक्षा समिति से सत्यापन

ग्राम में न्याय सुरक्षा सर्व सुलभ होने का सत्यापन निरीक्षण-परीक्षण पूर्वक परिवार-समूह-सभा व समिति सदस्य करेंगे कार्यक्रम रहेगा ।

1. न्याय-सुरक्षा हर परिवार में प्रमाण वर्तमान होने का सत्यापन।

   परिवार-समूह-सभा सदस्य व समिति निरीक्षण परीक्षण पूर्वक सत्यापित करने का कार्यक्रम निहित रहेगा।

2. न्याय सुरक्षा में किसी परिवार के साथ न्यून होने की स्थिति में उसे सम्पन्न करने का कार्यक्रम परिवार-समूह-सभा व समिति में निहित रहेगा और न्याय सुरक्षा समिति व सभा इसके लिये दायी रहेगी ।

कार्यक्रम - 4

उत्पादन कार्य समिति से सत्यापन

3. उत्पादन कार्य चिन्हित रूप में सर्वसुलभ होने का सत्यापन निरीक्षण-परीक्षण पूर्वक सत्यापित करेगा । कार्यक्रम परिवार-समूह-सभा में समाहित उत्पादन कार्य समिति सर्वसुलभता के लिये दायी रहेगी ।

2. उत्पादन कार्य पूर्वक हर परिवार सहज आहार-विहार-व्यवहार, आवास, अलंकार शरीर पुष्टि-पोषण संरक्षण समाज गति के आधार पर परीक्षण-निरीक्षण कार्यक्रम है।

3. किसी परिवार में पर्याप्त उत्पादन न होने की स्थिति में उत्पादन कार्य समिति का संयोजन मार्ग दर्शन से पर्याप्त रूप देने का सत्यापन होगा।

कार्यक्रम - 5

विनिमय कोष समिति से सत्यापन

1. हर ग्राम सभा से मनोनीत अनुप्राणित विनिमय कोष समितियाँ विनिमय के लिए प्रस्तुत ग्राम के सभी वस्तुओं का भण्डारण व विनिमय, ग्राम में जो वस्तुएँ उत्पादित नहीं हो पाई उसे अन्य ग्राम से विनिमय पूर्वक प्राप्त करना निहित कार्यक्रम है।

2. हर विनिमय-कोष-समिति में भण्डारण प्रबन्धन रहेगा।

3. हर विनिमय कोष समिति सदस्य परिवार और परिवार-समूह सभाओं के द्वारा किये गये वस्तुओं के मूल्यांकन में सहमत और पुनर्मूल्यांकन करने में ग्राम सभा की सहमति प्राप्त करने का अधिकार निहित रहेगा।

4. ग्राम में हर परिवार गत आवश्यकता के आधार पर वस्तु विनिमय विधि से उपलब्ध कराने का दायी (ग्राम सभा की होगी) होगा ।

कार्यक्रम - 6

स्वास्थ्य-संयम समिति से सत्यापन

1. स्वास्थ्य-संयम समिति प्रस्तुत कार्यक्रम में प्रत्येक परिवार जनों का स्वास्थ्य संरक्षण होने का निरीक्षण-परीक्षण सहित परिवार

समूह समिति से सत्यापन सम्पन्न रहना निहित रहेगा।

व्यायाम, योगासन ऐसे सभी खेल स्वास्थ्य के लिए उपयोगी होने का कार्यक्रम निहित है । सार्थकता का सत्यापन रहेगा।

2 कार्यक्रम को निर्धारित करने का अधिकार ग्राम सभा से समिति के लिए प्रदत्त रहेगा। समिति द्वारा किया गया निर्णय परिवार-समूह-सभा के परामर्श तथा सम्मति से और ग्राम सभा की सहमति-स्वीकृति-प्रक्रिया से होगा।

3 सभी परिवार वनौषधियों की आवश्यकता के अनुसार उपयोग करने की विधियों से सम्पन्न रहेंगे। सफलता का सत्यापन रहेगा ।

ग्राम व्यवस्था :-

व्यवस्था स्वरूप में वर्णित दस स्तरीय क्रमिक व्यवस्था में सभी पाँचों समितियाँ रहेंगी । क्रमिक-समिति क्रमिक-कार्यक्रम चिन्हित करते हुए क्रमिक-कार्यक्रम बनायेगी जो समय व स्थान के अनुसार तय किये जावेंगे।

(1)

ग्राम सभा से विश्व राज्य सभाओं का घोषणायें

1 स्वतंत्रता स्वराज्य वैभव का प्रमाण वर्तमान सहज घोषणा

2 स्वयं स्फूर्त अर्थात् ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत निर्णयों के आधार पर कार्य-व्यवहार आचरण, व्यवस्था में भागीदारी के रूप में अभिव्यक्तियाँ, सम्प्रेषणा, प्रकाशन सहज घोषणा।

ज्ञान :- तात्विक रूप में सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति रूपी सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान, स्व स्वरूप रूपी जीवन ज्ञान, मानवत्व रूपी आचरण ज्ञान सहज सार्वभौमता का घोषणा।

विवेक :- विवेक मानव लक्ष्य व जीवन लक्ष्य सार्थक होने का विधि निश्चयन - ज्ञान।

विज्ञान :- मानव-लक्ष्य सफल होने के अर्थ में दिशा निश्चयन ज्ञान सहज सफलता का घोषणा

(2)

व्यवहार- सहज सुलभता का घोषणा

तात्विक रूप में एक से अधिक जागृत मानव एकत्रित होने और उसकी निरन्तरता को परंपरा के रूप में बनाये रखना ।

बौद्धिक रूप में ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत विधि से किया गया समाधान परंपरा।

व्यवहार रूप में अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था अर्थात् दस सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी सहजता का घोषणा।

(3)

आचरण- सर्वशुभ होने का घोषणा

तात्विक रूप में :-मानवत्व सहित व्यवस्था सहज प्रमाण।

बौद्धिक (तार्किक) रूप में :- ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन।

व्यवहार रूप में :- समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण परंपरा घोषणा।

(4)

कार्य सफलता का घोषणा

कार्य :- तात्विक रूप में कायिक-वाचिक-मानसिक व कृत-कारित-अनुमोदित भेदों से है।

कार्य :- तार्किक रूप में उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनीयता परंपरा में सार्थक होने का घोषणा।

कार्य :- व्यवहारिक रूप में नियम-नियंत्रण-संतुलन, न्याय-समाधान-सत्य सहज प्रमाण परंपरा है।

(5)

मानवत्व :- सामाजिक अखण्डता के अर्थ में सूत्र व्याख्या।

समाधान :- सार्वभौमता के अर्थ में सूत्र व्याख्या ।

न्याय :- सम्बन्धों के अर्थ में सूत्र व्याख्या।

सत्य :- अनुभव प्रमाण सहज सूत्र व्याख्या, परंपरा सहज समाज गति के अर्थ में प्रमाण वर्तमान होने का घोषणा।

(6)

जागृति सहज प्रमाण परंपरा सुलभ होने का घोषणा :-

अनुभव प्रमाण परम प्रमाणों में

प्रमाणित करने कराने करने के लिए सहमत होने सहज बोधपूर्ण	संकल्प प्रमाणित करने का परंपरा वर्तमान प्रवृत्ति
प्रमाण सहज चिन्तन साक्षात्कार	चित्रण प्रमाणित करने का परंपरा वर्तमान स्वरूप
प्रमाण सहज तुलन	विश्लेषण प्रमाणित करने का परंपरा वर्तमान स्वरूप निर्णय
प्रमाण सहज मूल्यों का आस्वादन	सम्बन्धों का चयन प्रमाणित करने के लिए परंपरा वर्तमान चयन सहित निर्वाह प्रमाण

समझा सोचा हुआ प्रमाण	समझाने में प्रमाण परंपरा
सीखा हुआ प्रमाण	सिखाने में प्रमाण परंपरा
किया हुआ प्रमाण	कराने में प्रमाण परंपरा
जीने देने में प्रमाण	जीने में प्रमाण परंपरा

(7)

पशुपालन, ऊर्जा संतुलन

वनवर्धन, वृक्षारोपण,

वन्य पशु नियंत्रण-संतुलन, सहज घोषणा

वन-वनस्पति, औषधियों का संरक्षण, संवर्धन

ऋतु संतुलनकारी कार्यक्रम, सफलता में से के लिए आंकलन घोषणा

वन, खनिज, वनस्पतियों के सन्तुलन में ऋतु-सन्तुलन की पहचान करना, पहचान-सन्तुलन में सहमति प्रवृत्ति प्रमाण वर्तमान घोषणा।

(8)

विविध प्रकार से किया गया ऊर्जा संतुलन का घोषणा एवं सत्यापन

पशु-पालन, कृषि कार्य, ग्राम शिल्प, आवास, ग्राम शिल्प कुटीर उद्योग, अलंकार सुविधा, ग्रामोद्योग, सम्मिलित ग्राम वैभव में श्रम नियोजन, सड़क बनाना एवं बनाये रखना, तालाब बनाना कुँआ बनाना सरोवर बनाना एवं बनाये रखना , नहर को बनाना एवं बनाये रखना, नदी नालों का पवित्रता को बनाये रखना, पानी,

हवा, आग से सावधान रहना।

गाँव में अपरिचित व्यक्ति से परिचय प्राप्त करना। परिचय होने के स्थिति में सूचना ग्राम-परिवार-समूह-सभा सदस्यों को ऐसे व्यक्ति सहित प्रस्तुत करना यह हर ग्रामवासी का कर्त्तव्य होगा।

(9)

हर परिवार का अपने-अपने निवास व दरवाजा सड़क को पवित्र एवं हरियाली शोभनीय रूप में बनाये रखना कर्त्तव्य।

आये हुए आगन्तुकों, अपरिचितों का परिचय प्राप्त करना कर्त्तव्य।

आगंतुक :- अपरिचित व्यक्ति की उपस्थिति अपेक्षाओं के अनुसार में पहचानना, मार्गदर्शन।

अभ्यागत :- अभ्युदयार्थ आमंत्रित नर-नारी का आगमन, सम्मान विधि से स्वागत करना।

- **अतिथि** :- आतिथ्यार्थ आवाहित नर-नारियों का आगमन में सेवा, सम्मान विधि से स्वागत करना।
- **आतिथ्य** :- शिष्टता सहित अपने वस्तु व सेवा का अर्पण-समर्पण।

(10)

मानवीयता सर्वसुलभ होने का घोषणा

हर परिवार मानवीयता पूर्ण आचरण, सम्बन्ध-सम्बोधन, मूल्य-नैतिकता-चरित्र सहज अभिव्यक्ति- सम्प्रेषणा-प्रकाशन सहित आहार-आवास-अलंकार सम्बन्धी वस्तुओं से सम्पन्न रहना

अधिकार स्वत्व स्वतंत्रता

परिवार = परस्पर सुख-शान्ति सहज प्रमाण में-से-के लिये समाधान-समृद्धि पूर्वक प्रमाण परंपरा प्रस्तुत करना

(11)

जागृति सुलभता सहज घोषणा

- हर जागृत मानव परिवार में शरीर सहज आयु अनुसार श्रम व कार्य करना, यह स्वयं स्फूर्त होना, स्वत्व-स्वतंत्रता-अधिकार के आधार पर है।
- शिशु काल तीन से पाँच वर्ष तक - 3 से 5 वर्ष तक

कौमार्य अवस्था पाँच से बारह वर्ष तक	- 5 से 12 वर्ष तक
युवावस्था बारह से बीस वर्ष तक	- 12 से 20 वर्ष तक
प्रौढ़ावस्था	- 20 से 30 वर्ष तक
परिपक्वावस्था	- 30 से 70 वर्ष
परिपक्वावस्था सत्तर वर्ष के अन्तर वृद्धावस्था में निहित ज्ञान विवेक विज्ञान में भागीदारी में प्रखर होना शरीर में क्रमिक शिथिलता	- 70 वर्ष के अनन्तर
परिपक्वावस्था यही पीढ़ी से पीढ़ी उन्नत होने का प्रेरणा स्रोत जागृत परंपरा के अर्थ में आयु आवश्यकता कर्त्तव्य घोषणा	- परिपक्वता की निरंतरता ही परंपरा

(12)

❖ शिशु काल में लालन-पालन, पोषण-संरक्षण

लालन :- शिशु में खुशियाली मुस्कान की अपेक्षा में किये गये पोषण-संरक्षण भाषा-अभाषा, भाव-भंगिमा, मुद्रा, अंगहार रूपी उपक्रम, प्रकटन।

पालन :- शरीर पुष्टि, मनःस्वस्थता स्वस्थता के लिए किया गया उपक्रम।

पोषण :- शरीर भाषा संबोधनों को प्रमाणित करना।

संरक्षण :- शारीरिक व मानसिक संतुलन संरक्षण।

(13)

शिशु काल से जागृति यात्रा घोषणा

1. शिशु कालीन लालन-पालन, पोषण-संरक्षण कार्यों का दायित्व व कर्त्तव्य अभिभावकों का है।

2. मानव सन्तान का लालन-पालन, पोषण-संरक्षण का कार्य अभिभावक का है। इस परंपरा में उत्सव, प्रसन्नता, खुशियाली है। शैशवकाल के अनंतर पड़ोसी बन्धुओं का मानव संस्कार पक्ष में दायित्व रहेगा।

3. मानव में सभी सम्बन्धों में सम्बोधन सभी परिवार-परंपरा में प्रचलित है। इसे अखण्डता सहज प्रयोजन सार्थकता के अर्थ में प्रमाणित करना जागृति है।

मानवत्व सहित व्यवस्था में जीना-

4. मानव परंपरा शिक्षा संस्कार सहित जागृति पूर्वक अपने सन्तानों को ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्न बना सकते हैं, तद्अनुरूप

14_manviya_samvidhaan_sootravyakhya_2007_c

संभाषण, अपेक्षानुरूप प्रमाण निर्देश सम्पन्न होना स्वभाविक है।

5. सम्बन्धों का सम्बोधन, शिष्टता का दिशा निर्देशन सम्बोधन के साथ प्रयोजन भाव-भंगिमा, मुद्रा, अंगहार विधि से सन्तानों को निर्देशित करना हर अभिभावकों, पड़ोसी बन्धु, मित्रजनों का कर्त्तव्य-दायित्व होता है।

6. शिशु कालीन शिक्षा, शिक्षा-संस्कार के दायी अभिभावक होंगे। जीते हुए के आधार पर स्वीकृति, जीने के आधार पर शिक्षा संस्कार सार्थक होता है।

7. कौमार्य काल में ग्रामवासी, शिक्षा-संस्था व अभिभावकों का संयुक्त रूप में जीने के आधार पर सफल बनाने का कर्त्तव्य-दायित्व रहेगा।

8. युवावस्था में मानवीय शिक्षा-संस्कार को विद्यार्थियों में, से, के लिये आचरण सहित प्रमाण रूप देना अनुभव प्रमाण सम्पन्न अध्यापकों में अनिवार्य रहेगा।

9. हर मानव-सन्तान युवकों के फलन के रूप में अनुभव प्रमाण सम्पन्नता फलित होना ही मानवीय-शिक्षा-संस्कार की सफलता है। इसका सत्यापन अभिभावक, विद्यार्थी करेंगे। अध्यापक दृष्टा पद में वैभव सम्पन्न होगा।

10. हर नर-नारी का मानवीय-शिक्षा संस्कार सम्पन्न रहना ग्राम मोहल्ला देश-धरती में मानव का वैभव है।

11. जागृत मानव परंपरा में सम्पूर्ण मानव का अपने में सामाजिक अखण्डता और सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या में प्रमाण होना सहज है।

12. जागृत मानव परंपरा में ही समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व

प्रमाण सहित नियम-नियंत्रण-संतुलन समेत सर्व सुख-शान्ति सहज विधि से जीना होता है। यही स्वराज्य है।

13. कम से कम सोलह-अठ्ठारह अधिक से अधिक बीस वर्ष की अवस्था में श्रम-साध्य कार्यों को करने का दायित्व-कर्त्तव्य होना आवश्यक है।

14. प्राकृतिक-ऐश्वर्य पर उपयोगिता मूल्य के अर्थ में श्रम-नियोजन फलस्वरुप समृद्धि सार्थक होना पाया जाता है।

15. श्रम-कार्य हर नर-नारी में, से, के लिये स्वस्थता समृद्धि सेवा के लिए आवश्यक है।

16. खेल,व्यायाम एवं श्रम स्वस्थ रहने का उपाय है। आवश्यकता व समय के अनुसार श्रम नियोजन हर ग्राम-सभा, परिवार समूह सभा के निश्चित सामूहिक कार्य और परिवार से स्वीकृत होना भी रहेगा।

17. श्रम-नियोजन हर मानव में, से, के लिये आवश्यक है।

18. श्रम-नियोजन पूर्वक उपयोगिता व कला मूल्य ही प्रमाणित होता है। स्वास्थ्य सन्तुलन के लिए भी श्रम, समय नियोजन होता है।

19. सम्पूर्ण उपयोगितायें सामान्य व महत्वाकाँक्षा सम्बन्धी उपलब्धि होगी।

20. हर नर-नारी युवा काल से प्रौढ़ावस्था के फलन तक श्रम-नियोजन योग्य होते हैं। श्रम करने की प्रवृत्ति जागृति पूर्वक सफल विधिवत् होता है।

21. शरीर की सभी अवस्थायें सदा दृष्टव्य है।

22. मानवीय शिक्षा-संस्कार पूर्वक ही हर नर-नारी में, से, के लिए

मानवत्व सहज मानसिकता प्रमाणित होना पाया जाता है।

23. हर मानव का समझने के लिए ध्यान देना आवश्यक है और समझा हुआ को प्रमाणित करने के लिए ध्यान देना बना रहता है।

24. हर मानव का ज्ञानावस्था में होना ही समझदारी में, से, के लिए प्रवृत्ति व अध्ययन व समझ प्रमाण है। यही परंपरा है।

25. सर्वमानव सहअस्तित्व में ही समझदार होना नित्य समीचीन है।

26. सर्व मानव अपने वैभव को समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी-भागीदारी सहज विधि से प्रमाण पहचान होना ही मानवीय परंपरा इतिहास वर्तमान है।

(14)

मानव संस्कृति प्रमाण घोषणा

संस्कृति

तात्विकता :- पूर्णता (क्रियापूर्णता, आचरण पूर्णता) के अर्थ में स्वीकृत समझ सहित प्रकाशन।

बौद्धिकता :- मूल्यों के अर्थ में प्रकाशन।

व्यवहारिकता :- मानवीयता के अर्थ में कला साहित्य का प्रकाशन, जागृति व सतर्कता सहित वर्तमान-

क्रियापूर्णता समाधान के अर्थ में, आचरण पूर्णता जागृति पूर्णता के अर्थ में, सजगता अनुभव संपन्न प्रमाण के रूप में स्पष्ट है।

- जीना ही दर्शन प्रकाशन कला है।
- श्रेष्ठ श्रेष्ठतर श्रेष्ठतम विधि से जीने की कला का प्रकाशन ही संस्कृति है। यह संज्ञानीयता में नियंत्रित संवेदना पूर्वक मानवीय संस्कृति है। समाधान सहज है।

(15)

संबंध उत्सव घोषणा

प्रत्येक परिवार पूरा ग्राम परिवार के साथ तालमेल बनाये रखने का अधिकार।

हर परिवार उत्सव सम्बन्ध

हर तरह कला संबंध

संस्कृति - संबंध

शिक्षा लोक शिक्षा - संबंध

विनिमय - संबंध

उत्पादन - संबंध

वस्तुओं का उपयोग - संबंध

कला - संबंध

साहित्य - संबंध

मानव सभ्यता - संबंध

स्वास्थ्य - संबंध

अनुभव - संबंध

समाधान - संबंध

न्याय - संबंध

नियम-नियंत्रण-संतुलन-संबंध

इन सभी संबंधों में मानवीयतापूर्ण आचरण को प्रमाणित करना ही व्यवस्था है।

(16)

हर्षोल्लास उत्सव घोषणा

उत्सव = सत्य समाधान न्याय-नियम-नियंत्रण संतुलन के अर्थ में

ऋतु कालोत्सव :

1. वसन्त कालोत्सव

1.1 वसन्तोत्सव ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत विधि से फल-फूल औषधियों का संग्रहण एवं लगाने का कार्यक्रम

1.2 फल वाले वृक्षों, औषधियों पर शोध संरक्षण रोपण कार्योत्सव

1.3 प्राकृतिक ऐश्वर्य पर किया गया परीक्षण-निरीक्षण कार्यों का ज्ञान-विवेक-विज्ञान विधि से कार्य गोष्ठियों का आयोजन - संयोजन कार्यक्रम।

1.4 सार्थक कला का मूल्यांकन उसका इतिहास परिवार सभा से ग्राम परिवार सभा में सूचना लिखित रूप में संग्रह करना।

2 ग्रीष्म कालोत्सव :-

ग्रीष्म कालोत्सव ऋतु संतुलन, शोध संतुलन को बनाये रखने का शोध। प्रधानतः गाँव में शुद्धता वातावरण में पवित्रता और गाँव में आने जाने में सुगमता सहज मुद्दों पर सोच-विचार कर हर नर-नारी व्यवस्था में भागीदारी करेंगे। परिवार समूह-ग्राम, परिवार सभा सदस्य सोचेंगे ही।

2.1 श्रेष्ठता की ओर कार्य-गति प्रोत्साहन मूल्यांकन परस्परता में होना आवश्यक है।

2.2 सड़क तालाब घर-द्वार में सुधार निर्माण सफाई का कार्य उत्सव रूप में, आवश्यकता व प्रयोजन के अर्थ में स्वरूप देना वैभव है।

2.3 सटीक श्रम-नियोजन का मूल्यांकन।

3 वर्षा कालोत्सव :-

3.1 हर परिवार में स्वास्थ्य संबंधी सतर्कता।

3.2 प्राकृतिक संतुलन के फलन जो गुणों के प्रति सतर्कता, कृषि सहज कार्य में शुभारंभ उत्सव।

3.3 बीज, खाद, फसल संरक्षण में स्वायत्त सम्पन्न रहना उत्सव है।

3.4 हर परिवार अपने उत्पाद कार्यक्रम में गुणवत्ता व आवश्यकता के सन्दर्भ में जो ज्ञानार्जन होता है उसे लोक व्यापीकरण के लिए प्रस्तुत करना सामाजिक उत्सव है।

3.5 परिवारों में क्रियान्वित हस्त-कला, ग्राम शिल्प कुटीर उद्योग व ग्रामोद्योग में उत्पादन कार्योत्सव समझदारी पूर्वक उपयोगिता को प्रमाणित करने में पूरा ध्यान रखना उत्सव।

4 शरद कालीन उत्सव :-

4.1 शरद कालीन उत्सव फसलों में स्वस्थता उसके संरक्षण-पोषण के फलन में उत्सव होना।

4.2 सटीक समय में किया गया श्रम नियोजन में कृषि, पशु-पालन फलित होने का उत्सव।

4.3 हस्त-कला का परस्पर गुणवत्ता, उपयोगिता के आधार पर परस्परता में पहचान होना उत्सव है।

4.4 गृह व कुटीर उद्योग, ग्राम शिल्प, ग्रामोद्योग में उत्पादित वस्तुओं का परस्पर पहचान उत्सव है।

4.5 हेमन्त ऋतु उत्सव में अधिकाधिक फसल परिपक्व होने का उत्सव।

4.6 फसलों का संग्रहणोत्सव।

4.7 फसल संरक्षण कार्योत्सव।

4.8 वृक्षारोपण की सफलता आगे समय में जल, वन, खनिज संरक्षण के सम्बन्ध में सोच-विचार, सड़क व अहाता का सोच-विचार योजना।

4.9 जल संसाधनों का स्थानीय सुविधा के अनुसार सदुपयोग करना।

5. शरद-हेमंत -शिशिर-कालोत्सव सार्थकता सहज घोषणा

5.1 जल व्यवस्था पर आवश्यकीय कार्यक्रम।

5.2 औषधि सम्बन्धी कार्यक्रम।

5.3 वनोपजों का संग्रहण कार्यक्रम।

5.4 वन-औषधियों का बोनी एवं फसलों का संग्रहण का उत्सव।

5.5 मानवीय शिक्षा संस्कार समिति की सार्थकता का मूल्यांकन हर परिवार समूह सभा में सम्पन्न ग्राम-सभा के पटल में प्रस्तुत करना।

5.6 मानवीय शिक्षा-संस्कार सहज प्रयोजन का मूल्यांकन परिवार समूह सभा सदस्य, समिति सदस्य संयुक्त रूप से करेंगे जिसकी सूचना ग्राम सभा के पटल में रहेगी।

5.7 न्याय-सुरक्षा का मूल्यांकन परिवार समूह व समिति सदस्यों का संयुक्त रूप में मूल्यांकन होगा।

(17)

विनिमय उत्सव घोषणा

उत्सव

1. उत्पादन कार्य व सफलता।
2. विनिमय कोष-कार्य व सफलता का।

3. स्वास्थ्य-संयम-कार्य व सफलता का मूल्यांकन उन समितियों के सदस्य एक परिवार समूह सभा के सदस्यों का संयुक्त निरीक्षण-परीक्षण, ग्राम-सभा पटल में सूचना।

4. स्वास्थ्य संयमोत्सव हर वर्ष कम से कम एक बार सम्पन्न होगा।

(18)

समृद्धि प्रमाण घोषणा

विनिमय कोष

1. विनिमय सुलभता परीक्षण-निरीक्षण, विनिमय कोष समिति सदस्य व परिवार-समूह सभा सदस्यों का संयुक्त रूप में ग्राम-सभा पटल में सूचना।

2. विनिमय विधि से सुधार व बदलाव होने की आवश्यकता के अनुसार ग्राम सभा की स्वीकृति और परिवार-समूह-सभा के प्रस्ताव के आधार पर होगा।

3. विनिमय सुलभता हर परिवार में, से, के लिए सहज होना ही उद्देश्य रहेगा।

4. विनिमय-कोष उत्सव हर वर्ष एक बार सम्पन्न होता रहेगा।

(19)

समृद्धि घोषणा

उत्पादन कार्य

1. ग्राम के हर परिवार में उत्पादन-कार्य सुलभता का परीक्षण-निरीक्षण-कार्य का समिति सदस्य व परिवार-समूह-सभा-सदस्य का संयुक्त प्रक्रिया, निरीक्षण-परीक्षण ग्राम सभा पटल में स्पष्ट सूचना रहेगा।

2. उत्पादन कार्य में सुधार बदलाव आवश्यक होने की स्थिति में परिवार-समूह-सभा-प्रस्ताव ग्राम-सभा की स्वीकृति के साथ सम्पन्न होगा।

3. वर्ष में एक बार उत्पादन कार्य समिति का उत्सव सम्पन्न होगा।

(20)

न्याय-सुरक्षा सर्व सुलभ होने का घोषणा

1. ग्राम में रहने वाले सभी परिवारों में न्याय-सुरक्षा सुलभता का परीक्षण, निरीक्षण कार्य समिति-सदस्य, परिवार-समूह-सभा के सदस्यों का संयुक्त कर्त्तव्य रहेगा। ग्राम मोहल्ला परिवारों में हुए न्याय सुरक्षा सुलभता सफलता का हर परिवार में, से, के लिए सत्यापन और शोध संभावना आवश्यकताओं पर कार्य गोष्ठी परिवार समूह सभा के द्वारा निर्णयों को लिपिबद्ध करना।

2. मानवत्व मानवीयता पूर्ण आचरण और दस सोपानीय अथवा मानव व्यवस्था का सर्व सुलभ होना ही ज्ञानावस्था सहज, मानव सहज अपेक्षा, आवश्यकता व प्रयोजन है। इसलिये इसकी प्रमाण-परंपरा ही स्वराज्य व स्वतंत्रता पूर्ण वैभव है।

3. प्रत्येक परिवार में न्याय-सुरक्षा, समझदारी सहित ईमानदारी जिम्मेदारी व भागीदारी का संयुक्त रूप में मूल्यांकन है।

4. कहीं भी सुधार की आवश्यकता होने पर परिवार में सुधार हो इसके लिए परिवार-समूह-सभा व ग्राम-सभा क्रम से दायी है।

5. हर वर्ष अथवा वर्ष में दो बार न्याय-सुरक्षा उत्सव सम्पन्न होना रहेगा।

(21)

नित्य-उत्सव

हर नर-नारी स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान करने में सहज होने का घोषणा

1. स्वयं में विश्वास होना समझदारी सहज क्रिया कलाप उत्सव
2. श्रेष्ठता का सम्मान करना - उत्सव
3. प्रतिभा सम्पन्नता - उत्सव
4. व्यक्तित्व सहज प्रमाण - उत्सव
5. व्यवहार में समाजिक होना - उत्सव
6. व्यवसाय (उत्पादन कार्य) में स्वावलम्बन सहज - उत्सव

अमानव के लिये मानव, मानव के लिए देवमानव, देवमानव त्व के लिए दिव्य मानव, दिव्यमानव त्व के लिए दश सोपानीय व्यवस्था तंत्र में भागीदारी क्रम में परम श्रेष्ठता की परंपरा व सम्मान व्यवस्था, सहज व्यवस्था ।

(22)

शोध - नित्य उत्सव - अनुसन्धान

1. व्यवहार व आचरण सुगमता के अर्थ में
2. मानवीय शिक्षा-संस्कार सुगम परंपरा के अर्थ में
3. न्याय-सुरक्षा में सुगमता के अर्थ में
4. उत्पादन कार्य में सुगमता के अर्थ में
5. विनिमय कार्य में सुगमता के अर्थ में
6. स्वास्थ्य-संयम कार्य में सुगमता के अर्थ में लोक व्यापीकरण पूर्वक

प्रयोजन-प्रमाण नित्य उत्सव है।

(23)

नित्य उत्सव - प्रदर्शन सार्थकता का घोषणा

1. मानव-लक्ष्य को प्रखर रूप में प्रस्तुत करना
2. ज्ञान-विवेक-विज्ञान प्रवृत्ति को प्रखर रूप में प्रदर्शित करना
3. मानवीयतापूर्ण आचरण को प्रखर रूप में प्रदर्शित करना
4. सम्बन्ध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति में प्रखरता तृप्ति का प्रदर्शन ।
5. तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा पूर्वक समृद्धि का निरंतरता सहज प्रदर्शन।
6. स्व-धन, स्वनारी-स्वपुरूष, दया पूर्ण कार्य-व्यवहार का प्रखर रूप में कला साहित्य की प्रस्तुति श्रेष्ठता के अर्थ में प्रेरक होना सहज है।

(24)

साहित्य कला सहज उत्सव

1. रोग मुक्त स्वस्थ सुन्दर समाधान सम्पन्न परंपरा के रूप में प्रमाण प्रदर्शन प्रकाशन
2. मानवीय संस्कृति में श्रेष्ठता का प्रमाण प्रदर्शन प्रकाशन
3. मानवीय सभ्यताओं का प्रमाण प्रदर्शन प्रकाशन
4. मानवीय आचार संहिता रूपी न्याय व्यवस्था का प्रमाण प्रदर्शन प्रकाशन
5. मानवीयता पूर्ण परिवार व्यवस्था व अखण्ड समाज वैभव का

प्रमाण प्रदर्शन प्रकाशन

6. सार्वभौम व्यवस्था वैभव का प्रखर प्रदर्शन श्रेष्ठता और मानव परंपरा में प्रेरकता हो।

(25)

कला साहित्य-सहज उत्सव सार्थकता का घोषणा

1. मानव अपने बल के साथ दया पूर्वक सुखी होने का उत्सव
2. रूप में सच्चरित्रता पूर्वक सुखी होने का उत्सव
3. धन के साथ उदारता पूर्वक सुखी होने का उत्सव
4. पद के साथ न्याय पूर्वक सुखी होने का उत्सव
5. बुद्धि के साथ ज्ञान-विवेक-विज्ञानपूर्वक सुखी होने का प्रखर प्रदर्शन प्रेरक होता है।

(26)

साहित्य-कला प्रदर्शन

1. समाधान समृद्धि सम्पन्न परिवार व्यवस्था का प्रखर प्रदर्शन, प्रकाशन प्रेरकता है।
2. मानवीयतापूर्ण मानसिकता का प्रखर प्रकाशन प्रदर्शन प्रेरणात्मक होना स्वाभाविक है।
3. सहअस्तित्व में चारों पद, अवस्था व सम्बन्धों को उपयोगिता-पूरकता के अर्थ में प्रखर प्रदर्शन-प्रकाशन।
4. सहअस्तित्व में चारों पद 'त्व' सहित व्यवस्था के अर्थ में प्रखर प्रदर्शन-प्रकाशन-प्रेरक है।
5. जागृत मानव परंपरा के अर्थ में किया गया नृत्य व गीत-संगीत,

सभी प्रकार के वाद्यों, नृत्यों का प्रखर प्रदर्शन प्रकाशन प्रेरणा दायी है।

(27)

जागृति परंपरा वैभव घोषणा

नित्य उत्सव

1. मानवीयतापूर्ण आचरण सहित व्यवहार व उत्पादन कार्य नित्य उत्सव है।
2. मानवीयतापूर्ण विचारों का अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन नित्य उत्सव है।
3. मानवीयता सहज आहार-विहार-व्यवहार नित्य उत्सव है।
4. जागृत मानव परंपरा में दृष्टा पद में नित्य उत्सव है।
5. जागृति सहज विधि से मानवीयता, देव मानवीयता और जागृति पूर्ण विधि से दिव्य मानवीयता पूर्वक सर्व शुभ घटना सहज परंपरायें नित्य उत्सव है।
6. हर नर-नारी जागृति पूर्वक व्यवस्था में जीना नित्य उत्सव है।

सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी ही मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान सूत्र व्याख्या नित्य उत्सव है।

संविधान हर नर-नारी का स्वत्व-स्वतंत्रता-अधिकार सहज अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन नित्य उत्सव है। मानवीयतापूर्ण आचरण जागृत मानव सहज प्रमाण है। सर्वदेश-काल में स्थित सर्व मानव जागृति सहज सम्पन्न होना-रहना चाहते हैं। सर्व मानव अथवा प्रत्येक मानव सर्व शुभ सुख, सौन्दर्य सम्पन्नता सहित स्व कल्याण सर्वशुभ संपन्न होना-रहना नित्य उत्सव है।

- **मनुष्य संबंध को न समझ पाने के कारण दुखी हो रहा है, न कि साधनों की कमी से ।**
- **जो जितना भ्रम और भय का पात्र है, उसने साधनों को सुखी होने के लिए उतना ही महत्वपूर्ण समझा है ।**
- **जीने दो और जीओ ।**

भाग-दस

स्वराज्य व्यवस्था

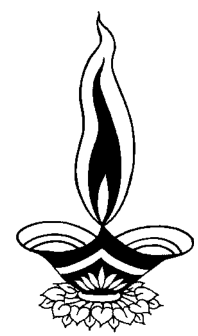

भोग अतिभोग को लक्ष्य बनाने के कारण मानव सुविधा-संग्रह के अंतहीन सिलसिले की ओर अग्रसर हुए। सबके सुविधा संग्रह के हविश को पूरा करने की सामग्री इस धरती में नहीं है, इसलिए यह हविश इस धरती को मानव के रहने के लायक नहीं छोड़ेगी। अतः सारे सुविधा संग्रह को प्रयोजन सम्मत करना जीना जरूरी है।

स्वराज्य व्यवस्था

10.1 स्वराज्य व्यवस्था सहज गति

''अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या पर आधारित ग्राम मोहल्ला स्वराज्य है''

ग्राम स्वराज्य की मूलभूत इकाई समझदार परिवार है। परिवार स्वयं मानव चेतना मूल्य शिक्षा सम्पन्न मानवीयता पूर्ण व्यवस्था सहज मौलिक रूप है। मानवीयता स्वयं स्वराज्य एवं स्वतंत्रता का सूत्र स्वरुप है। स्वराज्य का तात्पर्य न्याय-सुलभता, उत्पादन-सुलभता और विनिमय-सुलभता है। इसके पूरकता में शिक्षा-संस्कार, स्वास्थ्य-संयम आवश्यक है। स्वतंत्रता का तात्पर्य प्रत्येक मानव का स्वानुशासन सहज प्रामाणिकता और समाधान पूर्वक अभिव्यक्त, संप्रेषित व प्रकाशित होने से है, जो सहअस्तित्व रूपी परम सत्य अनुभव पूर्वक विधि से जानने व मानने से है अर्थात् सह-अस्तित्व में परस्पर संबंधों व मूल्यों को पहचानने व निर्वाह करने से है। यही शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा सुलभता स्त्रोत है।

''अस्तित्व में प्रत्येक मानव'' मानवत्व सहित व्यवस्था है, और '' समग्र व्यवस्था में भागीदार है।'' इसका प्रत्यक्ष रूप स्वतंत्रता के रूप में स्वयं

में व्यवस्था और स्वराज्य के रूप में समग्रता के साथ भागीदारी है। समग्रता के साथ व्यवस्था की भागीदारी, एक से अधिक व्यक्तियों के साथ ही संभव है। इसलिए सहज रूप में जो एक से अधिक व्यक्तियों की सम्मिलित अभिव्यक्ति है, यही परिवार है। ऐसे परिवार में मानवीयता पूर्ण आचरण, व्यवहार सहित परस्पर बौद्धिक समाधान और भौतिक समृद्धि सुलभ होने की स्थिति में ही, ग्राम-स्वराज्य, सहज सुलभ होगा जो अखंड समाज का आधार है।

परिवार मानव कुल में न्याय सुलभता सहज प्रमाण का तात्पर्य मानव व नैसर्गिक संबंधों की पहचान व उनमें निहित मूल्यों का निर्वाह ही है।

''मानव परंपरा में स्वायत्तता का स्वरूप स्थिति में स्वतंत्रता (स्वानुशासन) व गति में स्वराज्य है।''

उत्पादन सुलभता का तात्पर्य परिवार के प्रत्येक सदस्य को वयस्क होने तक व्यवसाय में स्वावलम्बी बनाने से है। परिवार में सभी वयस्क परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन कर सकें।

मानवीयता पूर्वक परिवार में उत्पादन का तात्पर्य प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन द्वारा उसके साथ पूरकता विधि से बिना क्षति के सामान्यकाँक्षा (आहार, आवास, अलंकार) व महत्वाकाँक्षा (दूर-श्रवण, दूर-दर्शन, दूर-गमन) सम्बन्धी वस्तुओं के निर्माण से है। परिवार में भौतिक समृद्धि के लिए इससे अधिक की आवश्यकता नहीं है, इससे कम होने से भौतिक समृद्धि होना संभव नहीं है।

''विनिमय सुलभता'' का तात्पर्य हर परिवार में से उत्पादित वस्तुओं को श्रम मूल्य के आधार पर दूसरे परिवारों के साथ लाभ-हानि मुक्त आदान-प्रदान से है ताकि हर परिवार को भौतिक समृद्धि का अनुभव हो सके। इस व्यवस्था में सम्पूर्ण विनिमय-प्रत्येक परिवार द्वारा किए गए

श्रम नियोजन को, अन्य परिवारों में श्रम मूल्य के आधार पर आदान-प्रदान करने से है। इसके अनुसार प्रथम चरण में ग्राम के विनिमय कोष द्वारा, प्रत्येक परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन को, बाह्य बाजारों में विक्रय कर, वहाँ से गाँव के लिए आवश्यक वस्तुओं को क्रय कर, ग्राम वासियों को उपलब्ध कराया जाएगा। ऐसी व्यवस्था, क्रम से ग्राम समूह, क्षेत्र मण्डल, मंडल समूह, मुख्य राज्य, प्रधान राज्य और विश्व राज्य तक जुड़ा रहेगा। यही विश्व शान्ति सर्वशुभ सहज सूत्र है।

ग्राम स्वराज्य सहज सुलभ होने के उपरान्त ही प्रत्येक मानव को, सह-अस्तित्व समग्र व्यवस्था के साथ भागीदारी होने और स्वयं मानवीयता समाधान, समृद्धि, अभयता सहित पूर्ण व्यवस्था में व्यक्त होना सुलभ हो जाती है। यही जीवन जागृति का साक्ष्य है जो मानव परंपरा में चिरकाल से वांछा रही है। जीवन जागृति ही मानव में से सार्वभौम व्यवस्था सहज सार्थकता को प्रतिपादित प्रमाणित होना आवश्यक है क्योंकि प्रामाणिकता और समाधान ही मानव परंपरा में सार्वभौम अभिव्यक्ति है।

''जीवन जागृति ही स्वयं अभिव्यक्ति में प्रामाणिकता, संप्रेषणा में समाधान और प्रकाशन में स्वतंत्रता तथा स्वराज्य है। यही प्रत्येक-व्यक्ति अपने में व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण है।'' यही अखंड मानव समाज का सूत्र और स्वरुप है।

''अखण्ड सामाजिकता में पारंगत बनने और बनाने की क्रिया **प्रबुद्धता**। उसका आचरण, परिवार व्यवस्था में समाधान समृद्धि सहज प्रमाण **संप्रभुता** और उसकी निरंतरता क्रम में संरक्षण व संवर्धन पूर्वक सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करने व कराने का कार्य **प्रभुसत्ता** है।''

यही मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान का सूत्र है। ग्राम स्वराज्य का अंतिम लक्ष्य अखंड सामाजिकता सहज निरंतरता है, जिससे

समाज में प्रत्येक मानव को बौद्धिक समाधान व भौतिक समृद्धि, अभयता व ''सहअस्तित्व'' सार्वभौम रूप में अनुभव सुलभ हो सके ।

''परिवार केन्द्रित ग्राम स्वराज्य का अनुभव करना व कराना, इस योजना का मुख्य उद्देश्य है ।'' गाँव व मोहल्ला के प्रत्येक परिवार में प्रत्येक सदस्य मानवीयता पूर्ण आचरण करेगा। प्रत्येक मानव मानव व नैसर्गिक सम्बन्धों व उनमें निहित मूल्यों की पहचान व निर्वाह करेंगे व भौतिक समृद्धि को प्राप्त करेंगे (आवश्यकता से अधिक उत्पादन) और बौद्धिक समाधान को व्यक्त, संप्रेषित व प्रकाशित करेंगे। ऐसी अर्हता को सुलभ करा देना, ग्राम स्वराज्य है । ''ग्राम स्वराज्य योजना'' का आधार समाधान समृद्धि को विकसित कर उसको व्यवस्था के रूप में क्रियान्वयन करना है, यही इसकी अवधारणा और प्रतिबद्धता है ।

10.2 ग्राम स्वराज्य योजना के लिए पूर्व आंकलन

ग्राम स्वराज्य व्यवस्था को आरंभ करने के पूर्व यह आवश्यक है कि उस ग्राम के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर ली जाय । इस जानकारी, सर्वेक्षण एवं आंकलन के आधार पर ग्राम स्वराज्य व्यवस्था की निश्चित रूप में योजना बनायी जाये। जानकारी का प्रकार निम्न होगा :-

1. ग्राम का नाम, जिला, पोस्ट ऑफिस, पिन कोड, प्रान्त। स्थानीय तापमान, वर्षा, शीतमान, जल स्त्रोत, वन, खनिज तथा ग्राम से जुड़े भूक्षेत्र चित्र रूप में गणना आंकलन।
2. गाँव की जनसंख्या, आयु, आय, स्त्री, पुरुष, बच्चे, लड़का, लड़की के आधार पर।
3. प्राप्त शैक्षणिक स्थितियों, योग्यताओं का आंकलन 3 वर्ष से 10 वर्ष तक, 10 वर्ष से 18 वर्ष, 19 वर्ष से 30 वर्ष और 30 वर्ष से ऊपर कितने साक्षर हैं, कितने नहीं। कहाँ तक पढ़े हैं ?

4. कितने लोग उत्पादन, नौकरी, मजदूरी, ग्राम-शिल्प, हस्त-कला कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग में कार्य कर रहे हैं। कितने लोग बेरोजगार हैं।
5. कितने व्यापार करने में व्यस्त हैं। कितनी दुकानें हैं और कितने इन पर आश्रित हैं।

10.2 (1) ग्राम की सामान्य सुविधाओं का आंकलन :-

1. गाँव व गाँव के भू-क्षेत्र जनसंख्या विवरण सहित जलवायु समीपस्थ वन, वन, खनिज, सम्पदा, वनौषधियों का आंकलन।
2. गाँव में आवास, ईंधन, प्रकाश, पीने का पानी, मल-जल निकास व्यवस्था, पाठशाला, उर्जा स्रोतों, सड़क व्यवस्था, डाक घर, बैंक, सांस्कृतिक भवन, तालाब, नहर, नदी, जल स्रोत आदि का आंकलन व सर्वेक्षण।

10.2 (2) उत्पादन सम्बन्धी आंकलन :-

कृषि भूमि, पड़ती भूमि, कृषि संभावित भूमि। सिंचाई व्यवस्था, जल के स्रोत, तालाब नलकूप, नहर, नदी आदि सम्बन्धी स्थिति और संभावनाओं का आंकलन।

फसलों के प्रकार, कृषि उपज, तादाद, वर्ष-फसल चक्र, स्थानीय अभाव, समस्याएँ व संभावनाएँ।

कृषि सम्बन्धी तकनीक व ज्ञान में पारंगत-व्यक्तियों की संख्या। क्या वे अन्य को पारंगत बना सकते हैं ?

उर्वरक व्यवस्था, गोबर कम्पोस्ट खाद की श्रेष्ठता आवश्यकता व रासायनिक खादों के उपयोग के सम्बन्ध में जानकारी एवं सतर्क होने का उपाय।

बीजों के प्रकार, उनके बारे में जानकारी। कृषि सम्बन्धी औजारों, यंत्रों, कीट नाशक दवाइयों आदि की प्राकृतिक उपलब्धता स्वायत्तता, बीज खाद, पानी, उर्जा संतुलन व अभ्यास के बारे में जानकारी समझदारी।

पशुधन के बारे में पूरी जानकारी। उनकी तादाद, नस्ल, प्रकार के अनुसार। कितने कृषक, कृषि के साथ गौशाला रखते हैं? कितने गोबर गैस प्लांट हैं? कितना लगाना है?

हस्त शिल्प संबंधी उत्पादन जैसे- चित्रकला, मूर्तिकला, शिल्प कला, बुनाई, कढ़ाई, छपाई, रंगाई, बधाई पत्र, सूत कातना, इनग्रेविंग आदि में कितने लोग व्यस्त हैं? उनसे उपलब्ध तकनीक व उपलब्ध, उपयोग सहज आंकलन।

ग्राम शिल्प सम्बन्धी उत्पादन जैसे धातु कला, वस्त्र कला, रेशम, काष्ठ कला, मिट्टी और चर्म कला आदि में कितने लोग कर्माभ्यासी प्रशिक्षित व व्यस्त हैं। इनमें उपलब्ध तकनीक व अभ्यास का आंकलन। कुटीर उद्योग द्वारा उत्पादन कार्यों में कितने लोग व्यस्त हैं? वे क्या व कितना उत्पादन करते हैं? इसी तरह ग्रामोद्योग के बारे में आंकलन। सेवा कार्यों में लगे व्यक्तियों का सर्वेक्षण आंकलन।

10.2 (3) विनिमय सम्बन्धी आकलन :-

सभी उत्पादित वस्तुओं की संख्या, तादाद, प्रकार, उपयोगिता, गुणवत्ता, उपयोगिता, उपयोगिता मूल्य। वर्तमान में विनिमय व्यवस्था का आंकलन। कितने दुकानें हैं, कितने व्यक्ति विनिमय कार्य में लगे हुए हैं। गोदाम संरक्षण सहज आंकलन व्यवस्था का आंकलन।

स्थानीय रूप से आवश्यक वस्तुएँ जो बाह्य बाजारों से खरीदी और गाँव में विनिमय की जाती हैं।

10.2 (4) शिक्षा सम्बन्धी आंकलन :-

पाठशाला है या नहीं। यदि है तो कहाँ तक पढ़ाई होती है? कितने विद्यार्थी हैं? कितने शिक्षक हैं? आयु, वर्ग के आधार पर शिक्षा का सर्वेक्षण। शिक्षा पाठ्यक्रम कैसा? स्थानीय आवश्यकतानुसार शिक्षा दी जाती है या केवल किताबी ज्ञान दिया जाता है? शिक्षा प्राप्त कर कितने व्यक्ति गाँव में रह रहे हैं? कितने गाँव छोड़ दिए हैं? महिलाओं व बच्चों में जागरूकता कैसी है? कितने साक्षर हैं? कितने साक्षर होना शेष हैं? आयु वर्ग के अनुसार, शिक्षक स्थानीय हैं या बाहर के हैं?

निकटवर्ती तकनीकी व अन्य समाज सेवी संस्थाओं के सहयोग की संभावना। ग्राम स्वराज्य कार्यक्रम सहज स्पष्टता।

10.2 (5) स्वास्थ्य संयम सम्बन्धी आकलन :-

1. जन्म व मृत्यु दर।
2. सीमित व सन्तुलित परिवार के प्रति ग्रामवासी कितने प्रतिशत जागरूक हैं?
3. अनावश्यक आदतों का सर्वेक्षण (गांजा, भांग, चरस, शराब, अफीम, धूम्रपान, जुआ आदि बुरी आदतों) वर्गीकरण व उसके लिए व्यक्तियों का नाम सहित आंकलन।
4. घरेलू चिकित्सा के प्रति जागरूकता और आंकलन।
5. स्थानीय रूप से उपलब्ध जड़ी-बूटियों के प्रकार व उनके औषधि के रूप में प्रयोग, उपयोग और संभावना।
6. सामान्य व विशेष चिकित्सा सुविधा का आकलन।
7. चिकित्सालय और औषधालय है या नहीं? व्यायाम शाला खेल व्यवस्था, योगासन-प्राणायाम प्रशिक्षण, सांस्कृतिक भवन है या

नहीं ? आपूर्ति योजना स्पष्ट रहना।

10.2 (6) न्याय सुरक्षा सम्बन्धी आंकलन :-

1. ग्राम का प्रत्येक वयस्क व्यक्ति समझदारी सम्पन्न है या नहीं अपनी योग्यता और पात्रता के अनुसार उत्पादन व समाधान प्रस्तुत करता है या उत्पादन में भागीदार है या नहीं ? के रूप में उत्पादन न्याय का आंकलन।
2. उत्पादित वस्तुओं का शोषण विहीन पद्धति से कहाँ तक विनिमय, आदान-प्रदान हो रहा है - के रूप में विनिमय न्याय का आंकलन।
3. स्वधन, स्वपुरूष/स्वनारी, दया पूर्ण कार्यों और तन, मन, धन रूपी अर्थ के सदुपयोग के आधार पर संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति, आचरण-न्याय का आंकलन।
4. सम्बन्धों के साथ विश्वास निर्वाह के रूप में व्यवहार-न्याय का आंकलन।
5. न्याय, समाधान समृद्धि पूर्वक जीने में कठिनाइयों का निराकरण।
6. न्याय व्यवस्था में मूल्यांकन समीक्षा एवं आंकलन।
7. गाँव मोहल्ला सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं का आंकलन व वर्तमान में सुरक्षा व्यवस्था कैसी है ?

3. स्वराज्य व्यवस्था में दश-सोपानीय इकाईयाँ :-

परिवार व सभा रूप में परिवारों में संस्कृति-सभ्यता का, सभा में विधि व्यवस्था का प्रकाशन

1. परिवार सभा
2. परिवार समूह सभा
3. ग्राम मोहल्ला स्वराज्य परिवार सभा
4. ग्राम मोहल्ला समूह परिवार सभा

5. स्वराज्य क्षेत्र परिवार सभा
6. मण्डल स्वराज्य परिवार सभा
7. मण्डल समूह स्वराज्य परिवार सभा
8. मुख्य राज्य परिवार सभा
9. प्रधान राज्य परिवार सभा
10. विश्व राष्ट्र राज्य परिवार सभा

4. प्रधान राज्य परिवार सभाओं का अधिकार

(1) हर प्रधान राज्य परिवार में पाँचों आयामों के कार्य गति सहित अन्य आठों सभाओं और परिवारों से संबंधित सभी समस्याओं (राज्यनैतिक, आर्थिक, सामाजिक) का समाधान प्रस्तुत करेंगे।

(2) सभी मुख्य राज्य सभाओं के साथ परामर्श यथा स्थिति आवश्यकता, पूरकता, उपयोगिता के आधार पर कार्यक्रमों को विश्व परिवार सभा से मनोनीत न्याय सुरक्षा समिति के हाथों में अर्पित करने का प्रस्ताव तैयार करेंगे।

5. विश्व राज्य परिवार सभा का अधिकार

(1) विश्व परिवार सभा में अन्य परिवार सभाओं का अधिकार यथावत रहेगा ही। पाँचों आयामों के कार्यक्रमों को विश्वव्यापी संतुलित बनाये रखने का अधिकार बना ही रहेगा।

(2) विश्व परिवार सभा में मौलिक अधिकार के रूप में बाकी अन्य नौ परिवार सभाओं में से सात परिवार सभाओं में पाँचों आयामों का कार्य गति अधिकार, दायित्व, कर्त्तव्य वर्णित है। यह सभी विश्व परिवार सभा में समाहित रहेगा ही। इसके साथ-साथ विश्व परिवार सभा के निकटवर्ती प्रधान राज्य सभा में प्रमाणित कार्यकलापों को पूर्णतः निरीक्षण परीक्षण पूर्वक अपने निष्कर्षों से अवगत कराने

का अधिकार रहेगा। साथ में आवश्यकीय प्रस्ताव रखने का अधिकार भी रहेगा। जिस पर कार्य गोष्ठी पूर्वक स्वीकार करने का व्यवस्था रहेगा।

(3) विश्व राज्य सभा में यह सुस्पष्ट हो चुकी है कि व्यवस्था के पाँचों आयामों को सुगमता के लिए शोध अनुसंधान पूर्वक प्रस्ताव प्रस्तुत करने का मौलिक अधिकार रहेगा ही। उसमें प्रधान रूप में न्याय सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए दूसरी भाषा में विश्व राज्य सभा के सदस्यों की दृष्टि में विश्व की सभी देशों की सीमाओं जब तक उन-उन देशों में निवासियों के अपने-पराया मन में बसा रहेगा तब तक उन-उन देशों की सीमा सुरक्षा का जिम्मेदारी और उन-उन देशों में पूरा धरती मानव देश होने का सत्य स्थापित करने का मौलिक अधिकार समाया रहेगा।

(4) जैसा-जैसा हर देशों में सीमित सीमा सुरक्षा की परिकल्पना रहेगी तब तक सबको भरोसा देने के लिए अथवा सीमा सुरक्षा का अधिकार विश्व राज्य सभा परिवार में अर्पित कर चुके हैं उन-उन देशों के निवासियों को भरोसा दिलाने के लिए विश्व राज्य परिवार सभा में समाहित सुरक्षा परिषद दूसरी भाषा में न्याय सुरक्षा समिति में सामरिक शक्तियाँ केन्द्रीकृत रहेगी। सुरक्षा समिति में हर प्रधान राज्य सभा का प्रतिनिधित्व आवश्यक है। यह जनसंख्या विधि से प्रतिनिधियों की संख्या स्वीकारना आवश्यक रहेगा।

भाग-ग्यारह

हर व्यक्ति में परीक्षण सूत्र

अपने-पराये की दीवाल हटाये बिना मानव सुख पूर्वक नहीं जी पायेगा । इसके लिये न्याय-धर्म-सत्य की दृष्टि विकसित होना तथा उसके लिए चेतना विकास मूल्य शिक्षा की आवश्यकता है ।

हर व्यक्ति में परीक्षण सूत्र

11 मैं अपने में क्या हूँ? कैसा हूँ ? क्या चाहता हूँ ? का समाधान रूप में

11(1)

मैं क्या हूँ ?

मैं मानव मनाकार को साकार करने वाला मनः स्वस्थता सहज विधि प्रमाणित करने वाला हूँ। जागृति पूर्वक मनः स्वस्थता को प्रमाणित करता हूँ।

मैं कैसा हूँ ?

मैं ज्ञानावस्था सहज प्रतिष्ठा सम्पन्न इकाई हूँ। मैं शरीर व जीवन सहज संयुक्त साकार रूप हूँ । मानव परंपरा प्रदत्त है मेरा शरीर और सह-अस्तित्व में परमाणु में विकास फलतः जीवन सहज स्व स्वरूप हूँ।

मैं जीवन सहज रूप में जानने-मानने वाला हूँ, मानव रूप में पहचानने-निर्वाह करने का क्रियाकलाप हूँ । शरीर के साथ में पाँच ज्ञानेन्द्रियों और पाँच कर्मेन्द्रियों व उसके क्रियाकलापों का

दृष्टा हूँ।

मैं मानवत्व सहित व्यवस्था हूँ।

मैं क्या चाहता हूँ ?

मैं मानव सहज रूप में बौद्धिक समाधान, भौतिक समृद्धि सहित सुखी होना, रहना चाहता हूँ।

मैं जीवन-जागृति में पारंगत सहज प्रमाण और उसकी निरन्तरता चाहता हूँ। साथ ही भ्रम, भय, विपन्नता से मुक्त होना चाहता हूँ।

अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में स्वयं स्फूर्त विधि से भागीदारी करना चाहता हूँ। उसके योग्य क्षमता-योग्यता-पात्रता सम्पन्न होना, रहना चाहता हूँ।

हर मानव को समाधान समृद्धि सम्पन्न होना देखना चाहता हूँ।

11(2)

1 मैं अपने में क्या हूँ ?

1-1 मैं मानव हूँ

1-2 मैं मनाकार को साकार करने वाला मनः स्वस्थता का आशावादी और मनःस्वस्थता सहज पारंगत प्रमाण होने-करने वाला हूँ।

2 मैं कैसा हूँ ?

2-1 मैं ज्ञानावस्था सहज प्रतिष्ठा सम्पन्न इकाई हूँ।

2-2 मैं शरीर व जीवन सहज संयुक्त साकार रूप हूँ।

2-3 मानव परंपरा प्रदत्त है मेरा शरीर और अस्तित्व में परमाणु में विकास फलतः जीवन सहज स्व-स्वरूप हूँ।

2-4 मैं जीवन सहज रूप में जानने-मानने वाला व मानव रूप में पहचानने-निर्वाह करने का क्रियाकलाप करता हूँ ।

2-5 मैं शरीर को जीवन्त बनाये रखता हूँ - चेतना सहित पाँच ज्ञानेन्द्रियों पाँच कर्मेन्द्रियों का दृष्टा हूँ।

2-6 मैं मानवत्व सहित व्यवस्था हूँ समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने योग्य हूँ।

11(3)

3- मैं क्या चाहता हूँ ?

3-1 मैं बौद्धिक समाधान, भौतिक समृद्धि सम्पन्न होना चाहता हूँ ।

3-2 मैं जीवन जागृति में पारंगत प्रमाण सम्पन्न और उस में निरन्तर जीना-होना-रहना चाहता हूँ।

3-3 मैं भ्रम-भय-कुण्ठा-निराशा, पशुता, क्रूरता, द्रोह-विद्रोह, शोषण संघर्ष युक्त अपराध रूपी जीव चेतना से मुक्त जागृत मानव चेतना संपन्न स्वयं की पहचान बनाये रखना चाहता हूँ ।

3-4 अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में स्वयं स्फूर्त विधि से भागीदारी करना चाहता हूँ।

3-5 सर्वशुभ परंपरा में भागीदारी करने योग्य क्षमता-योग्यता-पात्रता सम्पन्न रहना चाहता हूँ।

3-6 सर्वशुभ के अर्थ में साथ ही सर्वशुभ सौभाग्य संपन्न होते रहना चाहता हूँ।

3-7 सर्व शुभ सौभाग्य सुन्दर सुख केवल सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न परिवार सहज प्रमाण मानवीयता पूर्ण आचरण ही है इसमें मैं पारंगत प्रमाण होना चाहता हूँ।

11(4)

दश सोपानीय परिवार-सभा-सदस्यों का आचरण सहज परिभाषा

मानवीयता पूर्ण आचरण, सोच, विचार, विज्ञान-विवेक-ज्ञान अनुभव प्रमाण होना-रहना

11(5)

मानव सहज परिभाषा :-

1-1 मनाकार को साकार करने वाला वर्तमान में मनः स्वस्थता सहज प्रभाव प्रमाण प्रस्तुत करने वाला है।

1-2 मनः स्वस्थता में जीने वाला से सोचने वाला अनुभव पूर्ण समझ के रूप में प्रमाणित होने वाला है।

1-3 मनाकार को उत्पादनों के रूप में प्रमाणित करने वाला है।

1-4 आहार आवास अलंकार, दूर श्रवण,दूर गमन, दूरदर्शन सम्बन्धी वस्तुओं को उपयोग उत्पादन में भागीदारी करने वाला और सदुपयोग प्रयोजन शील प्रमाण प्रस्तुत करना।

11(6)

मानवीयता पूर्ण आचरण

2-1 मूल्य-चरित्र-नैतिकता सहज प्रमाण सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सहज प्रमाण।

2-2 मूल्य सहज प्रमाण - सम्बन्धों को व्यवस्था सहज प्रयोजनों के अर्थ में पहचान, संबंधों में निहित मूल्यों का निर्वाह है।

2-3 चरित्र = स्व धन- स्व नारी/स्व पुरुष, दया पूर्ण कार्य-व्यवहार ।

2-4 नैतिकता = तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग-सुरक्षा।

11(7)

मूल्य

14_manviya_samvidhaan_sootravyakhya_2007_c

- ❖ सम्पूर्ण संबंध निश्चित है।
- ❖ परिवार सभा सम्बन्ध, शिक्षा-संस्कार-सम्बन्ध, न्याय-सुरक्षा सम्बन्ध, उत्पादन कार्य विनिमय कार्य सम्बन्ध , स्वास्थ्य संयम सम्बन्ध
- ❖ संबंधों की पहचान सहित निर्वाह निरन्तरता में स्थापित मूल्य प्रमाणित होता है।

हर सम्बन्धों की पहचान, निर्वाह प्रयोजनों के अर्थ में निरन्तरता है।

प्रयोजन हर नर-नारी की आवश्यकता है। स्वयमेव समग्र व्यवस्था में भागीदारी ही प्रयोजन है।

जीवन मूल्य	-	4
मानव मूल्य	-	6
स्थापित मूल्य	-	9
शिष्ट मूल्य	-	9
वस्तु मूल्य	-	2

प्रमाण ही मानव समाज गति है।

11(8)

सर्वशुभ में स्वशुभ

उपरोक्त अपेक्षायें सर्व-शुभ के अर्थ में प्रमाणित होना ही जागृति सहज वैभव है। जागृति ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज संयुक्त वैभव है। यह हर नर-नारी में, से, के लिए स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार है।

समझदारी हर मानव में, से, के लिए अविभाज्य वर्तमान है। हर

मानव परंपरा के रूप में वर्तमान होना सर्वविदित है। इसी आधार पर हर मानव जागृत अथवा भ्रमित रहना पाया जाता है । हर नर-नारी सहज चाहत जागृति है। जागृति परंपरा सहज विधि से ही सर्व सुलभ होता है।

सर्वमानव में कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता आदि- मानव काल से प्रकाशित रहा है। इसका साक्ष्य यही है कि आहार-आवास-अलंकार पद्धतियों को विविध रूप में अपनाया और दूर-श्रवण, दूर-दर्शन, दूर-गमन साधनों में विविधता का होना स्पष्ट है । उक्त क्रिया प्रवृत्ति एवं घटना के अनुसार स्पष्ट है कि सभी देश-काल में मानव ने कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता का सतत प्रयोग प्रस्तुत किया है।

सर्व मानव कल्पना शीलता के लिये कर्म स्वतंत्रता का और कर्म-स्वतंत्रता के लिए कल्पनाशीलता का प्रयोग करते आया है । आदि मानव काल से इक्कीसवीं (21वीं) शताब्दी तक मानव परंपरा विविध समुदायों के नाम से प्रचलित रही जो राज्य व राष्ट्र कहलाते रहे।

राज्य-राष्ट्र की अस्मिता, स्वीकृति व मान्यता में अखण्डता सार्वभौमता व अक्षुण्णता सहज पावन शब्दों को दुहराया जाता है । यह भी देखने को मिलता है कि अधिकांश देशों की भौगोलिक स्थितियाँ व उनमें निवास करने वाले लोगों की जनसंख्या बदलती रही। ऐसे बदलाव के मूल में मानव सहज कल्पनाओं की विविधता का होना ही समझ में आता है ।

मानव समुदाय रूप में इक्कीसवीं शताब्दी तक नस्ल, रंग, भाषा, जाति, मत, पंथ, सम्प्रदाय, वर्ग रूप में परस्पर पहचान होना पाया जाता है। नस्ल-रंग जंगल युग से, भाषा-जाति ग्राम युग से, मत-पंथ सम्प्रदाय धार्मिक राजनीतिक युग से, वर्ग आर्थिक राजनीतिक युग से गण्य हुआ है । इस शताब्दी के आरंभ तक इस धरती के सर्वाधिक देश जिनका अपना अपना संविधान है आर्थिक-राजनीति परस्त हो चुके है।

जागृतिपूर्वक अखण्ड रूप में सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न सामाजिकता सहज (धार्मिकता), आर्थिक और सार्वभौम व्यवस्था रूप में पाये जाने वाले परिवार मूलक राज्य-व्यवस्था नीति ही, जागृतिपूर्ण परंपरा-स्थापित होने की आवश्यकता धरती बीमार होने के कारण हो चुकी है।

अभी तक ऐसी स्थिति घटित न होने के कारण मानवीयतापूर्ण विचारधारा ध्रुवीकृत न हो सकी है। अब अस्तित्व-मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ज्ञान विचार ''मध्यस्थ दर्शन'' सहअस्तित्ववाद अध्ययनार्थ प्रस्तुत है ।

मानव परम्परा सहज वैभव को संज्ञानीयता सहज धारक-वाहकता में पहचाना जाता है। परंपरा में संतान विधि समाई रहती है। यही वंश एवं पीढ़ी से पीढ़ी के रूप में पहचान है । मानव -परंपरा में कल्पनाशीलता विधि से पहचान करते हुए आहार-आवास-अलंकार व दूर-श्रवण, दूर-गमन, दूर-दर्शन संबंधी यंत्रों व वस्तुओं का उत्पादन सुलभ हो गया है । यह मानव की परिभाषा के अनुसार अधूरा रहा। मानव परिभाषा '' मनाकार को साकार करने वाला मनः स्वस्थता का आशावादी है व जागृत होने व प्रमाणित होने वाला है।''

हर मानव मानसिक रूप में स्वस्थ, शारीरिक रूप में स्वस्थ, व्यवहार रूप में स्वस्थ, उत्पादन रूप में स्वस्थ, व्यवस्था रूप में स्वस्थ रहना चाहता है। यह परंपरा में सुलभ न होने के कारण मानव जाति समुदाय मानसिकता से ग्रसित पाई जाती है।

विचार

मनः स्वस्थता का प्रमाण-परंपरा-सुलभ होना आवश्यक हो गया है क्योंकि धरती बीमार हो रही है। धरती की ताप-ग्रस्तता, जंगल का कम होना, खनिज-कोयला-तेल विकिरणीय धातुओं का शोषण आदि

सर्वविदित है । इसके फलस्वरूप प्रदूषण प्रभाव, मानव में व्यापार मानसिकता, शोषण संघर्ष-वंचना के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण व प्रौद्योगिकी प्रवृत्तियों में वृद्धि हुई है।

मानव के द्वारा मनाकार को साकार करने में इतनी लम्बी अवधि बीत गई है और मानव अपने कार्यों के फलस्वरूप घोर विपदाओं से घिर गया है। इससे छूटने के लिए मानव को केवल मनः स्वस्थता को अपनाना ही शेष है । यह प्रस्ताव मानव के सम्मुख आ चुका है । इसके लिए सर्वप्रथम शिक्षा-संस्कार-संस्थायें, द्वितीय समाज सेवी संस्थायें, तृतीय धर्म-संप्रदाय पंथ-मतवादी संस्थायें, चतुर्थ सभी राजनीतिक संस्थायें दायी है। वरीयता क्रम भले बदले पर शिक्षा संस्थाओं से लेकर अन्य संस्थाओं का लोक व्यापीकरण होना अवश्यंभावी है। नस्ल-जाति-रंग-भाषा भेद धर्म-गद्दियों या राज-गद्दियों में समाये हुए हैं। इस तरह हर नर-नारी किसी न किसी राज-धर्म-शिक्षा गद्दी परस्त होना पाया जाता है। इस 21 वीं शताब्दी के आरंभ काल तक सभी राज्य शक्ति केन्द्रित शासन परंपरा में होना पाया जाता है। भौतिकवाद-परस्त विज्ञान-शिक्षा ही सम्पूर्ण देशों में प्रकारान्तर से पहुँच चुकी है । ऐसी विज्ञान-शिक्षा सम्पन्न सर्वाधिक नर-नारी धन-साधन को प्रधान मानते हैं ।

धन का स्वरूप प्रतीक मुद्रा के रूप में मान्य है। मानने में एवं होने में दूरी इतनी ही है कि 'मान्यतायें कल्पना प्रधान वाली होती है' और 'होना निरन्तर प्रमाण है' जो पीढ़ी से पीढ़ी लोगों को बोध स्वीकृति व प्रमाण होता है। सम्पूर्ण अस्तित्व सहअस्तित्व रूप में ही नित्य विद्यमान है। यह सर्व मानव में-से-के लिये अनुभव मूलक विधि से अनुभवगामी पद्धतिपूर्वक बोध सुलभ होता है। यही मूलतः सार्थक अध्ययन सूत्र है। मानवत्व त्व रूपी आचरण ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत सूत्र व्याख्या है ।

11(9)

मानवीयतापूर्ण आचरण ही संविधान सूत्र व्याख्या है

मानव जागृति पूर्वक ही मानवीयतापूर्ण आचरण सहित अभिव्यक्ति-संप्रेषणा-प्रकाशन है। सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व अनुभव मूलक विधि से समझ में आना ही जागृति है। यह प्रमाण विधि से परंपरा है। हर मानव में समझने की प्रवृत्ति सहज विधि से निहित है। जीवन व शरीर का संयुक्त रूप में ही हर मानव विद्यमान है। हर नर-नारी का सहज समझदारी सम्पन्न होना ही जागृत चेतना और यही मानव चेतना जागृति है।

जानना-मानना-पहचानना-निर्वाह करना ही जागृति, चेतना-जागृति अथवा समझदारी है । नामकरण करना मानव परंपरा सहज मौलिक प्रकाशन है । इसका साक्ष्य इस धरती पर मानव में विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में पनपती भाषा शब्द के रूप में सुनने को मिलता है। सभी भाषायें शब्दों के रूप में सुनने को मिलती है । यह सर्वविदित है । अर्थ नाम से नामी समझ में आता है।

हर देश काल में परंपरा के रूप में चल रही सभी भाषायें शब्द व भाव (नाम) के रूप में है। मानव ने संवेदनाओं का नाम से उच्चारणों को भाषा माना है। जानने के लिए शब्दों द्वारा इंगित अर्थ ही है । शब्दों का अर्थ किसी वस्तु-क्रिया, फल-परिणाम, स्थिति-गति का नाम ही है। नाम सहज स्वीकृतियाँ मानव में-से-के लिये होना दृष्टव्य है । इन स्वीकृतियों के मूल में मानव सहज कल्पनाशीलता-कर्म स्वतंत्रता का प्रयोजन है ही।

विगत से सुनने में आ रहा शुभ-कल्याण, उद्धार-मोक्ष, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक सम्बन्धी उपदेश सर्वाधिक रहस्यमय रहे हैं। पाप-पुण्य को रहस्यमय ईश्वर की तृप्ति और अनुग्रह से जोड़ा गया है। इनके

विविध रूप हैं जो मानव की सामुदायिक मानसिकता के स्पष्ट कारण ही है।

समुदायों की परिकल्पना से सभी समुदायों में परस्पर द्रोह-विद्रोह, शोषण, युद्ध और संघर्ष की प्रवृत्तियाँ प्रबल हुई जो घटना-क्रम में स्पष्ट है । आज जब भौतिक-विज्ञान सभी देशों में फैला हुआ है फिर भी इस इक्कीसवीं सदी तक प्रचलित विज्ञान-विधि से कोई मानव अध्ययन समाधान-सूत्र लोकगम्य नहीं हो पाया है। इसलिए विज्ञान के मुद्दे पर भी पुनर्विचार करना आवश्यक हो गया है।

प्रचलित विज्ञान में तकनीकी एवं ज्ञान का सम्मलित रूप में होना माना गया है जिसमें तकनीकी भाग यंत्र वस्तुओं के निर्माण व उपज के रूप में इसमें नियोजित होने वाली कारीगिरी तकनीकी है जिसमें प्राणावस्था से सम्बन्धित सभी तकनीकी उपज ज्ञान के अर्थ में सदा से रहा है। जैसे कृषि उपजाने और पशुपालन के रूप में पहचाना गया है।

माटी-पत्थर-धातु-मणि, काष्ठों से औजार-वस्तुएं, वस्तु-यंत्र-उपकरण बनाने की क्रिया को तकनीकी कहा जाता है। दूसरे शब्दों में आहार-आवास-अलंकार, दूरगमन-दूरश्रवण-दूरदर्शन सम्बन्धी वस्तु-यंत्र उपकरणों के उत्पादनों में जो श्रम-नियोजन होता है उस तौर तरीके को तकनीकी कहा जाता है। ऐसे प्रयोजनार्थ विद्वानों द्वारा प्रस्तावित ज्ञान मूल में ही गलत हो गया क्योंकि उन्होंने अस्तित्व को मूलतः अस्थिर होना माना है। यह सच्चाई के विपरीत हो गया । इस मुद्दे पर सोच-विचार पूर्वक जाँचने पर पता चला कि अस्तित्व सहअस्तित्व रूप में स्थिर, विकास व जागृति निश्चित व विकास-क्रम, विकास, जागृति-क्रम, जागृति निश्चित होना पाया है। यही 'अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन' - 'मध्यस्थ-दर्शन' 'सहअस्तित्व वाद' है।

भौतिकवादी विज्ञान के अनुसार अव्यवस्था की नजरिया से अस्थिरता और अनिश्चितता की ओर गति हुई है । फलस्वरूप व्यापार

के चंगुल में सारा मानव अथवा सर्वाधिक मानव फंस चुके हैं। बाजार लाभ के चंगुल में फंसा ही है। व्यापार शोषण-क्रिया का नाम है। शोषण के साथ अपना-पराया की दीवाल बनी ही रहती है। व्यापारी भी जिसके साथ अपनत्व होता और सम्बन्धों की पहचान होती है उनके साथ व्यापार नहीं कर पाता है ।

सहअस्तित्ववादी विधि से यह समझ में आता है कि परमाणु में ही विकास-क्रम, विकास होता है क्योंकि भौतिक-रासायनिक व जीवन-क्रिया कलाप के मूल में परमाणु ही आधार वस्तु है। परमाणु में निहित कार्यरत अंशों की संख्या भेद से आचरण भेद होता है जिसके कारण मृदु-पाषाण-मणि-धातु दृष्टव्य है । यही परमाणु-अणु की विविध स्थितियाँ यौगिक क्रिया के लिए प्रवृत्त-कार्यरत व फलित रहना है।

यौगिक क्रिया-विधि से सम्पूर्ण रसायन-तंत्र क्रम से धरती पर हरियाली सबको समझ में आता है । रासायनोत्सव के रूप में प्राण कोशाओं से रचित रचनायें धरती पर हरियाली के रूप में है और प्राण कोशाओं से ही जीव-शरीर व मानव शरीर भी रचित है जिसकी विरचना निश्चित होना भी सर्वविदित है। समृद्ध मेधस से सम्पन्न जीव शरीरों को भी जीवन संचालित करता है जबकि प्रत्येक मानव शरीर को जीवन ही संचालित करता है।

जीवन-क्रिया गठनपूर्ण परमाणु के रूप में वर्तमान रहता है। यही चैतन्य इकाई व जीवन है। हर मानव 'जीवन' व शरीर का संयुक्त रूप है । यह सहअस्तित्व सहज वैभव है। जीवन ही आशा-जीने की आशा प्रमाण सहज आशा तक, विचार संवेदनात्मक से संज्ञानीयता तक, इच्छायें संवेदनायें चिन्तन से संज्ञानीयतात्मक चित्रण तक, ऋतम्भरा (सत्य सम्पन्न प्रमाणित करने की प्रवृत्ति) रूप में प्रमाण, सहअस्तित्व में अनुभव मूलक क्रम से सम्पन्न होना समझ में आता है । यही जागृत-जीवन-वैभव होना पाया जाता है और जागृत जीवन में अनुभव बल

अनुभव का बोध-बल, बोध का चिन्तन बल, साक्षात्कार का तुलन बल और न्याय-धर्म-सत्य सहज आस्वादन बल जीवन वैभव है। जागृत जीवन की पहचान हर मानव कर सकता है, करने योग्य है फलस्वरूप व्यवस्था में सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता में प्रमाणित होता है।

इक्कीसवीं सदी तक भौतिकवादी विज्ञान ने 'मानव' को भौतिक-रासायनिक वस्तु में निरूपित कर भ्रमित मानव को और भ्रमित किया है जिसके कारण मानव प्रदूषण फैलाया और धरती रोग ग्रस्त हो गई। सभी समुदाय परस्परता में द्रोह-विद्रोह, शोषण और युद्ध मानसिकता व प्रक्रिया से पक्के हो गये हैं जो मानव-कुल के लिए अप्रत्याशित घटना है। यह स्पष्ट है। इससे उभरने के लिए जागृत मानव सहज आचार संहिता मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद, शास्त्र हर मानव के लिए अध्ययन पूर्वक विचार निर्णय सहित प्रमाणित होते रहने, जीने देने, जीने में, से, के लिए प्रशस्त प्रस्ताव है।

भाग-बारह

मानव चेतना सहज आचरण सूत्र

मानव चेतना सहज आचरण सूत्र

जीव चेतना से मानव चेतना ही भ्रम से जागृति

भ्रम : अधिमूल्यन, अवमूल्यन, निर्मूल्यन दोष वश शरीर को जीवन मानना यही संपूर्ण अवैध के वैध मानने का आधार है।

भ्रांति: भ्रम प्रवृति वश किया गया कार्यकलाप व्यवहार विचार को सही मानना

स्वेच्छा: समाधान सहज सुखी होना।

12.1. भ्रम, भ्रान्त मानव, जागृत मानवेच्छा

1.1 भ्रमित मानव भी जागृति के प्यासे है। फलस्वरुप जागृति सहज रूप में लोक व्यापीकरण संभावना समीचीन है।

1.2 मनाकार को साकार करने में मानव सफल है। मनः स्वस्थता के लिए अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन विधि से अध्ययन सुलभ हुआ।

1.3 भ्रमित मानव भी सुरक्षित रहना चाहता है।

1.4 भ्रमित मानव भी न्याय सुलभता चाहता है।

1.5 भ्रमित मानव भी न्याय पाना चाहता है।

1.6 परम्परा का तात्पर्य शिक्षा संस्कार अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था व सर्वतोमुखी समाधान जो बीसवीं शताब्दी तक स्थापित नहीं हो पाया। भौतिक विचार परम्परा के अनुसार, संरचना के आधार पर चेतना निष्पत्ति बताई जाती है जबकि ईश्वर वादी विचार के अनुसार चेतना से वस्तु निष्पत्ति बताई जाती है। इन दोनों का शोध करने के उपरान्त, अनुसन्धानपूर्वक पता लगा कि सह-अस्तित्व नित्य वर्तमान, परम सत्य होना पाया गया। इसमें उत्पत्ति की कल्पना ही गलत निकली।

1.7 मानव लक्ष्य सार्थक, सर्व सुलभ होने पर्यन्त अध्ययन शोध में प्रवर्तित अनुसन्धान रहेगा ही।

1.8 मानवीयता मानव में सफल होने के अर्थ में सम्पूर्ण अनुसन्धान शोध, कार्य-व्यवस्था, अभ्यास बदलाव होना ही स्वाभाविक है।

1.9 सर्व शुभ के अर्थ में सम्पूर्ण प्रयासों की सार्थकता है।

1.10 शुभाकांक्षा सर्व मानव में निहित है।

1.11 जाने हुए को मानना, माने हुये को जानना ही मानव की आवश्यकता है। यही समाधान व प्रमाण के लिए सूत्र है।

1.12 जानने-मानने की सम्पूर्ण वस्तु सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व ही है।

1.13 मानव अधिकार, विधि व नीतियों का ध्रुवीकरण चाहता है अर्थात् इनमें स्थिरता निश्चयता को पहचानना व निर्वाह करना चाहता है।

1.14 कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता, सुखापेक्षा ही शोध एवं अनुसन्धान का आधार है।

1.15 अनुसन्धान निश्चित समाधान के लिए अनुभव सहज अनुक्रम विधि तर्कसंगत स्पष्टता है।

1.16 समस्त सूचनाओं का ग्रहण करने वाला मानव ही है। यही अखंडता-सार्वभौमिकता सहज तथ्य ग्रहण व ध्यानाकर्षण के लिए आधार है।

12.2. जीवन लक्ष्य, मानव लक्ष्य

जीवन लक्ष्य : सुख-शांति-संतोष-आनंद

मानव लक्ष्य : समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व में, से, के लिए प्रमाण।

2.1 भाषा में हर विचार सूचना का आधार है।

2.2 मानव मूल्य सहज सफलता जीवन लक्ष्य में, से, के लिए सफलता है।

2.3 सफलता का तात्पर्य जागृति व जागृति सहज प्रमाण ही है।

2.4 सर्व शुभ मानव तथा जीवन मूल्य सूत्रों की व्याख्या है।

2.5 जीवन लक्ष्य सार्थक होने के प्रमाण में मानव-लक्ष्य प्रमाणित होना आवश्यक है। मानव लक्ष्य प्रमाणित होते ही जीवन मूल्य सफल होता है यही सर्व शुभ परम्परा है।

2.6 जागृत मानव परम्परा में ही सुख-शांति-संतोष आनन्द रूपी जीवन लक्ष्य और समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व प्रमाण ही

मानव लक्ष्य है।

2.7 मनः स्वस्थता को प्रमाणित करने के उद्देश्य से ही जागृति अवश्यंभावी होता है।

2.8 सुदूर विगत से ही मानव जीवन में मौलिक रूप से सुरक्षित एवं सुखी होने की अपेक्षा बनी रही। इसलिए 'मध्यस्थ-दर्शन' सह-अस्तित्ववाद को अपनाना निश्चित हो गया। इससे सफलता सुनिश्चित है।

2.9 मानवापेक्षा सदा से सुरक्षित, सुखी रहने की है।

2.10 सीमायें इकाईयों में, से, के लिए है।

2.11 मानव लक्ष्य मानवत्व के योगफल में ही जागृति मूलक शिक्षा, न्याय सुरक्षा, उत्पादन कार्य, विनिमय कार्य, स्वास्थ्य संयम कार्य है।

2.12 नियति सहज नियम ही विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति के अर्थ में है।

2.13 हर मानव जंगल युग से इस वर्तमान युग तक सुरक्षित रहना चाहता रहा है।

2.14 सुरक्षित विधि से ही सर्व मानवापेक्षा सहज अभय सहित जागृति क्रम से जागृति की ओर गतिशील होना स्वाभाविक है।

2.15 समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व सूत्र व्याख्या रूपी आचरण-व्यवहार-कार्य-व्यवस्था ही सर्व शुभ परम्परा है। स्वान्तः सुख वाद, सुविधा संग्रहवाद, व्यक्ति वाद, मनोगत मनोकामना

वाद प्रवृति से किया गया कार्य व्यवहार से मानव समाधानित नहीं हुआ। अस्तु, सह-अस्तित्व वादी नजरिया से किया गया कार्य-व्यवहार, शिक्षा-संस्कार, संविधान-व्यवस्था ही मानव के लिए शरण है।

2.16 सह-अस्तित्व वादी समझ के अनुसार विवेक व विज्ञान विधि से सदा सत्य, अन्तिम सत्य, परम सत्य समझ में आता है। भ्रम पूर्वक किया गया कामनावश संवेदनात्मक क्षणिक सुखाभास घटना रूपी असत्य स्पष्ट होता है। औचित्य क्रम से निश्चियों के आधार पर किया गया कार्य-व्यवहार, फल परिणामों के आधार पर समझदारी की तृप्ति ही जीवन-लक्ष्य व मानव-लक्ष्य की सार्थकता है।

2.17 जागृति सहज शुभ सर्व मानव में, से, के लिए स्वीकार है।

2.18 सर्व शुभ के लिए कार्य, व्यवहार, विचार जागृतिपूर्वक सार्थक होता है।

2.19 मानवत्व रूपी स्वधर्म विधि से सभी विधाओं में, से, के लिए मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व का प्रमाण है। यही सुख, शान्ति, संतोष, आनन्द सम्पन्नता है। यही धर्म है। स्वधर्म ही मानवधर्म, मानवधर्म ही सुख, सुख ही समाधान है।

2.20 मानव लक्ष्य के लिए किए गये कार्य-व्यवहार के आधार पर आहार-विहार व्यवहार भी सर्व शुभ सहज व्याख्या है।

2.21 स्वयं में, से, के लिए किये गये निरीक्षण-परीक्षण से जीवन सहज पहचान होती है।

2.22 मानवीय आहार को पहचानना सर्व मानव में, से, के लिए आवश्यक है।

2.23 अभिव्यक्ति, संप्रेषणा से प्रस्तुत आशय अन्य को समझ में आना है। यह प्रकाशन सूचनात्मक है। सूचनायें अध्ययन पूर्वक अनुभव प्रमाण रूप में अभिव्यक्तियाँ हैं।

12.3. जागृति, जागृत परंपरा, जागृत मानव

जागृत परंपरा : अनुभव मूलक समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व सहज वैभव परंपरा

जागृत मानव : सहअस्तित्व में अनुभव मूलक अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन

3.1 हर मानव में निर्भ्रमता ही सह-अस्तित्व में जागृति है।

3.2 जागृति मानव में से, के लिए नियति सहज स्वीकृति है।

3.3 जागृत परम्परा सहज हर नर-नारी में जागृति अनुभव मूलक प्रमाण है।

3.4 जागृति का धारक-वाहक केवल मानव ही है।

3.5 जागृति सहज प्रमाण ही मानवत्व सहित परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था एवं सर्व मानव में, अखण्ड समाज में सार्वभौम व्यवस्था के रूप में प्राप्त अधिकार है। प्राप्त अधिकार का तात्पर्य विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति विधि से प्राप्त अधिकार से है। यह जागृत-परम्परा नियति प्रदत्त है।

3.6 हर मानव में, से, के लिए सार्थकता अस्तित्व में जागृतिपूर्वक सफल होना ही सहज है।

3.7 जागृति सर्व मानव अथवा हर नर-नारी में, से, के लिए, मौलिक, सर्वप्रथम अधिकार, आवश्यकता है। यही सर्वमानव स्वीकार योग्य सूत्र है।

3.8 सर्व मानव में, से, के लिए जागृति सहज शिक्षा संस्कार नियति सहज विधि से होता है।

3.9 जागृति हर नर-नारियों में, से, के लिए परम्परा के रूप में स्वत्व-स्वतंत्रता-अधिकार है।

3.10 हर नर-नारी नियति विधि से अर्थात् सह-अस्तित्व विधि से नियमित, संतुलित, नियंत्रित होना अनुभव कर सकते हैं, प्रमाणित कर सकते हैं एवं प्रमाणित होना ही जागृति है।

3.11 तर्क संगत पद्धति का तात्पर्य प्रयोजन पूर्वक किया गया क्रियाकलाप, कार्य व्यवहार में प्रमाणित होने योग्य प्रणाली सहित प्रेरणाकारी क्रिया है।

3.12 जागृति के प्रमाण में ही समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी और फल परिणाम, समझदारी की पुष्टि में होता है।

3.13 समझदारी सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान ज्ञाता के रूप में एवम् मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में होना-रहना ही जागृति सहज प्रमाण है।

3.14 हर मानव में, से, के लिए व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण आचरण ही है।

3.15 मानवीयता पूर्ण आचरण ही हर मानव इकाई का वर्तमान है।

3.16 वर्तमान होने का प्रमाण ही आचरण सहित होना।

3.17 जागृति सर्व मानव में, से, के लिए स्वीकृत अथवा स्वीकारने योग्य आवश्यकता है।

3.18 स्वीकृति आवश्यकता में, से, के लिए प्रवर्तनशीलता हर मानव में स्पष्ट है।

3.19 परम्परा जागृत रहने के आधार पर ही मानव पीढ़ी से पीढ़ी प्रेरित व स्फूर्त रहना पाया जाता है।

3.20 मानव कुल में, से, के लिए जागृति अर्थात् समझदारी अक्षुण्ण सतत् स्त्रोत परम्परा के रूप में सर्व सुलभ होता है।

3.21 जागृत परम्परा में ही मानवीय शिक्षा संस्कार, मानवीय आचरण संहिता रूपी संविधान, मानवीयता पूर्ण परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सहित सह-अस्तित्व में अनुभव मूलक व्यवहार व प्रयोग उत्पादन कार्य, विनिमय कार्य, स्वास्थ्य संयम कार्य, न्याय सुरक्षा कार्य, मानवीय शिक्षा-संस्कार कार्य सहज प्रमाण सम्पन्नता का बोध सहित स्वयं में विश्वास पूर्वक श्रेष्ठता का सम्मान सम्पन्न होना है।

3.22 जागृत परम्परा में ही जीवन ज्ञान, सह-अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण-ज्ञान स्वीकृत रहता है और स्वीकार योग्य शिक्षा संस्कार प्रणाली पद्धति नीति स्पष्ट रहता है।

3.23 जीवन का अध्ययन क्यों और कैसे के साथ होता है। मानव सहज उद्देश्य पूर्ति प्रक्रिया प्रणाली पद्धति का स्पष्ट बोध और अनुभव होता है। फलतः प्रमाण परंपरा होना सहज है।

3.24 जागृत जीवन ही दृष्टा, कर्त्ता, भोक्ता पद से समाधान संपन्न है।

3.25 सहजता से जीवन जागृत होने का उपाय सार्वभौम व्यवस्था सर्व शुभ के अर्थ में सोच-विचार, निर्णय, समझ एवं कार्य-व्यवहार

परम्परा ही है।

3.26 जागृति में, से, के लिए अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ही वाङ्गमय के रूप में मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद है।

3.27 सह-अस्तित्व रूपी परम सत्य अनुभव, प्रमाण, बोध, संकल्प, साक्षात्कार, चित्रण, न्याय-धर्म सत्यात्मक तुलन, विश्लेषण सहज आस्वादन पूर्वक चयन क्रियाकलाप ही जागृति पूर्ण जीवन मानसिकता प्रमाण है।

3.28 जागृति पूर्ण जीवन मानसिकता ही स्वायत्तता है जो मानव परम्परा में ही प्रमाणित होता है।

3.29 ज्ञानावस्था में मानव भ्रमवश पीड़ित अथवा जागृतिपूर्वक सुखी होना स्पष्ट है।

3.30 जीवन्त मानव सहज मानसिक निर्णयों के आधार पर क्रिया प्रक्रिया के विश्लेषण से मूलतः मानसिकता स्पष्ट होती है।

3.31 मानव परम्परा में सार्थकता, सफलता जागृति है।

3.32 जागृत परम्परा में, से, के लिए सह-अस्तित्व में अनुभव सहज समझ सहित परमाणु-अंश, परमाणु, अणु, अणु-रचित रचना, यौगिक क्रिया, रसायनिक उर्मी, प्राण सूत्र रचना विधि प्राण कोषा, प्राण कोषाओं से रचित रचना बीज-वृक्ष विधियों के विकास क्रम सार्थक होना स्पष्ट होता है और परमाणु में विकास, गठन पूर्णता, जीवन पद, जीवनी क्रम, जीवन जागृति क्रम, जागृति स्पष्ट होता है।

3.33 जागृत मानव परम्परा में ही भौतिक, रासायनिक एवं जीवन क्रियायें

सह-अस्तित्व में अध्ययन सम्पन्नता जागृत मानव समझा रहता ही है।

3.34 जागृति हर मानव में, से, के लिए मौलिक अधिकार है।

3.35 जागृति ही मानव में, से, के लिए मौलिक स्वत्व है।

3.36 चारों अवस्थाओं के साथ ही मानव का होना स्पष्ट है। जीने के लिए जागृति आवश्यक है।

3.37 हर मानव का अभिव्यक्ति संप्रेषणा और प्रकाशन में जागृति या भ्रम स्पष्ट होता है।

3.38 हर नर-नारी जागृत होना व रहना चाहते हैं।

3.39 हर नर-नारी जागृति क्रम में भ्रमित तथा जागृति पूर्ण विधि से प्रमाणित होते हैं।

3.40 हर मानव को सदा जागृति में संपन्न होने वाली आशा, विचार, इच्छा, संकल्प, प्रमाण, अनुभव बोध, साक्षात्कार, तुलन-आस्वादन क्रियाओं का पहचान होना है। क्रियाओं को पहचानना ही जीवन की सम्पूर्ण पहचान है।

3.41 मन वृत्ति में, वृत्ति चित्त में, चित्त बुद्धि में, बुद्धि आत्मा में और आत्मा सह-अस्तित्व में अनुभूत होना ही ''स्व'' निरीक्षण परीक्षण है।

3.42 जागृत मानव परिभाषा सूत्र के आधार पर मानवीयता सहज व्याख्या है मनः स्वस्थता सहज प्रमाण है।

3.43 मानव इन पाँच कोटि में गण्य है- अमानव कोटि में पशु मानव और राक्षस मानव, मानव कोटि में मानव, अतिमानव कोटि में

देव मानव और दिव्य मानव।

3.44 जागृत मानव ही समाधानित एवं समृद्ध होता है।

3.45 जागृत मानव से देव मानव, देव मानव से दिव्य मानव श्रेष्ठ परंपरा है। भ्रमित अमानव के लिए जागृत मानव श्रेष्ठ है इस क्रम में श्रेष्ठता का सम्मान विधि स्पष्ट है। दिव्य मानव पद में ही समानता सम्पन्न व पूर्ण होता है।

3.46 दिव्य मानव और देव मानव जागृति पूर्णता को प्रमाणित करते हुए मानवीयता पूर्ण आचरण सहित व्यवस्था में वैभव है।

3.47 मानव, देव मानव, दिव्य मानव का मानवीयता पूर्ण आचरण सहित अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना स्वाभाविक है।

3.48 जागृत मानव में न्याय दृष्टि जीवन-ज्ञान प्रधान, धर्म सत्य दृष्टि जन-बल, धन-बल, यश-बल कामना सहित प्रवृत्तियाँ एवं धीरता प्रधान धीरता, वीरता, उदारता सहज स्वभाव सहित आचरण में स्पष्ट होता है।

3.49 देव मानव पद में वैभवित हर नर-नारी में यश-बल प्रवृत्ति न्याय, धर्म प्रधान सत्य दृष्टि, वीरता, उदारता, दया प्रधान स्वभाव, आचरण में प्रमाण सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी स्पष्ट होता है।

3.50 दिव्य मानव पद में हर नर-नारी परम सत्य दृष्टि प्रधान धर्म, न्याय, मानव लक्ष्य, जीवन लक्ष्य प्रमाणित होता है और दया, कृपा, करूणा प्रधान धीरता, वीरता, उदारता सहज स्वभाव होता है।

3.51 जागृत मानव रूपी ज्ञानावस्था के अनन्तर देव व दिव्य मानव पद समीचीन रहता है।

3.52 देव मानव पद में हर नर-नारी में जन-धन कामनायें गौण और यश बल कामना प्रधान होती है। इस कारण से मानव देव मानव का सम्मान करना स्वाभाविक रहता है साथ में समानता का सम्मान होता ही है।

3.53 दिव्य मानव पद में हर नर-नारी जन-धन-यश-बल कामना से मुक्त सह-अस्तित्व रूपी परम सत्य में अनुभूत परम ऐश्वर्य रूपी स्वतंत्रता व स्वराज्य सहज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सहित प्रमाण प्रस्तुत करना, कराना स्वाभाविक रहता है।

3.54 समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी में परिपक्वता प्रमाण सम्पन्नता ही दिव्य मानव पद सहज ऐश्वर्य और सार्थकता है।

3.55 दिव्य मानव पद में सम्पूर्ण जीवन मूल्य, मानवत्व तथ्य प्रमाणित रहता है।

3.56 मानव ही जागृति सहज प्रमाणों का धारक वाहक है।

3.57 मानव व देव मानव क्रिया पूर्णता सहज प्रमाण है। दिव्य मानव आचरण पूर्णता का प्रमाण है।

3.58 मानवीयता पूर्ण मानव ही ''समझे हुए'' को समझाने, ''सीखे हुए'' को सिखाने, ''किए हुए'' को कराने में प्रमाणित रहता है। यह जागृति का साक्ष्य है।

3.59 ''समझे हुए'' को समझाने में, से, के लिए जागृति सहज प्रमाण समाधान के रूप में प्रमाणित होता है। यही मनः स्वस्थता का

वर्तमान है। यही मनःस्वस्थता है।

3.60 ''सीखा हुआ'' को सिखाने, ''किया हुआ'' को कराने में समृद्धि के लिए सम्पन्न होने वाला कर्माभ्यास सहज स्वीकार होता है। यही मनाकार को साकार करने का प्रमाण है।

12.4. सार्थकता, प्रयोजन, नियति

सार्थकता : सहअस्तित्व में अखण्डता, सार्वभौमता सहज सूत्र व्याख्या ही अभ्युदय सहज परंपरा

प्रयोजन : उपयोगिता, पूरकता

नियति : सहअस्तित्व सहज प्रकटन वर्तमान

4.1 विद्यार्थियों में सफलता सार्थकता ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता के लिए जिज्ञासा सहित निष्ठा प्रमाण परंपरा से है।

4.2 सेवक (सहयोगी) की सार्थकता कर्त्तव्य निर्वाह से है।

4.3 स्वामी (साथी) की सार्थकता दायित्व निर्वाह करने में से है।

4.4 उत्पादन में सार्थकता सामान्य आकाँक्षा व महत्वाकाँक्षा संबंधी वस्तुओं से समृद्ध होने के लिए प्रयुक्त कुशलता, निपुणता पाण्डित्य से है।

4.5 न्याय सुरक्षा कार्य की सार्थकता उभय अथवा परस्पर तृप्ति के अर्थ में है।

4.6 स्वास्थ्य संयम कार्य की सार्थकता, जागृति को अभिव्यक्त करने के अर्थ में है।

4.7 समझदारी की सार्थकता सर्वतोमुखी समाधान सहज प्रवृत्तियों के रूप में कार्य-व्यवहार के रूप में है।

4.8 ईमानदारी का प्रयोजन नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, समाधान, सत्य में विश्वास व इसमें निरन्तरता सहज प्रमाण है।

4.9 स्वयं में विश्वास का प्रयोजन जागृति सहज अक्षुण्णता (निरंतरता) में है।

4.10 श्रेष्ठता सहज सम्मान व प्रयोजन मूल्यांकन परस्परता में तृप्ति, पूरकता व उपयोगिता के अर्थ में है।

4.11 प्रतिभा का प्रयोजन समाधान स्वायत्तता के अर्थ में, स्वायत्तता का प्रयोजन जागृत परम्परा में समझ कार्य व्यवहार, समझ में निपुणता कुशलता पांडित्य शिक्षा संस्कार परम्परा में से जो प्राप्त रहता है उसे अन्य को समझाने, सिखाने, कराने में विश्वास से है।

4.12 व्यवसाय में स्वावलंबन का प्रयोजन परिवारगत आवश्यकता से अधिक उत्पादन और समृद्धि का प्रमाण है।

4.13 व्यवहार में सामाजिक होने का प्रयोजन अखण्ड समाज व सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी है।

4.14 अखण्ड समाज व सामाजिकता का प्रयोजन, समाधान समृद्धि अभयता सह-अस्तित्व सहज प्रमाण परंपरा सर्वसुलभ होना रहना ही है।

4.15 सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी का प्रयोजन समाधान समृद्धि अभय सह-अस्तित्व सहज प्रमाण है।

4.16 समाधान सहज प्रयोजन सुख है।

4.17 समाधान समृद्धि सहज प्रयोजन सुख शान्ति है।

4.18 समाधान समृद्धि अभय सहज प्रयोजन सुख शान्ति सन्तोष है।

14_manviya_samvidhaan_sootravyakhya_2007_c

4.19 समाधान समृद्धि अभय सह-अस्तित्व सहज प्रयोजन सुख, शान्ति, सन्तोष, आनन्द है।

4.20 आनन्द सहज प्रयोजन सह-अस्तित्व में, से, के लिए अनुभव सहज प्रमाण पूर्ण वैभव है।

4.21 संतोष का प्रयोजन अनुभव सहज प्रमाण बोध और अभिव्यक्ति होने का संकल्प मनः स्वस्थता सहज प्रमाण है।

4.22 शांति का प्रयोजन अनुभव सहज प्रमाण बोध, संकल्प का साक्षात्कार चित्रण अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रमाण है।

4.23 सुख का प्रयोजन अनुभव सहज प्रमाण बोध, संकल्प, साक्षात्कार, चित्रण व तुलन, विश्लेषण अभिव्यक्ति और संप्रेषणा प्रकाशन है।

4.24 आस्वादन का प्रयोजन अनुभव सहज प्रमाण, बोध, संकल्प, साक्षात्कार, तुलन, विश्लेषणपूर्वक निश्चित मूल्यों में तादात्म्यता, तदाकार, तद्रूप विधि से मूल्यों का आस्वादनपूर्वक सम्बन्धों का चयन, निर्वाह रूप में प्रमाण अभिव्यक्ति-सम्प्रेषणा-प्रकाशन है।

4.25 संवेदनाओं का प्रयोजन संज्ञानीयता में से नियंत्रित रहना है।

4.26 संज्ञानीयता का प्रयोजन जागृति सहज प्रमाण है।

4.27 जागृति का प्रयोजन मानवत्व सहित सह-अस्तित्व सहज प्रमाण परम्परा में ही भौतिक रासायनिक वस्तुओं का सदुपयोग प्रयोजनशील होना और जीवन क्रिया तथा जागृति को प्रमाणित करना और मूल्यांकन करना है।

4.28 भौतिक रासायनिक वस्तु का उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजन का

प्रमाण शरीर पोषण, संरक्षण समाज गति में नियोजन है।

4.29 सदुपयोग का प्रयोजन व्यवस्था में पूरकता सहज प्रमाण है।

4.30 प्रमाणशीलता का साक्ष्य आवर्तनशीलता व समाधान समृद्धिकरण में नियोजन है।

4.31 आवर्तनशीलता का प्रयोजन, बार-बार घटित होना है।

यथाः 1. संगठन-विघटन, विघटन-संगठन, मृदा-पाषाण मणि-धातु की ओर, मणि-धातु मृदा-पाषाण की ओर

2. रचना-विरचना, विरचना-रचना, बीज वृक्ष की ओर, वृक्ष बीज की ओर

4.32 सार्वभौमता का प्रयोजन मानव इकाई अथवा ज्ञानावस्था रूपी इकाई में, से, के लिए ज्ञान-विवेक-विज्ञान विधा से स्वीकृति सहज पूरकता उपयोगिता और दर्शन सहित विचार व्यवस्था में भागीदारी सहजतापूर्वक सार्वभौमता अखण्डता परंपरा नित्य समीचीन होने रहने से हैं।

4.33 सर्व मानव में, से, के लिए जागृति सहज ज्ञान विवेक, विज्ञान, योजना पूर्वक किया गया कार्य व्यवहार, अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी ही नियति है।

4.34 नियति = सह-अस्तित्व सहज नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक विकास और जागृति मानव में, से, के लिए प्रमाणित होने रहने से है।

4.35 सह-अस्तित्व मानव परंपरा में नित्य प्रभावी होना ही नियति है।

4.36 नित्य वर्तमान ही सह-अस्तित्व है।

4.37 नियति विधि से परिणाम परिवर्तन होते हैं। फलतः विकास व जागृति प्रमाणित होता है।

4.38 नियति नित्य प्रभावी है। यह वर्तमान है।

4.39 ज्ञानावस्था नियति क्रम में प्रमाणित वैभव है।

4.40 सर्व मानव में से के लिए मानवत्व सहित व्यवस्था परिवार में प्रमाणित होना और स्वराज्य मूलक परिवार व्यवस्था में भागीदारी करने के रूप में स्पष्ट होता है।

4.41 समाधान, समृद्धि, अभयता सहित सह-अस्तित्व में प्रमाणित होना ही जागृत मानव सहज समाधान, समृद्धि सहित सौभाग्य है।

12.5. सह-अस्तित्व, व्यवस्था

सहअस्तित्व : सत्ता में संपृक्त प्रकृति

व्यवस्था : न्याय, समाधान, समृद्धि, अभय, नियम, नियंत्रण, संतुलन सहअस्तित्व सहज वैभव ही नित्य वर्तमान है।

5.1 नियति, नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य रूपी सह-अस्तित्व ही परम सत्य है।

5.2 सह-अस्तित्व में, से, के लिए नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म व सत्य नित्य वर्तमान प्रकाशन है। यही नियति है।

5.3 अस्तित्व ही सह-अस्तित्व रूप में नित्य वर्तमान है।

5.4 सह-अस्तित्व अनादि और अनवरत (निरंतर) है।

5.5 सह-अस्तित्व अनादि, शाश्वत, अनन्त और व्यापक है।

5.6 सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति ही चार अवस्थाओं व पदों में गण्य है।

5.7 सह-अस्तित्व में भौतिक, रासायनिक व जीवन क्रियाकलाप ही विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति में, से, के लिए प्रमाण है। जीव शरीर और मानव शरीर भी प्राण कोशाओं से रचित रहता है। इसकी विरचना भी होती है। इसमें से रचना को जन्म विरचना को मृत्यु कहा जाता है।

5.8 पदार्थावस्था में संगठन विघटन एवं प्राणावस्था में रचना विरचना है। जीवावस्था क्रूर-अक्रूर एवं ज्ञानावस्था भ्रम-निर्भ्रम है।

5.9 रचना-विरचना, विरचना-रचना परिणाम का द्योतक होते हुए मूल पदार्थ का अस्तित्व नित्य वर्तमान है।

5.10 अस्तित्व न ही घटता है न ही बढ़ता है, स्थिर है।

5.11 अस्तित्व सहज नित्य वर्तमान ही है। यही स्थिरता, दृढ़ता, निश्चयता, निरन्तरता, नियति सहज नित्य है।

5.12 पूर्ण पूर्णता व संपूर्ण ही सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व सहज नित्य वैभव है।

5.13 अस्तित्व सहज वस्तु में, से, के लिए व्यापक वस्तु स्थिति पूर्ण एवं स्थिति पूर्ण सत्ता में सम्पृक्त प्रत्येक एक अपने ही वातावरण सहित सम्पूर्ण होना पाया जाता है।

5.14 सम्पूर्णता ही प्रत्येक एक भौतिक रासायनिक इकाईयों में, से, के लिए यथा स्थिति है।

5.15 प्रत्येक एक अपने यथास्थिति पूर्वक ही ''त्व'' सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करते हैं।

5.16 सह-अस्तित्व ही नित्य शाश्वत वर्तमान है।

5.17 सह-अस्तित्व का अर्थ व्यापक वस्तु में ही सम्पूर्ण एक-एक वस्तु संपृक्त नित्य वर्तमान और अविभाज्य है।

5.18 हर मानव भी एक-एक रूप में गण्य है। मानवत्व सहित मानव ही अपने में वैभव है।

5.19 मानव ''त्व'' सहित व्यवस्था होना, समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज स्पष्टता है और पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था में नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक व्यवस्था स्पष्ट है।

5.20 व्यवस्था नियति सहज नित्य वैभव है। यह हर मानव में, से, के लिए समझ में आना आवश्यक है।

5.21 नियति सहजता का तात्पर्य नियम, नियंत्रण, संतुलन के अर्थ में मानवेत्तर प्रकृति की व्यवस्था और न्याय-धर्म (समाधान) सत्य सहज ही मानव ध्रुवस्थ है। ध्रुवस्थ का तात्पर्य निश्चित स्थिति-गति से है।

5.22 सह-अस्तित्व में, से, के लिए नियति निश्चित वर्तमान है।

5.23 मानवेत्तर प्रकृति नियम, नियंत्रण, सन्तुलन पूरकता-उपयोगिता विधि से 'त्व' सहित व्यवस्था है।

5.25 सम्बन्धों की पहचान के आधार पर हर नर-नारी नियंत्रित होना पाया जाता है।

5.26 समझदारीपूर्वक ही नियम, नियंत्रण, सन्तुलन, न्याय, समाधान (धर्म), सत्य जागृत मानव परंपरा में, से, के लिए प्रमाण है।

5.27 सह-अस्तित्व में प्रत्येक एक सभी ओर प्रकाशमान है। व्यापक वस्तु सभी एक-एक में प्राप्त है क्योंकि सभी अवस्था में सभी

इकाईयाँ व्यापक सत्ता में सम्पृक्त हैं।

5.28 व्यापक वस्तु स्थितिपूर्ण है, क्योंकि जहाँ इकाईयाँ है और जहाँ इकाईयाँ नहीं है ऐसी उभय स्थिति में व्यापक वस्तु है। व्यापक वस्तु असीमित है और सभी एक-एक वस्तु का सीमित होना रहना स्पष्ट है।

5.29 व्यापक में जड़ चैतन्य प्रकृति सहज सम्पृक्तता ही प्रत्येक एक में ऊर्जा संपन्नता और क्रियाशीलता है। जीवन जागृति क्रिया सहज पहचान सहित आचरण है।

5.30 परस्पर पहचान सम्बन्ध व मूल्य निर्वाह ही जागृति सहज प्रमाण है।

5.31 जड़ प्रकृति में कार्य सीमायें जो जितना लम्बा-चौड़ा-ऊँचा होता है जैसा एक परमाणु एक धरती अपने वातावरण सहित उतना ही विस्तार में कार्यरत रहना, प्रभाव सीमा सम्पन्न रहना, हर इकाईयों में परस्परता में निश्चित अच्छी दूरियाँ रहता है।

5.32 परस्परता में अच्छी दूरियाँ एक दूसरे के प्रभाव क्षेत्र से मुक्त स्थिति-गतियाँ हैं।

5.33 अच्छी दूरी, स्थिति गतियाँ स्वयं स्फूर्त रहती है। परमाणु, अणु, प्राण कोषाओं से रचित रचना, ग्रह-गोल, सौर व्यूह, आकाश गंगा, पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था नियंत्रण संतुलन के रूप में होना मानव को विदित होता है। साथ ही यह भी समझ में आता है कि भ्रमित मानव अनियंत्रित है। न्याय समाधान (मानव धर्म) सत्य सहज जागृत परंपरा में नियंत्रण सहज है।

5.34 न्याय सम्बन्धों में प्रयोजन सहज पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति संतुलन ही मानव परंपरा में नित्य उत्सव है।

5.35 तृप्ति व सन्तुलन ही सर्व मानव में, से, के लिए स्वभाव गति एवम् प्रमाण है।

5.36 सह-अस्तित्व में अखण्ड समाज गति रुपी सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित एवं वर्तमान होना ही जागृत मानव सहज वैभव है।

5.37 सह-अस्तित्व नित्य प्रमाणित वर्तमान और प्रभावी है।

5.38 सह-अस्तित्व में ही समाधान, समृद्धि, अभय अर्थात् वर्तमान में विश्वास सम्पन्नता जागृत मानव परंपरा में प्रमाण है।

5.39 सह-अस्तित्व विधि में से के लिए व्यापक वस्तु में सम्पूर्ण एक-एक वस्तु प्रेरित रहना स्पष्ट हो चुका है।

5.40 व्यापक वस्तु पारगामी पारदर्शी होना परम प्रतिष्ठा है। व्यापक वस्तु में सम्पूर्ण जड़ चैतन्य रूपी एक-एक वस्तु संपृक्त प्रेरित होना-रहना नित्य सह-अस्तित्व सहज वैभव है।

5.41 प्रत्येक एक वस्तु व्यापक वस्तु में संपृक्तता वश नित्य निरपेक्ष उर्जा में सदा प्रेरित रहना स्वत्व है। व्यापक वस्तु पारगामी होने का प्रमाण संपूर्ण प्रकृति स्वयंस्फूर्त विधि से ऊर्जा संपन्नता क्रियाशीलता है, इसलिए सत्ता (व्यापक वस्तु) में संपूर्ण एक-एक वस्तु (जड़-चैतन्य) सम्पृक्त है जिसका दृष्टा जागृत मानव ही है।

5.42 अविनाशीता (नित्यता) सह-अस्तित्व रूप में सदा वर्तमान ही है। सह-अस्तित्व में ही विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति पद अथवा पदों के रूप में स्पष्ट है।

5.43 खनिज, वनस्पति व जीव संसार ऋतु संतुलन के अर्थ में प्राकृतिक नियम और इनकी परस्परता में पूरक, उपयोगिता नियम वर्तमान है इन तीनों स्वरूपों में विद्यमान सभी इकाइयाँ त्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी नियम सहज वर्तमान यही पूरकता विधि है।

5.44 पूरक विधि से ही उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनीयता जागृत मानव परम्परा में, से, के लिए नित्य वैभव रुप में वर्तमान है।

5.45 हर मानव में, से, के लिए जागृति जीवन लक्ष्य सहज प्रमाण व्यवस्था है। मानवत्व अनुभव अनुभवमूलक विधिपूर्वक सफल हैं।

5.46 व्यापक वस्तु पारदर्शी, पारगामी, साम्य ऊर्जा सहज सत्ता, स्थिति पूर्ण सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति स्थितिशील है यही भौतिक रासायनिक और जीवन इकाईयों में बल सम्पन्न क्रियाशील, परिणामशील, विकास क्रमशील, विकास, जागृतिशील, जागृति व जागृति पूर्ण अवस्था व पदों में नित्य वर्तमान होना सहज है।

5.47 भौतिक रासायनिक व जीवन क्रिया पद-भेद से अर्थ-भेद होना प्रमाणित है।

5.48 क्रियाशीलता ही आचरण के रूप में स्पष्ट है।

5.49 श्रम, गति और परिणाम और परिणाम का अमरत्व, श्रम का

विश्राम, गति का गन्तव्य के रूप में सम्पूर्ण क्रियायें स्पष्ट हैं।

5.50 सम्पूर्ण क्रियायें सह-अस्तित्व में, से, के लिए ही है।

5.51 अवस्था व पद भेद से आचरण भेद है। जो यथास्थिति सहज वर्तमान है।

5.52 अस्तित्व में प्राणपद, भ्रान्तिपद, देवपद और दिव्यपद प्रसिद्ध है।

5.53 प्राणपद में पदार्थावस्था से प्राणावस्था विकास व प्राणावस्था से पदार्थावस्था ह्रास क्रम में पूरकता-उपयोगिता विधि से वैभव है।

5.54 विकास व ह्रास क्रम में प्राण-पद चक्र विधि से वर्तमान है। यही भौतिक रासायनिक क्रिया है।

5.55 जीवावस्था में जीवन शरीर रचना के अनुसार वंशानुषंगीय विधि से कार्यरत रहता है।

5.56 क्रिया-प्रक्रिया-आचरण से ही परस्परता विधि में, से, के लिए प्रत्येक का मूल्यांकन होता है।

12.6. जागृत मानव परम्परा

6.1 मानव-परंपरा में हर नर-नारी पीढ़ी दर पीढ़ी अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन होने के आधार पर जानने-मानने के आधार पर अपने को परस्परता में पहचानता, निर्वाह करता है।

6.2 दुर्घटनाओं के आधार पर आधारित सूचनायें सूची बनकर रह जाती है, न कि जीने के रूप में परंपरा।

6.3 मानव ही जागृति सहज शिक्षा - संस्कार पूर्वक मानवीय संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था का धारक-वाहक है। यही मानवीयता

पूर्ण परंपरा है।

6.4 सह-अस्तित्ववादी समझ ही जागृत परम्परा है।

6.5 जागृति सम्पन्न मानव-परम्परा में निर्वाह सहज मूल प्रवृत्तियाँ साक्ष्य है।

6.6 प्रत्येक जागृत मानव (नर-नारी) समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी का धारक-वाहक है अथवा होना चाहता है। यही मानव-परम्परा सहज अक्षुण्णता है।

6.7 समझदारी-ईमानदारी रूपी सहज सार्थकता ही जागृत मानव परंपरा है।

6.8 मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज स्वीकृति, अभिव्यक्ति की सम्प्रेषणा प्रकाशन प्रमाण है। यही जागृत मानव-परंपरा है।

6.9 सर्व मानव जागृति पूर्वक स्वीकृति सहित किया गया कार्य-व्यवहार व्यवस्था सहज रुप में प्रमाणित होना ही सत्य स्वीकृत सम्पन्न मानव परम्परा है।

6.10 जागृत परम्परा सर्व मानव में अखण्ड समाज के अर्थ में सार्थक है।

6.11 सर्व मानव का सम्पूर्ण कार्य-व्यवहार उत्पादन विनिमय, स्वास्थ्य संयम, न्याय सुरक्षा, शिक्षा संस्कार सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में प्रमाण प्रस्तुत करना ही जागृत परम्परा है।

6.12 यथास्थितियों के आधार पर ही विकास व जागृति सहज वैभव मानव परंपरा में प्रमाणित होता है।

6.13 मानव परम्परा ही जागृति सहज वैभव का धारक वाहक है क्योंकि मानव ज्ञानावस्था में नियति विहित इकाई है।

6.14 ज्ञानावस्था में हर नर-नारी सोच-विचार समझ के आधार पर अपनी पहचान बनाते हुए, जानते मानते हुए देखने को मिलता है।

6.15 हर नर-नारी स्व निर्णय के अनुसार आजीविका पूर्वक कार्य-व्यवहार करने लगता है तब से अपने को समझदार मानना होता है।

6.16 सर्व मानव सुखी होने के अर्थ में ही स्वतंत्र अन्यथा परतंत्र कार्य-व्यवहार करता है।

6.17 हर मानव में, से, के लिए भी आशा, विचार, इच्छायें स्वयम् स्फूर्त होता हुआ स्पष्ट है।

6.18 हर जागृत मानव अनुभव मूलक प्रमाण बोध, संकल्प, साक्षात्कार, चित्रण, तुलन, विश्लेषण और सह-अस्तित्व रूप सत्य सहज आस्वादन पूर्वक चयन क्रिया सम्पन्न होता है।

6.19 हर मानव जागृति पूर्वक मानव-लक्ष्य, जीवन-लक्ष्य सफलता में, से, के लिए शुभ कार्य-व्यवहार पूर्वक उपकार करता है।

6.20 शुभ सर्व मानव में स्वीकृत है।

6.21 शुभ सहज परंपरा ही समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व है।

6.22 सर्व शुभ कार्य, व्यवहार, व्यवस्था, आचरण, विचार ज्ञान-विवेक विज्ञान ही मानव कुल में, से, के लिए नित्य उत्सव है।

6.23 जीवन लक्ष्य व मानव-लक्ष्य सहज प्रमाण परंपरा ही सर्व शुभ है।

6.24 सर्व शुभ परंपरा में भागीदारी से ही सर्व शुभ सुलभ रहता है।

6.25 सर्व मानव को मानवीयता के आधार पर पहचानना ही अखण्ड समाज के रूप में सर्व शुभ के लिए प्रमाण है।

6.26 सर्व मानव मानवत्व सहित परिवार में प्रमाणित होना और वैभव सहज स्वराज्य मूलक परिवार व्यवस्था में भागीदारी करने के रूप में स्पष्ट होता है।

6.27 जागृत मानव परम्परा में हर नर-नारी स्वानुशासनपूर्वक अखण्ड सामाजिकता के अर्थ में अभिव्यक्त रहते हैं और मानवत्व सहित परिवार में व्यवस्था, परिवारमूलक स्वराज्य-व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित होता है।

6.28 जागृत परम्परा में हर नर-नारी स्वयं में समग्र अस्तित्व में, परस्पर मानव संबंधों में और मानवेत्तर प्रकृति के साथ व्यवस्था सूत्र के आधार पर विश्वास ही स्वयं में विश्वास है।

6.29 जागृत परम्परा में हर नर-नारी नियम-नियंत्रण-संतुलनपूर्वक न्याय-धर्म-सत्याभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन में सार्थक एवं समान है।

6.30 समस्त मानव जागृतिपूर्वक ही व्यवस्था में, से, के लिए प्रमाणित होता है।

6.31 मानव परम्परा में सम्बन्धों के आधार पर न्याय प्रमाणित होता है।

6.32 सर्व शुभ में ही स्व-शुभ समाया है। यही अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन सहज ध्रुव बिन्दु है।

6.33 सर्व मानव में शुभ ही मानव परम्परा सहज वैभव है।

6.34 सर्व शुभ का स्रोत नित्य समीचीनता सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन सहज समझ लक्ष्य दिशा-निर्णय क्रियाकलाप ही चिन्तन का स्वरूप है। यह साक्षात्कार है।

6.35 मानव परम्परा में ही जागृति सहज परम्परा वैभव है।

6.36 सर्व मानव में, से, के लिए जागृति सहज समझ, विचार, व्यवहार-कार्य का अपनाना आवश्यक है।

6.37 जागृत मानव परम्परा में अनुसन्धान और शोधपूर्वक जागृति का वैभव परंपरा सहज रुप में सार्थक है।

6.38 दृष्टा-पद व जागृति मानव-परम्परा में ही प्रमाणित होता है।

6.39 हर नर-नारी अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में सर्वस्वीकृत विधि से सुख सुन्दर समाधान सहज वैभव सम्पन्न होना प्रमाणित है।

6.40 जागृति व जागृति पूर्णता में, से, के लिए मानव परंपरा संतुलित और सुरक्षित है।

6.41 जागृति पूर्वक मानवीयतापूर्ण परम्परा मानव कुल में ही जागृति सहज वैभव है। यह मानव चेतना, देव चेतना व दिव्य चेतना सहज वैभव है।

6.42 जागृत परम्परा निरन्तरता के अर्थ में ही वैभव सम्पन्न है।

6.43 मानव परम्परा सहज घटना, पदार्थ, प्राण, जीवावस्था के समृद्ध होने के उपरान्त ही ज्ञानावस्था का उदय है।

6.44 सर्व शुभ के अर्थ में ही शुभ कामनायें विचार व्यवहारपूर्वक प्रमाण है।

6.45 सर्व मानव ज्ञानावस्था सहज इकाई है।

6.46 मानव ही सम्पूर्ण अध्ययनपूर्वक ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्न होना ही मानवाधिकार स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार पूर्वक सार्थक होना पाया है। कार्य-व्यवहार-व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदारी सम्पन्न होना जागृत मानव परम्परा में वैभव है।

6.47 मानव परम्परा में सौंदर्य व्यक्तित्व प्रधान रुप में जागृति है।

6.48 हर नर-नारी में, से, के लिए समान अधिकार समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी के रूप में है।

6.49 ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत काल क्रिया निर्णयवादी कार्य-विचार-मानसिकता सहित समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व-सहज प्रमाण ही सर्व शुभ और परम्परा है, अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन मानव में, से, के लिए जीता जागता व्यवहार और व्यवस्था में भागीदारी के रूप में स्पष्ट होता है।

6.50 शुभ कामनायें जागृतिपूर्वक मानव-लक्ष्य व आचरण के रूप में प्रमाणित होता है।

6.51 मानव परम्परा में ही समस्त प्रकार के प्रवर्तनों के मूल में सुखी होने की आकांक्षा समाया रहता है।

6.52 शुभ की चाह मानव जाति में सहज प्रकाशन है। सर्व शुभ ज्ञान सहज योजना पर्यन्त शोध अनुसन्धान होना स्वाभाविक है।

6.53 अधिकार विधि नैतिकता सहज प्रभाव सहित कार्यक्रम ही

व्यवस्था है।

6.54 हर शुभ प्रेरणा मानव में, से, के लिए कार्य स्वयं स्फूर्त प्रवृत्त रूप में स्पष्ट है।

12.7. ज्ञान, समझदारी, अध्ययन, संज्ञानीयता

ज्ञान : सह अस्तित्व रूपी दर्शन, जीवन, आचरण सहज संयुक्त ज्ञान प्रमाण

समझदारी : ज्ञान विवेक विज्ञान सहित प्रमाण

अध्ययन : अधिष्ठान की साक्षी में अनुभव प्रमाण सम्पन्न होने के अर्थ में किया गया क्रियाकलाप

संज्ञानीयता : ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता सहज प्रमाण

7.1 मानव परम्परा में विकास-क्रम, विकास और जागृति क्रम, जागृति सहज-समझ ज्ञान सार्थक होता है।

7.2 मानवीयतापूर्ण आचरण सहज-समझ ज्ञान है।

7.3 सह-अस्तित्व में, से, के लिए जानना-मानना ही ज्ञान और पहचानना निर्वाह करना प्रमाण उसका सर्व सुलभ होना ही सर्व शुभ ज्ञान है।

7.4 मानव में जानना-मानना ही पहचान व निर्वाह करने का आधार है।

7.5 ज्ञान-विवेक-विज्ञान समस्त निर्णयवादी कार्य-विचार, मानसिकता सहित अभिव्यक्ति संप्रेषणा-प्रकाशन मानव में, से, के लिए जीता-जागता जागृति सहज व्यवहार और व्यवस्था में

भागीदारी के रूप में स्पष्ट होता है।

7.6 अभिव्यक्ति सम्प्रेषणापूर्वक समझदारी, ईमानदारी, भागीदारी स्पष्ट होता है और सम्प्रेषणा-प्रकाशनपूर्वक ही हर मानव मानवत्व सहित व्यस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज रुप में प्रमाणित है।

7.7 सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य सह-अस्तित्व है । अस्तु, सह-अस्तित्व दर्शन-ज्ञान, जीवन-ज्ञान और मानवीयता पूर्ण आचरण-ज्ञान ही सम्पूर्ण ज्ञान है । ज्ञान के आधार पर अथवा ज्ञान सम्मत विधि से मानव-लक्ष्य को पहचानना विवेक है । मानव-लक्ष्य स्वयं में समाधान समृद्धि अभय सह-अस्तित्व सहज प्रमाण है जिसके लिए दिशा निर्धारित कर लेना विज्ञान है।

7.8 समझदारी ही मानव में, से, के लिए अविभाज्य अक्षुण्ण ऐश्वर्य है।

7.9 समझदारी का वैभव सुख, समाधान, समृद्धि, परस्परता में विश्वास और नित्य उत्सव होता ही रहता है । इसके लिए समझदारी बौद्धिक प्रयोग, विवेकपूर्वक तथा समाधान, समृद्धि, अभय सह अस्तित्व प्रमाणित होने की विधि से सर्व मानव सुखी होते हैं। इसका प्रयोग न्याय व समाधानपूर्वक-सार्थक सुखी होना पाया जाता है। धन का प्रयोग उदारतापूर्वक करने से सार्थक सुखी होते हैं। बल का प्रयोग दया पूर्वक जीने देने व जीने के रूप में सार्थक होता है । रूप के साथ सच्चरित्रता, यथा-स्वधन, स्वनारी, स्वपुरूष, दयापूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार विचार से ही सार्थक सुखी होना होता है। यह सर्व शुभ होने की विधि है जो लोक-शिक्षा और शिक्षा-संस्कार पूर्वक सार्थक होता है।

7.10 परस्परता में पूरकता व उपयोगिता पूरकता विधि विदित होना ही यथा स्थिति ज्ञान है।

7.11 यथा स्थिति ज्ञान में ही ''त्व'' सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी स्पष्ट होती है।

7.12 जीवन-ज्ञान, सह-अस्तित्व दर्शन-ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण-ज्ञान का संयुक्त रूप में सम्पूर्ण अध्ययन, बोध और अनुभव होना जागृति है।

7.13 जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में मानव का अध्ययन है।

7.14 मानवत्व ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत होना, विज्ञान विवेक के आधार पर व्यवहार बोधगम्य होना, फलस्वरूप योजनाओं के आधार पर कार्य-योजना सम्पन्न होना जिसका फल, परिणाम मूल ज्ञान के अनुरूप होना सर्वतोमुखी समाधान है।

7.15 सह-अस्तित्व परम सत्य होना ही ज्ञेय है।

7.16 जीवन ज्ञान ही ''स्व'' स्वरूप ज्ञान है।

7.17 जीवन-ज्ञान स्वयं में विश्वास का आधार है।

7.18 ज्ञाता पद में मानव में, से, के लिए जीवन-ज्ञान, सह-अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान ही सम्पूर्ण ज्ञान प्रमाण परम्परा है।

7.19 ज्ञान सम्पन्नता सहज प्रमाण ही जागृति पूर्ण दृष्टि-दृष्टा पद सहज अभिव्यक्ति व प्रमाण और परम्परा में, से, के लिए त्राण व प्राण है।

7.20 समझदारी जीवन-ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण-ज्ञान, सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन-ज्ञान है।

7.21 समझदारी के अनुसार विवेक-विज्ञान से सम्पन्नता जागृत मानव सहज निर्णय व विचारों के रूप में है।

7.22 जिम्मेदारियाँ सम्बन्धों के आधार पर है।

7.23 भागीदारी अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में, से, के लिए है।

7.24 मानव में, से, के लिए सह-अस्तित्व ज्ञान-विवेक-विज्ञान पूर्वक ही नित्य व नैसर्गिक और मानव के साथ विधिवत जीना सहज है।

7.25 मानव परम्परा में शुभ कामना सहज है।

7.26 अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन बनाम ''मध्यस्थ-दर्शन'' सह-अस्तित्ववाद मानव जीवन-ज्ञान, अस्तित्व दर्शन-ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान सम्पन्न होने की सूत्र व व्याख्या है। यह अध्ययन पूर्वक बोध अनुभव सम्पन्न होना समीचीन है।

7.27 सह-अस्तित्ववादी दृष्टि में, से, के लिए सम्पूर्ण अध्ययन है।

7.28 अस्तित्व क्यों ? कैसा है ? का उत्तर तर्कसंगत विधि से व्यवहार प्रमाण रूप में है। कितना है ? का उत्तर-आवश्यकता से अधिक है।

7.29 अस्तित्व कैसा है ? सह-अस्तित्व रूप में है।

7.30 क्यों है ? का उत्तर विकास-क्रम, विकास, जागृति-क्रम, जागृति के रूप में, से, के लिए नित्य वर्तमान होने-रहने के लिए है।

7.31 सह-अस्तित्व में जागृत मानव सहज आवश्यकता से अधिक

उत्पादन होना ही जागृति सहज मानवीयता नित्य समीचीन है। इसकी नित्य संभावना स्पष्ट है।

7.32 अस्तित्व कैसा है? यह चार अवस्था और चार पदों में स्पष्ट है। यही क्यों कैसे का उत्तर है।

7.33 हर मानव ''है'' का अध्ययन करता है। ''होना'' ही ''है'' के रूप में वर्तमान है।

7.34 ''होना'' और ''है'' निरन्तरता के अर्थ में रहना स्पष्ट है निरन्तरता सूत्र अर्थात् व्यापक वस्तु में सम्पृक्त प्रकृति सम्पूर्ण एक-एक अथवा चारों अवस्था, चारों पद सम्पृक्त हैं। यही सम्पूर्ण अस्तित्व है।

7.35 भौतिक, रासायनिक और जीवन क्रिया का अध्ययन इनके मूल में परमाणु ही स्वयं स्फूर्त विधि से क्रियाशील होने रहने का अध्ययन है। स्वयं स्फूर्तता साम्य ऊर्जा सम्पन्नता में है।

7.36 जाग्रत मानव ज्ञानावस्था व देव पद में होने के आधार पर, जीवन और शरीर का संयुक्त रूप में अध्ययन और जागृति पूर्ण विधि से जीने का अध्ययन है।

7.37 जागृति अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में जीने का अध्ययन साथ में जीवन-लक्ष्य, मानव-लक्ष्य, नियति लक्ष्य सार्थक सूत्र-व्याख्या ज्ञानपूर्वक सफल होने के लिए अध्ययन सुलभ है।

7.38 सर्व शुभ ज्ञान, ज्ञान-विवेक-विज्ञान पूर्ण कार्य व्यवहार व्यवस्था, फल परिणाम के फलन में अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सहज वर्तमान ही अभ्युदय सर्वतोमुखी समाधान समृद्धि अभय

सह-अस्तित्व है।

7.39 प्राण-पद, भ्रांत-पद, देव-पद, दिव्य-पद में सम्पूर्ण जड़-चैतन्य प्रकृति विद्यमान है। मानव परंपरा में देवपद दिव्यपद परंपरा ही जागृति सहज प्रमाण हैं।

7.40 मानव में, से, के लिए अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ही समझदारी सहज सम्मान व प्रमाण है।

7.41 अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व में विकास-क्रम-विकास जागृति-क्रम जागृति समझ में परिपूर्णता है। समझदारी में परिपूर्णता का तात्पर्य मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र में भागीदारी प्रमाणित होने से है।

7.42 मानव में, से, के लिए सह-अस्तित्व सहज, सम्पूर्ण समझ ही परिपूर्णता है।

7.43 मानव कल्पनाशीलता कर्म स्वतंत्रता सहज बहु आयामों में प्रवर्तनशील है। इसलिए सह-अस्तित्व सहज प्रमाण सम्पन्न होना भावी है।

7.44 सह-अस्तित्व में प्रत्येक इकाई अपनी स्वभाव गति सहज प्रमाण में ही 'त्व' सहित व्यवस्था के रूप में होना अध्ययन गम्य है।

7.45 सहअस्तित्व सहज विधि सूत्र नियम-नियंत्रण-सन्तुलन-न्याय-धर्म-सत्य ही है। जिसे चारों अवस्था व पदों में देखा जा सकता है।

7.46 ज्ञान अवस्था में होने के कारण हर मानव का सहअस्तित्व में ज्ञान सम्पन्न होना सहज है। समझदारी ही ज्ञान सम्पन्नता है।

7.47 समझदारीपूर्वक ही मानवीयता प्रमाणित होता है। यह परस्परता में स्पष्ट होता है।

7.48 संवेदनायें शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्धेन्द्रिय क्रिया के रूप में स्पष्ट है। संज्ञानीयता पूर्वक संवेदनाएं नियंत्रित रहती हैं। संज्ञानीयता के अभाव में संवेदनायें अनियंत्रित रहती है। संज्ञानीयता मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना सहज वैभव है।

7.49 संज्ञानीयतापूर्वक अथवा जागृतिपूर्वक मानवीयता सहज कार्य-व्यवहार व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित होती है।

7.50 समझदारी में, से, के लिए अध्ययन कार्यकलाप का सफल होना ही अभ्युदय है।

7.51 समझदारी के अनन्तर प्रमाणित होना ही श्रेय है। श्रेय सर्वशुभ अभ्युदय सहज परंपरा है।

7.52 प्रेय का तात्पर्य चार विषयों के वश में किया गया विचार-कार्य-व्यवहार से मुक्त है।

7.53 जागृत मानव पद में हर नर-नारी संवेदनाओं का नियंत्रण एवं समाधान सम्पन्नता सहित ऐषणा नियम त्रय प्रवृत्ति सहित व्यवस्था में प्रमाणित होते रहता है।

7.54 मानव ही अस्तित्व में ज्ञानावस्था के पद में प्रतिष्ठा है। इसलिए समझदार होना आवश्यक है।

7.55 ज्ञानावस्था मौलिक रूप में सार्थक, स्थिर, निश्चित वैभव है।

7.56 जागृत मानव ही ज्ञाता पद में है इसलिए ज्ञेय और ज्ञान का धारक-वाहक होना पाया जाता है।

7.57 समाधान ही सुख है। समझदारी पूर्वक समृद्ध-सम्पन्न मानसिकता सहित किया गया श्रम-नियोजन से समृद्धि सुलभ होता है।

7.58 समझदारी सह-अस्तित्व सहज विधि से सर्व सुलभ रहता है।

7.59 तर्कसंगत पद्धति का तात्पर्य प्रयोजनपूर्वक किया गया प्रक्रिया कार्य-व्यवहार में प्रमाणित होने योग्य प्रणाली सहित प्रेरणाकारी प्रयोजनशील क्रिया है।

12.8. जीवन, दृष्टापद

जीवन : गठनपूर्ण परमाणु, परिणाम का अमरत्व सहित नित्य विद्यमान होना, रहना यही चैतन्य इकाई जीवन है।

दृष्टापदः मानव में शून्याकर्षण ही नियन्त्रित संवेदना सम्पन्न प्रभाव समेत सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण बोध संकल्प सहित, बोध संकल्प चिंतन चित्रण सहित, चिन्तन चित्रण क्रम सहित तुलन विश्लेषण पूर्वक आस्वादन चयन क्रिया-कलाप सहित दृष्टा पद में होना रहना है। यही समझदारी सम्पन्नता है। इसके लिए स्त्रोत चेतना विकास मूल्य शिक्षा-संस्कार है।

8.1 जागृत जीवन ही ज्ञाता पद में वैभव है। ज्ञान सम्पन्न होना ही जागृति और मानव कुल में ज्ञाता पद सहज प्रमाण है।

8.2 सहअस्तित्व में गठनपूर्णतावश जीवन रूपी परमाणु अमर, अपरिणामी, चैतन्य इकाई, नित्य होने का अध्ययन होता है।

8.3 जीवन में जागृति व जागृति पूर्णता है और जीवन नित्य है, क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता सहित आहार-व्यवहार पूर्वक स्वस्थ शरीर का भी मूल्यांकन होता है।

8.4 जीवन में ही स्वयं का, जीव जगत व जीवन महिमा का पहचान विचार निश्चयन दृढ़ता प्रमाण, सह अस्तित्व में अनुभव सहज प्रमाण, अनुभव का बोध सहज संकल्प, न्याय-धर्म-समाधान-सत्य सहज स्वीकृति विश्लेषण, मूल्यों का आस्वादन सहित संबंधों का चयनपूर्वक कार्य-व्यवहार में, से, के लिए अध्ययन व्यवहार अनुभव है।

8.5 जीवन ज्ञान में मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि, आत्मा में निश्चित क्रियाकलापों का अध्ययनपूर्वक बोध, अनुभव, अनुभवपूर्वक बोध है। अनुभव प्रमाण ही परम है।

8.6 मन-वृत्ति-चित्त-बुद्धि-आत्मा में परावर्तन प्रत्यावर्तन द्वारा मानव में प्रमाण बोध होता है। अध्ययन पूर्व अनुभव बोध, अनुभव प्रमाण बोध होता है।

8.7 जीवन में अनुभव प्रमाण का परावर्तन बोध सहित होना प्रमाणों का नित्य स्रोत है।

8.8 जीवन-जागृति अनुभव सहज प्रयोजन होने का बोध व प्रमाण समाधान है।

8.9 मानव में जीवन्तता का तात्पर्य शरीर व जीवन संयुक्त रहने तक है।

8.10 सभी अंग अवयव सहित शरीर को जीवन ही जीवन्तता प्रदान कर स्वस्थ सुरक्षित बनाये रखता है। फलस्वरूप जीवन अपनी जागृति को प्रमाणित करता है। यही जीवन्तता का तात्पर्य है।

8.11 मन में आशा, वृत्ति में विश्लेषण, चित्त में चित्रण के योगफल में

मनाकार साकार होता है। यह सभी समुदाय-परंपरा में स्पष्ट है। ऐसे समुदायों में मनः स्वस्थता सहज आवश्यकता बना ही रहता है।

8.12 सीमायें अवस्था व पदों के आधार पर अखण्डता क बोध भ्रमवश एक-एक समुदाय समूह के रूप में वर्तमान है। जीवन नित्य है इसलिए जीवन में आशा व सुख धर्म प्रमाणित होना निश्चित है।

8.13 अस्तित्व धर्म शाश्वत् पदार्थावस्था में द्रष्टव्य है। पुष्टि धर्म देशकालीय प्राणावस्था में स्पष्ट है। आशा धर्म जीवावस्था में स्पष्ट है। मानव में सुख धर्म प्रतिष्ठा स्पष्ट है। यही जागृति है। समाधान = सुख; समस्या = दुःख।

8.14 जागृति जीवन में, से, के लिए सहज प्रतिष्ठा है। शरीर रचनानुसार वंश रूप में स्पष्ट है। मानव धर्म सुख है क्योंकि जीवन नित्य है। मानव धर्म जागृतिपूर्वक प्रमाण व अक्षुण्ण है। जीवन सहअस्तित्व में अनुभवपूर्वक प्रमाण है। मानव तथा जीवों की शरीर रचना के मूल में रसायन द्रव्य प्राण कोषा के रूप में है। यह रसायन भौतिकता का वैभव है।

8.15 जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह कर पाना जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में, से, के लिए होता है न कि केवल शरीर या जीवन में, से, के लिए। इसलिए संयुक्त रूप से मानसिकता को परस्परता में पहचानने का आधार है।

8.16 हर मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में, से, के लिए प्रमाणित रहना ही सर्व शुभ है।

8.17 जागृति सहज परंपरा ही सम्पूर्ण मानव सहज वर्चस्व है।

8.18 जीवन में सम्पूर्णता अनुभव मूलक अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन ही जागृति है।

8.19 जीवन वर्चस्व जागृति है।

8.20 जीवन सार्थकता जागृति है।

8.21 जीवन प्रमाण जागृति है।

8.22 जीवन सहज ऐश्वर्य वैभव के रूप में जागृति है।

8.23 जीवन ही मानव परंपरा में जागृति क्रम में अथवा जागृतिपूर्वक होना पाया जाता है।

8.24 मानव परंपरा में भी जीना जीवन्तता पूर्वक पीढ़ी से पीढ़ी निरन्तर क्रिया-प्रक्रिया है।

8.25 स्व-निरीक्षण परीक्षणपूर्वक ही समझ, जागृति और स्वयं में विश्वास होना पाया जाता है।

8.26 हर नर-नारी में समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी सहज प्रमाण प्रस्तुत करने का समान अधिकार है जो सार्वभौम है। यह अधिकार कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित भेदों से प्रमाणित होता है। यही विधि सूत्र है।

8.27 जीवन ज्ञान पूर्वक स्व-स्वरूप में विश्वास दृढ़ता ही दृष्टा-पद प्रतिष्ठा है।

8.28 दृष्टा-पद प्रतिष्ठापूर्वक सह-अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीय आचरण में, से, के लिए दृढ़ता, प्रक्रिया, प्रयोजन मूल्यांकन होता

है।

8.29 दृष्टा-पद जागृति ही समझदारी का प्रमाण है।

8.30 समझदारी ईमानदारी का संयुक्त प्रमाण ही ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज प्रमाण है।

8.31 दृष्टा-पद सहित जागृति में ही मानवत्व सहज प्रमाण है।

8.32 समझदारी पूर्ण प्रमाण सम्पन्नता ही दृष्टा पद है। यह परम्परा सहज देन है।

8.33 दृष्टा पद में ही जागृतिपूर्वक, सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व प्रमाणित होता है। यही प्रखरता है।

8.34 दृष्टा-पद में स्वयं स्फूर्त विधिवत प्रवृत्तियाँ सर्वशुभ कार्य-व्यवहार में प्रमाणित होती है।

8.35 उत्पादन-कार्य सम्बन्धों में निर्वाह विधि से किया गया कार्य-व्यवहार व व्यवस्था में भागीदारी में दृष्टा-पद का प्रमाण व्यवस्था सहज रूप में स्पष्ट होता है।

8.36 दृष्टा-पद प्रतिष्ठा में मानवीयता पूर्ण पहचान ही आधार व प्रमाण है।

8.37 दृष्टा-पद प्रतिष्ठा ही जागृति सहज प्रमाण है।

8.38 दृष्टा-पद सहज जागृति में ही ज्ञान विवेक और विज्ञान का स्पष्ट प्रयोजन प्रमाणित होता है।

8.39 दृष्टा-पद में जागृत मानव ज्ञातत्व, वक्तृत्व व कृत्तत्व सम्पन्न है।

8.40 दृष्टत्व-ज्ञातत्व सहज विधि से स्वत्व वक्तृत्व अविभाज्य है।

12.9. अखण्ड समाज-सार्वभौम व्यवस्था

अखण्ड समाज : मानव जाति, धर्म समझ, लक्ष्य समान होने के आधार पर।

सार्वभौम व्यवस्था : चारों अवस्थाएं व पदों के साथ मानव समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व में ''जीने देना, जीना'' प्रबुद्धता संप्रभुता व प्रभुसत्ता सहज प्रमाण है।

9.1 सह-अस्तित्व सहज विधि से सर्वतोमुखी समाधान सहज सर्वशुभ ज्ञान, विचार, कार्य, व्यवहार, आचरण ही अखंडता और सार्वभौमिकता सहज प्रमाण है।

9.2 जागृत मानव परम्परा में सार्थकता सहज प्रमाण अथवा मानवत्व सहज साक्ष्य रुपी अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था और उसकी निरन्तरता ही अक्षुण्णता है।

9.3 जागृत मानव-परम्परा सहज सार्थकता के साक्ष्य में प्रबुद्धता, सम्प्रभुता, प्रभुसत्ता स्पष्ट होना आवश्यक है। यही सार्वभौमता, अखंडता व अक्षुण्णता सहज सूत्र व्याख्या है।

9.4 प्रबुद्धतापूर्ण सत्ता रूप में अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था ही है। प्रबुद्धता ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नतापूर्ण प्रमाण परंपरा है।

9.5 सम्पूर्ण मानव अर्थात् प्रत्येक नर-नारी अपने में एक समझदार इकाई रूप में पहचानना आवश्यक है यह अखण्ड समाज सूत्र है।

9.6 अखण्ड समाज का तात्पर्य सर्व मानव को एक जाति, एक धर्म, एक आचरण के रूप में पहचानना समीचीन है।

मानव जाति एक, कर्म अनेक

मानव धर्म एक, समाधान अनेक

धरती एक, राज्य अनेक

सत्ता सहज व्यापक अखण्ड वस्तु रूपी ईश्वर सर्वव्यापक, देवता अनेक

9.7 मानव लक्ष्य एक समान

जीवन मूल्य एक समान

मानव मूल्य एक समान

स्थापित मूल्य एक समान

शिष्ट मूल्य में मानवत्व समान

9.8 मानव जीवन रूप में समान

जीवन क्रिया समान

जीवन लक्ष्य समान (जीवन मूल्य के रूप में)

जागृति पूर्ण जीवन में अखण्डता सार्वभौमता सहज प्रवृत्तियाँ समान (सुख, शांति, संतोष, आनन्द)

9.9 जागृत मानव समाज विधि से अखण्ड समाज है।

9.10 मानवीयता पूर्ण व्यवस्था सार्वभौम है ही।

9.11 सर्व मानव में, से, के लिए परिभाषा समान व्याख्यानुसार कार्य

व्यवहार आचरण का फल परिणाम प्रभाव-सत्य-न्याय-समाधान-नियम-नियंत्रण-सन्तुलन समान है।

9.12 मानव में, से, के लिए समझदारी समान

ईमानदारी समान

जिम्मेदारी समान

भागीदारी से फल परिणाम समान है।

9.13 जागृत मानव (प्रत्येक नर-नारी) में, से, के लिए अनुभव प्रमाण, समाधान, सत्य, न्याय समान है।

9.14 जागृत मानव में,से, के लिए नियम, नियंत्रण, संतुलन समान है।

9.15 जागृत मानव परम्परा में जीवन सहज अक्षय बल, अक्षय शक्ति समझ समान है।

9.16 जागृत मानव परम्परा में जीवन ज्ञान समान है।

9.17 जागृत मानव परम्परा में प्रत्येक नर-नारी में, से, के लिए मौलिकता सहज स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार समान है।

9.18 जागृत मानव परम्परा में मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहज समानता है।

9.19 सर्व मानव में, से, के लिए जागृत जीवन समानता व्याख्या सूत्र ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का आधार है।

9.20 जागृत मानव परिभाषा के अर्थ में समान होता है।

9.21 जागृत मानव परिभाषा, व्याख्यानुरूप आचरण में समान और आचरण का प्रयोजन समान है।

9.22 मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी ही जागृति का प्रमाण है। यह प्रत्येक नर-नारी में, से, के लिए समान है।

9.23 अखण्ड सामाजिकता की स्वीकृति प्रत्येक नर-नारी में, से, के लिये होना आवश्यक है।

9.24 व्यवस्था दश सोपनीय विधि से सार्वभौम होना नित्य समीचीन है। इसमें प्रत्येक नर नारी भागीदारी करना समान है।

9.25 सम्पूर्ण मानव जाति एक होने के कारण मानव कुल एक फलस्वरूप अखण्ड समाज और अखण्ड सामाजिकता सहज समझदारी का लोक व्यापीकरण आवश्यक है।

9.26 सम्पूर्ण मानव का सार्वभौम लक्ष्य सदा सदा के लिये समान है। यही परम्परा का आधार है।

9.27 सर्व मानव शुभ अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सम्पन्न होना ही वैभव है।

9.28 सुदूर विगत से मानव परम्परा की गतिविधि, घटनाओं के आंकलन से पता चलता है कि अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था को पहचाना नहीं गया इसलिये विकल्प रुप में सह-अस्तित्ववादी प्रस्तुति है।

9.29 अखण्डता सार्वभौमता ही वर्तमान में प्रमाण है।

9.30 मानवीय संस्कृति-सभ्यता-विधि-व्यवस्था ही सार्वभौमता व अखण्डता सहज सूत्र व्याख्या है।

9.31 सर्व शुभ कार्य व्यवहार ही अखण्डता सार्वभौमता है। यही मंगल मैत्री सूत्र व्याख्या है।

9.32 समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व सहज प्रमाण ही सर्व शुभ परम्परा है।

9.33 जागृतिपूर्वक अनेक जाति, मत, सम्प्रदाय व धर्म वाले भी अखण्ड समाज के अर्थ में प्रमाणित होना समीचीन है।

9.34 जागृतिपूर्वक जीने वाले हर नर-नारी अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या को प्रमाणित करते हैं। यही सर्वशुभ है।

9.35 बहु आयामी प्रवृत्ति ही विविधता का आधार है। जागृतिपूर्वक सभी आयामों में समाधान प्रमाणित होता है यही एकता का आधार है।

9.36 सभी अवस्थाओं में प्रत्येक एक व्यापक वस्तु में संपृक्तावश पहचान (परस्परता) निर्वाह ही स्वयं स्फूर्त व्यवस्था है।

9.37 सर्व शुभ ज्ञान-विज्ञान, विवेकपूर्ण योजना कार्य-व्यवहारपूर्वक पाई जाने वाली सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व प्रमाण है। जागृति मानव परम्परा सहज वैभव व्यवस्था है।

12.10. स्वराज्य, स्वतंत्रता, स्वत्व

स्वराज्य : स्वयं में, से, के लिए जागृत मानव परंपरा सहज वैभव (प्रबुद्धता, संप्रभुता, प्रभुता सहज प्रमाण परंपरा)।

स्वतंत्रता: स्वयं स्फूर्त विधि से मानव चेतना पूर्वक अक्षुणता, सार्वभौमता सहज सूत्र व्याख्या सहज प्रमाण परम्परा है।

स्वत्व : मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

10.1 प्रबुद्धता सहज प्रमाण सहअस्तित्ववादी, ज्ञान-विवेक-

विज्ञानपूर्ण सर्वशुभ संगत समाधान पूर्ण प्रमाण है। संप्रभुता सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता का प्रमाण और प्रभुसत्ता प्रबुद्धता पूर्ण सत्ता के रूप में अखण्ड-समाज, सार्वभौम-व्यवस्था ही वैभव है। यही स्वतंत्रता और स्वराज्य है।

10.2 स्वराज्य को प्रमाणित करने के लिए स्वयं स्फूर्त रहना ही स्वत्व स्वतंत्रता है। मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना स्वराज्य है।

10.3 संप्रभुता सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता सहज प्रमाण है और प्रभुसत्ता प्रबुद्धता पूर्णसत्ता (परम्परा) के रूप में अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था ही वैभव है यही स्वतंत्रता स्वराज्य है।

10.4 स्वतंत्रता ही प्रबुद्धता व प्रभुसत्ता का प्रमाण है और मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी ही प्रभुसत्ता है। यही स्वत्व है, जागृत मानव परंपरा है।

10.5 ''स्वत्व'' ही स्वतंत्रता व अधिकार को प्रमाणित करने का स्रोत है।

10.6 स्वायत्तता स्वयं स्फूर्त स्व-अनुशासन रूपी स्वत्व स्वतंत्रता, स्वराज्य अधिकार वैभव है।

10.7 जागृत मानव सहज परंपरा में आवश्यकताएं सीमित होना, आवश्यकता से अधिक संभावना विद्यमान रहना फलस्वरूप समृद्धि होना समीचीन है।

10.8 आवश्यकता का निश्चय जागृत मानव परिवार में, से, के लिए होता है।

10.9 हर परिवार में आवश्यकताएं निश्चित होने के कारण ही आवश्यकता से अधिक उत्पादन सहज है।

10.10 हर मानव के लिए अनुभव प्रमाण सम्पन्न होना स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार है।

10.11 स्वत्व के अनुरूप किया गया लक्ष्य व दिशा निर्धारण ही स्वतंत्रता है।

10.12 ज्ञान-विवेक-विज्ञान संपन्नता ही स्वत्व अविभाज्य सम्पदा है जो वैभव का आधार है।

10.13 स्वतंत्रता स्वयं स्फूर्त विधि से लक्ष्य व दिशा निर्धारण सहित प्रमाण क्रिया है जो आगे-आगे स्पष्ट योजना व प्रमाण कार्य-योजना गति का उदय सहज प्रवृत्ति है।

10.14 स्वायत्तता स्वयं-स्फूर्त विधि से परिवार व्यवस्था ग्राम मोहल्ला स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी के रूप में स्पष्ट होती है। यही जागृति सहज प्रमाण है।

10.15 स्वत्व ही अधिकार या अधिकार ही स्वत्व, स्वतंत्रता ही विधि या विधि ही स्वतंत्रता, व्यवस्था ही मूल्य-चरित्र-नैतिकता या मूल्य-चरित्र-नैतिकता ही व्यवस्था है। इस प्रकार सर्वशुभ सर्वमानव में, से, के लिए समीचीन है।

12.11. ब्रह्म वर्चस्व

11.1 अखंडता-सार्वभौमता सहज रूप में मानवत्व प्रमाणित होना ही प्रज्ञा है। यही सत्यानुभूत ब्रह्मवर्चस्व है।

11.2 प्रज्ञा सहज प्रमाण ही मेधाविता, तेजस्विता, ओजस्विता और ब्रह्म वर्चस्वता है। अनुभव सहज प्रमाण, चिंतन साक्षात्कार

सहज प्रमाण, ज्ञान-विवेक-विज्ञान संपन्नता सहित किया गया कार्य-व्यवहार फल-परिणाम ज्ञान सम्मत होने में दृढ़ता विश्वास ही प्रज्ञा है। ब्रह्मवर्चस्व है।

11.3 समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी-भागीदारी सहज धारक वाहकता ही वर्चस्व स्वयं स्फूर्त विधि है।

11.4 वर्चस्व ही स्वतंत्रता स्वराज्य के रूप में परम ब्रह्म वर्चस्व है।

11.5 मानव में ही वर्चस्वी होने की कामना सदा से रहा है जिसका प्रमाण जीवन जागृति पूर्ण मानसिकता सहज सफल सार्थक होता है।

11.6 सार्वभौमिकता सहज मानसिकता ही मानव में, से, के लिए वर्चस्व है।

11.7 व्यक्ति, जागृति पूर्वक ब्रह्म वर्चस्व सहज सर्वशुभ सूत्र व्याख्या है और सार्वभौमिकता ही मानव वर्चस्व सहज प्रमाण है।

11.8 वर्चस्व सर्व सुलभ होने की पहचान करने की प्रवृत्ति और परम सत्य में अनुभव प्रमाण ही ब्रह्म वर्चस्व है। यही व्यापक वस्तु में चारों अवस्था व पदों का अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन है।

11.9 जागृत होना ही ब्रह्म वर्चस्व प्रवृत्ति का आधार है।

11.10 परस्परता में अनुभव प्रमाण सहज पहचान होना ही प्रकाशमानता है परस्परता में पहचान निर्वाह ब्रह्म वर्चस्व है।

11.11 सुख एवं समाधान पूर्वक जीने के लिये मनः स्वस्थता प्रधान आवश्यकता है। इसका प्रमाण स्वयं में ब्रह्म वर्चस्व है।

12.12. अनुभव-प्रमाण

12.1 हर मानव में, से, के लिए परावर्तन प्रत्यावर्तन के रूप में ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज आवर्तनशीलता की क्रिया स्पष्ट है। इसी आवर्तन प्रक्रिया क्रम में सह-अस्तित्ववादी नियम, नियंत्रण, सन्तुलन, न्याय, धर्म, सर्वतोमुखी समाधान, सहअस्त्वि रूपी परम सत्य, अध्ययन विधि से बोधगम्य प्रमाणित होने के संकल्प विधि से अनुभव प्रमाण होना पाया जाता है। यही अनुभव प्रमाण है। यही जागृत मानव परंपरा है।

12.2 क्रम से सर्वशुभ है। अनुभव सार्वभौम अक्षुण्ण परम है जिसके आधार पर ही मानव चेतना सहज-व्यवहार, प्रमाण, सामाजिक अखण्डता के अर्थ में व उत्पादन कार्य, प्रयोग, प्रमाण, समाधान पूर्वक समृद्धि के अर्थ में प्रमाणित होना नित्य समीचीन है।

12.3 सर्व शुभ सहज अनुभव प्रमाण परंपरा ही सुख, शान्ति, संतोष, सहज वैभव, सर्वसुलभ होना आनन्द है।

12.4 जीवन वैभव व प्रमाण अनुभवमूलक विधि से प्रमाणित होता है।

12.5 मानवीय-शिक्षा-संस्कार अनुभव प्रमाणमूलक होना समाधान है।

12.6 सर्व मानव का प्रमाण अनुभव-अभ्यास पूर्वक है।

12.7 अनुभव प्रमाण ही जागृति है।

12.8 अनुभव प्रमाण मूलक विधि से ही अनुभवगामी अध्ययन सुलभ

सहज गति प्रभाव है।

12.9 मानव में, से, के लिए अध्ययन आवश्यकता है।

12.10 साक्षात्कार क्रिया के मूल में अनुभव प्रमाण, बोध, संकल्प ही नित्य स्रोत है क्योंकि जीवन नित्य है एवं जीवन में, से, के लिए अनुभव, प्रमाण क्रियाएं नित्य वर्तमान है।

12.11 सह-अस्तित्व में अनुभव प्रकाश ही अनुभव बोध साक्षात्कार होता है।

12.12 जीवन में अनुभवमूलक साक्षात्कार क्रिया स्वयं में निरंतर समाधान है। यही चिंतन है।

12.13 अध्ययन का फल परंपरा नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म (समाधान), सत्य सहज अनुभव बोध क्रियाशीलता ही है। आचरण के रूप में नियम, कार्य व प्रभाव सीमा में नियंत्रण, प्रवृत्तियों के रूप में संतुलन, परस्पर तृप्ति के रूप में न्याय, समाधान सहज रूप में धर्म है। व्यापक में अनन्त नित्य वर्तमान शाश्वत, वैभव के रूप में सत्य बोध अनुभव-व्यवहार-प्रयोग प्रमाण है।

12.14 अपरिवर्तनीय अभिव्यक्तियाँ अनुभव मूलक है।

12.15 जीवन, में, से, के लिए दस क्रियाओं में सामरस्यता अर्थात् अनुभवमूलक विधि सहज प्रमाण ही जागृति है।

12.16 सह अस्तित्व रूपी अस्तित्व में अनुभव प्रमाण ही सम्पूर्ण ज्ञान है।

12.17 सह-अस्तित्व में, से, के लिए किया गया अनुभव मानव परंपरा में ही प्रमाणित होता है।

12.18 अनुभव मूलक व्यवहार, प्रयोग, क्रियाकलाप ही अभिव्यक्ति है जो अखंडता व सार्वभौमता सहज व्यवस्था ही है।

12.19 व्यवस्थात्मक प्रमाण व्यवहार व आचरण है और व्यवस्था में ही संप्रेषणा अभिव्यक्तियाँ प्रमाण रूप में स्पष्ट हैं।

12.20 सहअस्तित्व में अनुभव ही अभिव्यक्ति सूत्र है।

12.21 सहअस्तित्व में अनुभव सहज प्रमाण ही सम्पूर्ण जागृति, जागृतिपूर्ण जीवन्तता है।

12.13. मानव-मानवत्व

13.1 हर जागृत मानव अपनी पहचान को अभिव्यक्ति, संप्रेषणा प्रकाशन रूप में विस्तार भी चाहता है यह प्रमाणित होना मानवत्व है।

13.2 मानव में, से, के लिए अखण्डता-सूत्र-व्याख्या ही विस्तारता सहज शरण है।

13.3 ज्ञान, विवेक विज्ञान संपन्नता सहित मानवीय आहार, विहार, व्यवहार निष्ठा सहित प्रतिभा सहज प्रमाण के रूप में संतुलन ही व्यक्तित्व है। यही मानवत्व है।

13.4 व्यवहार में सामाजिकता का तात्पर्य मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी है।

13.5 मानवीयता ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के रूप में नित्य वैभव, समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व है। यह मानवत्व है।

13.6 मानव परंपरा में मानवत्व ही जीवन्त वैभव ही मानवत्व है।

13.7 मानव जीवन और शरीर का संयुक्त रूप में मानवत्व का प्रमाण है।

13.8 मानव को अपनी मौलिकता को समझना और प्रमाणित करना ही मानवत्व है।

13.9 मानव ज्ञानावस्था में होने के कारण ज्ञान, सहअस्तित्व सहज दर्शन ज्ञान, सहअस्तित्व में ही जीवन होने के कारण जीवन ज्ञान, सहअस्तित्व में ही मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान है। दृष्टा पद में प्रतिष्ठा सम्पन्न होने के कारण समग्र ज्ञान ऊपर के तीन क्रम में स्पष्ट होता है। यही मानवत्व है।

13.10 मानव जीवन में सर्वतोमुखी समाधान ज्ञान मूलक विवेक-विज्ञान विधि से प्रमाणित होता है। यह मानवत्व है।

13.11 मानवीयता संस्कृति सभ्यता विधि-व्यवस्था का संयुक्त और निष्ठा सहज आचरण प्रमाण ही मानवीय संस्कार है। यह मानवत्व है।

13.12 व्यवस्था में प्रमाणित होना, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना, करने के मूल में दिशा व लक्ष्य निश्चित विचार मानसिकता का रहना जो सर्वतोमुखी समाधान के रूप में स्पष्ट रहता है। यह मानवत्व है। विचार मानसिकता के मूल में ज्ञान सम्पन्न रहना ही सम्पूर्ण ज्ञान अथवा समझ ही पूर्ण स्वीकृति, पूर्ण स्वीकृति ही विवेक सम्मत विज्ञान, विज्ञान ही विचार, विचार ही सर्वतोमुखी समाधान, यही अभ्युदय सूत्र है जिसके व्यवस्था-क्रम में योजना, कार्य योजना, जिसका फल परिणाम, सहअस्तित्व ज्ञान सम्मत होना ही मानव संस्कृति सभ्यता का प्रमाण वर्तमान होता है। मानव संस्कृति-सभ्यतापूर्वक विधि-

व्यवस्था स्पष्ट होता है। यह मानवत्व है।

13.13 जागृत मानव संस्कृति ‘‘जीने देने और जीने’’ के अर्थ में सभ्यता है। यह मानवत्व है।

13.14 मानव ही न्याय धर्म सत्य सहज समझदारीपूर्वक मानवत्व सहित व्यवस्था में प्रमाणित होना पाया जाता है।

13.15 न्याय समाधान सहअस्तित्व पूर्वक प्रमाण होना ही जागृति और मानवत्व है।

13.16 मानवत्व जागृति सहज प्रमाण है।

13.17 मानवत्व व्यवस्था सहज सूत्र है।

13.18 मानवत्व मानव परम्परा सहज त्राण व प्राण है अर्थात् स्थिति गति है।

13.19 मानवत्व ही जीवन मूल्य व मानव लक्ष्य का सार्थक सफलतापूर्वक सार्वभौम रूप से वैभवित होने का नित्य सूत्र व स्रोत है। इसलिए हर नर-नारी समझदारीपूर्वक ईमानदारी जिम्मेदारी, भागीदारी सहज विधि है।

13.20 शरीर और जीवन के सहअस्तित्व में ही जागृत मानव इकाई की पहचान है। यह मानवत्व है।

13.21 इस धरती पर रासायनिक भौतिक रचनाओं में, से, मानव शरीर रचना सर्वश्रेष्ठ रचना है क्योंकि मानव में, से, के लिये कल्पनाशीलता कर्म स्वतंत्रता आदि मानव समय से होना स्पष्ट है।

13.22 मानव ही अपनी कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता के आधार पर शिला युग, धातु युग, ग्राम कबीला युग तक, ग्राम कबीला युग

से राजा राज्य युग तक, राजा राज्य सम्प्रदाय (धर्म) युग से लोकतंत्र गणतंत्र शासन आधुनिक युग तक पहुँचे हैं और मानव चरित्र मूल्य और नैतिकता से सम्पन्न नहीं हो पाया इसलिए विकल्प सहज प्रमाण रूप में अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन मध्यस्थ-दर्शन सह-अस्तित्ववाद प्रस्तुत हो चुका है।

13.23 निरीक्षण परीक्षण सर्वेक्षण क्रियाकलापों को सम्पन्न करने वाला मानव ही है।

13.24 मानव ही सम्पूर्ण आयाम, कोण, दिशा, परिप्रेक्ष्य, देशकाल का दृष्टा, ज्ञाता, कर्त्ता, भोक्ता के रूप में प्रमाणित होना ही जागृति है।

13.25 मानव बहु आयामी होने का तात्पर्य समस्त विधाओं में कल्पना, विचार, ज्ञान-विज्ञान, विवेकपूर्वक अभिव्यक्ति, सम्प्रेषण प्रकाशन करता है, करना चाहता है। यह जागृति में, से, के लिए सहज प्रमाण है।

13.26 जागृत मानव में ही बहु आयामी समाधान प्रवृत्ति, दृष्टि, कार्य व्यवहार होना पाया जाता है।

13.27 जानने मानने पहचानने, निर्वाह करने की प्रवृत्ति जागृत मानव में दृष्टव्य है।

13.28 हर मानव शरीर यात्रा के आरंभ समय से ही कल्पनाशीलता और कर्म स्वतंत्रता का प्रकटन रहता ही है।

13.29 कल्पनाशीलता ही सोच विचार अध्ययन करने का स्रोत है। कर्म स्वतंत्रता ही प्रयोग कार्य व्यवहार करने का आधार है। इसी क्रम में शोध अनुसन्धान परम्परा है।

13.30 मानव सहज अध्ययन पूर्वक मानवीय संविधान शिक्षा व्यवस्था

व उत्पादन कार्य-व्यवहार विधि स्पष्ट होता है। यह मानवत्व है।

13.31 मानवत्व हर जागृत नर-नारी सहज आचरण में, से, के लिए प्रमाणित होता है।

13.32 मानवत्व हर नर-नारी का स्वत्व है।

13.33 मानवत्व हर नर-नारी में समानता का सूत्र है।

13.34 मानवत्व अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था का सूत्र है।

13.35 मानवत्व सर्व मानव का स्वत्व है।

13.36 मानवत्व सर्व मानव का अधिकार है।

13.37 मानवत्व ही मूल्यांकन का आधार है।

13.38 मानवत्व ही परस्परता में संबंध व सम्मान सहज सूत्र है।

13.39 मानवत्व ही समानता व श्रेष्ठता सहज आधार बिन्दु है।

13.40 मानवत्व ही मानव सहज पहचान है।

13.41 मानवत्व शिक्षा संस्कार का सूत्र व्याख्या है।

13.42 मानवत्व मानव परम्परा, अखण्डता, सार्वभौमता, अक्षुण्णता सहज सूत्र व्याख्या है।

13.43 मानवत्व मानव परम्परा में जागृति सहज प्रमाण है।

13.44 मानवत्व मानव में, से, के लिए स्वयं स्फूर्त होने का स्रोत है।

13.45 मानवीय शिक्षा-संस्कार का प्रमाण मानवत्व है।

13.46 समझदारीपूर्वक किया गया व्यवहार कार्य व्यवस्था में ज्ञान-विवेक-विज्ञान का स्पष्ट होना ही मानवीयतापूर्ण परम्परा है।

13.47 मानवीयता पूर्ण आचरण में, से, के लिए ज्ञान-विवेक-विज्ञान प्रमाणित होता है।

13.48 जागृति के मूल में सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व ज्ञान, सह-अस्तित्व में ही जीवन-ज्ञान और मानवीयतापूर्ण आचरण-ज्ञान सम्पन्नता है। यह मानवत्व है।

13.49 मानवत्व ही मानव परम्परा में, से, के लिए सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व सहज प्रमाण है।

13.50 मानवत्व मानव में ही प्रमाणित होता है।

13.51 मानवत्व ही जागृत मानसिकता रूप में प्रमाणित मूल्यांकित होता है।

13.52 हर जागृत मानव मूल्यांकन विधि से एक दूसरे को पहचानता और निर्वाह करता है। यह मानवत्व है।

13.53 हर मानव में, से, के लिए जागृति सहज प्रमाण व मूल्यांकनाधिकार सहित स्वत्व स्वतंत्रता ही मौलिकता है।

13.54 मानव में, से, के लिए प्रमाणित व मूल्यांकित करना कराना मौलिक है।

13.55 हर मानव में, से, के लिए जागृति-सहज अधिकार मौलिक है।

13.56 अधिकार ही अनुभव व्यवहार व प्रयोग प्रमाण है।

13.57 मानवीयता पूर्ण विधि से प्रमाणित होना अधिकार है।

13.58 मानव परम्परा में कल्पनाशीलता-कर्म स्वतंत्रता से मनः स्वस्थता सहज प्रमाण परंपरा तक अध्ययन कार्य है।

13.59 हर नर-नारी नियंत्रित रहना चाहते हैं।

13.60 जागृति सहज विधि से नियमपूर्वक हर नर-नारी नियंत्रित रहते हैं।

13.61 सामाजिक नियम ही स्व-धन, स्वनारी, स्व-पुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार है।

13.62 हर मानव संतुलित रहना चाहता है। न्यायपूर्वक मानव संतुलित रहता है।

13.63 समाधानपूर्वक अखण्ड समाज के अर्थ में मानवीयतापूर्ण आचरण प्रमाणित होता है।

13.64 मानवीयता ही अखण्ड समाज सूत्र है।

13.65 मानवत्व ही मानव परम्परा में शिक्षा-संस्कार, संविधान और सार्वभौम व्यवस्था सहज सूत्र है।

13.66 मानवत्व मानवीय गुण, स्वभाव, धर्म का संयुक्त अविभाज्य अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा व प्रकाशन है।

13.67 मानवत्व सर्व मानव में, से, के लिए समझ के रूप में स्वत्व, कार्य-व्यवहार में स्वतंत्रता, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी अधिकार है।

13.68 मानवत्व रूपी स्वत्व के आधार पर ही स्वतंत्रता व अधिकार का प्रमाण होना सहज है।

13.69 मानवत्व सर्व शुभ रूप में दृष्टा-ज्ञाता कर्त्ता पद का वैभव होना ही जागृत मानव परम्परा है।

13.70 प्रत्येक मानव में, से, के लिए मानवत्व ही वैभव है।

13.71 हर जागृत मानव सहज सम्पूर्ण कार्य-व्यवहार सर्व शुभ सूत्र

की व्याख्या है।

13.72 सर्व शुभ ही मानव सहज परिभाषा मानवीयतावादी व्याख्या, मानवीयता पूर्ण आचरण संविधान सह-अस्तित्वपूर्ण दृष्टिकोण से शिक्षा संस्कार सुलभ है।

13.73 मानवीय शिक्षा संस्कार ही जागृत परम्परा में, से, के लिए सार्थक सूत्र व्याख्या प्रक्रिया है।

13.74 मानवीयता मानव के लिए नित्य समीचीन है।

13.75 सर्व मानव में मनः स्वस्थता स्वयं स्फूर्त विधि से स्वयं व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी स्वयं स्फूर्त क्रम में सम्पन्न होता है।

13.76 मानव में, से, के लिए सह-अस्तित्व सहज सम्पूर्ण समझ ही परिपूर्णता है।

13.77 मानवीयतापूर्ण आचरण व्यवस्था के रूप में प्रमाणित होता है। यही मानवत्व सहित व्यवस्था तथा समग्र व्यवस्था में भागीदारी की सूत्र व्याख्या है।

13.78 जीवन मर्यादा मानवत्व सहित परिवार व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी है। मर्यादा का तात्पर्य जागृति, उसका प्रमाण ही मानवीयतापूर्ण आचरण है।

13.79 नियमित प्रवृत्ति व कार्य-व्यवहार, नैतिकता तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा ही है।

13.80 जागृत मानव सहज कार्य-व्यवहार आचरण ही प्रधानतः मानवीय आचरण संहिता रूपी संविधान का मूल सूत्र है जिसकी व्याख्या में सभी आयामों, कोणों देश-दिशा का

स्पष्ट होना ही सम्पूर्ण संविधान है।

13.81 मानवीयता ही मानवत्व है।

13.82 मानवीयता जागृति सहज प्रमाण परम्परा है।

13.83 जानना मानना सम्बन्ध में मूल्य निर्वाह

मानना जानना मूल्यांकन

पहचानना निर्वाह करना उभय तृप्ति सन्तुलन

निर्वाह जीवन सहज नियंत्रण

13.84 हर मानव में समझदारी होना ही मानवीयता पूर्ण आचरण स्पष्ट होता है।

13.85 विधि के आधार पर नैतिकता तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा के रूप में प्रमाणित होता है।

13.86 जागृति सहज अधिकार विधि सम्पन्नता ही मानवत्व है।

13.87 मानवत्व सहित नैतिकतापूर्वक, किया गया कार्य-व्यवहार समेत परिवार व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी नैतिकता सहज प्रमाण है।

13.88 जागृतिपूर्वक जीने का अधिकार, विधि व नैतिकता से संयुक्त अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन मानवत्व है।

12.14. मानवत्व सहज प्रमाण सूत्र

14.1 सह अस्तित्व में अनुभव सहित प्रमाणित होना = जागृति और मानवत्व है।

14.2 अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था स्वीकृत प्रमाण होना

मानवत्व है।

14.3 मानवत्व :- मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना सहज परंपरा।

(अ) मानवीयता पूर्ण आचरण मानवत्व है।

(ब) परिवार व्यवस्था में समाधान व समृद्धि सहज प्रमाण मानवत्व है।

14.4 दस सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी मानवत्व है। मूल्य चरित्र नैतिकता सहज अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन मानवत्व है।

14.5 मानवीयता पूर्ण आचरण यथा -स्व-धन, स्वनारी, स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार सम्बन्धों में पहचान, मूल्यों का निर्वाह व मूल्यांकन, उभय तृप्ति, तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा मानवत्व है।

14.6 सह अस्तित्व :- व्यापक वस्तु में सम्पृक्त सम्पूर्ण एक-एक जड़, चैतन्य प्रकृति जो चार पद एवं चार अवस्था में हैं। इनमें से मानव, मानवीय चेतना पूर्ण विधि से प्रमाणित होना मानवत्व है।

14.7 अनुभव सह अस्तित्व में होने व रहने का प्रमाण मानवत्व है।

14.8 प्रमाण योजना के रूप में अखण्डता वर्तमान ही सार्वभौमता है। यह मानवत्व है।

14.9 होना ही वर्तमान रहना प्रमाण है। वर्तमान ही परंपरा, जागृति पूर्ण परंपरा ही मानवत्व है।

14.10 जागृति-जानना मानना अथवा मानना जानना है। यह प्रमाणित होना मानवत्व है।

14.11 अखण्ड समाज, सम्पूर्ण मानव को एक इकाई के रूप में जानना-मानना और प्रमाणित होना मानवत्व है।

14.12 सार्वभौम व्यवस्था सर्व मानव स्वीकृत सहज कार्य नियम-नियंत्रण-संतुलन, न्याय धर्म-सत्य पूर्वक समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व में, से, के लिए प्रमाण परम्परा मानवत्व है।

14.13 समाज पीढ़ी से पीढ़ी के रूप में परम्परा है। यह जागृति पूर्वक मानवत्व सहज प्रमाण वर्तमान है, यही परंपरा सहज वैभव है।

14.14 सर्व मानव एक इकाई के रूप में अखण्ड समाज अन्यथा समुदाय है। किसी समुदाय ने जिन गतिविधियों को अपनाया है उससे अखण्ड-सूत्र व्याख्या नहीं हो पाता है जबकि अखण्ड समाज में भागीदारी मानवत्व है।

14.15 हर नर-नारी हर विधा में समाधान सम्पन्न रहना मानवत्व है।

14.16 हर मानव परिवार समाधान, समृद्धि सम्पन्न रहना मानवत्व है।

14.17 अखण्ड समाज में समाधान, समृद्धि, अभय परम्परा के रूप में होना मानवत्व है।

14.18 सार्वभौम व्यवस्था में समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व परम्परा सहज विधि से सर्व सुलभता प्रमाणित होना मानवत्व है।

14.19 सह-अस्तित्व अनुभव मूलक मानसिकता और कार्य-व्यवहार मानवत्व है।

14.20 हर मानव में, से, के लिए स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति

सम्मान, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलम्बी होना मानवत्व है।

14.21 ज्ञान, विवेक, विज्ञान रूप में समझे हुए को समझाने में, सीखा हुआ को सिखाने में, किया हुआ को कराने में निष्ठा मानवत्व है।

14.22 श्रेष्ठता का सम्मान सहित मानव, देव, दिव्य मानव का त्व सहज परस्परता में पहचान और स्वयं में निष्ठा को व्यक्त करना अर्थात् अभिव्यक्ति, सम्प्रेषण, प्रकाशन करना मानवत्व है।

14.23 सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, सह-अस्तित्व में जीवन ज्ञान, सह अस्तित्व में मानवीयता पूर्ण आचरण-ज्ञानपूर्वक जीने देना जीना मानवत्व है। यही समझदारी सहज प्रमाण है।

14.24 समझदारी के साथ ईमानदारी, ईमानदारी के साथ जिम्मेदारी, जिम्मेदारी के साथ भागीदारी मानवत्व है।

14.25 समझदारी समाधान, समृद्धि सम्पन्नता सहित उपकार कार्यों को करना मानवत्व है। ज्ञान, विवेक, विज्ञान रूप में समझा हुआ को समझाना, सीखा हुआ को सिखाना, किया हुआ को कराना उपकार है।

14.26 सदा-सदा धीरता-वीरता उदारता, दया-कृपा-करुणा पूर्ण मानसिकता और परम्परा में कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत कारित, अनुमोदित क्रियाओं में प्रमाणित होना रहना मानवत्व है।

14.27 सुख, शान्ति, संतोष, आनन्द सहज निधि को समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व वैभव के रूप में प्रमाणित होना रहना मानवत्व है।

14.28 कायिक, वाचिक, मानसिक व कृत, कारित, अनुमोदित क्रिया कलापों में समाधान सहज जागृति का प्रमाण मानवत्व है।

14.29 परिवार सम्बन्धों को पहचानना, दायित्व व कर्त्तव्यों का निर्वाह करना मानवत्व है।

14.30 समझदारी ईमानदारी ज्ञान रूप में विज्ञान-विवेक सहज रूप में, ईमानदारी जिम्मेदारी चारों अवस्थाओं में सम्बन्धों में पहचान के रूप में, जिम्मेदारी भागीदारी नियति सहज नियंत्रण, संतुलन न्याय-धर्म-सत्य सहज विधिपूर्वक समाधान समृद्धि अभय सह-अस्तित्व में, से, के लिए प्रमाणित रहना मानवत्व है।

14.31 सह-अस्तित्व मानव परम्परा में, से, के लिए मानवेत्तर प्रकृति के साथ पूरकता, उपयोगिता, ऋतु सन्तुलन सहज प्रभावीकरण मानव और परस्पर मानव में न्याय व समाधान सहज विधि से समृद्धि वर्तमान में विश्वास परम्परा सहज रूप में प्रमाणित होना मानवत्व है।

14.32 हर परिवार समाधान समृद्धिपूर्वक प्रमाणित रहना मानवत्व है।

14.33 परिवार सहज हर सम्बन्धों को जिम्मेदारीपूर्वक निर्वाह करना मानवत्व है।

14.34 सार्वभौमता अखण्डता, अक्षुण्णता और प्रबुद्धता, सम्प्रभुता, प्रभुसत्ता सहज दृष्टि से देखना, समझना प्रमाणित रहना मानवत्व है।

14.35 सर्वतोमुखी समाधान सहित उपकार प्रवृत्ति ही सहमतियाँ हैं। यही मानवत्व है।

14.36 सार्वभौमता को धरती के सर्व मानव ने स्वीकारा है अथवा स्वीकारने योग्य है। यह मानवत्व सहज सफलता में से के लिए आशावादिता है।

14.37 अखण्डता का प्रमाण मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी है। यह जागृत मानव परम्परा सहज वैभव व मानवत्व है।

14.38 जागृत मानव परम्परा में ही मानवत्व का पहचान, निर्वाह, मूल्यांकन, परस्पर तृप्ति, परस्परता में सन्तुष्टि फलस्वरूप वर्तमान में विश्वास (अभयता) स्पष्ट होता है। यह मानवत्व है।

14.39 जागृति पूर्ण मानव परम्परा में ही शिक्षा-संस्कार, संविधान, व्यवस्था, संस्कृति, सभ्यता सार्थक रूप में प्रमाण मानवत्व है।

14.40 सह अस्तित्व में अनुभव प्रमाण ही है यही मानवत्व है।

14.41 सह-अस्तित्व में जीवन-लक्ष्य, मानव लक्ष्य सार्थक होना जागृति है यह मानवत्व है।

14.42 जागृति सहज निर्धारित लक्ष्य सार्थक होने में, से, के लिए निर्धारित दिशाओं, आयामों का समझ विचार कार्य व्यवहार प्रमाणित होना मानवत्व है।

14.43 ज्ञान-विवेक-विज्ञान पूर्ण शिक्षा संस्कार परंपरा ही मानवत्व है।

14.44 धरती पर मानव इकाई की अखण्डता का प्रमाण, धरती का भाग विभाग होता नहीं, मानव धर्म अर्थात् सुखी होने के आधार पर राष्ट्र अखण्ड होने का प्रमाण मानवत्व है। अखण्ड राष्ट्र व्यवस्था दस सोपानीय होने का प्रमाण मानवत्व है।

14.45 मानव सुख धर्मी होने का प्रमाण मानवत्व है।

14.46 मानव शरीर रचना की विधि में असमानता, जीवन स्वरूप और जागृति के आधार पर समानता की समझ व प्रमाण मानवत्व है।

14.47 जागृत मानव परम्परा में सार्वभौमता, अक्षुण्णता, निरन्तरता के अर्थ में है, यह वस्तु के रूप में सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व ही है यह समझ व्यवहार कार्य मानवत्व है।

14.48 प्रबुद्धता समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी है। यह मानवत्व है।

14.49 संप्रभुता में सम्पूर्ण प्रबुद्धता को परम्परा के रूप में, विधि और व्यवस्था सहज अर्थ में प्रमाणित करना मानवत्व है।

14.50 जागृत मानव परंपरा में प्रभुसत्ता प्रबुद्धता पूर्ण विधि सहज सार्वभौम व्यवस्था रूपी सत्ता ही अक्षुण्ण है। यह मानवत्व है।

14.51 मूलतः प्रबुद्धता का लोक व्यापीकरण ही मानवत्व है।

14.52 सर्व मानव का मानवेत्तर प्रकृति यथा पदार्थ, प्राण, जीव अवस्थाओं में स्थित वस्तुओं के साथ नियम, नियंत्रण, सन्तुलन को बनाये रखना मानवत्व है।

14.53 आवर्तनशीलता एवं ऋतु सन्तुलन-नियम को बनाये रखना

मानवत्व है।

14.54 अनुपातीय रूप में खनिज वनस्पतियों का सुरक्षित किया जाना मानवत्व है। दश सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था, यथा विश्व परिवार सभा से परिवार सभा का दायित्व व कर्तव्य है। परिवार सभा से यह विश्व राज्य परिवार-सभा का कर्त्तव्य और दायित्व है। शिक्षा में इसका सार्थक अध्ययन आवश्यक है। यह मानवत्व है।

14.55 मानवीय शिक्षा-संस्कार का दायित्व-कर्त्तव्य परिवार-सभा से विश्व परिवार-सभा में दायित्व-कर्त्तव्य रूप में निहित रहता है। इसका निर्वाह योग्य होना मानवीयता है।

14.56 शिक्षा-संस्कार सर्वतोमुखी समाधानकारी ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्न होने का प्रमाण मानवत्व है। यह परम्परा का कर्त्तव्य हर मानव सन्तान का अधिकार है। यह मानवत्व है।

14.57 जागृत शिक्षा परम्परा अखण्ड सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में सम्पन्न होना मानवत्व है।

14.58 अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ही मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद है। इस पर शिक्षा संस्कार में सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान बोध, जीवन ज्ञान बोध, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान बोध परम्परा होना मानवत्व है।

14.59 शिक्षा में, से, के लिए व्यापक वस्तु रूपी साम्य ऊर्जा में सम्पूर्ण एक-एक वस्तु सम्पृक्त ऊर्जा सम्पन्न नित्य वर्तमान क्रियाशील विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति के रूप में होने की परम सत्य सहज अवधारणा सहित अनुभव सम्पन्न रहना मानवत्व है।

14.60 सह-अस्तित्ववादी शिक्षा संस्कार पूर्वक प्रत्येक एक विद्यार्थी अपने ''त्व'' सहित व्यवस्था है। समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने का अध्ययन व प्रमाण मानवत्व है।

14.61 जागृत मानव सन्तानों का सह-अस्तित्व सहज वैभव को अध्ययनपूर्वक जानने-मानने पहचानने निर्वाह करने योग्य होने में बोध पूर्ण होना मानवत्व है।

14.62 मानवीय शिक्षा-संस्कार में सह-अस्तित्व नित्य प्रमाण होने के लिए बोध सम्पन्न होना, करना-कराना, करने के लिए सहमत होना मानवत्व है।

14.63 शिक्षा में मानवत्व का बोध होना सर्व मानव सन्तान में, से, के लिए मौलिक अधिकार है। यह मानवत्व है।

14.64 मानवत्व का प्रमाण मानवीयता पूर्ण आचरण ही है।

14.65 मानवत्व (मानवीयता पूर्ण आचरण) जागृत मानव सहज परिभाषा व्यवस्था और लक्ष्य को सार्थक रुप प्रदान करना, करने के लिए सहमत होना हर मानव में, से, के लिए अधिकार है।

14.66 परिभाषा संगत होने का तात्पर्य मनः स्वस्थता सहज मानसिकता सहित मनाकार को साकार कर प्रयोजन सहज परिवार आवश्यकता से अधिक उत्पादन कार्य में प्रमाणित रहने से है। यह मानवत्व है।

14.67 व्यवस्था संगत होने का तात्पर्य परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी सहित दस सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी कृत-कारित अनुमोदित प्रमाण से है। यह मानवत्व है।

14.68 लक्ष्य संगत होने का तात्पर्य समाधान, समृद्धि, अभय, सह-

अस्तित्व सहज आचरण पूर्वक प्रमाणित होने से है।

14.69 मानव ही बहुआयामी प्रवर्तनशील व प्रमाण होने के कारण ही अनुबंध पूर्णता के अर्थ में निबन्ध व प्रबन्ध कार्य सार्थक है। यह मानवत्व है।

14.70 संबंधों को जानना, पहचानना, निर्वाह करना मानवत्व है।

14.71 ज्ञान-विवेक-विज्ञानपूर्ण सम्बन्धों में, से, के लिए जानने-मानने पहचानने निर्वाह करने के रूप में संकल्पित होना ही अनुबन्ध है। यह मानवत्व है।

14.72 सम्बन्ध नित्य वर्तमान, वर्तमान अस्तित्व, अस्तित्व सह-अस्तित्व, सह अस्तित्व वैभव, वैभव यथा स्थिति गति, मानव परंपरा में स्थिति गति समझदारी ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी वस्तु व प्रयोजन यही सम्बन्ध ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता है। यह मानवत्व है।

भूमिः स्वर्गताम् यातु, मानवो यातु देवताम्।
धर्मो सफलताम् यातु, नित्यम् यातु शुभोदयम्।।

ए. नागराज, प्रणेता लेखक
मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)
श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदांचल
अमरकन्टक, जिला अनूपपुर, म.प्र. (भारत)

अस्तित्व में व्यवस्था सहअस्तित्व रूप में अध्ययन विधि से स्पष्ट है ।

गठनशील परमाणु (जड़ परमाणु), गठनपूर्ण परमाणु (जीवन पद में)

क्रिया व आचरण पूर्णता का प्रमाण (सत्ता में डूबा, भीगा व घिरा होने से प्रत्येक परमाणु में श्रम, गति, परिणाम)

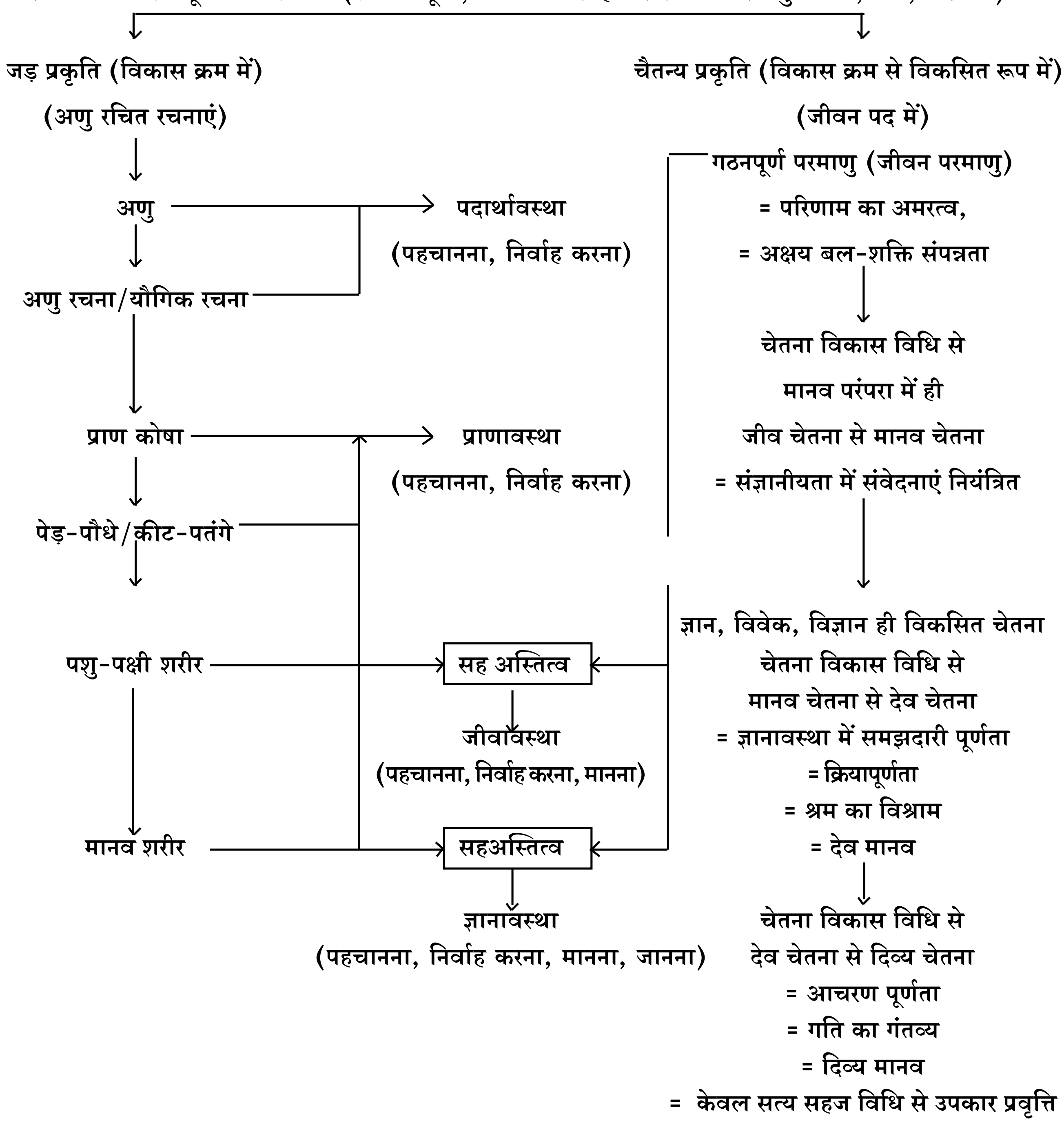

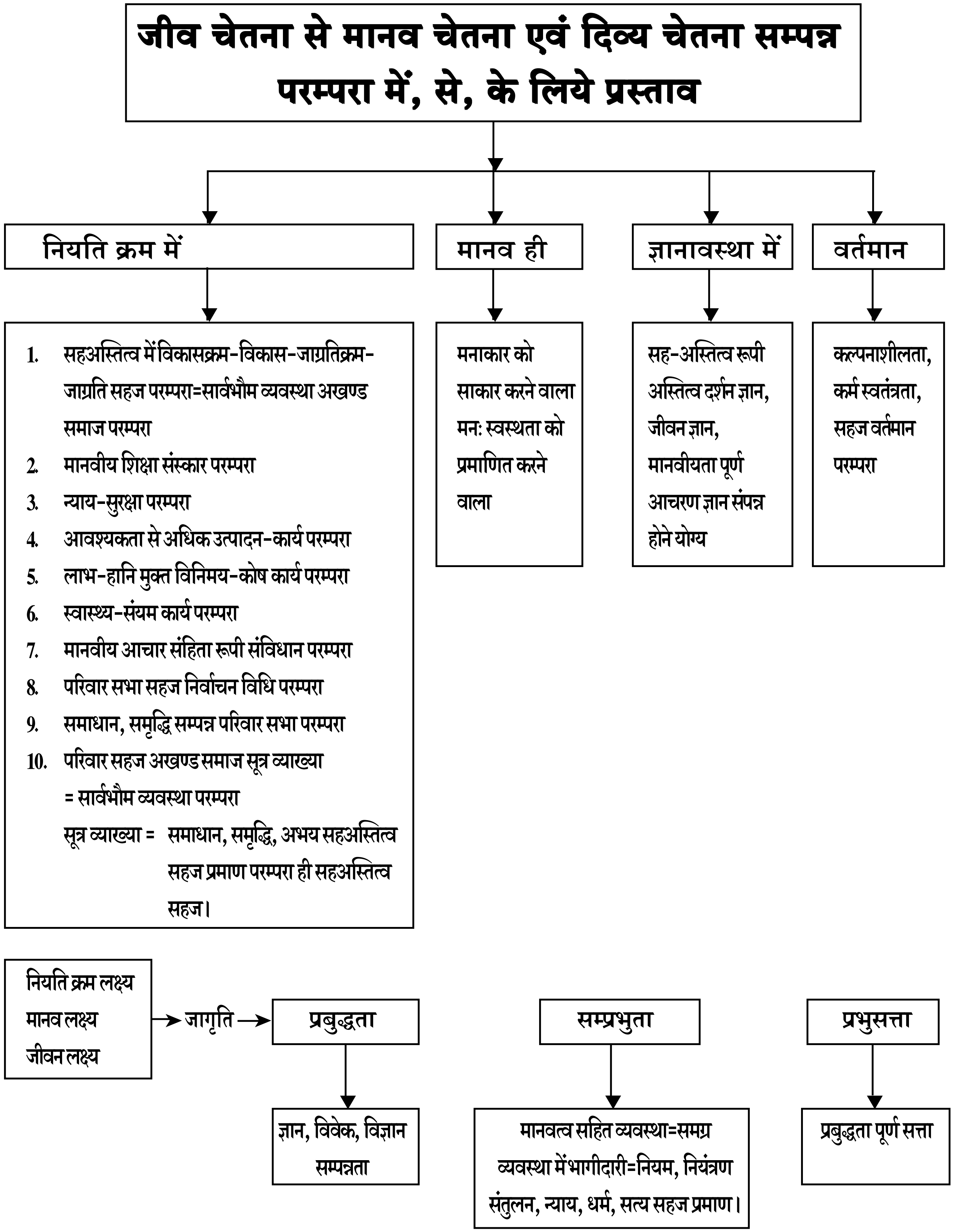
जीव चेतना से मानव चेतना एवं दिव्य चेतना सम्पन्न परम्परा में, से, के लिये प्रस्ताव
नियति क्रम में
1. सहअस्तित्व में विकासक्रम-विकास-जाग्रतिक्रम-जाग्रति सहज परम्परा=सार्वभौम व्यवस्था अखण्ड समाज परम्परा
2. मानवीय शिक्षा संस्कार परम्परा
3. न्याय-सुरक्षा परम्परा
4. आवश्यकता से अधिक उत्पादन-कार्य परम्परा
5. लाभ-हानि मुक्त विनिमय-कोष कार्य परम्परा
6. स्वास्थ्य-संयम कार्य परम्परा
7. मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान परम्परा
8. परिवार सभा सहज निर्वाचन विधि परम्परा
9. समाधान, समृद्धि सम्पन्न परिवार सभा परम्परा
10. परिवार सहज अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या = सार्वभौम व्यवस्था परम्परा
सूत्र व्याख्या = समाधान, समृद्धि, अभय सहअस्तित्व सहज प्रमाण परम्परा ही सहअस्तित्व सहज।
मानव ही
मनाकार को साकार करने वाला मनः स्वस्थता को प्रमाणित करने वाला
ज्ञानावस्था में
सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान संपन्न होने योग्य
वर्तमान
कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता, सहज वर्तमान परम्परा
नियति क्रम लक्ष्य
मानव लक्ष्य
जीवन लक्ष्य
जागृति
प्रबुद्धता
ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता
सम्प्रभुता
मानवत्व सहित व्यवस्था=समग्र व्यवस्था में भागीदारी=नियम, नियंत्रण संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज प्रमाण।
प्रभुसत्ता
प्रबुद्धता पूर्ण सत्ता

प्रकाशित व प्रकाशनाधीन प्रबन्ध

"अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन" बनाम 'मध्यस्थ दर्शन' सह-अस्तित्ववाद के ग्रन्थों की सूची

दर्शन

1. मानव व्यवहार एवं दर्शन	(प्रकाशित)
2. मानव अनुभव दर्शन	(प्रकाशित)
3. मानव अभ्यास दर्शन	(प्रकाशित)
4. मानव कर्म दर्शन	(प्रकाशित)

शास्त्र

1. व्यवहारवादी समाजशास्त्र	(प्रकाशित)
2. आवर्तनशील अर्थचिंतन	(प्रकाशित)
3. मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान	(प्रकाशित)

वाद

1. समाधानात्मक भौतिकवाद	(प्रकाशित)
2. व्यवहारात्मक जनवाद	(प्रकाशित)
3. अनुभवात्मक अध्यात्मवाद	(प्रकाशित)

योजना

1. जीवन विद्या योजना	(प्रकाशनाधीन)
2. मानव संचेतनावादी शिक्षा-संस्कार योजना	(प्रकाशनाधीन)
3. परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था योजना	(प्रकाशित)

अन्य

1. परिभाषा संहिता	(प्रकाशित)
2. जीवन विद्या - एक परिचय	(प्रकाशित)
3. अस्तित्व एवं अस्तित्व में परमाणु का विकास	(प्रकाशित)
4. मानवीय संविधान का प्रारुप	(प्रकाशित)
★ जीवन विद्या गीत (लेखक-प्रदीप पूरक)	(प्रकाशित)